92 मौज़ूआ़त पर मुश्तमिल मदनी चैनल के सिलसिले
जे़ह्नी आज़माइश का तह़रीरी मदनी गुलदस्ता

DAWAT-E-ISLAMI

ह़िस्सा 2

दिलचस्प मा'लूमात
(सुवालन जवाबन)

इश्क़ के बोल
इल्म नूर है
कुरआनी मा'लूमात
जोश के साथ मगर होश से

ZEHNI AZMAISH

المدینۃ العلمیۃ (دعوتِ اسلامی)

DILCHASP MALOOMAT, HISSA 2 (HINDI)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَ السَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

किताब पढ़ने की दुआ

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तर्जमा : ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले।

(مستطرف ج ۱ ص ۴۰ دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आखि़र एक-एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

तालिबे ग़मे मदीना
बक़ीअ़
व मग़फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

क़ियामत के रोज़ ह़सरत

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : सब से ज़ियादा ह़सरत क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में इल्म ह़ासिल करने का मौक़अ़ मिला मगर उस ने ह़ासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने इल्म ह़ासिल किया और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़्अ़ उठाया लेकिन उस ने न उठाया (या'नी उस इल्म पर अ़मल न किया) (تاریخ دمشق لابن عساکر ج ۵۱ ص ۱۳۸ دارالفکر بیروت)

किताब के ख़रीदार मुतवज्जेह हों

किताब की त़बाअ़त में नुमायां ख़राबी हो या सफ़ह़ात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो मक्तबतुल मदीना से रुजूअ़ फ़रमाइये।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَ السَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

मजलिसे तराजिम हिन्द (दा'वते इस्लामी)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ येह किताब मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (दा'वते इस्लामी) ने उर्दू ज़बान में मुरत्तब की है। मजलिसे तराजिम (हिन्द) ने इस किताब को हिन्दी रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और मक्तबतुल मदीना से शाएअ़ करवाया है।

इस किताब में अगर किसी जगह ग़लती पाएं तो मजलिस को सफ़ह़ा और सत़्र नम्बर के साथ Sms, E-mail, Whats App या Telegram के ज़रीए़ इत्तिलाअ़ दे कर सवाबे आख़िरत कमाइये।

मदनी इल्तिजा : इस्लामी बहनें डायरेक्ट राबित़ा न फ़रमाएं!!!

राबित़ा :-

सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने, तीन दरवाज़ा, अह़मदाबाद-1, गुजरात (हिन्द)

+91 98987 32611

E-mail : hindibook@dawateislamihind.net

उर्दू से हिन्दी रस्मुल ख़त़ (लीपियांतर) ख़ाका

थ = تھ	त = ت	फ = پھ	प = پ	भ = بھ	ब = ب	अ = ا
छ = چھ	च = چ	झ = جھ	ज = ج	स = ث	ठ = ٹھ	ट = ٹ
ज़ = ذ	ढ = ڈھ	ड = ڈ	ध = دھ	द = د	ख़ = خ	ह़ = ح
श = ش	स = س	ज़ = ژ	ज़ = ز	ढ़ = ڑھ	ड़ = ڑ	र = ر
फ़ = ف	ग़ = غ	अ़ = ع	ज़ = ظ	त़ = ط	ज़ = ض	स = ص
म = م	ल = ل	घ = گھ	ग = گ	ख = کھ	क = ک	क़ = ق
ी = ئ	ु = ؤ	आ = آ	य = ی	ह = ه	व = و	न = ن

A-3

दिलचस्प मा'लूमात

हिस्सा 2

(सुवालन जवाबन)

पेशकश

मजलिसे मदनी चैनल

व

मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (दा'वते इस्लामी)

नाशिर

मक्तबतुल मदीना, दा'वते इस्लामी (हिन्द)

اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیۡكَ یَا رَسُوۡلَ اللّٰہ وَعَلٰی اٰلِكَ وَاَصۡحٰبِكَ یَا حَبِیۡبَ اللّٰہ

नाम किताब : दिलचस्प मा'लूमात (सुवालन जवाबन) हिस्सा 2

सिने तबाअत : शव्वालुल मुकर्रम, सिने 1440 हिजरी (पहली बार)

ता'दाद : 3100

नाशिर : मक्तबतुल मदीना, दा'वते इस्लामी (हिन्द)

तस्दीक़ नामा

तारीख़ : रबीउ़ल अव्वल, सिने 1439 हि. **ह़वाला नम्बर :** 217

الحمد للّٰہ رب العٰلمین و الصلوٰۃ و السلام علٰی سید المرسلین وعلٰی الہ و اصحا بہ اجمعین

तस्दीक़ की जाती है कि किताब

"दिलचस्प मा'लूमात (सुवालन जवाबन) हिस्सा 2" (उर्दू)

(मत़बूआ़ मक्तबतुल मदीना) पर मजलिसे तफ़्तीशे कुतुबो रसाइल की जानिब से नज़्रे सानी की कोशिश की गई है। मजलिस ने इसे अ़क़ाइद, कुफ़्रिय्या इबारात और फ़िक़्ही मसाइल वग़ैरा के ह़वाले से मक़्दूर भर मुलाह़ज़ा कर लिया है, अलबत्ता कम्पोज़िंग या किताबत की ग़लत़ियों का ज़िम्मा मजलिस पर नहीं।

بسم اللہ الرحمن الرحیم مجلس تفتیش کتب و رسائل فیضان مدینہ پرانی سبزی منڈی باب المدینہ کراچی

मजलिसे तफ़्तीशे कुतुबो रसाइल
(दा'वते इस्लामी)
दिसम्बर 2017

Web : www.dawateislami.net / E.mail : hindibook@dawateislamihind.net

मदनी इल्तिजा : किसी और को येह किताब छापने की इजाज़त नहीं।

याद दाश्त

दौराने मुत़ालआ़ ज़रूरतन अन्डर लाइन कीजिये, इशारात लिख कर सफ़्हा नम्बर नोट फ़रमा लीजिये। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ इल्म में तरक़्क़ी होगी।

उ़नवान	सफ़्हा	उ़नवान	सफ़्हा

फ़ेहरिस्त

उनवान	सफ़्हा	उनवान	सफ़्हा
ईमान व अ़क़ाइद		सुन्नतें और नवाफ़िल	82
अल्लाह तआ़ला	7	तरावीह़	88
नुबुव्वत	10	क़ज़ा नमाज़ें	92
फ़िरिश्ते	13	सजदए तिलावत, सजदए शुक्र	96
जिन्नात	16	जुमुआ़	99
जन्नत	19	ई़दैन	104
दोज़ख़	22	बीमारी और इलाज	108
आ़लमे बरज़ख़	26	इ़यादत और मौत	111
क़ियामत की निशानियां	30	मय्यित का ग़ुस्ल और कफ़न	115
क़ियामत	33	नमाज़े जनाज़ा	118
ईमान व कुफ़्र	38	क़ब्र व दफ़्न	122
विलायत	42	ज़कात	126
मसाइल व अह़काम		सदक़ा	130
शरई इस्ति़लाहात	46	रोज़ा	133
त़हारत	49	ह़ज और उ़मरह	137
वुज़ू	53	क़सम	140
तयम्मुम	56	लुक़्ता	144
नजासत	60	मसाजिद	148
अज़ान व इक़ामत	63	कस्ब और तिजारत	152
नमाज़	66	क़र्ज़ और सूद	158
नमाज़ की शराइत़	69	ज़ब्ह़	163
नमाज़ के फ़राइज़	73	क़ुरबानी	167
वाजिबाते नमाज़ और सजदए सह्व	76	**सुन्नतें और आदाब**	
नमाज़े वित्र	79	खाना	171

लिबास अंगूठी और ज़ेवर	175	सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللہُ عَنْہُ	262
ज़ीनत का बयान	179	सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ عَنْہُ	264
बैठने सोने और चलने के आदाब	182	सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللہُ عَنْہُ	268
सलाम और मुसाफ़ह़ा	186	सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم	272
फ़ैज़ाने क़ुरआनो ह़दीस		अ़शरए मुबश्शरा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُم	276
क़ुरआने करीम (फ़ज़ाइलो मा'लूमात)	190	सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان	279
आयात और सूरतों की मा'लूमात	194	उम्महातुल मोमिनीन رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُنَّ	282
ह़दीस और मुह़द्दिसीन	196	अहले बैते अत़्हार رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُم	285
अच्छी ख़स्लतें		इमामे आ'ज़म عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْاَکْرَم	289
हुस्ने अख़्लाक़	200	उ़लमा व मुज्तहिदीन رَحِمَہُمُ اللہُ تَعَالٰی	294
ख़ौफ़े ख़ुदा	204	ग़ौसे आ'ज़म عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْاَکْرَم	297
अ़द्लो इन्साफ़	210	औलिया व सालिह़ीन رَحِمَہُمُ اللہُ تَعَالٰی	301
सिलए रेह़्मी	214	आ'ला ह़ज़रत رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ	304
सब्रो शुक्र	219	उ़लमाए अहले सुन्नत رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہِم	309
आ़जिज़ी व इन्किसारी	223	अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ	314
तौबा व इस्तिग़फ़ार	226	**मुतफ़र्रिक़ात**	
बुरी ख़स्लतें		ज़िक्रो अज़्कार	316
ग़ीबत	230	दुरूदे पाक	320
बद शुगूनी	236	मुक़द्दस मक़ामात	323
ह़सद	239	मुतबर्रक रातें और अय्याम	326
सीरत व ह़ालात		दीने इस्लाम	329
अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام	243	औलाद और इन के हुक़ूक़	336
गुज़श्ता अक़्वाम	246	पड़ोसियों और आ़म मुसलमानों के हुक़ूक़	340
सीरते सय्यिदुल अम्बिया صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم	249	इ़ल्म व उ़लमा	344
फ़ज़ाइल व ख़साइस व मो'जिज़ात	253	बैअ़त व त़रीक़त	348
ग़ज़्वात	259	दा'वते इस्लामी का तआ़रुफ़	351

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

"ज़ेहनी आज़माइश" के 10 हुरूफ़ की निस्बत से इस किताब को पढ़ने की "10 निय्यतें"

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **:** نِیَّۃُ الْمُؤْمِنِ خَیْرٌ مِّنْ عَمَلِہٖ या'नी मुसलमान की निय्यत उस के अ़मल से बेहतर है।

(معجم کبیر، ۶/۱۸۵، حدیث:۵۹۴۲)

दो मदनी फूल :

- बिग़ैर अच्छी निय्यत के किसी भी अ़मले ख़ैर का सवाब नहीं मिलता।
- जितनी अच्छी निय्यतें ज़ियादा, उतना सवाब भी ज़ियादा।

(1) हर बार ह़म्द व सलात और तअ़व्वुज़ व तस्मिया से आग़ाज़ करूंगा। (इसी सफ़ह़े पर ऊपर दी हुई दो अ़रबी इ़बारात पढ़ लेने से इस पर अ़मल हो जाएगा) (2) रिज़ाए इलाही के लिये इस किताब का अव्वल ता आख़िर मुतालआ़ करूंगा। (3) ह़त्तल वस्अ़ इस का बा वुज़ू और क़िब्ला रू मुतालआ़ करूंगा। (4) कु़रआनी आयात और अह़ादीसे मुबारका की ज़ियारत करूंगा। (5) जहां जहां "**अल्लाह**" का नामे पाक आएगा वहां عَزَّوَجَلَّ और जहां जहां "**सरकार**" का इस्मे मुबारक आएगा वहां صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم और जहां जहां किसी सह़ाबी या बुज़ुर्ग का नाम आएगा वहां رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ और رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ पढ़ूंगा। (6) रिज़ाए इलाही के लिये इ़ल्म ह़ासिल करूंगा। (7) अगर कोई बात समझ न आई तो उ़लमा से पूछ लूंगा। (8) (अपने ज़ाती नुस्ख़े के) "याद दाश्त" वाले सफ़ह़े पर ज़रूरी निकात लिखूंगा। (9) दूसरों को येह किताब पढ़ने की तरग़ीब दिलाऊंगा। (10) किताबत वग़ैरा में शरई ग़लती मिली तो नाशिरीन को तह़रीरी तौर पर मुत्तलअ़ करूंगा।

(नाशिरीन वग़ैरा को किताबों की अग़लात़ सिर्फ़ ज़बानी बताना ख़ास मुफ़ीद नहीं होता)

अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَلٰی اِحْسَانِهٖ وَبِفَضْلِ رَسُوْلِهٖ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक "**दा'वते इस्लामी**" नेकी की दा'वत, एह़याए सुन्नत और इशाअ़ते इ़ल्मे शरीअ़त को दुन्या भर में आ़म करने का अ़ज़्मे मुसम्मम रखती है, इन तमाम उमूर को ब हुस्ने ख़ूबी सर अन्जाम देने के लिये मुतअ़द्दद मजालिस का क़ियाम अ़मल में लाया गया है जिन में से एक मजलिस "**अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या**" भी है जो **दा'वते इस्लामी** के **उ़लमा व मुफ़्तियाने किराम** كَثَّرَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام पर मुश्तमिल है, जिस ने ख़ालिस इ़ल्मी, तह़क़ीक़ी और इशाअ़ती काम का बीड़ा उठाया है। इस के मुन्दरिजए ज़ैल **छे शो'बे** हैं :

(1) शो'बए कुतुबे आ'ला ह़ज़रत
(2) शो'बए दर्सी कुतुब
(3) शो'बए इस्लाह़ी कुतुब
(4) शो'बए तख़रीज
(5) शो'बए तफ़्तीशे कुतुब
(6) शो'बए तराजिमे कुतुब[1]

"**अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या**" की अव्वलीन तरजीह़ सरकारे आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, अ़ज़ीमुल बरकत, अ़ज़ीमुल मर्तबत, परवानए शम्ए रिसालत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, ह़ामिये सुन्नत, माह़िये बिदअ़त, आ़लिमे शरीअ़त, पीरे त़रीक़त, बाइ़से ख़ैरो बरकत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना

1.....ता दमे तह़रीर (रबीउ़ल आख़िर 1437 हिजरी) 10 शो'बे मज़ीद क़ाइम हो चुके हैं : (7) फ़ैज़ाने क़ुरआन (8) फ़ैज़ाने ह़दीस (9) फ़ैज़ाने सह़ाबा व अहले बैत (10) फ़ैज़ाने सह़ाबियात व सालिह़ात (11) शो'बए अमीरे अहले सुन्नत مُدَّظِلُّه (12) फ़ैज़ाने मदनी मुज़ाकरा (13) फ़ैज़ाने औलिया व उ़लमा (14) बयानाते दा'वते इस्लामी (15) रसाइले दा'वते इस्लामी (16) अ़रबी तराजुम। (**मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या**)

अलहाज अल हाफ़िज़ अल क़ारी शाह **इमाम अहमद रज़ा ख़ान** عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن की गिरां माया तसानीफ़ को अ़सरे हाज़िर के तक़ाज़ों के मुताबिक़ ह़त्तल वस्अ़ सहल उस्लूब में पेश करना है। तमाम इस्लामी भाई और इस्लामी बहनें इस इल्मी, तह़क़ीक़ी और इशाअ़ती **मदनी काम** में हर मुमकिन तआ़वुन फ़रमाएं और **मजलिस** की त़रफ़ से शाएअ़ होने वाली कुतुब का खुद भी मुत़ालआ़ फ़रमाएं और दूसरों को भी इस की तरग़ीब दिलाएं।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **"दा'वते इस्लामी"** की तमाम मजालिस ब शुमूल **"अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या"** को **दिन ग्यारहवीं** और **रात बारहवीं** तरक़्क़ी अ़त़ा फ़रमाए और हमारे हर अ़मले ख़ैर को ज़ेवरे इख़्लास से आरास्ता फ़रमा कर **दोनों जहां की भलाई** का सबब बनाए। हमें ज़ेरे गुम्बदे ख़ज़रा शहादत, जन्नतुल बक़ीअ़ में मदफ़न और **जन्नतुल फ़िरदौस** में **जगह** नसीब फ़रमाए। اٰمِين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللهُ تعالىٰ عليه واٰله وسلَّم

रमज़ानुल मुबारक 1425 हि.

इ़बादत और ता'ज़ीम में फ़र्क़

इ़बादत का मफ़्हूम बहुत वाज़ेह़ है, समझने के लिये इतना ही काफ़ी है कि किसी को इ़बादत के लाइक़ समझते हुए उस की किसी क़िस्म की ता'ज़ीम करना **"इ़बादत"** कहलाता है और अगर इ़बादत के लाइक़ न समझें तो वोह मह़ज़ **"ता'ज़ीम"** होगी इ़बादत नहीं कहलाएगी, जैसे नमाज़ में हाथ बांध कर खड़ा होना इ़बादत है लेकिन येही नमाज़ की त़रह़ हाथ बांध कर खड़ा होना उस्ताद, पीर या मां बाप के लिये हो तो मह़ज़ ता'ज़ीम है इ़बादत नहीं।

(तफ़्सीर सिरातुल जिनान, पारह 1, अल फ़ातिह़ा, तह़्तुल आयत : 4, 1 / 47)

एक नज़र इधर भी

अल्लाह पाक की एक सिफ़त इल्म है, इसी नूर से हज़राते अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام को मुनव्वर फ़रमाया गया, फिर इसी रौशनी से इन नुफ़ूसे कुदसिय्या के तुफ़ैल औलिया व सालिहीन भी चमके और इन से येह नूर पा कर आ़म लोग रौशन हुए। उ़लमाए उम्मत ने तस्नीफ़ व तदरीस और दीगर ज़राएअ़ से नूरे इल्म की हिफ़ाज़त फ़रमाई जब कि आने वाली नस्लों तक इल्म की रौशनी पहुंचाने के लिये अकाबिरीने उम्मत और माहिरीने ता'लीम ने हर दौर में नित नए त़रीके़ मुतआ़रिफ़ करवाए।

दौरे हाज़िर में भी प्यारे आक़ा, मदीने वाले मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की प्यारी उम्मत को ज़ेवरे इल्म से आरास्ता करने के लिये उम्मत के ख़ैर ख़्वाह, उन की भलाई के ख़्वाहां और उन की नजात व फ़लाह़ के ह़रीस अफ़राद ने ज़माने के तक़ाज़ों के मुत़ाबिक़ नए और दिलचस्प त़रीके़ राइज फ़रमाए। शैख़े त़रीक़त, अमीरे अह्ले सुन्नत ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार** क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه इस मैदान की सफ़े अव्वल की मुमताज़ व मुनफ़रिद शख़्सिय्यत हैं जिन्हों ने इल्म की तरवीजो इशाअ़त के लिये कई मजालिस और शो'बाजात क़ाइम फ़रमाए जो शबो रोज़ उम्मते रसूल को नूरे इल्म से माला माल करने में मगन हैं।

नूरे इल्म बांटने वाला **दा'वते इस्लामी** का एक अ़ज़ीम शो'बा **"मदनी चैनल"** है जो पूरी दुन्या में कुरआनो सुन्नत का इल्म आ़म कर रहा है, इस के मक्बूले आ़म सिलसिलों में से एक दिलचस्प सिलसिला **"ज़ेह्नी आज़माइश"** भी है जिस में बड़ी ख़ूब सूरती और पुर ह़िक्मत अन्दाज़ में मुसलमानों को इल्मे दीन से रू शनास करवाया जाता है, अब तक इस के **दस सीज़न** हो चुके हैं, इस में से पूछे गए बा'ज़ सुवालात और इन के जवाबात का तह़रीरी गुलदस्ता **"दिलचस्प मा'लूमात (सुवालन जवाबन) ह़िस्सा 2"** आप के हाथों में है, पहले ह़िस्से की त़रह़ येह भी 8 उ़नवानात के तह़्त 92 मौज़ूआ़त के बारह बारह सुवालात व जवाबात पर मुश्तमिल है। आइये, बड़ों और बच्चों के लिये यक्सां मुफ़ीद इस ख़ज़ीनए इल्म से मोती चुन कर अपने इल्मो अ़मल में इज़ाफ़ा करें।

अल्लाह तआला

सुवाल : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के "मालिक अ़लल इत़्लाक़" होने का क्या मा'ना है ?

जवाब : इस का मा'ना येह है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ जो चाहे करे और जो चाहे हुक्म दे, उस पर कुछ वाजिब नहीं।(1)

सुवाल : मुफ़स्सिरीने किराम ने इस्मे जलालत "अल्लाह" के क्या मआ़नी बयान फ़रमाए हैं ?

जवाब : मुफ़स्सिरीन ने इस लफ़्ज़ के येह मआ़नी बयान फ़रमाए हैं : (1) इबादत का मुस्तह़िक़ (2) वोह ज़ात जिस की मा'रिफ़त में अ़क़्लें ह़ैरान हैं (3) वोह ज़ात जिस की बारगाह में सुकून ह़ासिल होता है (4) वोह ज़ात कि मुसीबत के वक़्त जिस की पनाह तलाश की जाए।(2)

सुवाल : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के दो सिफ़ाती नामों "रह़मान" और "रह़ीम" के क्या मा'ना हैं ?

जवाब : रह़मान का मा'ना है : ने'मतें अ़त़ा करने वाली वोह ज़ात जो बहुत ज़ियादा रह़मत फ़रमाए और रह़ीम का मा'ना है : बहुत रह़मत फ़रमाने वाला।(3)

सुवाल : किसी को "रह़मान" या "रह़ीम" कहना कैसा है ?

जवाब : अल्लाह तआ़ला के इ़लावा किसी और को रह़मान कहना जाइज़ नहीं जब कि रह़ीम कहा जा सकता है जैसे क़ुरआने मजीद में अल्लाह तआ़ला ने अपने ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को भी रह़ीम फ़रमाया है।(4)

1.....बहारे शरीअ़त, हिस्सा 1, 1 / 25 حديقة ندية، الباب الثاني في الامور۔۔۔الخ، ١/ ٢٤٩۔
2.....تفسير بيضاوى، پ ١، الفاتحة، تحت الآية: ٤، ١/ ٣٢۔
3.....तफ़्सीर सिरातुल जिनान, पारह 1, अल फ़ातिह़ा, तह़्तुल आयत : 2, 1 / 44
4.....तफ़्सीर सिरातुल जिनान, पारह 1, अल फ़ातिह़ा, तह़्तुल आयत : 2, 1 / 46

सुवाल तौह़ीद से क्या मुराद है ?

जवाब तौह़ीद से मुराद **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की वह़दानिय्यत को मानना है या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ एक है(1) और कोई भी उस का शरीक नहीं(2), न ज़ात में न सिफ़ात में, न अफ़्आ़ल (कामों) में(3) न अस्मा (या'नी नामों) में(4) और न ही अह़काम में।(5)

सुवाल **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का अपनी क़ुदरत से पैदा करने का क्या मत़लब है ?

जवाब क़ुदरत से पैदा करने का मत़लब येह है कि **अल्लाह** तआ़ला ने जिस चीज़ को पैदा करने का इरादा फ़रमाया उस के लिये लफ़्ज़े कुन (या'नी हो जा) फ़रमा दिया और वोह चीज़ उस की मर्ज़ी के मुत़ाबिक़ वुजूद में आ गई, जैसा कि क़ुरआने ह़कीम में इरशाद फ़रमाया गया है : ﴿اِذَاۤ اَرَادَ شَیْــٴًـا اَنْ یَّقُوْلَ لَهٗ كُنْ فَیَكُوْنُ﴾ (پ۲۳،یٰسٓ:۸۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : उस का काम तो येही है कि जब किसी चीज़ को चाहे (कि पैदा करे) तो उस से फ़रमाए हो जा वोह फ़ौरन हो जाती है।

सुवाल **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने ज़मीनो आस्मान को कितने दिन में तख़्लीक़ फ़रमाया ?

जवाब ज़मीनो आस्मान और जो कुछ इन के दरमियान है **अल्लाह** तआ़ला ने छे दिन में तख़्लीक़ फ़रमाया। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ क़ुरआने पाक में फ़रमाता है : ﴿وَلَقَدْ خَلَقْنَا السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَمَا بَیْنَهُمَا فِیْ سِتَّةِ اَیَّامٍ﴾ (پ۲۶،قٓ:۳۸)

1 ...پ۳۰،الاخلاص:۱۔
2 ...پ۸،الانعام:۱۶۳۔
3 ...تفسیر صاوی،پ۳۰،الاخلاص،تحت الآیۃ:۱، ۶/۲۴۵۱۔
4 ...التفسیر الکبیر،پ۱۶،مریم،تحت الآیۃ:۶۵، ۷/۵۵۵۔
5 ...پ۱۵،الکھف:۲۶۔

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और बेशक हम ने आस्मानों और ज़मीन को और जो कुछ इन के दरमियान है छे दिन में बनाया।

सुवाल इबादत का मा'ना बताइये ?

जवाब इबादत उस इन्तिहाई ता'ज़ीम का नाम है जो बन्दा अपनी अ़ब्दिय्यत या'नी बन्दा होने और मा'बूद की उलूहिय्यत या'नी मा'बूद होने के ए'तिक़ाद और ए'तिराफ़ के साथ बजा लाए।[1]

सुवाल इबादत और ता'ज़ीम में मिसाल के साथ फ़र्क़ बयान कीजिये ?

जवाब इबादत का मफ़्हूम बहुत वाज़ेह है, समझने के लिये इतना ही काफ़ी है कि किसी को इबादत के लाइक़ समझते हुए उस की किसी क़िस्म की ता'ज़ीम करना "इबादत" कहलाता है और अगर इबादत के लाइक़ न समझें तो वोह महज़ "ता'ज़ीम" होगी इबादत नहीं कहलाएगी, जैसे नमाज़ में हाथ बांध कर खड़ा होना इबादत है लेकिन येही नमाज़ की त़रह़ हाथ बांध कर खड़ा होना उस्ताद, पीर या मां बाप के लिये हो तो महज़ ता'ज़ीम है इबादत नहीं।[2]

सुवाल बारगाहे ख़ुदावन्दी में अपनी ह़ाजत से पहले वसीला पेश करने की क्या बरकत ह़ासिल होती है ?

जवाब सूरए फ़ातिह़ा की पांचवीं आयत के तह़त इमाम अ़ब्दुल्लाह बिन अह़मद नस्फ़ी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : इबादत को मदद त़लब करने से पहले ज़िक्र किया गया क्यूंकि ह़ाजत त़लब करने से पहले **अल्लाह** तआ़ला की बारगाह में वसीला पेश करना क़बूलिय्यत के ज़ियादा क़रीब है।[3] और **अल्लाह** तआ़ला की बारगाह में

---

1 .....तफ़्सीर सिरातुल जिनान, पारह 1, अल बक़रह, तह़्तुल आयत : 21, 1 / 85

2 .....तफ़्सीर सिरातुल जिनान, पारह 1, अल फ़ातिह़ा, तह़्तुल आयत : 4, 1 / 47

3 ...تفسیر مدارک، پ ۱، الفاتحۃ، تحت الآیۃ:۵، ص ۱۴۔

वसीला पेश करना कुरआनो हदीस से साबित है।[1]

सुवाल अल्लाह عَزَّوَجَلَّ को "आशिक़" कहना कैसा है ?

जवाब आ'ला हज़रत, इमामे अहले सुन्नत, इमाम अहमद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये आशिक़ या मा'शूक़ के लफ़्ज़ के इस्ति'माल को नाजाइज़ क़रार दिया, जिस का ख़ुलासा येह है कि इश्क़ का मा'ना अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये क़त्ई तौर पर मुहाल है और इस तरह के अल्फ़ाज़ बिग़ैर किसी शरई सुबूत के अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की शान में इस्ति'माल करना क़त्ई तौर पर मन्अ़ हैं।[2]

सुवाल मुश्किलात से तंग आ कर येह कहना कि अगर वाक़ेई अल्लाह عَزَّوَجَلَّ होता तो ग़रीबों का साथ देता, मजबूरों का सहारा होता। ऐसा कहना कैसा है ?

जवाब मज़्कूरा जुम्ले से साफ़ ज़ाहिर है कि कहने वाला अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के वुजूद ही का इन्कार कर रहा है कि ग़रीबों मजबूरों की मदद न होना इस वज्ह से है कि (مَعَاذَاللهِ عَزَّوَجَلَّ) अल्लाह عَزَّوَجَلَّ नहीं है अगर होता तो उन की मदद होती। कहने वाला काफ़िर व मुर्तद है।[3]

नुबुव्वत

सुवाल अम्बिया व रुसुल عَلَيْهِمُ السَّلَام को दुन्या में भेजने का मक़्सद बयान कीजिये ?

जवाब अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने पैग़म्बरों और रसूलों को दुन्या में भेजा

1.....तफ़्सीर सिरातुल जिनान, पारह 1, अल फ़ातिहा, तहतुल आयत : 4, 1 / 48
2.....फ़तावा रज़विय्या, 21 / 114 मुलख़्ख़सन।
3.....कुफ़्रिय्या कलिमात के बारे में सुवाल जवाब, स. 96

ताकि वोह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के अह़काम उस की मख़्लूक़ तक पहुंचाएं ।(1)

सुवाल क्या इबादत व रियाज़त के ज़रीए मन्सबे नुबुव्वत ह़ासिल किया जा सकता है ?

जवाब नुबुव्वत कस्बी नहीं। आदमी इबादत व रियाज़त के ज़रीए इसे हरगिज़ ह़ासिल नहीं कर सकता बल्कि येह मह़ज़ अ़त़ाए इलाही है ।(2)

सुवाल जो शख़्स मन्सबे नुबुव्वत को कस्बी माने उस के बारे में क्या हुक्म है ?

जवाब जो नुबुव्वत को कस्बी माने (या'नी येह अ़क़ीदा रखे) कि आदमी अपने कस्ब व रियाज़त से मन्सबे नुबुव्वत तक पहुंच सकता है तो ऐसा शख़्स काफ़िर है ।(3)

सुवाल क्या जिन्न या औ़रत भी नबी बना कर भेजे गए हैं ?

जवाब जी नहीं ! अम्बिया सब बशर और मर्द थे, न कोई जिन्न नबी हुवा और न ही औ़रत ।(4)

सुवाल क्या रसूलों के पास अपनी रिसालत की कोई दलील होती है ?

जवाब जी हां ! रसूलों के पास अपनी रिसालत की दलील होती है जिसे मो'जिज़ा कहते हैं ।(5)

सुवाल मा'सूम किस को कहते हैं ?

जवाब जो अल्लाह तआ़ला की ह़िफ़ाज़त में हो और इस वज्ह से उस का गुनाह करना ना मुमकिन हो ।(6)

---

1 ...شرح عقائد نسفیۃ، خبر الرسول، ص ۸۲۔

2 ...الیواقیت والجواھر، المبحث الثلاثون فی حکمۃ بعثۃ الرسل۔۔۔الخ، ص ۲۲۴ مُلتقطًا۔

3 ...المعتقد المنتقد، الباب الثانی فی النبوات، ص ۱۰۷۔

4 ...تفسیر قرطبی، پ ۱۳، یوسف، تحت الآیۃ: ۱۰۹، ۹/ ۱۹۳۔

5 ...شرح عقائد نسفیۃ، فی ارسالِ الرسل حکمۃ، ص ۲۹۸۔

6 .....बुन्यादी अ़क़ाइद और मा'मूलाते अह्ले सुन्नत, स. 18

सुवाल मा'सूम होना किन की ख़ुसूसिय्यत है ?

जवाब मा'सूम होना अम्बिया और फ़िरिश्तों का ख़ास्सा है या'नी नबी और फ़िरिश्ते के सिवा कोई मा'सूम नहीं ।(1)

सुवाल अम्बिया की ता'दाद के बारे में हमारा क्या अ़क़ीदा है ?

जवाब अम्बिया की ता'दाद मुअ़य्यन करना जाइज़ नहीं क्यूंकि इन की ता'दाद के बारे में मुख़्तलिफ़ रिवायात हैं अगर मख़्सूस ता'दाद पर ईमान रखा तो इस बात का इम्कान है कि किसी नबी की नुबुव्वत का इन्कार हो जाए या किसी ग़ैरे नबी को नबी मान लिया जाए और येह दोनों बातें कुफ़्र हैं लिहाज़ा येह अ़क़ीदा रखना चाहिये कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के हर नबी पर हमारा ईमान है ।(2)

सुवाल नबी को ख़्वाब में बताई जाने वाली चीज़ की क्या हैसिय्यत है ?

जवाब नबी को ख़्वाब में जो चीज़ बताई जाए वोह भी वह्य है जैसे ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام को ख़्वाब में ह़ज़रते इस्माईल عَلَيْهِ السَّلَام की क़ुरबानी का हुक्म हुवा ।(3)

सुवाल जिन अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام के नाम क़ुरआने पाक में आए हैं इन में से 12 के नाम बताइये ?

जवाब (1) ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام(4) (2) ह़ज़रते नूह़ عَلَيْهِ السَّلَام (3) ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام (4) ह़ज़रते इस्माईल عَلَيْهِ السَّلَام (5) ह़ज़रते इस्ह़ाक़ عَلَيْهِ السَّلَام (6) ह़ज़रते या'क़ूब عَلَيْهِ السَّلَام (7) ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام (8) ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام (9) ह़ज़रते हारून عَلَيْهِ السَّلَام

---

1 ...المعتقد المنتقد، ص ۱۱۰۔
الشفا، الباب الاول فیما یختص بالامور الدینیة، فصل فی القول فی عصمة الملائکة، ص ۱۷۵، الجزء الثانی۔

2 ...مسامرة شرح مسایرة، الاصل التاسع، ص ۲۲۵۔

3 ...بخاری، کتاب الوضوء، باب التخفیف فی الوضوء، ۱/۷۲، حدیث:۱۳۸ ملخصا۔

4 ...پ ۱، البقرة: ۳۱۔

(10) हज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام[1] (11) हज़रते शुऐब عَلَيْهِ السَّلَام[2] (12) हुज़ूर सय्यिदुल मुर्सलीन जनाबे मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ।[3]

सुवाल इरहास किसे कहते हैं ?

जवाब नबी से क़ब्ले नुबुव्वत जो बात ख़िलाफ़े आ़दत ज़ाहिर हो उसे इरहास कहते हैं ।[4]

सुवाल किसी नबी की अदना तौहीन या तक्ज़ीब के बारे में क्या हुक्म है ?

जवाब किसी नबी की अदना तौहीन या तक्ज़ीब कुफ़्र है ।[5]

फ़िरिश्ते

सुवाल फ़िरिश्तों के सिपुर्द मुख़्तलिफ़ ख़िदमतों में से कुछ बयान कीजिये ?

जवाब बा'ज़ के ज़िम्मे हज़राते अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام की ख़िदमतों में वह्य लाना, किसी के मुतअ़ल्लिक़ पानी बरसाना, रोज़ी पहुंचाना,[6] किसी के ज़िम्मे मां के पेट में बच्चे की सूरत बनाना,[7] बहुतों का दरबारे रिसालत में हाज़िर होना,[8] किसी के मुतअ़ल्लिक़

1 ...پ۷، الانعام: ۸۳-۸۶۔
2 ...پ۸، الاعراف: ۸۵۔
3 ...پ۲۶، محمد: ۲۔
4 ...نبراس، اقسام الخوارق سبعة، ص ۲۷۲۔
5 ...السیف المسلول علی من سب الرسول، الفصل الاول فی المسلمین، ص ۳۰۵۔
6 ...تفسیر بغوی، پ۳۰، النّزعٰت، تحت الآیة: ۵، ۴/ ۴۱۱۔
7 ...مسلم، کتاب القدر، باب کیفیة خلق الآدمی ۔۔۔ الخ، ص ۱۰۹۰-۱۰۹۱، حدیث: ۲۶۴۲۔
8 ...تفسیر ابن کثیر، پ۲۲، الاحزاب، تحت الآیة: ۵۶، ۶/ ۴۲۳۔

मुसलमानों का दुरूदो सलाम पहुंचाना[1] इन के इलावा और बहुत से काम मलाइका अन्जाम देते हैं ।[2]

सुवाल क्या उम्र भर हर आदमी के आ'माल एक ही फ़िरिश्ता लिखता है ?

जवाब नहीं बल्कि नेकी और बदी लिखने वाले फ़िरिश्ते अ़लाहृदा अ़लाहृदा हैं और रात के अ़लाहृदा और दिन के अ़लाहृदा हैं ।[3]

सुवाल क्या आ'माल लिखने वाले मुअ़ज़्ज़ज़ फ़िरिश्ते दिलों का ह़ाल भी जान लेते हैं ?

जवाब जी हां, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की अ़ता से वोह दिलों का इरादा जान लेते हैं, हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया कि (आ'माल लिखने वाले) फ़िरिश्ते बारगाहे इलाही में अ़र्ज़ करते हैं : परवर दगार ! तेरा बन्दा गुनाह करने का इरादा कर रहा है । **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है : इस का इन्तिज़ार करो, अगर येह इस गुनाह को कर ले तो एक ही गुनाह लिखो और अगर न करे तो इस के लिये एक नेकी लिख दो क्यूंकि इस ने मेरी वज्ह से येह गुनाह तर्क किया ।[4]

सुवाल बैतुल मा'मूर में कितने फ़िरिश्ते रोज़ाना नमाज़ पढ़ते हैं ?

जवाब बैतुल मा'मूर में रोज़ाना 70 हज़ार फ़िरिश्ते नमाज़ पढ़ते हैं और एक मरतबा जो फ़िरिश्ता उस से नमाज़ पढ़ कर निकल जाता है वोह फिर कभी दाख़िल नहीं होगा ।[5]

---

1 ...مصنف ابن ابی شیبۃ، کتاب صلوۃ التطوع والامامۃ، فی ثواب الصلوۃ علی النبی، ۲/ ۳۹۹، حدیث: ۵-

2 ...مطالع المسرات، فصل فی کیفیۃ الصلوۃ علی النبی، ص ۲۷م-

3 ...تفسیر طبری، پ۲۶، ق، تحت الآیۃ: ۱۷-۱۸، ۱۱/ ۱۲م-

4 ...مسلم، کتاب الایمان، باب اذا ھم العبد بحسنۃ...الخ، ص ۷۴، حدیث: ۳۳۶-

5 ...بخاری، کتاب بدء الخلق، باب ذکر الملائکۃ، ۲/ ۳۸۱، حدیث: ۳۲۰۷-

सुवाल फ़िरिश्ते किस त़रह़ सफ़ बन्दी करते हैं ?

जवाब हु़ज़ूर नबिय्ये ग़ैब दान صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : फ़िरिश्ते पहले अगली सफ़ों को मुकम्मल करते हैं और सफ़ में ख़ूब मिल कर खड़े होते हैं।[1]

सुवाल अ़र्श के गिर्द कितने फ़िरिश्ते मौजूद होते हैं ?

जवाब ह़ज़रते वहब बिन मुनब्बेह رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : अ़र्श के गिर्द मलाइका की 70 हज़ार सफ़ें हैं और उन के पीछे फ़िरिश्तों की ऐसी 70 हज़ार सफ़ें हैं जिन के पीछे एक लाख सफ़ें हैं।[2]

सुवाल अ़र्श के गिर्द वाले फ़िरिश्तों की (मश्हूर) तस्बीह़ क्या है ?

जवाब سُبْحَانَ اللّٰہِ وَبِحَمْدِہٖ[3]

सुवाल अ़र्श उठाने वाले फ़िरिश्तों की ता'दाद बयान करें ?

जवाब ह़दीस शरीफ़ में है कि अ़र्श उठाने वाले फ़िरिश्ते आज कल चार हैं, बरोज़े क़ियामत इन की ताईद के लिये चार का और इज़ाफ़ा किया जाएगा तो वोह आठ हो जाएंगे।[4]

सुवाल ह़ामिलाने अ़र्श फ़िरिश्तों के कितने "पर" हैं ?

जवाब हर फ़िरिश्ते के चार पर हैं जिन में से दो उन के चेहरों के ऊपर हैं ताकि उन की नज़र अ़र्श पर न पड़े।[5]

---

1 ...مسلم، کتاب الصلاۃ، باب الامر بالسکون فی الصلاۃ... الخ، ص ۱۸۱، حدیث: ۹۶۸۔

2 ...تفسیر بغوی، پ ۲۴، المؤمن، تحت الآیۃ: ۷، ۴/۸۱ ملتقطاً۔

3 ...تفسیر جلالین، المؤمن، تحت الآیۃ: ۷، ص ۳۹۱۔

4 ...تفسیر طبری، پ ۲۹، الحاقۃ، تحت الآیۃ: ۱۷، ۱۲/۲۱۶، رقم: ۳۴۷۹۳۔

5 ...تفسیر عبد الرزاق، پ ۲۹، الحاقۃ، تحت الآیۃ: ۱۷، ۳/۳۴۲، رقم: ۳۳۱۳۔

सुवाल अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने किस फ़िरिश्ते की पेशानी पर कुरआने करीम लिखा और क्यूं ?

जवाब हज़रते इसराफ़ील عَلَيْهِ السَّلَام की पेशानी पर कुरआने करीम लिखा गया क्यूंकि इन्हों ने सब से पहले हज़रते सय्यिदुना आदम عَلَيْهِ السَّلَام को सजदा किया था।(1)

सुवाल हज़रते जिब्रईले अमीन عَلَيْهِ السَّلَام बारगाहे रिसालत मआब में कितनी बार हाज़िर हुए ?

जवाब हज़रते जिब्रईले अमीन عَلَيْهِ السَّلَام ख़ातमुल अम्बिया صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में चौबीस हज़ार मरतबा हाज़िरी से मुशर्रफ़ हुए।(2)

सुवाल दुश्मन को देख कर مَعَاذَ الله येह कहना कि मलकुल मौत या इज़राईल आ गया कैसा है ?

जवाब किसी फ़िरिश्ते के साथ अदना सी गुस्ताख़ी कुफ़्र है,(3) जाहिल लोग अपने किसी दुश्मन या मबग़ूज़ (या'नी क़ाबिले नफ़रत) शख़्स को देख कर कहते हैं कि मलकुल मौत या इज़राईल आ गया, येह क़रीब ब कलिमए कुफ़्र है।(4)

जिन्नात

सुवाल अल्लाह तआला ने जिन्नात को किस दिन पैदा फ़रमाया ?

जवाब जुमे'रात के दिन।(5)

सुवाल जिन्नात की तख़्लीक़ के मुतअ़ल्लिक़ ह़दीस शरीफ़ में क्या आया है ?

---

(1) ...كتاب العظمة، خلق آدم وحواء، ص ٣٧٥، حديث: ١٠٤٢-

(2) ...المواهب اللدنية، المقصد الاول، دقائق حقائق بعثته صلى الله عليه وسلم، ١/١١٢-

(3) ...تمهيد ابى شكور السالمى، الباب الثامن فى شرائط الايمان، القول الاول فى الايمان بالملائكة، ص ١١٢-

(4) ...البحر الرائق، كتاب السير، باب احكام المرتدين، ٥/٢٠٥-

(5) ...تفسير طبرى، پ ١، البقرة، تحت الآية: ٣٠، ١/٢٣٧، رقم: ٦٠٢-

जवाब हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : फ़िरिश्तों को नूर से, जिन्नात को आग के शो'ले से और हज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام को मिट्टी से पैदा किया गया।(1)

सुवाल जिन्नात की कितनी क़िस्में हैं ?

जवाब ह़दीसे पाक में है : जिन्नात की तीन क़िस्में हैं : (1) वोह जिन के पर होते हैं और वोह हवा में उड़ते हैं, (2) वोह जो सांप और कुत्ते की शक्ल में होते हैं और (3) वोह जो सफ़र करते और क़ियाम करते हैं।(2)

सुवाल इन्सानों के साथ रहने वाले जिन्न को क्या कहते हैं ?

जवाब इन्सानों के साथ रहने वाले जिन्न को "आ़मिर" कहते हैं।(3)

सुवाल जिन्नात क्या खाते हैं ?

जवाब जिन्नात की ख़ूराक "हड्डी और गोबर" है।(4) ह़दीस शरीफ़ में है कि जिन्नात हड्डी पर गोश्त और गोबर में दाने पाते हैं।(5)

सुवाल जिन्नात नमाज़ कहां पढ़ते हैं ?

जवाब ह़दीसे पाक में है कि तुम लोग ज़मीन के हमवार और चटयल हि़स्सों पर क़ज़ाए ह़ाजत न करो क्यूंकि येह जिन्नात के नमाज़ पढ़ने की जगह है।(6)

---

1 ...مسلم، کتاب الزھدوالرقائق، باب فی احادیث متفرقة، ص ۱۲۲۱، حدیث: ۷۴۹۵-
2 ...مستدرک حاکم، کتاب التفسیر، باب الجن ثلاثة اصناف، ۳/۲۵۴، حدیث: ۳۷۵۴-
3 ...لقط المرجان فی احکام الجان، ذکر وجودھم، ص ۲۵-
4 ...بخاری، کتاب مناقب الانصار، باب ذکر الجن ـــ الخ، ۲/۵۷۶، حدیث: ۳۸۶۰-
5 ...دلائل النبوة لابی نعیم، ص ۲۱۷، حدیث: ۲۶۲-
6 ...النھایة فی غریب الحدیث والاثر، باب القاف مع الراء، تحت اللفظ: قرع، ۴/۴۰-

सुवाल हमज़ाद कौन होता है ?

जवाब हमज़ाद शयातीन की एक क़िस्म है। येह हर वक़्त आदमी के साथ रहता है और मुत़लक़न काफ़िर मलऊने अब्दी है, सिवाए हुज़ूर नबिय्ये रह़मत صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के हमज़ाद के क्यूंकि वोह सोह़बते अक़्दस की बरकत से मुसलमान हो गया था।(1)

सुवाल जिन्नात में सब से ख़त़रनाक जिन्न कौन सा है ?

जवाब "इफ़रीत" सब से ख़त़रनाक और ख़बीस जिन्न है किसी से मानूस नहीं होता, जंगलात में रहता है उ़मूमन मुसाफ़िरों को दिखाई देता है और इन्हें रास्ते से भटकाता है।(2)

सुवाल हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में जिन्नों का क़ासिद किस शक्ल में और किस सबब से आया था ?

जवाब वोह क़ासिद एक बड़े अज़्दहे की शक्ल में आया था और वज्ह येह थी कि जिन्नात क़ुरआने पाक की एक सूरत भूल गए थे तो उन्हों ने इसे भेजा ताकि हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से वोह सूरत पूछ सके।(3)

सुवाल जिन्नात अपनी शक्लें किस त़रह़ तब्दील करते हैं ?

जवाब येह इस त़रह़ मुमकिन है कि **अल्लाह** तआ़ला उन को ऐसे अफ़्आ़ल या कलिमात सिखा दे जिन्हें वोह पढ़ें या करें तो एक

---

1 . . . مسلم، کتاب صفات المنافقین واحکامھم، باب تحریش الشیطان۔۔۔الخ، ص ۱۱۵۸، حدیث:۷۱۰۸۔

फ़तावा रज़विय्या, 21 / 216

2 . . . عمدۃ القاری، کتاب بدء الخلق، باب ذکر الجن وثوابھم وعقابھم، ۱۰ / ۶۴۴۔

3 . . . تاریخ جرجان، زیادات استدرکھا المؤلف من تاریخ استراباذ۔۔۔الخ، حرف العین، ص ۵۲۶۔

शक्ल से दूसरी शक्ल में मुन्तक़िल हो जाएं ।[1]

सुवाल क्या जिन्नात किसी जानवर की शक्ल में भी होते हैं ?

जवाब जी हां ! शारेहे बुख़ारी अ़ल्लामा बदरुद्दीन ऐ़नी ह़नफ़ी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْغَنِى फ़रमाते हैं कि बा'ज़ जिन्नात छिपकली और बा'ज़ कुत्ते की शक्ल में होते हैं ।[2]

सुवाल क्या जिन्नात भी इन्सानों से घबराते हैं ?

जवाब ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुजाहिद رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه से मरवी है : जितना तुम में से कोई शैत़ान से घबराता है शैत़ान उस से ज़ियादा तुम से घबराता है लिहाज़ा जब वोह तुम्हारे सामने आए तो उस से न घबराओ वरना वोह तुम पर मुसल्लत़ हो जाएगा बल्कि तुम उस पर सख़्ती करो वोह भाग जाएगा ।[3]

जन्नत

सुवाल हौज़े कौसर इस वक़्त कहां है और क़ियामत के दिन कहां होगा ?

जवाब हौज़े कौसर अभी जन्नत में है लेकिन क़ियामत के दिन उसे मैदाने मह़शर में लाया जाएगा ।[4]

सुवाल वोह पांच नहरें कौन सी हैं जिन को **अल्लाह** तआ़ला ने जन्नत से जारी फ़रमाया है ?

जवाब (1) सैहून (2) जैहून (3) दिजला (4) फ़ुरात (5) नील ।[5]

1 ...عمدۃ القاری، کتاب بدء الخلق، باب ذکر الجن وثوابھم وعقابھم، ۱۰/۲۴۴۔

2 ...عمدۃ القاری، کتاب بدء الخلق، باب ذکر الجن وثوابھم وعقابھم، ۱۰/۲۴۴۔

3 ...لقط المرجان فی احکام الجان، فی خوف الجن من الانس، ص ۱۸۴۔

4 ...روح البیان، البقرۃ، تحت الآیۃ: ۲۵، ۱/۸۳۔

5 ...تفسیر صاوی، پ۱۸، المؤمنون، تحت الآیۃ: ۱۸، ۴/۱۳۶۰۔

सुवाल जन्नत की दीवारें किस चीज़ की बनी हुई हैं ?

जवाब जन्नत की दीवारें सोने चांदी की ईंटों और मुश्क के गारे से बनी हैं।(1)

सुवाल जन्नत में दाख़िल होने वाले पहले और दूसरे गुरौह के चेहरे किस तरह़ रौशन होंगे ?

जवाब पहले गुरौह के चेहरे चौदहवीं रात के चांद की त़रह़ और दूसरे गुरौह के चेहरे निहायत रौशन सितारे की मानिन्द रौशन व चमकदार होंगे।(2)

सुवाल क्या अह्ले जन्नत खा पी कर क़ज़ाए ह़ाजत करेंगे ?

जवाब जन्नती जन्नत में खाएंगे और पियेंगे लेकिन न क़ज़ाए ह़ाजत करेंगे न नाक साफ़ करेंगे, इन का खाना एक डकार की सूरत में हज़्म हो जाएगा जो मुश्क की त़रह़ खुश्बूदार होगी।(3)

सुवाल दुन्या और जन्नत की शराब में क्या फ़र्क़ है ?

जवाब दुन्या की शराब में बदबू, कड़वाहट और नशा होता है, पीने वाले बे अ़क़्ल हो जाते हैं और आपे से बाहर हो कर बेहूदा बकते हैं जब कि जन्नत की पाकीज़ा शराब इन सब बातों से पाक व मुनज़्ज़ा है।(4)

सुवाल जन्नती जन्नत में कौन सी इ़बादत करेंगे ?

---

(1) ...البعث والنشور، باب ماجاء فی حائط الجنة وترابها وحصائها، ص ۱۷۹، حدیث: ۲۵۶-۲۵۷، مُلتقطاً۔

(2) ...بخاری، کتاب بدء الخلق، باب ماجاء فی صفة الجنة وانها مخلوقة، ۲/۳۹۳، حدیث: ۳۲۵۴۔

(3) ...مسلم، کتاب الجنة وصفة نعیمها واھلها، باب فی صفات الجنة ـــ الخ، ص ۱۱۶۵، حدیث: ۷۱۵۲۔

(4) ...تفسیر ابن کثیر، پ ۲۶، محمد، تحت الآیة: ۱۵، ۷/۲۸۹۔

जवाब अह्ले जन्नत की ज़बान पर हर वक़्त तस्बीह़ व तक्बीर मिस्ले सांस के जारी होगी और वोह तिलावते क़ुरआन भी करेंगे मगर येह तिलावत लज़्ज़त और तरक़्क़िये दरजात के लिये होगी।(1)

सुवाल क्या जन्नत में भी बाज़ार लगेगा ?

जवाब जी हां ! जन्नत में हर जुमुआ़ को एक बाज़ार लगेगा और उस में शिमाली हवा चलेगी जो जन्नतियों के चेहरों और कपड़ों पर लगेगी तो उन के हुस्नो जमाल में निखार पैदा हो जाएगा और वोह बहुत ज़ियादा ख़ूब सूरत हो जाएंगे।(2)

सुवाल जन्नत में अदना जन्नती को क्या इन्आ़म मिलेगा ?

जवाब अदना जन्नती के लिये 80 हज़ार ख़ादिम और 72 बीवियां होंगी और उन को ऐसे ताज मिलेंगे जिन का अदना मोती मशरिक़ और मग़रिब का दरमियान रौशन कर दे।(3)

सुवाल जन्नती बाहम मुलाक़ात के लिये किस क़िस्म की सुवारियों पर जाएंगे ?

जवाब जन्नती बाहम मिलना चाहेंगे तो एक का तख़्त दूसरे के पास चला जाएगा और एक रिवायत में है कि उन के पास निहायत आ'ला दरजे की सुवारियां और घोड़े लाए जाएंगे और उन पर सुवार हो कर जहां चाहेंगे जाएंगे।(4)

सुवाल कौन कौन से जानवर जन्नत में जाएंगे ?

---

(1) ...مسلم، کتاب الجنة وصفة...الخ، باب فی صفات الجنة، ص ۱۱۶۵، حدیث: ۷۱۵۲،
मिरआतुल मनाजीह़, 3 / 237

(2) ...مسلم، کتاب الجنة وصفة نعيمها واهلها، باب فی سوق الجنة...الخ، ص ۱۱۶۴، حدیث: ۷۱۴۶۔

(3) ...ترمذی، کتاب صفة الجنة، باب ما جاء ما لادنی اهل الجنة من الکرامة، ۴/ ۲۵۴، حدیث: ۲۵۷۱ ملتقطاً۔

(4) ...ترمذی، کتاب صفة الجنة، باب ما جاء فی صفة خیل الجنة، ۴/ ۲۴۴، حدیث ۲۵۵۳۔
الزهد لابن مبارک، ما رواه نعیم بن حماد...الخ، باب فی صفة الجنة...الخ، ص ۶۹، حدیث: ۲۳۹۔

जवाब दस जानवर जन्नत में जाएंगे । (1) सरकारे दो आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ऊंटनी (2) ह़ज़रते सालेह़ عَلَيْهِ السَّلَام की ऊंटनी (3) ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام का बछड़ा (4) ह़ज़रते इस्माईल عَلَيْهِ السَّلَام का मेंढा (5) ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام की गाए (6) ह़ज़रते यूनुस عَلَيْهِ السَّلَام की मछली (7) ह़ज़रते उ़ज़ैर عَلَيْهِ السَّلَام का दराज़ गोश (8) ह़ज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام की च्यूंटी (9) बिल्क़ीस की ख़बर लाने वाला हुद हुद (10) अस्ह़ाबे कह्फ़ का कुत्ता ।[1]

सुवाल आ'राफ़ क्या है ?

जवाब येह जन्नत व दोज़ख़ के दरमियान एक जगह का नाम है, जिन की नेकियां और गुनाह बराबर होंगे या जिन शुहदा के वालिदैन उन से नाराज़ होंगे या वोह जिन के मां बाप में से कोई एक उन से राज़ी और एक नाराज़ होगा उन्हें यहां रखा जाएगा ।[2] नीज़ सह़ीह़ व राजेह़ क़ौल के मुत़ाबिक़ मुसलमान जिन्नात भी आ'राफ़ में रहेंगे ।[3]

दोज़ख़

सुवाल जहन्नम अपने से पनाह मांगने वाले के मुतअ़ल्लिक़ क्या कहता है ?

जवाब ह़दीसे पाक में है कि जो बन्दा जहन्नम से पनाह मांगता है तो जहन्नम कहता है : ऐ रब ! येह मुझ से पनाह मांगता है तू इस को पनाह दे ।[4]

---

1 ...تفسیر روح البیان، پ ۱۵، الکھف، تحت الآیۃ: ۱۸، ۵/۲۲۶۔
غمز عیون البصائر، الفن الثالث وھو فن الجمع والفرق، فوائد وقواعد شتی، ۳/ ۲۳۹۔

2 ...تفسیر درمنثور، پ ۸، الاعراف، تحت الآیۃ: ۴۸، ۳/ ۴۶۴-۴۶۵ ملتقطاً

3 .....नुज़्हतुल क़ारी, 4 / 351

4 ...مسند اسحاق، مسند ابی ھریرۃ، ۱/ ۲۴۹، حدیث: ۲۱۳۔

सुवाल क्या जन्नत व दोज़ख़ के भी ज़मीनो आस्मान हैं ?

जवाब जी हां ! जन्नत व दोज़ख़ चूंकि फ़ज़ा या ख़ला में नहीं हैं इस लिये जन्नत व दोज़ख़ वालों के लिये किसी ऐसी चीज़ का होना ज़रूरी है जिस पर वोह बैठे या ठहरे हुए हों और उन के लिये कोई साएबान हो जिस के साए में वोह लोग हों और वोह चीज़ ज़मीनो आस्मान हैं और वोह इस दुन्या के ज़मीनो आस्मान से मुख़्तलिफ़ हैं तो जिस त़रह़ जन्नत व दोज़ख़ हमेशा रहेंगे इसी त़रह़ उन के ज़मीनो आस्मान भी हमेशा रहेंगे।(1)

सुवाल जहन्नम की आग की चिंगारियां कितनी ऊंची होंगी ?

जवाब जहन्नम के शरारे ऊंचे ऊंचे मह़लों की बराबर उड़ेंगे, गोया ज़र्द ऊंटों की क़त़ार कि पैहम आते रहेंगे।(2)

सुवाल फ़िरिश्ते जिन गुर्ज़ों से जहन्नमियों को मारेंगे उन का वज़्न कितना होगा ?

जवाब लोहे के ऐसे भारी गुर्ज़ों से फ़िरिश्ते मारेंगे कि अगर कोई गुर्ज़ ज़मीन पर रख दिया जाए तो तमाम जिन्नो इन्स जम्अ़ हो कर भी उस को उठा नहीं सकते।(3)

सुवाल जहन्नमी सांप और बिच्छू के एक मरतबा डसने का असर कितने अ़र्से तक रहेगा ?

जवाब ह़दीसे पाक में है : दोज़ख़ में बुख़्ती ऊंट के बराबर सांप हैं येह सांप एक मरतबा किसी को काटे तो इस का दर्द और ज़हर चालीस बरस तक रहेगा। और दोज़ख़ में पालान बन्धे हुए ख़च्चरों के मिस्ल बिच्छू हैं जिन के एक मरतबा काटने का दर्द

---

(1).....तफ़्सीर सिरातुल जिनान, पारह 12, हूद, तह़्तुल आयत : 108, 4 / 500

(2)...پ ۳۰، المرسلٰت: ۳۲، ۳۳۔

(3)...مسند امام احمد، مسند ابی سعید الخدری، ۴/۵۸، حدیث: ۱۱۲۳۳۔

चालीस साल तक रहेगा ।(1)

सुवाल जहन्नम में कुफ़्फ़ार को पहनाई जाने वाली ज़न्जीर के बारे में बताइये ?

जवाब अगर जहन्नमियों की ज़न्जीर की एक कड़ी दुन्या के पहाड़ों पर रख दी जाए तो वोह कांपने लगें और उन्हें क़रार न हो यहां तक कि नीचे की ज़मीन तक धंस जाएं ।(2)

सुवाल जहन्नम में कुफ़्फ़ार के रोने की कैफ़िय्यत क्या होगी ?

जवाब जहन्नम में कुफ़्फ़ार गधे की आवाज़ की त़रह़ चिल्ला कर रोएंगे ।(3), इब्तिदा में आंसू निकलेंगे, जब आंसू ख़त्म हो जाएंगे तो ख़ून रोएंगे, रोते रोते गालों में ख़न्दक़ों की मिस्ल गढ़े पड़ जाएंगे, रोने का ख़ून और पीप इस क़दर होगा कि अगर इस में कश्तियां डाली जाएं तो चलने लगें ।(4)

सुवाल जहन्नम में कुफ़्फ़ार की शक्लें कैसी होंगी ?

जवाब जहन्नमियों की शक्लें ऐसी करीहा होंगी कि अगर दुन्या में कोई जहन्नमी उसी सूरत पर लाया जाए तो तमाम लोग उस की बद सूरती और बदबू की वज्ह से मर जाएं ।(5)

सुवाल क्या जहन्नम में कुफ़्फ़ार की शक्लें इन्सानी शक्लों की त़रह़ होंगी ?

जवाब कुफ़्फ़ार की शक्ल जहन्नम में इन्सानी शक्ल न होगी कि येह शक्ल अह़सने तक़्वीम है ।(6) और येह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को मह़बूब

---

1 ...مسند امام احمد، مسند الشاميين، ۶/۲۱۶، حديث: ۱۷۷۲۹-

2 ...معجم اوسط، ۲/۷۸، حديث: ۲۵۸۳-

3 ...شرح السنة، كتاب الفتن، باب صفة النار واهلها، ۷/۵۶۵، حديث: ۴۳۱۶-

4 ...ابن ماجه، كتاب الزهد، باب صفة النار، ۴/۵۳۱، حديث: ۴۳۲۴-

5 ...موسوعة ابن ابی الدنيا، كتاب الرقة والبكاء، ۳/۱۹۰، رقم: ۱۰۴-

6 ...پ ۳۰، التين: ۴-

है कि उस के मह़बूब की शक्ल से मुशाबेह है।[1]

सुवाल जहन्नम में काफ़िरों की जसामत की कैफ़िय्यत क्या होगी ?

जवाब कुफ़्फ़ार का जिस्म इतना बड़ा कर दिया जाएगा कि एक शाने से दूसरे तक तेज़ रफ़्तार सुवार के लिये तीन दिन की मसाफ़त बनेगी।[2] एक एक दाढ़ उहुद पहाड़ के बराबर होगी, खाल की मोटाई 42 ज़िराअ़ (गज़) होगी।[3] और ज़बान एक, दो फ़रसख़ (तीन से छे मील) तक मुंह से बाहर घिसटती होगी कि लोग उस को रौंदेंगे।[4]

सुवाल सब से सख़्त अ़ज़ाब का मुस्तह़िक़ कौन होगा ?

जवाब बारगाहे रिसालत में अ़र्ज़ की गई : सब से सख़्त अ़ज़ाब किसे दिया जाएगा तो हुज़ूर नबिय्ये मुकर्रम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : वोह शख़्स जो किसी नबी को या ऐसे शख़्स को क़त्ल करे जो उसे किसी भलाई का हुक्म दे या बुराई से रोके।[5]

सुवाल जहन्नमियों के लिये ग़म बालाए ग़म का वक़्त कौन सा होगा ?

जवाब जब जहन्नम में सिर्फ़ वोही रह जाएंगे जिन को हमेशा के लिये उस में रहना है, उस वक़्त जन्नत व दोज़ख़ के दरमियान मौत को मेंढे की त़रह़ ला कर खड़ा करेंगे, फिर मुनादी जहन्नमियों को पुकारेगा, वोह ख़ुश होते हुए झांकेंगे कि शायद इस मुसीबत से रिहाई हो जाए, फिर उन सब से पूछेगा कि इसे पहचानते हो ? सब कहेंगे : हां ! येह मौत है, वोह ज़ब्ह़ कर दी जाएगी और कहेगा :

---

1 .....बहारे शरीअ़त हिस्सा अव्वल, 1 / 170

2 ...بخاری، کتاب الرقاق، باب صفۃ الجنۃ والنار، ۴/ ۲۶۰، حدیث: ۶۵۵۱۔

3 ...ترمذی، کتاب صفۃ جہنم، باب ماجاء فی عظم اھل النار، ۴/ ۲۶۰، حدیث: ۲۵۸۶۔

4 ...ترمذی، کتاب صفۃ جہنم، باب ماجاء فی عظم اھل النار، ۴/ ۲۶۱، حدیث: ۲۵۸۹۔

5 ...مسندبزار، مسندابی عبیدۃ بن الجراح، ۴/ ۱۰۹، حدیث: ۱۲۸۵۔

ऐ अहले नार ! हमेशगी है, अब मौत नहीं । उस वक़्त उन के लिये ग़म बालाए ग़म होगा ।(1)

आलमे बरज़ख़

सुवाल बरज़ख़ से मुराद क़ब्र है या वोह ज़माना जो बा'द मरने से क़ियामत या ह़श्र तक है ?

जवाब न क़ब्र न वोह ज़माना बल्कि वोह मक़ामात जिन में अरवाह़ बा'दे मौत ह़श्र तक ह़स्बे मरातिब रहती हैं ।(2)

सुवाल वोह कौन सा वक़्त है जब हर शख़्स पर इस्लाम की ह़क़्क़ानिय्यत वाज़ेह़ हो जाती है ?

जवाब जब ज़िन्दगी का वक़्त पूरा हो जाता है, उस वक़्त ह़ज़रते इज़राईल عَلَيْهِ السَّلَام क़ब्ज़े रूह़ के लिये आते हैं और उस शख़्स के दाएं बाएं जहां तक निगाह काम करती है फ़िरिश्ते दिखाई देते हैं, मुसलमान के आस पास रह़मत के फ़िरिश्ते होते हैं और काफ़िर के दाएं बाएं अ़ज़ाब के ।(3) उस वक़्त हर शख़्स पर इस्लाम की ह़क़्क़ानिय्यत आफ़्ताब से ज़ियादा रौशन हो जाती है, मगर उस वक़्त का ईमान मो'तबर नहीं ।(4)

सुवाल नज़्अ़ के वक़्त ईमान लाना क्यूं फ़ाएदे मन्द नहीं है ?

---

1 ...بخاری، کتاب التفسیر، باب قولہ انذرھم یوم الحسرۃ، ۳/۲۷۱، حدیث:۴۷۳۰۔
بخاری، کتاب الرقاق، باب صفۃ الجنۃ والنار، ۴/۲۶۰، حدیث:۶۵۴۸۔

2 .....मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत, स. 455

3 ...مسند امام احمد، مسند الکوفیین، ۶/۴۱۳، حدیث:۱۸۵۵۹۔

4 ...تفسیر طبری، پ۲۴، المومن، تحت الآیۃ:۸۵، ۱۱/۸۳۔

जवाब क्यूंकि हुक्म ईमान बिल ग़ैब का है और अब ग़ैब न रहा, बल्कि येह चीजें मुशाहदे में आ गईं।[1]

सुवाल दफ़्न के बा'द मुर्दे के साथ क्या मुआमलात पेश आते हैं ?

जवाब जब दफ़्न करने वाले दफ़्न कर के वहां से चलते हैं मुर्दा उन के जूतों की आवाज़ सुनता है।[2], उस वक़्त उस के पास दो फ़िरिश्ते अपने दांतों से ज़मीन चीरते हुए आते हैं[3], उन की शक्लें निहायत डरावनी और हैबतनाक होती हैं[4], उन के बदन का रंग सियाह[5] और आंखें नीली[6] और देग के बराबर और शो'ला ज़न होती हैं[7] और उन के हैबतनाक बाल सर से पाउं तक[8] और उन के दांत गाए के सींग बराबर[9], जिन से ज़मीन चीरते हुए आएंगे[10], उन में एक को मुन्कर और दूसरे को नकीर कहते हैं[11], मुर्दे को

1.....बहारे शरीअ़त, हिस्सा अव्वल, 1 / 100

2 . . . بخاری، کتاب الجنائز، باب ماجاء فی عذاب القبر، ۱/۴۶۳، حدیث: ۱۳۷۴۔

3 . . . اثبات عذاب القبر للبیھقی، باب تخویف اھل الایمان بعذاب القبر، ص۸۱، حدیث: ۱۰۴۔

4 . . . احیاء علوم الدین، کتاب قواعد العقائد، معنی الکلمۃ الثانیۃ ـــ الخ، ۱/۱۲۷۔

5 . . . اثبات عذاب القبر للبیھقی، باب تخویف اھل الایمان بعذاب القبر، ص۸۱، حدیث: ۱۰۴۔

6 . . . ترمذی، کتاب الجنائز، باب ماجاء فی عذاب القبر، ۲/۳۳۷، حدیث: ۱۰۷۳۔

7 . . . معجم اوسط، ۳/۲۹۲، حدیث: ۴۶۲۹۔

8 . . . اثبات عذاب القبر للبیھقی، باب تخویف اھل الایمان بعذاب القبر، ص۸۱، حدیث: ۱۰۴۔
شرح الصدور، باب فتنۃ القبر وسوال الملکین، حدیث ابن عباس، ص۱۲۲۔

9 . . . معجم اوسط، ۳/۲۹۲، حدیث: ۴۶۲۹۔

10 . . . اثبات عذاب القبر للبیھقی، باب تخویف اھل الایمان بعذاب القبر، ص۸۱، حدیث: ۱۰۴۔

11 . . . ترمذی، کتاب الجنائز، باب ماجاء فی عذاب القبر، ۲/۳۳۷، حدیث: ۱۰۷۳۔

झन्झोड़ते और झिड़क कर उठाते और निहायत सख़्ती के साथ करख़्त आवाज़ में सुवाल करते हैं।[1]

सुवाल अगर मुर्दे को दफ़्न न किया गया तो क्या उस से भी सुवालाते क़ब्र होंगे ?

जवाब मुर्दा अगर क़ब्र में दफ़्न न किया जाए तो जहां पड़ा रह गया या फेंक दिया गया, ग़र्ज़ कहीं हो उस से वहीं सुवालात होंगे और वहीं सवाब या अ़ज़ाब उसे पहुंचेगा यहां तक कि जिसे शेर खा गया तो शेर के पेट में सुवालात होंगे और सवाब व अ़ज़ाब जो कुछ हो पहुंचेगा।[2]

सुवाल अ़ज़ाब फ़क़त रूह़ पर होता है या जिस्म पर भी होता है ?

जवाब रूह़ व जिस्म दोनों पर होता है। यूंही सवाब भी दोनों पर होता है।[3]

सुवाल मरने के बा'द अच्छे और बुरे आ'माल राह़त और अज़िय्यत का ज़रीआ़ कैसे बनेंगे ?

जवाब गुनहगारों के आ'माल अपने मुनासिब शक्ल पर मुतशक्किल हो कर कुत्ता या भेड़िया या किसी और शक्ल के बन कर उन को ईज़ा पहुंचाएंगे और नेकों के आ'माले ह़सना मक़्बूल व मह़बूब सूरत पर मुतशक्किल हो कर उन्हें उन्स व राह़त देंगे।[4]

सुवाल क्या मुर्दा कलाम भी करता है ?

जवाब जी हां ! मुर्दा कलाम भी करता है और उस के कलाम को आ़म

---

1 ...اثبات عذاب القبر للبیهقی، باب تخویف اهل الایمان بعذاب القبر، ص ۸۱، حدیث: ۱۰۴۔

2 ...حدیقة ندیة، الفصل الثالث فی بیان الاقتصاد فی العمل، عذاب القبر حق، ۱/۲۶۶۔

3 ...شرح العقیدة الطحاویة، الایمان بعذاب القبر ونعیمه، ص ۴۰۰۔

4 .....बहारे शरीअ़त, हिस्सा अव्वल, 1 / 111 ब तग़य्युर क़लील।

इन्सानों और जिन्नात के सिवा तमाम हैवानात वग़ैरा सुनते हैं।[1]

सुवाल क़ब्र का हिसाब कब से शुरूअ़ हुवा ?

जवाब हिसाबे क़ब्र हमारे हुज़ूर (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) के ज़माने से शुरूअ़ हुवा पिछली उम्मतों में न था न उन से (उन की क़ब्रों में) अपने नबी की पहचान कराई जाती थी।[2]

सुवाल वोह कौन से अफ़राद हैं जिन से क़ब्र का हिसाब नहीं होता ?

जवाब जिन लोगों से क़ब्र का हिसाब नहीं होगा वोह येह हैं : (1) नबी (2) सिद्दीक़ (3) शहीद (4) जिहाद की तय्यारी करने वाला (5) ताऊ़न में मरने वाला (6) ताऊ़न के इलावा किसी और बीमारी में मरने वाला जब कि सब्र करे और सवाब की निय्यत करे (7) छोटे बच्चे (8) जुमुआ़ के दिन या रात में मरने वाला (9) हर रात सूरए मुल्क पढ़ने वाला, एक क़ौल के मुताबिक़ सूरए حٰمٓ اَلسَّجْدَۃ की तिलावत करने वाला और (10) मरज़े मौत में "قُلْ هُوَ اللّٰهُ" पढ़ने वाला।[3]

सुवाल क्या हिसाबे क़ब्र और अ़ज़ाबे क़ब्र एक ही चीज़ है ?

जवाब जी नहीं ! हिसाबे क़ब्र और है, अ़ज़ाबे क़ब्र कुछ और, बा'ज़ लोग हिसाबे क़ब्र में कामयाब होंगे मगर बा'ज़ गुनाहों की वज्ह से अ़ज़ाब में मुब्तला, जैसे चुग़लख़ोर और गन्दा (या'नी पेशाब के छींटों से न बचने वाला)।[4]

---

1 . . . بخاری، کتاب الجنائز، باب کلام المیت علی الجنازۃ، ۱/ ۲۵۴، حدیث: ۱۳۸۰۔

2 .....मिरआतुल मनाजीह़, 1 / 125

3 . . . ردالمحتار، کتاب الصلاۃ، باب صلاۃ الجنازۃ، ۳/ ۹۵۔

4 .....मिरआतुल मनाजीह़, 1 / 125

सुवाल क़ियामत के अ़ज़ाब व सवाब और क़ब्र के अ़ज़ाब व सवाब में क्या फ़र्क़ है ?

जवाब ह़श्र के बा'द बन्दों को जन्नत या दोज़ख़ में दाख़िल फ़रमा कर सवाब या अ़ज़ाब दिया जाएगा, बरज़ख़ में जन्नत दोज़ख़ का सवाब व अ़ज़ाब क़ब्र में पहुंचता है जिस्मे मय्यित वहां नहीं पहुंचता, लिहाज़ा दोनों अ़ज़ाबों सवाबों में फ़र्क़ है। अ़ज़ाबे क़ब्र रूह़ को है जिस्म उस के ताबेअ़ मगर ह़श्र के बा'द वाला अ़ज़ाब सवाब रूह़ व जिस्म दोनों को होगा।(1)

क़ियामत की निशानियां

सुवाल क़ुर्बे क़ियामत के वक़्त कौन सी चीज़ें ज़मीन से उठा ली जाएंगी ?

जवाब (1) क़ुरआने मजीद (पहले मुस्ह़फ़ों से इस के बा'द लोगों के दिलों से) (2) तमाम उ़लूम (3) ह़जरे अस्वद (4) मक़ामे इब्राहीम (5) ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा عَلَيْهِ السَّلَام का ताबूत और (6) सैहून, जैहून, दिजला, फ़ुरात और नील, येह पांच नहरें। जब येह तमाम चीज़ें रूए ज़मीन से उठा ली जाएंगी तो लोग दीनो दुन्या की भलाइयों से मह़रूम हो जाएंगे।(2)

सुवाल क़ियामत से कितने साल पहले तमाम मुसलमानों की रूह़ क़ब्ज़ कर ली जाएगी ?

जवाब क़ियामत से चालीस साल क़ब्ल तमाम मुसलमानों की रूह़ क़ब्ज़ कर ली जाएगी और वोह इस त़रह़ कि एक ख़ुश्बूदार ठन्डी हवा चलेगी जिस से तमाम मुसलमान फ़ौत हो जाएंगे।(3)

---

1 .....मिरआतुल मनाजीह़, 1 / 126

2 ...التفسیر الوسیط، پ۱۸، المؤمنون، تحت الآیۃ:۱۸، ۳/۲۸۶-۲۸۷۔

عمدۃ القاری، کتاب الحج، تحت الحدیث:۱۵۹۱، ۷/۱۵۵۔

3 ...مسلم، کتاب الفتن۔۔۔الخ، باب ذکر الدجال۔۔۔الخ، ص۱۲۰۱، حدیث:۷۳۷۳،

बहारे शरीअ़त, हिस्सा अव्वल, 1 / 127

सुवाल क्या कोई ऐसा ज़माना भी आएगा कि जब किसी के हां औलाद पैदा न होगी ?

जवाब जी हां ! क़रीबे क़ियामत हज़रते सय्यिदुना ईसा عَلَيْهِ السَّلَام की वफ़ात के बा'द जब तमाम मुसलमानों की रूह क़ब्ज़ कर ली जाएगी तब ऐसा ज़माना आएगा जिस में किसी के औलाद न होगी ।(1)

सुवाल क़ुर्बे क़ियामत में किस हस्ती के सांस की ख़ुश्बू ह़द्दे निगाह तक पहुंचेगी ?

जवाब हज़रते सय्यिदुना ईसा عَلَيْهِ السَّلَام की सांस की ख़ुश्बू वहां तक पहुंचेगी जहां तक उन की नज़र जाएगी ।(2)

सुवाल इमाम मेहदी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه कब और कहां ज़ुहूर फ़रमाएंगे ?

जवाब रमज़ानुल मुबारक के महीने में ह़रम शरीफ़ में ज़ाहिर होंगे ।(3)

सुवाल याजूज माजूज कौन हैं ?

जवाब हज़रते सय्यिदुना नूह़ عَلَيْهِ السَّلَام के बेटे याफ़स बिन नूह़ की औलाद में से एक बड़े फ़सादी गुरौह का नाम याजूज माजूज है, येह बेह़द जंगजू, ख़ूं ख़्वार, वह़शी व जंगली जानवरों की त़रह़ रहते हैं । मौसिमे बहार में अपने ग़ारों से निकल कर तमाम खेतियां और सब्ज़ियां खा जाते और ख़ुश्क चीज़ें लाद कर ले जाते थे और येह आदमियों और जंगली जानवरों तक को खा जाते थे । हज़रते ज़ुलक़रनैन ने दीवार (सद्दे सिकन्दरी) बना कर इन को एक जगह क़ैद कर दिया था ।(4)

---

1 .....बहारे शरीअ़त, हिस्सा अव्वल, 1 / 127

2 ...ترمذی، کتاب الفتن، باب ماجاء فی فتنۃ الدجال، ۴/ ۱۰۴، حدیث: ۲۲۴۷۔

3 ...مرقاۃ المفاتیح، کتاب الفتن، باب اشراط الساعۃ، ۹/ ۳۶۲، تحت الحدیث: ۵۴۲۱،
बहारे शरीअ़त, हिस्सा अव्वल, 1 / 124

4 ...التذکرۃ، باب ماجاء فی نقب یاجوج وماجوج۔۔۔الخ، ص ۲۳۷ - ۲۳۸۔

सुवाल याजूज माजूज का फ़सादी गुरौह किस सबब से "सद्दे सिकन्दरी" तोड़ डालेगा ?

जवाब जब इस दीवार के टूटने का वक़्त आएगा तो उन में से कोई कहेगा कि अब चलो اِنْ شَآءَ الله تَعَالٰی कल इस दीवार को तोड़ डालेंगे। उन लोगों के اِنْ شَآءَ الله تَعَالٰی कहने के सबब दूसरे दिन दीवार टूट जाएगी और येह क़ुर्बे क़ियामत में होगा।(1)

सुवाल याजूज माजूज का ख़ुरूज कब होगा ?

जवाब दज्जाल को क़त्ल करने के बा'द ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा عَلَيْهِ السَّلَام को हुक्मे इलाही होगा कि मुसलमानों को कोहे तूर पर ले जाओ। मुसलमानों के कोहे तूर पर जाने के बा'द याजूज व माजूज ज़ाहिर होंगे।(2)

सुवाल याजूज माजूज किस सबब से हलाक होंगे ?

जवाब ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा عَلَيْهِ السَّلَام की दुआ़ से इन लोगों की गर्दनों में कीड़े पैदा हो जाएंगे और येह सब हलाक हो जाएंगे।(3)

सुवाल याजूज माजूज की हलाकत के बा'द दुन्या के क्या ह़ालात होंगे ?

जवाब ऐसी बारिश होगी कि ज़मीन को हमवार कर छोड़ेगी, ज़मीन को हुक्म होगा कि अपने फल उगा और अपनी बरकतें उगल दे और आस्मान को हुक्म होगा कि अपनी बरकतें उंडेल दे तो ह़ालत येह होगी कि एक अनार एक गुरौह खाएगा और उस के छिलके के साए में 10 आदमी बैठेंगे और दूध में येह बरकत होगी कि एक

---

(1) . . . تفسیر یحیی بن سلام، پ ۱۷، الانبیاء، تحت الآیۃ: ۹۶، ص ۳۴۲۔

(2) . . . الفتن لنعیم بن حماد، خروج یاجوج وماجوج، ص ۵۸۴، حدیث: ۱۶۳۳۔

(3) . . . مسلم، کتاب الفتن واشراط الساعۃ، باب ذکر الدجال وصفتہ ومامعہ، ص ۱۲۰۱، حدیث: ۷۳۷۳۔

ऊंटनी का दूध जमाअ़त को काफ़ी होगा, एक गाए का दूध क़बीले भर को और एक बकरी का ख़ानदान भर को किफ़ायत करेगा।(1)

सुवाल क़ियामत की निशानी सूरज के मग़रिब से तुलूअ़ होने के बा'द क्या होगा ?

जवाब इस निशानी के ज़ाहिर होते ही तौबा का दरवाज़ा बन्द हो जाएगा और उस वक़्त का इस्लाम मो'तबर नहीं होगा।(2)

सुवाल पहली बार सूर फूंकने के बा'द जब सब कुछ फ़ना हो जाएगा तो **अल्लाह** तआ़ला क्या फ़रमाएगा ?

जवाब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाएगा : ﴿لِمَنِ الْمُلْكُ الْيَوْمَ﴾ आज किस की बादशाहत है ? कहां हैं जब्बारीन ? कहां हैं मुतकब्बिरीन ? मगर है कौन जो जवाब दे, फिर ख़ुद ही फ़रमाएगा : ﴿لِلّٰهِ الْوَاحِدِ الْقَهَّارِ ﴿۱۶﴾﴾(پ۲۴، المؤمن:۱۶) सिर्फ़ **अल्लाह** वाहिदे क़ह्हार की सल्त़नत है।(3)

क़ियामत

सुवाल क़ियामत और ह़श्र में क्या फ़र्क़ है ?

जवाब क़ियामत से मुराद साअ़त है, कभी इसे क़ियामत भी कहते हैं। साअ़त व ह़श्र के दरमियान जो ज़माना है उसे مَا بَيْنَ النَّفْخَتَيْن (या'नी दो सूर फूंके जाने का दरमियानी ज़माना) कहते हैं, ह़श्र

1 ...مسلم، کتاب الفتن واشراط الساعة، باب ذکر الدجال وصفته ومامعه، ص ۱۲۰۱، حدیث:۷۳۷۳۔

बहारे शरीअ़त, हिस्सा अव्वल, 1 / 125

2 ...ابن ماجه، کتاب الفتن، باب طلوع الشمس من مغربها، ۴/۳۹۵، حدیث:۴۰۷۰۔

3 ...تفسیر قرطبی، پ۲۴، المؤمن، تحت الآیة:۱۶، ۸/۲۱۹، الجزء الخامس عشر، مُلتقطاً۔

इस के चालीस बरस बा'द होगा।[1]

सुवाल मैदाने महशर में हज़रते सय्यिदुना आदम عَلَيْهِ السَّلَام को क्या हुक्म दिया जाएगा ?

जवाब आप عَلَيْهِ السَّلَام को हुक्म होगा : "दोज़ख़ियों की जमाअत अलग करो।" वोह अ़र्ज़ करेंगे : कितनों में से कितने ? इरशाद होगा : "हर हज़ार में से नौ सो निनानवे।"[2]

सुवाल उम्मते मुहम्मदिया में से कितने अफ़राद बे हिसाब जन्नत में दाख़िल होंगे ?

जवाब ह़दीस शरीफ़ में है : 70 हज़ार अफ़राद बे हिसाब जन्नत में दाख़िल होंगे जिन में से हर एक के साथ मज़ीद 70 हज़ार होंगे।[3]

सुवाल क़ियामत में लोगों को नामए आ'माल किस त़रह़ दिया जाएगा ?

जवाब नेक लोगों को सीधे हाथ में और गुनहगारों को बाएं हाथ में।[4] और काफ़िर का सीना तोड़ कर उस का बायां हाथ पीछे की त़रफ़ निकाल कर पीठ के पीछे से दिया जाएगा।[5]

सुवाल रोज़े महशर हर शै के मुतअ़ल्लिक़ कितने और कौन कौन से सुवाल होंगे ?

जवाब बरोज़े क़ियामत हर शै के बारे में तीन सुवाल होंगे : (1) तुम ने येह चीज़ किस त़रह़ ह़ासिल की ? (2) इसे कहां ख़र्च किया और (3) किस निय्यत से ख़र्च किया ?[6]

---

1 .....मल्फ़ूज़ाते आ'ला हज़रत, स. 456

2 ...بخاری، کتاب احادیث الانبیاء، باب قصۃ یاجوج وماجوج، ۲/۴۱۹، حدیث: ۳۳۴۸۔

3 ...مسند امام احمد، حدیث عبدالرحمٰن بن ابی بکر، ۱/۴۱۹، حدیث: ۱۷۰۶۔

4 ...پ ۲۹، الحاقۃ: ۱۹، ۲۵، ابن ماجہ، کتاب الزھد، باب ذکر البعث، ۴/۵۰۲، حدیث: ۴۲۷۷، ماخوذاً۔

5 ...تفسیر قرطبی، پ ۳۰، الانشقاق، تحت الآیۃ: ۱۰، ۱۹/۱۹۲۔

6 ...منہاج العابدین، الباب الثالث العقبۃ الثالثۃ وھی عقبۃ العوائق، الفصل الخامس فی البطن وحفظہ، ص ۹۱۔

सुवाल नामए आ'माल तोले जाते वक़्त नेकी का पलड़ा भारी होने का क्या मत़्लब है ?

जवाब नेकी का पलड़ा भारी होने के येह मा'ना हैं कि ऊपर उठे, दुन्या का सा मुआ़मला नहीं कि जो पलड़ा भारी होता है नीचे को झुकता है।(1)

सुवाल पुले सिरात़ से लोग किस त़रह़ गुज़रेंगे ?

जवाब अपने आ'माल के मुत़ाबिक़ पुले सिरात़ पर लोग मुख़्तलिफ़ त़रह़ से गुज़रेंगे, बा'ज़ तो ऐसे तेज़ी के साथ गुज़रेंगे जैसे बिजली का कूंदा कि अभी चमका और अभी ग़ाइब हो गया और बा'ज़ तेज़ हवा की त़रह़, कोई ऐसे जैसे परिन्द उड़ता है, बा'ज़ जैसे घोड़ा दौड़ता है और बा'ज़ जैसे आदमी दौड़ता है, यहां तक कि कुछ लोग सुरीन पर घिसटते हुए और कुछ च्यूंटी की चाल चल कर जाएंगे।(2)

सुवाल क़ियामत की कितनी क़िस्में हैं ?

जवाब क़ियामत तीन क़िस्म की है : **क़ियामते सुग़रा :** येह मौत है। مَنْ مَاتَ قَامَتْ قِيَامَتُه या'नी जो मर गया उस की क़ियामत हो गई।"(3) दूसरी **क़ियामते वुस्त़ा :** वोह येह कि एक क़र्न (या'नी एक ज़माने) के तमाम लोग फ़ना हो जाएं और दूसरे क़र्न के नए लोग पैदा हो जाएं। तीसरी **क़ियामते कुब्रा :** या'नी लोगों का सज़ा जज़ा के लिये उठना।(4)

सुवाल क़ियामत के दिन कौन किस की शफ़ाअ़त करेगा ?

जवाब तमाम अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام अपनी उम्मत की शफ़ाअ़त फ़रमाएंगे(5),

---

1 . . . تکمیل الایمان، درسوال اطفال مومنین اختلاف است، ص ۷۸۔

2 . . . مسلم، کتاب الایمان، باب معرفة طریق الرؤیة، ص ۹۷، حدیث: ۴۵۴۔

3 . . . موسوعة ابن ابی الدنیا، کتاب ذکر الموت، باب الخوف من اللہ تعالی، ۵/۴۴۷، حدیث: ۱۷۳۔

4 . . . مجمع بحار الانوار، حرف القاف، باب القاف مع الواو تحت اللفظ: قوم، ۴/۳۵۱۔

5 . . . معجم اوسط، ۲/۲۰۹، حدیث: ۳۰۴۴۔

औलियाए इज़ाम[1], शुहदा[2], उ़लमाए किराम[3], हुफ़्फ़ाज़[4], हुज्जाज[5] बल्कि हर वोह शख़्स जिस को कोई मन्सबे दीनी इनायत हुवा वोह अपने मुतअ़ल्लिक़ीन की शफ़ाअ़त करेगा।[6] यूं ही नाबालिग़ी में फ़ौत हो जाने वाले बच्चे अपने मां बाप की शफ़ाअ़त करेंगे।[7]

सुवाल मक़ामे महमूद की कुछ तफ़्सील बताइये ?

जवाब येह वोह जगह है जहां हुज़ूर صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم दुल्हा बनाए जाएंगे, सारे अव्वलीन व आख़िरीन, कुफ़्फ़ार व मोमिनीन, अम्बिया व मुर्सलीन, बल्कि खुद रब्बुल आ़लमीन (جَلَّ جَلَالُہٗ) हुज़ूर (صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) की ऐसी ता'रीफ़ें करेंगे जो आज हमारे ख़याल व वहम से वरा हैं, वोह मक़ाम न मा'लूम कैसा अ़ज़ीमुश्शान है जिस का रब ने क़ुरआन शरीफ़ में ए'लान फ़रमाया और हम लोगों को हर अज़ान के बा'द इस की दुआ़ मांगने का हुक्म दिया गया, इसी मक़ाम पर हुज़ूर صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم "**शफ़ाअ़ते कुब्रा**" फ़रमाएंगे और यहीं से हुज़ूर صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के हाथ पर "**दरवाज़ए शफ़ाअ़त**" खुलेगा।[8]

1.....बहारे शरीअ़त, हिस्सा अव्वल, 1 / 139

2 . . . ابوداود، کتاب الجهاد، باب فی الشهید یشفع، ۳/ ۲۲، حدیث: ۲۵۲۲۔

3 . . . شعب الایمان، باب فی طلب العلم، فصل فی فضل العلم وشرفه، ۲/ ۲۶۸، حدیث: ۱۷۱۷۔

4 . . . ابن ماجه، کتاب السنة، باب فی فضل من تعلم القران وعلمه، ۱/ ۱۴۱، حدیث: ۲۱۶۔

5 . . . مسند بزار، مسند ابی موسی الاشعری، ۸/ ۱۲۹، حدیث: ۳۱۹۶۔

6 . . . ترمذی، کتاب صفة القیامة، باب ۱۲، ۴/ ۱۹۹، حدیث: ۲۴۴۸، معجم کبیر، ۸/ ۲۷۵، حدیث: ۸۰۵۹۔

7 . . . تاریخ ابن عساکر، رقم ۲۱۹۱، رکن بن عبد الله مکحول، ۱۸/ ۱۹۳، حدیث: ۴۲۲۷۔

8.....मिरआतुल मनाजीह़, 1 / 412

सुवाल हौज़े कौसर के औसाफ़ बयान कीजिये ?

जवाब येह एक हौज़ है जिस की तह मुश्क या'नी कस्तूरी की है, याक़ूत और मोतियों पर जारी है, दोनों कनारे सोने के हैं और उन पर मोतियों के गुम्बद नस्ब हैं, इस के कूज़े आस्मान के सितारों से ज़ियादा हैं, इस का पानी दूध से ज़ियादा सफ़ेद, शहद से ज़ियादा शीरीं, मुश्क से ज़ियादा खुश्बूदार है। जो एक मरतबा पियेगा फिर कभी प्यासा न होगा। **अल्लाह** तआ़ला ने येह हौज़ अपने ह़बीबे अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को अ़ता फ़रमाया है। हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم इस से अपनी उम्मत को सेराब फ़रमाएंगे।[1]

सुवाल रोज़े मह़शर रह़मते आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के हम पर क्या एह़सानात होंगे ?

जवाब क़ियामत के दिन सख़्त गर्मी के आ़लम में शदीद प्यास के वक़्त (हुज़ूर रह़मतुल्लिल आ़लमीन, ख़ातमुन्नबिय्यीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) रब्बे क़ह्हार عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में हमारे लिये सर सजदे में रखेंगे और उम्मत की बख़्शिश की दर ख़्वास्त करेंगे। कहीं उम्मतियों के नेकियों के पलड़े भारी करेंगे, कहीं पुले सिरात़ से सलामती से गुज़ारेंगे, कहीं हौज़े कौसर से सेराब करेंगे, कभी जहन्नम में गिरे हुए उम्मतियों को निकाल रहे होंगे, किसी के दरजात बुलन्द फ़रमा रहे होंगे, खुद रोएंगे हमें हंसाएंगे, खुद ग़मगीन होंगे हमें खुशियां अ़ता फ़रमाएंगे, अपने नूरानी आंसूओं से उम्मत के गुनाह धोएंगे।[2]

---

1 ...ترمذی، کتاب التفسیر، باب من سورۃ الکوثر، ۵/۲۶۳-۲۳۷، حدیث:۳۳۷۰، ۳۳۷۱۔
بخاری، کتاب الرقاق، باب فی الحوض، ۴/۲۶۷، حدیث:۶۵۷۹ ملتقطا۔

2 .....तफ़्सीर सिरातुल जिनान, पारह 4, आले इमरान, तह़्तुल आयत : 164, 2 / 87

ईमान व कुफ़्र

सुवाल इन्सान पर सब से अव्वलीन व अहम तरीन फ़र्ज़ क्या है ?

जवाब सब से अव्वलीन फ़र्ज़ येह है कि इन्सान बुन्यादी अक़ाइद का इल्म ह़ासिल करे, जिस से आदमी सह़ीह़ुल अक़ीदा सुन्नी बनता है और जिन के इन्कार व मुख़ालफ़त से काफ़िर या गुमराह हो जाता है।(1)

सुवाल अह़ादीसे करीमा में ईमान व कुफ़्र को जांचने का क्या मे'यार बयान किया गया है ?

जवाब हु़ज़ूर ताजदारे ख़त्मे नुबुव्वत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया :

لَا يُؤْمِنُ أَحَدُكُمْ حَتّٰى أَكُونَ أَحَبَّ إِلَيْهِ مِنْ وَّالِدِهٖ وَوَلَدِهٖ وَالنَّاسِ أَجْمَعِيْنَ

तर्जमा : तुम में से कोई भी उस वक़्त तक मोमिन नहीं हो सकता जब तक मैं उस के नज़्दीक उस के वालिदैन, औलाद और तमाम लोगों से ज़ियादा मह़बूब न हो जाऊं।(2) और दलाइलुल ख़ैरात शरीफ़ की रिवायत है : लोगों के ईमान व कुफ़्र में मक़ामो मर्तबे की पहचान का मे'यार येह है कि जिस क़दर वोह मुझे मह़बूब जानेंगे ईमान के नज़्दीक होंगे और जिस क़दर मुझ से बुग़्ज़ रखेंगे ईमान से दूर और कुफ़्र के नज़्दीक होंगे। ख़बरदार ! उस का ईमान नहीं जिसे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब से प्यार नहीं।(3)

सुवाल कौन सा शख़्स ईमान की ह़लावत को पा सकता है ?

जवाब हु़ज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जिस शख़्स में तीन बातें होंगी वोह ईमान की ह़लावत पा लेगा : (1) तमाम

1 .....माख़ूज़ अज़ फ़तावा रज़विय्या, 23 / 623

2 . . . بخاری، کتاب الایمان، باب حب الرسول من الایمان، ۱/۱۷، حدیث: ۱۵۔

3 . . . دلائل الخیرات مع شرحہ مطالع المسرات، فصل فی فضل الصلاۃ علی النبی، ص ۷۵۔

मख़्लूक़ात से बढ़ कर अल्लाह तआला और उस के रसूल से महब्बत करता हो। (2) अल्लाह तआला ही के लिये किसी से महब्बत करे। (3) कुफ़्र की त़रफ़ लौटने को ऐसा बुरा जाने जैसे आग में डाले जाने को बुरा जानता है।(1)

सुवाल वोह कौन सा शख़्स है जिस के नज़्अ़ के वक़्त सल्बे ईमान का ख़त़रा है ?

जवाब वलिय्ये कामिल, मुजद्दिदे आ'ज़म, आ'ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن ने फ़रमाया : उ़लमाए किराम फ़रमाते हैं जिस को सल्बे ईमान का ख़ौफ़ न हो मरते वक़्त उस का ईमान सल्ब हो जाने का अन्देशा है।(2)

सुवाल ईमान की ह़िफ़ाज़त के कुछ औराद बताइये ?

जवाब मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत सफ़ह़ा 311 पर है : इक्तालीस बार सुब्ह़ को یَاحَیُّ یَاقَیُّوْمُ لَآاِلٰهَ اِلَّآ اَنْتَ अव्वल व आख़िर दुरूद शरीफ़ नीज़ सोते वक़्त अपने सब औराद के बा'द सूरए काफ़िरून रोज़ाना पढ़ लिया कीजिये, इस के बा'द कलाम वग़ैरा न कीजिये हां अगर ज़रूरत हो तो कलाम करने के बा'द फिर सूरए काफ़िरून तिलावत कर लें कि ख़ातिमा इसी पर हो, اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ ख़ातिमा ईमान पर होगा और तीन बार सुब्ह़ और तीन बार शाम इस दुआ़ का विर्द रखें : اَللّٰھُمَّ اِنَّا نَعُوْذُبِكَ مِنْ اَنْ نُّشْرِكَ بِكَ شَيْاً نَّعْلَمُهٗ وَنَسْتَغْفِرُكَ لِمَا لَا نَعْلَمُ۔(3)

सुवाल क़ुरआने पाक में सब जानवरों में बदतर किन लोगों को क़रार दिया गया है ?

जवाब कुफ़्र करने वालों को, चुनान्चे इरशादे बारी तआला है :

1 ...مسلم، کتاب الایمان، باب بیان خصال من اتصف...الخ، ص۴۷، حدیث:۱۶۵۔

2 .....मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत, स. 495

3 ...مسند امام احمد، مسند الکوفیین، ۷/۱۴۲، حدیث:۱۹۶۲۵، मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत, स. 311

﴿اِنَّ شَرَّ الدَّوَآبِّ عِنْدَ اللّٰهِ الَّذِیْنَ كَفَرُوْا فَهُمْ لَا یُؤْمِنُوْنَ﴾ (پ۱۰، الانفال:۵۵)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक सब जानवरों में बदतर **अल्लाह** के नज़्दीक वोह हैं जिन्हों ने कुफ़्र किया और ईमान नहीं लाते।

सुवाल ईमान और नेक आ'माल पर साबित क़दमी में रुकावट बनने वाली चन्द चीज़ें बयान कीजिये ?

जवाब (1) इल्मे दीन से बहरा वर न होना। (2) मस्जिद में हाज़िर होने से कतराना। (3) ज़बान की हिफ़ाज़त न करना। (4) कुफ़्र और गुनाहों के ज़रीए अपनी जानों पर ज़ुल्म करना। (5) काफ़िरों बद मज़्हबों और फ़ासिक़ो फ़ाजिर लोगों की सोहबत इख़्तियार करना। (6) नफ़्सानी ख़्वाहिशात की लज़्ज़त हासिल करने की हिर्स होना। (7) मसाइबो आलाम और आज़्माइशों पर सब्र न करना। (8) **अल्लाह** तआ़ला की रहमत से मायूस होना। (9) लम्बी उम्मीदें रखना और (10) दुन्या में रग़बत रखना वग़ैरा।[1]

सुवाल वोह कौन से गुनाह हैं जिन की बख़्शिश नहीं ?

जवाब शिर्क व कुफ़्र कभी न बख़्शे जाएंगे या'नी जिस की मौत कुफ़्र व शिर्क पर हो उस की हरगिज़ मग़फ़िरत न होगी। इन के सिवा **अल्लाह** तआ़ला जिस गुनाह को चाहेगा अपने महबूब बन्दों की शफ़ाअ़त से या महज़ अपने करम से बख़्श देगा।[2]

सुवाल क्या दिल में किसी कुफ़्रिय्या बात का ख़याल आने से इन्सान काफ़िर हो जाता है ?

जवाब कुफ़्रिय्या बात का दिल में ख़याल पैदा हो और ज़बान से बोलना बुरा जानता है तो येह कुफ़्र नहीं बल्कि ख़ास ईमान की अ़लामत है

---

1 .....तफ़्सीर सिरातुल जिनान, पारह 12, हूद, तह़्तुल आयत : 112, 4 / 506

2 ...پ۵، النساء:۴۸،
बुन्यादी अ़क़ाइद और मा'मूलाते अहले सुन्नत, स. 53, फ़तावा रज़विय्या, 30 / 79 मुल्तक़तन।

कि दिल में ईमान न होता तो इसे बुरा क्यूं जानता।[1]

सुवाल जबान फिसलने के सबब कुफ़्रिय्या बात मुंह से निकल गई तो क्या हुक्म है ?

जवाब कहना कुछ चाहता था और ज़बान से कुफ़्र की बात निकल गई तो काफ़िर न हुवा या'नी जब कि इस अम्र से इज़्हारे नफ़रत करे कि सुनने वालों को भी मा'लूम हो जाए कि ग़लती से येह लफ़्ज़ निकला है और अगर बात की पच की (या'नी बात पर अड़ गया) तो अब काफ़िर हो गया कि कुफ़्र की ताईद करता है।[2]

सुवाल किसी शख़्स को अपने ईमान में शक हो तो ऐसे के बारे में क्या हुक्म है ?

जवाब जिस शख़्स को अपने ईमान में शक हो या'नी कहता है कि मुझे अपने मोमिन होने का यक़ीन नहीं या कहता है मा'लूम नहीं मैं मोमिन हूं या काफ़िर वोह काफ़िर है। हां अगर उस का मत्लब येह हो कि मा'लूम नहीं मेरा ख़ातिमा ईमान पर होगा या नहीं तो काफ़िर नहीं। जो शख़्स ईमान व कुफ़्र को एक समझे या'नी कहता है कि सब ठीक है ख़ुदा को सब पसन्द है वोह काफ़िर है। यूंही जो शख़्स ईमान पर राज़ी नहीं या कुफ़्र पर राज़ी है वोह भी काफ़िर है।[3]

सुवाल किसी काफ़िर को मुसलमान करने का त़रीक़ा बताइये ?

जवाब काफ़िर को मुसलमान करने के लिये पहले उसे उस के बात़िल मज़हब से तौबा करवाई जाए मसलन मुसलमान होने का ख़्वाहिश मन्द क्रिस्चैन है तो उस से कहिये कि कहो : "मैं क्रिस्चैन मज़हब से तौबा करता हूं।" जब वोह येह कह ले फिर उसे कलिमए

1.....बुन्यादी अक़ाइद और मा'मूलाते अह्ले सुन्नत, स. 63

2.....बुन्यादी अक़ाइद और मा'मूलाते अह्ले सुन्नत, स. 63

3.....बुन्यादी अक़ाइद और मा'मूलाते अह्ले सुन्नत, स. 65

तृय्यिबा या कलिमए शहादत पढ़ाइये अगर अ़रबी नहीं जानता तो जो भी ज़बान समझता हो उसी ज़बान में तर्जमा भी कहलवा लीजिये अगर वोह अ़रबी कलिमा नहीं पढ़ पा रहा तो उसी की ज़बान में उस से शहादतैन का इक़रार बा आवाज़ करवा लीजिये या'नी वोह कह दे कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई भी इबादत के लाइक़ नहीं, मुहम्मद صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के रसूल हैं। इस त़रह से वोह शख़्स मुसलमान हो जाएगा।(1)

विलायत

सुवाल : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने औलियाए किराम की क्या शान बयान फ़रमाई है ?

जवाब : इरशादे बारी तआ़ला है :

﴿اَلَآ اِنَّ اَوْلِیَآءَ اللّٰهِ لَا خَوْفٌ عَلَیْهِمْ وَ لَا هُمْ یَحْزَنُوْنَ﴾ (پ ۱۱، یونس:۶۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : सुन लो बेशक अल्लाह के वलियों पर न कुछ ख़ौफ़ है न कुछ ग़म।

सुवाल : औलियाए किराम से अ़दावत रखने वालों के लिये ह़दीस में क्या वई़द आई है ?

जवाब : ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला इरशाद फ़रमाता है : "जो मेरे किसी वली से दुश्मनी करे, मेरा उस के साथ ए'लाने जंग है।"(2)

सुवाल : वली की अ़लामत क्या है ?

जवाब : ह़दीसे पाक में है : वली वोह है जिस को देखने से अल्लाह عَزَّوَجَلَّ याद आए।(3)

---

(1).....कुफ़्रिय्या कलिमात के बारे में सुवाल जवाब, स. 551

(2)...بخاری، کتاب الرقاق، باب التواضع، ۴/۲۴۸، حدیث:۶۵۰۲۔

(3)...مسند امام احمد، من حدیث اسماء ابنۃ یزید، ۱۰/۴۴۲، حدیث:۲۷۶۷۰۔

सुवाल ख़ास विलायत किन लोगों को ह़ासिल है ?

जवाब ख़ास विलायत (अह्ले त़रीक़त में) उन लोगों के लिये मख़्सूस है जो फ़ना फ़िश्शैख़ के ज़रीए फ़ना फ़िर्रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हो कर फ़ना फ़िल्लाह हो गए।(1)

सुवाल क़ुरआने करीम से औलियाए किराम की करामात बयान कीजिये ?

जवाब क़ुरआने पाक में वलियों की करामात का ज़िक्र मौजूद है, मसलन ह़ज़रते सय्यिदतुना मरयम رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْهَا के पास बे मौसिम के फल आने वाला वाक़िआ।(2) ह़ज़रते सय्यिदतुना मरयम رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْهَا के खजूर के सूखे तने को हिलाने पर पकी हुई उ़म्दा और ताज़ा खजूरें गिरने वाला वाक़िआ।(3) ह़ज़राते अस्ह़ाबे कह्फ़ رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْهِم का ग़ार में सेंकड़ों साल तक सोए रहने वाला वाक़िआ।(4) और ह़ज़रते आसफ़ बिन बरख़िया رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه का पलक झपकने से पहले मीलों दूर से तख़्त लाने वाला वाक़िआ।(5) येह सब वाक़िआत वली से करामात ज़ाहिर होने की दलील हैं।

सुवाल औलियाए किराम को लोगों में पोशीदा रखने की क्या ह़िक्मत है ?

जवाब अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने अपने वली को लोगों में इस लिये पोशीदा रखा ताकि लोग सब मुसलमानों की ता'ज़ीम करें।(6)

1.....आदाबे मुर्शिदे कामिल, स. 125

2 ...پ۳، اٰل عمران:۳۷۔

3 ...پ۱۶، مریم:۲۵۔

4 ...پ۱۵، الکھف:۱۱۔

5 ...پ۱۹، النمل:۴۰۔

6 ...تفسیر کبیر، پ۳۰، القدر تحت الآیۃ:۱، ۱۱/۲۲۹۔

सुवाल विलायत कस्बी है या अ़ताई ?

जवाब विलायत या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का मुक़र्रब व मक़्बूल बन्दा होना मह़ज़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का अ़तिय्या है जो कि मौला करीम عَزَّوَجَلَّ अपने बरगुज़ीदा बन्दों को अपने फ़ज़्लो करम से नवाज़ता है । हां इ़बादत व रियाज़त भी कभी कभी इस का ज़रीआ़ बन जाती है और बा'ज़ों को इब्तिदाअन भी मिल जाती है ।(1)

सुवाल क्या वली होने के लिये करामत का ज़ुहूर ज़रूरी है ?

जवाब अक्सर औलियाए किराम से करामात ज़ाहिर होती हैं, औलियाए किराम अपनी विलायत और करामात को छुपाते हैं, हां जब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से हुक्म पाते हैं तो ज़ाहिर कर देते हैं । इस का मत़लब येह हरगिज़ नहीं कि जिस से करामत ज़ाहिर न हो वोह वली ही नहीं ।(2)

सुवाल फ़ैज़ाने औलिया हम तक किस त़रह़ पहुंचता है ?

जवाब औलियाउल्लाह की मह़ब्बत दोनों जहानों की सआ़दत और रिज़ाए इलाही का सबब है । इन की बरकत से **अल्लाह** तआ़ला मख़्लूक़ की ह़ाजतें पूरी करता है । इन की दुआ़ओं से मख़्लूक़ फ़ाएदा उठाती है । इन के मज़ारों की ज़ियारत, इन के उ़र्सों में शिर्कत से बरकात ह़ासिल होती हैं, इन के वसीले से दुआ़ करना क़बूलिय्यत का ज़रीआ़ है । इन की सीरतों से रहनुमाई ह़ासिल कर के गुमराही से बच कर सिराते़ मुस्तक़ीम पर इस्तिक़ामत के साथ चला जा सकता है, इन की पैरवी करने में नजात है ।(3)

1.....बुन्यादी अ़क़ाइद और मा'मूलाते अहले सुन्नत, स. 83
2.....बुन्यादी अ़क़ाइद और मा'मूलाते अहले सुन्नत, स. 84
3.....बुन्यादी अ़क़ाइद और मा'मूलाते अहले सुन्नत, स. 85

सुवाल मज़ाराते औलियाए किराम पर हाज़िरी देना और उन्हें पुकारना कैसा है ?

जवाब औलियाए किराम के मज़ारात पर हाज़िरी मुसलमान के लिये सआदत व बाइसे बरकत है।(1) और इन को दूरो नज़्दीक से पुकारना सलफ़ सालेह का तरीक़ा है।(2)

सुवाल खुद को शरई अह़कामात से आज़ाद जानने वालों के मुतअ़ल्लिक़ ह़ज़रते जुनैद बग़दादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِى ने क्या फ़रमाया है ?

जवाब ह़ज़रते सय्यिदुत्ताइफ़ा जुनैद बग़दादी رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ से अ़र्ज़ की गई : कुछ लोग ज़ो'म (गुमान) करते हैं कि अह़कामे शरीअ़त तो वुसूल (खुदा तआ़ला तक पहुंचने) का वसीला थे और हम वासिल हो गए (पहुंच गए) अब हमें शरीअ़त की क्या ह़ाजत ? (आप ने) फ़रमाया : सच कहते हैं वासिल ज़रूर हुए, कहां तक ? जहन्नम तक, चोर और ज़ानी ऐसे अ़क़ीदे वालों से बेहतर हैं, मैं अगर हज़ार बरस जियूं तो फ़राइज़ो वाजिबात तो बड़ी चीज़ हैं जो नवाफ़िल व मुस्तह़ब्बात मुक़र्रर कर लिये हैं बे उ़ज़्रे शरई उन में से कुछ कम न करूं।(3)

सुवाल शरीअ़त, त़रीक़त, ह़क़ीक़त और मा'रिफ़त में क्या फ़र्क़ है ?

जवाब आ'ला ह़ज़रत, इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : शरीअ़त, त़रीक़त, ह़क़ीक़त, मा'रिफ़त में बाहम अस्लन कोई इख़्तिलाफ़ नहीं, इस का मुद्दई (या'नी इन चारों को अलग अलग समझने का दा'वेदार) अगर बे समझे कहे तो निरा जाहिल है और

1.....फ़तावा रज़विय्या, 29 / 282

2.....बहारे शरीअ़त, हि़स्सा अव्वल, 1 / 275

3...اليواقيت والجواهر، المبحث السادس والعشرون، ص ٢٠٦-

समझ कर कहे तो गुमराह, बद दीन । शरीअ़त हुज़ूरे अक़्दस सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के अक़्वाल हैं और त़रीक़त हुज़ूर के अफ़्आ़ल और ह़क़ीक़त हुज़ूर के अह़वाल और मा'रिफ़त हुज़ूर के उ़लूमे बे मिसाल ।(1)

शरई इस्त़िलाह़ात

सुवाल फ़र्ज़े ए'तिक़ादी किसे कहते हैं ?

जवाब फ़र्ज़े ए'तिक़ादी वोह है जो ऐसी दलील से साबित हो जिस में कोई शुब्हा न हो इस का इन्कार करने वाला अइम्मए ह़नफ़िय्या के नज़्दीक मुत़लक़न काफ़िर है और अगर वोह ऐसा मस्अला हो जिस की फ़रज़िय्यत दीने इस्लाम के हर आ़मो ख़ास पर रौशन व वाज़ेह़ हो जब तो इस के मुन्किर के काफ़िर होने पर ऐसा इजमाए़ क़त़ई है कि जो इस के कुफ़्र में शक करे वोह ख़ुद भी काफ़िर है और जो किसी फ़र्ज़े ए'तिक़ादी को जान बूझ कर बिग़ैर किसी सह़ीह़ शरई उ़ज़्र के एक बार भी छोड़े वोह फ़ासिक़, गुनाहे कबीरा का मुर्तकिब और अ़ज़ाबे नार का ह़क़दार है जैसे नमाज़, रुकूअ़, सुजूद वग़ैरा ।(2)

सुवाल फ़र्ज़े किफ़ाया क्या होता है ?

जवाब फ़र्ज़े किफ़ाया वोह होता है जो कुछ लोगों के अदा करने से सब की जानिब से अदा हो जाता है और कोई भी अदा न करे तो सब गुनाहगार होते हैं । जैसे नमाज़े जनाज़ा वग़ैरा ।(3)

1.....फ़तावा रज़विय्या, 21 / 460
2.....माख़ूज़ अज़ बहारे शरीअ़त, हिस्सा 2, 1 / 282
3.....वक़ारुल फ़तावा, 2 / 57

सुवाल वाजिब किसे कहते हैं ?

जवाब ऐसा काम जिस को करना ज़रूरी हो और इस का सुबूत दलीले ज़न्नी से हो, इस का मुन्किर गुमराह बे दीन है।(1)

सुवाल सुन्नते मुअक्कदा और ग़ैर मुअक्कदा की क्या ता'रीफ़ है ?

जवाब सुन्नते मुअक्कदा वोह काम जिसे हुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हमेशा फ़रमाया हो अलबत्ता बयाने जवाज़ के लिये कभी तर्क भी फ़रमाया हो, इस का नादिरन छोड़ने वाला भी इताब का मुस्तहिक़ और आदतन छोड़ने वाला अज़ाब का मुस्तहिक़ है। जब कि सुन्नते ग़ैर मुअक्कदा वोह काम जिस को छोड़ना शरीअ़ते मुतहहरा की नज़र में नापसन्द हो, चाहे उस पर हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हमेशगी फ़रमाई हो या नहीं, इस को छोड़ना शरीअ़त को नापसन्द है लेकिन छोड़ने वाला इताब का मुस्तहिक़ नहीं।(2)

सुवाल मुस्तहब के क्या मा'ना हैं ?

जवाब मुस्तहब वोह कि नज़रे शरअ़ में पसन्द हो मगर तर्क पर कुछ नापसन्दी न हो, ख़्वाह खुद हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इसे किया या इस की तरग़ीब दी या उ़लमाए किराम ने पसन्द फ़रमाया अगर्चे अहादीस में इस का ज़िक्र न आया।(3)

सुवाल इस्तिलाहे शरअ़ में मुबाह किसे कहते हैं ?

जवाब जिस के करने और छोड़ने दोनों की इजाज़त हो, न इस में

1.....माख़ूज़ अज़ फ़तावा फ़क़ीहे मिल्लत, 1 / 204
2.....माख़ूज़ अज़ बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 2, 1 / 283
3.....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 2, 1 / 283

सवाब है न इस में अ़ज़ाब है।(1)

सुवाल क्या जाइज़ व मुबाह़ काम मुस्तह़ब बन सकता है ?

जवाब जी हां ! आ'ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : हर मुबाह़ निय्यते ह़सन (या'नी अच्छी निय्यत) से मुस्तह़ब हो जाता है।(2)

सुवाल ह़रामे क़त़ई की वज़ाह़त कीजिये ?

जवाब वोह अ़मल जिस की मुमानअ़त दलीले क़त़ई से लुज़ूमन साबित हो, येह फ़र्ज़ का मुक़ाबिल है।(3)

सुवाल मकरूहे तह़रीमी और मकरूहे तन्ज़ीही में क्या फ़र्क़ है ?

जवाब मकरूहे तह़रीमी येह वाजिब का मुक़ाबिल है इस के करने से इबादत नाक़िस हो जाती है और करने वाला गुनहगार होता है अगर्चे इस का गुनाह ह़राम से कम है और चन्द बार इस का इरतिकाब (गुनाहे) कबीरा है। जब कि मकरूहे तन्ज़ीही वोह काम है जिस का करना शरअ़ को पसन्द नहीं मगर इस ह़द तक नहीं कि इस पर वई़दे अ़ज़ाब फ़रमाए। येह सुन्नते ग़ैर मुअक्कदा के मुक़ाबिल है।(4)

सुवाल इसाअत किसे कहते हैं ?

जवाब वोह ममनूए़ शरई जिस की मुमानअ़त की दलील ह़राम और मकरूहे तह़रीमी जैसी तो नहीं मगर इस का करना बुरा है, येह सुन्नते मुअक्कदा के मुक़ाबिल है।(5)

1.....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 16, 3 / 358

2.....फ़तावा रज़विय्या, 8 / 452

3...ردالمحتار، کتاب الطهارة، مطلب فی الفرض القطعی والظنی، ۱/۲۱۵ماخوذاً، बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 2, 1 / 283

4.....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 2, 1 / 283

5.....हमारा इस्लाम, स. 195 ردالمحتار، کتاب الطهارة، مطلب فی السنة وتعریفها، ۱/۲۳۰، ماخوذاً

सुवाल शरई मा'ज़ूर कौन होता है ?

जवाब वोह शख़्स जिस को कोई ऐसी बीमारी हो कि एक वक़्त पूरा ऐसा गुज़र गया कि वुज़ू के साथ नमाज़े फ़र्ज़ अदा न कर सका तो वोह मा'ज़ूर है [1] ।[2]

सुवाल शरई इस्तिलाह़ में "ह़द" से क्या मुराद है ?

जवाब ह़द एक क़िस्म की सज़ा है जिस की मिक़्दार शरीअ़त की जानिब से मुक़र्रर है कि उस में कमी बेशी नहीं हो सकती इस से मक़्सूद लोगों को ऐसे काम से बाज़ रखना है जिस की येह सज़ा है और जिस पर ह़द क़ाइम की गई वोह जब तक तौबा न करे मह़ज़ ह़द क़ाइम करने से पाक न होगा ।[3]

तहारत

सुवाल हर शख़्स को त़हारत के किस क़दर मसाइल व अह़काम सीखना ज़रूरी हैं ?

जवाब हर आ़क़िल व बालिग़ मुसलमान मर्द व औ़रत के लिये त़हारत के वोह अह़काम सीखने फ़र्ज़े ऐन हैं जिन से नमाज़ दुरुस्त हो सके ।[4]

सुवाल इमाम ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِى ने त़हारत के कितने मरातिब बयान फ़रमाए हैं ?

जवाब हुज्जतुल इस्लाम इमाम मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِى फ़रमाते हैं : त़हारत के 4 मरातिब हैं : (1) अपने ज़ाहिर को अह़दास

1.....मा'ज़ूरे शरई के अह़काम जानने के लिये दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 499 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब "नमाज़ के अह़काम" के सफ़ह़ा 43 ता 46 का मुत़ालआ़ फ़रमा लीजिये ।

2...درمختار مع ردالمحتار، کتاب الطھارۃ، باب الحیض، مطلب فی احکام المعذور، ۱ / ۵۵۴۔

3.....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 7, 2 / 362

4.....नजासतों का बयान मअ़ कपड़े पाक करने का त़रीक़ा, स. 1

(या'नी नापाकियों और नजासतों) से पाक करना (2) आ'ज़ा को जराइम और गुनाहों से पाक करना (3) अपने दिल को बुरे अख़्लाक़ से पाक करना और (4) अपने बातिन को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ग़ैर से पाक रखना।(1)

सुवाल दिल की त़हारत किस त़रह़ ह़ासिल होती है ?

जवाब हुज्जतुल इस्लाम इमाम मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِى इरशाद फ़रमाते हैं : ज़ाहिरी वुज़ू कर लेने वाले को येह बात याद रखनी चाहिये कि दिल की त़हारत (या'नी सफ़ाई) तौबा करने और गुनाहों को छोड़ने और उ़म्दा अख़्लाक़ अपनाने से होती है। जो शख़्स दिल को गुनाहों की आलूदगियों से पाक नहीं करता फ़क़त़ ज़ाहिरी त़हारत (या'नी सफ़ाई) और ज़ेबो ज़ीनत पर इक्तिफ़ा करता है उस की मिसाल उस शख़्स की सी है जो बादशाह को मदऊ़ करता है और अपने घर बार को बाहर से ख़ूब चमकाता है और रंगो रोग़न करता है मगर मकान के अन्दरूनी हिस्से की सफ़ाई पर कोई तवज्जोह नहीं देता। फिर जब बादशाह उस के मकान के अन्दर आ कर गन्दगियां देखेगा तो वोह नाराज़ होगा या राज़ी येह हर ज़ी शुऊ़र खुद समझ सकता है।(2)

सुवाल घर से वुज़ू कर के फ़र्ज़ नमाज़ के लिये मस्जिद में जाने वाले का क्या इन्आ़म है ?

जवाब ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ से मरवी है कि हुज़ूर ताजदारे दो जहान صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जो शख़्स अपने घर में त़हारत (या'नी वुज़ू व ग़ुस्ल) कर के फ़र्ज़

---

1 . . . لباب الاحیاء، الباب الثالث فی اسرار الطهارة، ص ۴۹۔

2 . . . احیاء علوم الدین، کتاب الطهارة، القسم الثانی فی طهارة الاحداث، ۱/ ۱۸۵، ماخوذا۔

अदा करने के लिये मस्जिद को जाता है तो एक क़दम पर एक गुनाह मिट जाता है और दूसरे पर एक दरजा बुलन्द होता है।(1) और एक ह़दीस शरीफ़ में येह फ़रमाया : जो त़हारत कर के अपने घर से फ़र्ज़ नमाज़ के लिये निकला उस का अज्र ऐसा है जैसा एह़राम वाले ह़ाजी का।(2)

सुवाल रात में उठ कर त़हारत कर के दुआ़ मांगने की क्या फ़ज़ीलत है ?

जवाब हु़ज़ूरे पुरनूर, शाफ़ेए़ यौमुन्नुशूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : मेरा जो उम्मती रात को बेदार हो कर खुद को त़हारत की त़रफ़ माइल करता है ह़ालांकि उस पर शैत़ान गिरहें लगा चुका होता है, जब वोह अपने हाथ धोता है तो एक गिरह खुल जाती है, जब वोह चेहरा धोता है तो दूसरी गिरह खुल जाती है, जब वोह अपने सर का मस्ह़ करता है तो तीसरी गिरह खुल जाती है और जब वोह पाउं धोता है तो चौथी गिरह खुल जाती है तब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हि़जाब के पीछे मौजूद फ़िरिश्तों से फ़रमाता है : "देखो मेरे इस बन्दे को जो खुद को मुझ से सुवाल करने पर माइल करता है येह बन्दा मुझ से जो कुछ मांगेगा वोह इसे अ़त़ा किया जाएगा।"(3)

सुवाल क्या त़हारत के बा'द बच जाने वाले पानी से वुज़ू किया जा सकता है ?

जवाब त़हारत के बचे हुए पानी से वुज़ू कर सकते हैं, बा'ज़ लोग जो इस को फेंक देते हैं येह न चाहिये (या'नी ऐसा नहीं करना चाहिये क्यूंकि ऐसा करना) इसराफ़ में दाख़िल है।(4)

---

1 ...مسلم، کتاب المساجد، باب المشی الصلاۃ تمحی بہ...الخ، ص ۲۶۳، حدیث: ۱۵۲۱۔

2 ...ابوداود، کتاب الصلاۃ، باب ماجاء فی فضل المشی الی الصلاۃ، ۱/ ۲۳۱، حدیث: ۵۵۸۔

3 ...ابن حبان، کتاب الطہارۃ، باب فضل الوضوء، ۲/ ۱۹۴، حدیث: ۱۰۴۹۔

4 .....माख़ूज़ अज़ फ़तावा रज़विय्या, 4 / 575

सुवाल वोह कौन सा हौज़ है जो मुकम्मल भरा हो तो नापाक है लेकिन कम भरा हो तो पाक है ?

जवाब कोई हौज़ ऐसा है कि ऊपर से तंग और नीचे से कुशादा है या'नी ऊपर दह दर दह (या'नी सौ हाथ / पच्चीस गज़ / दो सौ पच्चीस फ़ुट) नहीं और नीचे दह दर दह या ज़ियादा है अगर ऐसा हौज़ ऊपर तक भरा हुवा हो और नजासत पड़े तो नापाक है, फिर अगर उस का पानी घट गया और वोह दह दर दह हो गया तो पाक हो गया।(1)

सुवाल अगर जिस्म या कपड़े से कुत्ता छू जाए तो क्या हुक्म है ?

जवाब कुत्ता बदन या कपड़े से छू जाए तो अगर्चे उस का जिस्म तर हो बदन और कपड़ा पाक है, हां अगर उस के बदन पर नजासत लगी हो तो और बात है या उस का लुआ़ब लगे तो नापाक कर देगा।(2)

सुवाल इन्सानी जिस्म से निकलने वाली रतूबत कब पाक है ?

जवाब जो रतूबत इन्सानी बदन से निकले और वुज़ू न तोड़े वोह नजिस नहीं। मसलन ख़ून या पीप बह कर न निकले या थोड़ी कै़ (उल्टी) कि मुंह भर न हो पाक है।(3) ख़ारिश या फुड़ियों में अगर बहने वाली रतूबत न हो सिर्फ़ चिपक हो और कपड़ा इस से बार बार छू कर चाहे कितना ही सन जाए पाक है।(4)

सुवाल मश्कूक पानी से क्या मुराद है ?

---

1 ...فتاوی ھندیۃ، کتاب الطھارۃ، الباب الثالث فی المیاہ، ۱/۱۹۔

2 ...فتاوی ھندیۃ، کتاب الطھارۃ، الباب السابع فی النجاسۃ واحکامھا، ۱/۴۸۔

3 ...درمختار مع ردالمحتار، کتاب الطھارۃ، مطلب فی حکم کی الحمصۃ، ۱/۲۹۴۔

4 .....माख़ूज़ अज़ फ़तावा रज़विय्या, 1 / 280

जवाब इस से मुराद वोह पानी है जिस के वुज़ू के क़ाबिल होने में शक हो। गधे, ख़च्चर का जूठा मश्कूक है, लिहाज़ा इस से वुज़ू नहीं हो सकता क्यूंकि बे वुज़ू होना यक़ीनी है और यक़ीनी नापाकी मश्कूक चीज़ से ज़ाइल नहीं हो सकती।(1)

सुवाल मश्कूक पानी का हुक्म बयान कीजिये ?

जवाब अच्छा पानी होते हुए मश्कूक से वुज़ू व ग़ुस्ल जाइज़ नहीं और अगर अच्छा पानी न हो तो इसी से वुज़ू व ग़ुस्ल कर ले और तयम्मुम भी और बेहतर येह है कि वुज़ू पहले कर ले और अगर अ़क्स किया या'नी पहले तयम्मुम किया फिर वुज़ू जब भी ह़रज नहीं और इस सूरत में वुज़ू और ग़ुस्ल में निय्यत करनी लाज़िमी है और अगर वुज़ू किया और तयम्मुम न किया या तयम्मुम किया और वुज़ू न किया तो नमाज़ न होगी।(2)

सुवाल जिन जानवरों का जूठा नापाक है उन के पसीने का क्या हुक्म है ?

जवाब जिस का जूठा नापाक है उस का पसीना और लुआ़ब भी नापाक है और जिस का जूठा पाक उस का पसीना और लुआ़ब भी पाक और जिस का जूठा मकरूह उस का लुआ़ब और पसीना भी मकरूह।(3)

वुज़ू

सुवाल वुज़ू करते हुए क्या निय्यत होनी चाहिये ?

जवाब वुज़ू पर सवाब पाने के लिये हुक्मे इलाही बजा लाने की निय्यत

---

1 ...فتاوی ھندیۃ، کتاب الطھارۃ، الباب الثالث فی المیاہ، ۱/ ۲۴، माख़ूज़ अज़ बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 2, 1 / 343

2 ...فتاوی ھندیۃ، کتاب الطھارۃ، الباب الثالث فی المیاہ، ۱/ ۲۴۔

3 ...فتاوی ھندیۃ، کتاب الطھارۃ، الباب الثالث فی المیاہ، ۱/ ۲۳، बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 2, 1 / 344

से वुज़ू करना ज़रूरी है वरना वुज़ू तो हो जाएगा मगर सवाब न पाएगा।(1)

सुवाल नमाज़ की कुन्जी क्या है ?

जवाब हुज़ूर जाने आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जन्नत की कुन्जी नमाज़ है और नमाज़ की कुन्जी वुज़ू है।(2)

सुवाल वुज़ू में बित्तरतीब आ'ज़ा धोने से कौन सा त़िब्बी फ़ाएदा ह़ासिल होता है ?

जवाब वुज़ू में पहले हाथ धोने फिर कुल्ली करने फिर नाक में पानी डालने फिर चेहरा और दीगर आ'ज़ा धोने की तरतीब फ़ालिज की रोक थाम के लिये मुफ़ीद है।(3)

सुवाल बेसिन पर खड़े खड़े वुज़ू करना कैसा है ?

जवाब बेसिन पर खड़े खड़े वुज़ू करना ख़िलाफ़े मुस्तह़ब है।(4)

सुवाल मिस्वाक के चन्द त़िब्बी फ़वाइद बताइये ?

जवाब मिस्वाक से क़ुव्वते ह़ाफ़िज़ा बढ़ती, दर्दे सर दूर होता और सर की रगों को सुकून मिलता है, इस से बलग़म दूर, नज़र तेज़, मे'दा दुरुस्त और खाना हज़्म होता है। अ़क़्ल बढ़ती, बच्चों की पैदाइश में इज़ाफ़ा होता, बुढ़ापा देर में आता और पीठ मज़बूत़ होती है।(5)

सुवाल वुज़ू के बा'द याद आया कि कोई उ़ज़्व धोने से रह गया है मगर याद नहीं कि कौन सा तो अब क्या करे ?

---

1 ...ردالمحتار، کتاب الطہارۃ، مطلب الفرق بین الطاعۃ والقربۃ والعبادۃ، ۱/ ۲۳۸۔

2 ...مسند امام احمد، مسند جابر بن عبد اللہ، ۵/ ۱۰۳، حدیث: ۱۴۶۶۸۔

3 .....नमाज़ के अह़काम, स. 70

4 .....नमाज़ के अह़काम, स. 38

5 ...حاشیۃ طحطاوی، کتاب الطہارۃ، فصل فی سنن الوضوء، ص ۶۹۔

जवाब ऐसी सूरत में बायां (या'नी उल्टा) पाउं धो लिया जाए।(1)

सुवाल किस सूरत में बे वुज़ू शख़्स दह दर दह (या'नी सौ हाथ / पच्चीस गज़ / दो सौ पच्चीस फ़ुट) से कम पानी में बे धुला हाथ डाल दे तो पानी मुस्ता'मल नहीं होगा ?

जवाब अगर पानी बड़े बरतन में हो और कोई छोटा बरतन भी नहीं कि इस में पानी ऊंडेल कर हाथ धोए तो उसे चाहिये कि बाएं हाथ की उंगलियां मिला कर सिर्फ़ वोह उंगलियां पानी में डाले, हथेली का कोई हिस्सा पानी में न पड़े और पानी निकाल कर दहना हाथ गिट्टे तक तीन बार धोए फिर दहने हाथ को जहां तक धोया है बिला तकल्लुफ़ पानी में डाल सकता है।(2)

सुवाल ऐसी कोई एक सूरत बताएं जिस में बालिग़ शख़्स नमाज़ में क़ह्क़हा लगाए फिर भी उस का वुज़ू बाक़ी रहे ?

जवाब बालिग़ ने नमाज़े जनाज़ा में क़ह्क़हा लगाया तो नमाज़ टूट गई मगर वुज़ू बाक़ी है।(3)

सुवाल क़ै (उल्टी) से कब वुज़ू टूटता है ?

जवाब मुंह भर क़ै (उल्टी) खाने, पानी या सफ़रा (या'नी पीले रंग के कड़वे पानी) की वुज़ू तोड़ देती है।(4)

सुवाल मुंह भर क़ै (उल्टी) से कब वुज़ू नहीं टूटता ?

जवाब जब वोह क़ै (उल्टी) बलग़म की हो तो इस सूरत में वुज़ू नहीं टूटेगा।(5)

---

1 ...درمختار، کتاب الطهارة، ۱/ ۳۱۰-

2 .....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 2, 1 / 293

3 ...حاشیة طحطاوی، کتاب الطهارة، ص ۹۲-

4 ...فتاوی هندیة، کتاب الطهارة، الباب الاول فی الوضوء، الفصل الخامس فی نواقض الوضوء، ۱/ ۱۱-

5 ...فتاوی هندیة، کتاب الطهارة، الباب الاول فی الوضوء، الفصل الخامس فی نواقض الوضوء، ۱/ ۱۱-

सुवाल वुज़ू के बा'द सूरतुल क़द्र पढ़ने की फ़ज़ीलत और फ़ाएदा बयान कीजिये ?

जवाब ह़दीसे मुबारक में है : जो वुज़ू के बा'द एक मरतबा सूरतुल क़द्र पढ़े वोह सिद्दीक़ीन में से है और जो दो मरतबा पढ़े वोह शुहदा में शुमार किया जाए और जो तीन मरतबा पढ़ेगा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मैदाने मह़शर में उसे अपने अम्बिया के साथ रखेगा।[1] नीज़ जो वुज़ू के बा'द आस्मान की त़रफ़ देख कर सूरए اِنَّاۤ اَنۡزَلۡنٰهُ (सूरतुल क़द्र) पढ़ लिया करे اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ उस की नज़र कभी कमज़ोर न होगी।[2]

सुवाल वुज़ू के बा'द कौन सी दुआ़ पढ़ी जाती है ?

जवाब اَللّٰهُمَّ اجْعَلْنِىْ مِنَ التَّوَّابِيْنَ وَاجْعَلْنِىْ مِنَ الْمُتَطَهِّرِيْنَ **तर्जमा :** ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मुझे कसरत से तौबा करने वालों में बना दे और मुझे पाकीज़ा रहने वालों में शामिल कर दे।[3]

तयम्मुम

सुवाल किस क़िस्म की बीमारी में वुज़ू या ग़ुस्ल की जगह तयम्मुम करने की इजाज़त है ?

जवाब ऐसी बीमारी हो कि वुज़ू या ग़ुस्ल से उस (बीमारी) के ज़ियादा होने या देर में अच्छा होने का सह़ीह़ अन्देशा हो ख़्वाह यूं कि उस ने खुद आज़माया हो कि जब वुज़ू या ग़ुस्ल करता है तो बीमारी बढ़ती है या यूं कि किसी मुसलमान अच्छे लाइक़े ह़कीम ने जो

1 . . . كنزالعمال، كتاب الطهارة، الفصل الثانى فى اداب الوضوء، ٩/١٣٢، حديث: ٢٦٠٨٥-

2 .....मसाइलुल कुरआन, स. 291

3 . . . ترمذى، كتاب الطهارة، باب فيما يقال بعد الوضوء، ١/١٢١، حديث: ٥٥-

ज़ाहिरन फ़ासिक़ न हो कह दिया हो कि पानी नुक़्सान करेगा (तो ऐसी सूरत में तयम्मुम की इजाज़त है) ।[1]

सुवाल कितनी मसाफ़त तक पानी न मिले तो तयम्मुम जाइज़ होगा ?

जवाब चारों त़रफ़ एक एक मील तक पानी का पता नहीं (तो तयम्मुम जाइज़ है) अगर येह गुमान हो कि एक मील के अन्दर पानी होगा तो तलाश कर लेना ज़रूरी है। बिला तलाश किये तयम्मुम जाइज़ नहीं ।[2]

सुवाल किस सूरत में नमाज़े जनाज़ा के लिये तयम्मुम करने की इजाज़त है ?

जवाब ग़ैरे वली को नमाज़े जनाज़ा फ़ौत हो जाने का ख़ौफ़ हो तो तयम्मुम जाइज़ है वली को नहीं कि इस का लोग इन्तिज़ार करेंगे। ख़ौफ़े फ़ौत के येह मा'ना हैं कि चारों तक्बीरें जाती रहने का अन्देशा हो और अगर येह मा'लूम हो कि एक तक्बीर भी मिल जाएगी तो तयम्मुम जाइज़ नहीं ।[3]

सुवाल किस सूरत में मुर्दे को तयम्मुम करवाया जाए ?

जवाब मुर्दे को अगर ग़ुस्ल न दे सकें ख़्वाह इस वज्ह से कि पानी नहीं या इस वज्ह से कि उस के बदन को हाथ लगाना जाइज़ नहीं जैसे अजनबी औ़रत या अपनी औ़रत कि मरने के बा'द उसे छू नहीं सकता तो उसे तयम्मुम कराया जाए, ग़ैर मह़रम को अगर्चे शौहर हो औ़रत को तयम्मुम कराने में कपड़ा ह़ाइल होना चाहिये ।[4]

---

1 ...فتاوی ہندیۃ، کتاب الطھارۃ، الباب الرابع فی التیمم، ۱/۲۸۔

2 ...فتاوی ہندیۃ، کتاب الطھارۃ، الباب الرابع فی التیمم، ۱/۲۹

3 ...فتاوی ہندیۃ، کتاب الطھارۃ، الباب الرابع فی التیمم، ۱/۳۱۔

4 ...درمختار مع ردالمحتار، کتاب الصلاۃ، باب صلاۃ الجنازۃ، مطلب فی حدیث کل سبب۔۔۔الخ، ۳/۱۰۲۔

बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 2, 1 / 352

सुवाल कै़दी को जेल में वुज़ू न करने दिया जाए तो वोह क्या करे ?

जवाब कै़दी को कै़द ख़ाने वाले वुज़ू न करने दें तो तयम्मुम कर के नमाज़ पढ़ ले और इआ़दा करे और अगर वोह दुश्मन या कै़द ख़ाने वाले नमाज़ भी न पढ़ने दें तो इशारे से पढ़े फिर इआ़दा करे ।(1)

सुवाल ऐसी जगह जहां पानी मिले न पाक मिट्टी तो नमाज़ कैसे अदा की जाए ?

जवाब अगर कोई ऐसी जगह है जहां न पानी मिलता है न पाक मिट्टी तो उसे चाहिये कि वक़्ते नमाज़ में नमाज़ की सी सूरत बनाए या'नी तमाम ह़रकाते नमाज़ बिला निय्यते नमाज़ बजा लाए ।(2)

सुवाल किस तयम्मुम से एक नमाज़ के बा'द दूसरी नमाज़ पढ़ना जाइज़ नहीं ?

जवाब नमाज़े जनाज़ा या ई़दैन या सुन्नतों के लिये इस ग़रज़ से तयम्मुम किया हो कि वुज़ू में मश्ग़ूल होगा तो येह नमाज़ें फ़ौत हो जाएंगी तो इस तयम्मुम से उस ख़ास नमाज़ के सिवा कोई दूसरी नमाज़ जाइज़ नहीं ।(3)

सुवाल किस सूरत में पानी पर कु़दरत के बा वुजूद तयम्मुम जाइज़ है ?

जवाब अगर किसी के पास पानी है मगर वुज़ू या ग़ुस्ल में इस्ति'माल करेगा तो ख़ुद या दूसरा मुसलमान या अपना या इस का जानवर अगर्चे वोह कुत्ता जिस का पालना जाइज़ है, प्यासा रह जाएगा और अपनी या उन में से किसी की प्यास ख़्वाह फ़िल ह़ाल मौजूद हो या आइन्दा इस का सह़ीह़ अन्देशा हो कि वोह राह ऐसी है कि दूर तक पानी का पता नहीं तो तयम्मुम जाइज़ है ।(4)

---

1 . . . فتاوی ھندیۃ، کتاب الطہارۃ، الباب الرابع فی التیمم، ۱/۲۸۔

2 .....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 2, 1 / 353

3 . . . درمختار مع ردالمحتار، کتاب الطہارۃ، باب التیمم، ۱/۴۵۵۔

4 . . . فتاوی ھندیۃ، کتاب الطہارۃ، الباب الراب فی التیمم، ۱/۲۸۔

सुवाल क्या गद्दे या दरी वग़ैरा से तयम्मुम किया जा सकता है ?

जवाब गद्दे और दरी वग़ैरा में ग़ुबार है तो उस से तयम्मुम कर सकता है अगर्चे वहां मिट्टी मौजूद हो जब कि ग़ुबार इतना हो कि हाथ फेरने से उंगलियों का निशान बन जाए ।(1)

सुवाल ग़ुस्ल फ़र्ज़ हो लेकिन पानी सिर्फ़ वुज़ू जितना है तो क्या हुक्म है ?

जवाब इतना पानी मिला जिस से वुज़ू हो सकता है और इसे नहाने की ज़रूरत है तो इस पानी से वुज़ू कर लेना चाहिये और ग़ुस्ल के लिये तयम्मुम करे ।(2)

सुवाल कोई तयम्मुम कर के नमाज़ पढ़ रहा था कि किसी के पास पानी देखा अब क्या करे ?

जवाब अगर गुमाने ग़ालिब है कि वोह पानी दे देगा तो चाहिये कि नमाज़ तोड़ दे और उस से पानी मांगे, अगर नहीं मांगा और नमाज़ पूरी कर ली और बा'द में उस ने पानी दे दिया तो नमाज़ का इआ़दा लाज़िम है ।(3)

सुवाल सर्दी के सबब किस सूरत में तयम्मुम जाइज़ होगा ?

जवाब इतनी सर्दी हो कि नहाने से मर जाने या बीमार होने का क़वी अन्देशा हो और लिहाफ़ वग़ैरा कोई ऐसी चीज़ उस के पास नहीं जिसे नहाने के बा'द ओढ़े और सर्दी के ज़रर से बचे न आग है जिसे ताप सके तो तयम्मुम जाइज़ है ।(4)

1.....फ़तावा रज़विय्या, 3 / 302

2...فتاوی تاتارخانیة، کتاب الطھارۃ، الفصل الخامس فی التیمم، ۱/۲۵۵۔

3...فتاوی ھندیة، کتاب الطھارۃ، الباب الرابع فی التیمم، ۱/۲۹۔

4...درمختار مع ردالمحتار، کتاب الطھارۃ، باب التیمم، ۱/۴۴۳، बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 2, 1 / 348

नजासत

सुवाल नजासत की कितनी और कौन कौन सी क़िस्में हैं ?

जवाब नजासत की दो क़िस्में हैं :

(1) नजासते ह़क़ीक़िय्या (2) नजासते हुक्मिय्या ।(1)

सुवाल नजासते ह़क़ीक़िय्या से क्या मुराद है ?

जवाब नजासते ह़क़ीक़िय्या वोह नापाक चीज़ है जो कपड़े या बदन वग़ैरा पर लग जाए तो ज़ाहिर तौर पर मा'लूम हो जाती है जैसे पाख़ाना पेशाब वग़ैरा ।

सुवाल नजासते हुक्मिय्या से क्या मुराद है ?

जवाब नजासते हुक्मिय्या वोह है जो नज़र नहीं आती या'नी सिर्फ़ शरीअ़त के हुक्म से उसे नापाकी कहते हैं जैसे बे वुज़ू होना या ग़ुस्ल की ह़ाजत होना ।

सुवाल नजासते ह़क़ीक़िय्या की कितनी क़िस्में हैं ?

जवाब नजासते ह़क़ीक़िय्या की दो क़िस्में हैं :

(1) नजासते ग़लीज़ा (2) नजासते ख़फ़ीफ़ा ।(2)

सुवाल नजासते ग़लीज़ा किसे कहते हैं ?

जवाब इन्सान के बदन से जो ऐसी चीज़ निकले कि उस से ग़ुस्ल या वुज़ू वाजिब हो नजासते ग़लीज़ा है जैसे पाख़ाना, पेशाब, बहता ख़ून, पीप, मुंह भर क़ै (उल्टी) वग़ैरा ।(3)

सुवाल नजासते ग़लीज़ा का हुक्म बयान कीजिये ?

---

1 ...مجمع الانہر، کتاب الطھارۃ، باب الانجاس، ۱/۸۲۔

2 ...فتاوی ھندیۃ، کتاب الطھارۃ، الباب السابع فی النجاسۃ واحکامھا، ۱/۴۵۔

3 ...فتاوی ھندیۃ، کتاب الطھارۃ، الباب السابع فی النجاسۃ واحکامھا، ۱/۴۶۔

जवाब नजासते ग़लीज़ा का हुक्म येह है कि अगर कपड़े या बदन पर एक दिरहम से ज़ियादा लग जाए तो इस का पाक करना फ़र्ज़ है, बिग़ैर पाक किये अगर नमाज़ पढ़ ली तो नमाज़ न होगी और इस सूरत में जान बूझ कर नमाज़ पढ़ना सख़्त गुनाह है और अगर दिरहम के बराबर कपड़े या बदन पर लगी हुई हो तो इस का पाक करना वाजिब है अगर बिग़ैर पाक किये नमाज़ पढ़ ली तो नमाज़ मकरूहे तह़रीमी होगी और ऐसी सूरत में कपड़े या बदन को पाक कर के दोबारा नमाज़ पढ़ना वाजिब है, (और अगर) दिरहम से कम कपड़े या बदन पर लगी हुई है तो इस का पाक करना सुन्नत है अगर बिग़ैर पाक किये नमाज़ पढ़ ली तो नमाज़ हो जाएगी, मगर ख़िलाफ़े सुन्नत, ऐसी नमाज़ को दोहरा लेना बेहतर है।(1)

सुवाल नजासत का एक दिरहम की मिक़्दार होने से क्या मुराद है ?

जवाब नजासते ग़लीज़ा का दिरहम या इस से कम या ज़ियादा होने से मुराद येह है कि नजासते ग़लीज़ा अगर गाढ़ी हो मसलन पाख़ाना, लीद वग़ैरा तो दिरहम से मुराद वज़्न में साढ़े चार माशा (या'नी 4. 374 ग्राम) है, लिहाज़ा अगर नजासत दिरहम से ज़ियादा या कम है तो इस से मुराद वज़्न में साढ़े चार माशे से कम या ज़ियादा होना है और अगर नजासते ग़लीज़ा पतली हो जैसे पेशाब वग़ैरा तो दिरहम से मुराद लम्बाई चौड़ाई है या'नी हथेली को ख़ूब फैला कर हमवार रखिये और इस पर आहिस्तगी से इतना पानी डालिये कि इस से ज़ियादा पानी न रुक सके, अब जितना पानी का फैलाव है उतना बड़ा दिरहम समझा जाएगा।(2)

सुवाल अगर कपड़े या बदन पर चन्द मक़ामात पर एक दिरहम से कम नजासत लगी हो तो क्या हुक्म है ?

---

(1).....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 2, 1 / 389

(2).....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 2, 1 / 389

जवाब किसी कपड़े या बदन पर चन्द जगह नजासते ग़लीज़ा लगी और किसी जगह दिरहम के बराबर नहीं, मगर मजमूआ़ दिरहम के बराबर है, तो दिरहम के बराबर समझी जाएगी और ज़ाइद है तो ज़ाइद।(1)

सुवाल मुख़्तलिफ़ जानवरों के पेशाब और इन की बीट का क्या हुक्म है?

जवाब जिन जानवरों का गोश्त ह़लाल है (जैसे गाए, बेल, भेंस, बकरी, ऊंट वग़ैरहा) इन का पेशाब, नीज़ घोड़े का पेशाब और जिस परिन्दे का गोश्त ह़राम है, ख़्वाह शिकारी हो या नहीं (जैसे कव्वा, चील, शिकरा, बाज़) इस की बीट नजासते ख़फ़ीफ़ा है।(2)

सुवाल नजासते ख़फ़ीफ़ा का हुक्म बताइये?

जवाब नजासते ख़फ़ीफ़ा का हुक्म येह है कि कपड़े के जिस ह़िस्से या बदन के जिस उ़ज़्व में लगी है अगर इस की चौथाई से कम है तो मुआ़फ़ है, मसलन आस्तीन में नजासते ख़फ़ीफ़ा लगी हुई है तो अगर आस्तीन की चौथाई से कम है या दामन में लगी है तो दामन की चौथाई से कम है या इसी त़रह़ हाथ में लगी है तो हाथ की चौथाई से कम है तो मुआ़फ़ है या'नी इस सूरत में पढ़ी गई नमाज़ हो जाएगी। अलबत्ता अगर पूरी चौथाई में लगी हो तो बिग़ैर पाक किये नमाज़ न होगी।(3)

सुवाल किसी के मुंह से इतना ख़ून निकला कि थूक में सुर्ख़ी आ गई और उस ने फ़ौरन पानी पी लिया तो उस के जूठे पानी का क्या हुक्म है?

---

1 . . . درمختارمع ردالمحتار، کتاب الطهارة، باب الانجاس، مطلب اذا صرح ۔۔۔ الخ، ۱/۵۸۲۔

2 . . . فتاوی هندية، کتاب الطهارة، الباب السابع فی النجاسة واحكامها، ۱/۴۶۔

3 . . . فتاوی هندية، کتاب الطهارة، الباب السابع فی النجاسة واحكامها، ۱/۴۶،

बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 2, 1 / 389

जवाब येह जूठा (पानी) नापाक है और सुर्ख़ी जाती रहने के बा'द इस पर लाज़िम है कि कुल्ली कर के मुंह पाक करे और अगर कुल्ली न की और चन्द बार थूक का गुज़र मौज़ए नजासत (या'नी नापाक हिस्से) पर हुवा ख़्वाह निगलने में या थूकने में यहां तक कि नजासत का असर न रहा तो त़हारत हो गई इस के बा'द अगर पानी पियेगा तो पाक रहेगा अगर्चे ऐसी सूरत में थूक निगलना सख़्त नापाक बात और गुनाह है।(1)

सुवाल अगर नजासत का रंग कपड़े पर बाक़ी रह जाए तो क्या हुक्म है ?

जवाब अगर नजासत दूर हो गई मगर उस का कुछ असर (रंग या बू) बाक़ी है तो उसे भी ज़ाइल करना लाज़िम है हां अगर उस का असर ब दिक़्क़त (या'नी दुश्वारी से) जाए तो असर दूर करने की ज़रूरत नहीं तीन मरतबा धो लिया पाक हो गया, साबुन या खटाई या गर्म पानी (या किसी क़िस्म के केमीकल वग़ैरा) से धोने की ह़ाजत नहीं।(2)

अज़ान व इक़ामत

सुवाल कौन से दो सह़ाबए किराम को ख़्वाब में अज़ान सिखाई गई ?

जवाब अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म और ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ैद बिन अ़ब्दे रब्बिह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا को अज़ान ख़्वाब में ता'लीम हुई, हुज़ूर नबिय्ये ग़ैब दान صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "येह ख़्वाब ह़क़ है" और अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से फ़रमाया : "जाओ बिलाल

---

1 ...فتاوی ھندیۃ، الباب الثالث فی المیاہ، الفصل الثانی فیما لا یجوز بہ التوضؤ، ۱/۲۳، बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा, 2, 1 / 341

2 ...فتاوی ھندیۃ، کتاب الطھارۃ، الباب السابع فی النجاسۃ واحکامھا، ۱/۴۲، बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा, 2, 1 / 397

को तल्क़ीन करो, वोह अज़ान कहें कि वोह तुम से ज़ियादा बुलन्द आवाज़ हैं।"[1]

सुवाल : अज़ान कहने की फ़ज़ीलत पर कोई तीन रिवायात सुनाइये ?

जवाब : (1) मुअज़्ज़िन की जहां तक आवाज़ पहुंचती है, उस के लिये मग़फ़िरत कर दी जाती है और हर तर व ख़ुश्क जिस ने आवाज़ सुनी उस के लिये गवाही देगा।[2] (2) सवाब की त़लब में अज़ान देने वाला ख़ून में लत पत शहीद की त़रह़ है, मरने के बा'द क़ब्र में उस के बदन में कीड़े नहीं पड़ेंगे।[3] (3) अगर लोगों को मा'लूम होता कि अज़ान कहने में कितना सवाब है तो इस पर बाहम तल्वार चलती।[4]

सुवाल : अगर नमाज़ का वक़्त शुरूअ़ होने से पहले अज़ान कही गई तो इस का क्या हुक्म है ?

जवाब : वक़्त होने के बा'द अज़ान कही जाए, क़ब्ल अज़् वक़्त कही गई या वक़्त होने से पहले शुरूअ़ हुई और अज़ान के दौरान वक़्त आ गया तो इआ़दा की जाए (या'नी दोबारा दी जाए)।[5]

सुवाल : बैठ कर अज़ान कहना या क़िब्ले के इ़लावा किसी और सम्त मुंह कर के अज़ान कहना कैसा ?

जवाब : ऐसा करना मकरूह है, अगर इस त़रह़ कही तो दोबारा दी जाए।[6]

---

1 ...ابوداود، کتاب الصلاۃ، باب کیف الاذان، ۱/۲۱۰، حدیث: ۴۹۹۔

2 ...مسند امام احمد، مسند ابی ہریرۃ، ۳/۴۲۰، حدیث: ۹۵۴۲۔

3 ...معجم کبیر، ۱۲/۳۲۲، حدیث: ۱۳۵۵۴۔

4 ...مسند امام احمد، مسند ابی سعید الخدری، ۴/۵۹، حدیث: ۱۱۲۴۱۔

5 ...ھدایۃ، کتاب الصلاۃ، باب الاذان، ۱/۴۵، बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 3, 1 / 465

6 ...فتاوی ھندیۃ، کتاب الصلاۃ، الباب الثانی فی الاذان، ۱/۵۴۔
درمختار، کتاب الصلاۃ، باب الاذان، مطلب فی اول من بنی المنائر للاذان، ۲/۲۹۔

सुवाल क्या नमाज़ के इलावा किसी और मक़्सद के लिये कही गई अज़ान का जवाब दिया जाएगा ?

जवाब जी हां अज़ाने नमाज़ के इलावा दीगर अज़ानों का जवाब भी दिया जाएगा मसलन बच्चे की पैदाइश पर दी जाने वाली अज़ान ।[1]

सुवाल वोह कौन सी अज़ान है जिस का जवाब नहीं दिया जाएगा ?

जवाब मुक़्तदियों को ख़ुत़बे की अज़ान का जवाब ज़बान से हरगिज़ नहीं देना चाहिये येही अह़वत़ (या'नी एह़तियात़ से क़रीब) है । हां अगर दिल से जवाब दिया जाए तो कोई ह़रज नहीं ।[2]

सुवाल अगर चन्द अज़ानें सुने तो कौन सी अज़ान का जवाब दे ?

जवाब अगर चन्द अज़ानें सुने तो इस पर पहली ही का जवाब है और बेहतर येह है कि सब का जवाब दे ।[3]

सुवाल इक़ामत का जवाब देने का क्या हुक्म है ?

जवाब इक़ामत का जवाब देना मुस्तह़ब है ।[4]

सुवाल अगर अज़ान या इक़ामत कहते हुए कलिमात आगे पीछे हो जाएं तो क्या करे ?

जवाब अगर कलिमाते अज़ान या इक़ामत में किसी जगह तक़्दीम व ताख़ीर हो गई (या'नी कलिमात आगे पीछे हो गए) तो इतने को सह़ीह़ कर ले । शुरूअ़ से दोहराने की ज़रूरत नहीं और अगर सह़ीह़ न किये और नमाज़ पढ़ ली तो नमाज़ दोबारा पढ़ने की ज़रूरत नहीं ।[5]

---

1 . . . درمختارمع ردالمحتار، کتاب الصلاۃ، باب الاذان، مطلب فی کراھۃ تکرار الجماعۃ فی المسجد، ۲/ ۸۲۔

2 . . . درمختار، کتاب الصلاۃ، باب الاذان، ۲/ ۸۷، मुल्तक़त़न फ़तावा रज़विय्या, 8 / 301

3 . . . درمختارمع ردالمحتار، کتاب الصلاۃ، باب الاذان، مطلب فی کراھۃ تکرار الجماعۃ فی المسجد، ۲/ ۸۲۔

4 . . . فتاوی ھندیۃ، کتاب الصلاۃ، الباب الثانی فی الاذان، ۱/ ۵۷۔

5 . . . فتاوی ھندیۃ، کتاب الصلاۃ، الباب الثانی فی الاذان، ۱/ ۵۶۔

सुवाल बच्चे के कान में अज़ान व इक़ामत कितनी मरतबा कही जाती है ?

जवाब दहने कान में चार मरतबा अज़ान और बाएं में तीन मरतबा इक़ामत कही जाए।[1]

सुवाल मस्जिद में किस जगह खड़े हो कर अज़ान कही जाए ?

जवाब अज़ान मिअज़्ना (मिनारे) पर कही जाए या ख़ारिजे मस्जिद और मस्जिद में अज़ान न कहे।[2] मस्जिद में अज़ान कहना मकरूह है।[3]

सुवाल मुअज़्ज़िन के इलावा किसी और शख़्स का इक़ामत कहना कैसा ?

जवाब अगर मुअज़्ज़िन मौजूद है तो उस की इजाज़त से दूसरा कह सकता है कि येह उसी का हक़ है और अगर बे इजाज़त कही और मुअज़्ज़िन को ना गवार हो तो मकरूह है। अगर मुअज़्ज़िन मौजूद नहीं तो जो चाहे इक़ामत कह ले और बेहतर इमाम है।[4]

नमाज़

सुवाल क्या पांच नमाज़ें फ़र्ज़ होने से पहले भी कोई नमाज़ थी ?

जवाब पांच नमाज़ें फ़र्ज़ होने से पहले तुलूए़ आफ़्ताब और ग़ुरूबे आफ़्ताब से पहले की नमाज़ मुक़र्रर थी या नहीं इस में उ़लमाए किराम का इख़्तिलाफ़ है, इमामे अहले सुन्नत मौलाना शाह अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن के फ़रमान का मफ़्हूम येह है कि ज़ियादा सह़ीह़ बात येह है कि शबे मे'राज से पहले सिर्फ़ क़ियामे लैल या'नी रात का क़ियाम फ़र्ज़ था।[5]

---

1 .....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 15, 3 / 355

2 ...فتاوی ہندیۃ، کتاب الصلاۃ، الباب الثانی فی الاذان، ۱/ ۵۵۔

3 ...حاشیۃ طحطاوی، کتاب الصلاۃ، باب الاذان، ص ۱۹۷۔

4 ...فتاوی ہندیۃ، کتاب الصلاۃ، الباب الثانی فی الاذان، ۱/ ۵۴، बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 3, 1 / 470

5 .....फ़तावा रज़विय्या, 5 / 76

सुवाल अपनी नमाज़ों की हिफ़ाज़त करने वाले के लिये क्या बिशारत है ?

जवाब हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जो शख़्स नमाज़ की हिफ़ाज़त करे उस के लिये नमाज़ क़ियामत के दिन नूर, दलील और नजात होगी ।[1]

सुवाल इमामत करवाने के लिये कितनी और कौन कौन सी शर्तें हैं ?

जवाब मर्दे ग़ैर मा'ज़ूर (जो मा'ज़ूरे शरई न हो) के इमाम के लिये छे शर्तें हैं : (1) मुसलमान होना (2) बालिग़ होना (3) आ़क़िल होना (4) मर्द होना (5) क़िराअत सहीह़ होना (6) मा'ज़ूर न होना ।[2]

सुवाल इमाम के "وَلَا الضَّآلِّیْنَ" कहने के बा'द आमीन कहने की क्या फ़ज़ीलत है ?

जवाब हुज़ूर नबिय्ये रह़मत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : इमाम जब "وَلَا الضَّآلِّیْنَ" कहे तो तुम आमीन कहो, जिस की आमीन फ़िरिश्तों की आमीन के मुवाफ़िक़ होती है उस के पिछले गुनाह मुआ़फ़ हो जाते हैं ।[3]

सुवाल क़ियाम, रुकूअ़, सजदा, क़ा'दा और सलाम फेरते वक़्त नज़र कहां होनी चाहिये ?

जवाब क़ियाम की ह़ालत में सजदे की जगह, रुकूअ़ में दोनों क़दमों की पुश्त पर, सजदे में नाक की त़रफ़, क़ा'दे में गोद की त़रफ़, पहले सलाम में सीधे कन्धे की त़रफ़ और दूसरे सलाम में उलटे कन्धे की त़रफ़ नज़र करना मुस्तह़ब है ।[4]

सुवाल नमाज़ में इमाम से पहले सर उठाना और झुकाना कैसा है ?

---

1 ...مسند امام احمد، مسند عبد اللہ بن عمرو ۲/۵۷۴، حدیث: ۶۵۸۷۔

2 ...نور الایضاح، کتاب الصلاۃ، باب الامامۃ، ص ۱۵۵۔

3 ...بخاری، کتاب الاذان، باب جہر الماموم بالتامین، ۱/۲۷۵، حدیث: ۷۸۲۔

4 ...تنویر الابصار مع درمختار ۲/۲۱۴۔

जवाब इमाम से पहले रुकूअ़ व सुजूद में जाना या इस से पहले सर उठाना मकरूह है।[1] हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जो इमाम से पहले सर उठाता और झुकाता है उस की पेशानी के बाल शैत़ान के हाथ में हैं।[2]

सुवाल वोह कौन सी सूरत है जिस में नमाज़ के क़ा'दए ऊला में भूल कर सीधा खड़ा हो जाने के बा'द भी बैठ जाना वाजिब है ?

जवाब मुक़्तदी क़ा'दए ऊला में भूल कर सीधा खड़ा हो जाए तो इमाम की मुताबअ़त के लिये इस पर बैठ जाना वाजिब है।[3]

सुवाल "सदल" क्या है और इस का क्या हुक्म है ?

जवाब सदल कपड़ा लटकाने को कहते हैं। मसलन सर या कन्धे पर इस त़रह़ से चादर या रूमाल वग़ैरा डालना कि दोनों कनारे लटकते हों येह नमाज़ में मकरूहे तह़रीमी है। हां अगर एक कनारा दूसरे कन्धे पर डाल दिया और दूसरा लटक रहा है तो ह़रज नहीं।[4]

सुवाल तश्बीक किसे कहते हैं और इस का हुक्म बयान कीजिये ?

जवाब एक हाथ की उंगलियां दूसरे हाथ की उंगलियों में डालना तश्बीक है। दौराने नमाज़ या (तवाबेए़ नमाज़ में, मसलन) नमाज़ के लिये जाते हुए या नमाज़ का इन्तिज़ार करते हुए तश्बीक करना मकरूहे तह़रीमी है, ख़ारिजे नमाज़ में (जब कि तवाबेए़ नमाज़ में भी न हो) बिला ज़रूरत ऐसा करना मकरूहे तन्ज़ीही है और ख़ारिजे

1.....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 1 / 629

2...موطاامام مالک، کتاب الصلاۃ، باب مایفعل من رفع راسہ قبل الامام، ۱/ ۱۰۲، حدیث:۲۱۲۔

3...مراقی الفلاح، کتاب الصلاۃ، باب سجود السھو ص ۲۴۵۔

4...ردالمحتار، کتاب الصلاۃ، باب مایفسد الصلاۃ ومایکرہ فیھا، ۲/ ۴۸۸۔

नमाज़ में उंगलियों को आराम देने या किसी ज़रूरत के लिये येह मुबाह़ (या'नी बिला कराहत जाइज़) है।[1]

सुवाल इस की क्या सूरत है कि दो शख़्स नमाज़ में इस त़रह़ रोए कि हुरूफ़ पैदा हुए मगर इस के सबब एक की नमाज़ फ़ासिद हो गई और दूसरे की नहीं हुई ?

जवाब एक शख़्स दर्द और मुसीबत की वज्ह से रोया और उस के मुंह से आह, ऊह, वग़ैरा के अल्फ़ाज़ पैदा हुए तो उस की नमाज़ फ़ासिद हो गई और दूसरे को इमाम का पढ़ना पसन्द आया इस पर रोने लगा और अरे, नअ़म, हां ज़बान से निकला तो कोई ह़रज नहीं कि येह ख़ुशूअ़ के बाइस है और अगर इमाम की ख़ुश इल्ह़ानी के सबब येह अल्फ़ाज़ कहे तो नमाज़ टूट गई।[2]

सुवाल नमाज़ी के आगे से गुज़रने की क्या वई़द है ?

जवाब नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : अगर कोई जानता कि नमाज़ पढ़ने वाले अपने मुसलमान भाई के सामने से गुज़रने में क्या (गुनाह) है तो सौ बरस खड़ा रहना इस एक क़दम चलने से बेहतर समझता।[3]

सुवाल आदमी को कब "सुतरा" बनाया जाए ?

जवाब आदमी को इस ह़ालत में सुतरा किया जाए जब कि उस की पीठ नमाज़ी की त़रफ़ हो।[4]

नमाज़ की शराइत़

सुवाल जहां क़िब्ले की सम्त (Qibla Direction) पता न हो और न ही

1 ...درمختارمع ردالمحتار، کتاب الصلاۃ، باب مایفسد الصلاۃ ومایکرہ فیہا، ۲/ ۴۹۳۔

2 ...درمختارمع ردالمحتار، کتاب الصلاۃ، باب مایفسد الصلاۃ ومایکرہ فیہا، ۲/ ۴۵۵، ۴۵۶۔

3 ...ابن ماجہ، کتاب اقامۃ الصلاۃ، باب المرور بین یدی المصلی، ۱/ ۵۰۶، حدیث: ۹۴۶۔

4 ...حاشیۃ طحطاوی، کتاب الصلاۃ، فصل فی اتخاذ السترۃ، ص ۳۶۵۔

मा'लूम करने का कोई ज़रीआ़ तो वहां नमाज़ में मुंह किस त़रफ़ किया जाए ?

जवाब ऐसी जगह नमाज़ पढ़ने वाले के लिये हुक्म है कि तह़र्री करे (या'नी सोचे जिधर क़िब्ला होना दिल पर जमे उधर ही मुंह करे) उस के ह़क़ में वोही क़िब्ला है।(1)

सुवाल जिहते का'बा की त़रफ़ मुंह होने से क्या मुराद है ?

जवाब जिहते का'बा की त़रफ़ मुंह होने के येह मा'ना हैं कि चेहरे की सत़ह़ का कोई जुज़ का'बे की सम्त में वाक़ेअ़ हो। इस की मिक़्दार 45 दरजे (45°) रखी गई है लिहाज़ा अगर कोई 45 दरजे से ज़ियादा क़िब्ले से फिरा तो नमाज़ नहीं होगी।(2)

सुवाल किस शख़्स के लिये नमाज़ में ऐ़न का'बा की त़रफ़ मुंह करना फ़र्ज़ है ?

जवाब जो ऐ़न का'बा की सम्त ख़ास तह़क़ीक़ कर सकता है, अगर्चे का'बा आड़ में हो, जैसे मक्कए मुअ़ज़्ज़मा के मकानों में जब कि मसलन छत पर चढ़ कर का'बा को देख सकते हैं तो ऐ़न का'बा की त़रफ़ मुंह करना फ़र्ज़ है, जिहत काफ़ी नहीं और जिसे येह तह़क़ीक़ ना मुमकिन हो, अगर्चे ख़ास मक्कए मुअ़ज़्ज़मा में हो उस के लिये जिहते का'बा को मुंह करना काफ़ी है।(3)

सुवाल नमाज़ में मर्द व औ़रत के जिस्म का कितना ह़िस्सा सत्रे औ़रत में शामिल है ?

जवाब मर्द के लिये नाफ़ के नीचे से घुटनों के नीचे तक सत्रे औ़रत है। नाफ़ इस में दाख़िल नहीं और घुटने दाख़िल हैं।(4) और औ़रत के

---

1 ...درمختارمع ردالمحتار، کتاب الصلاۃ، مطلب مسائل التحری فی القبلۃ، ۲/۱۴۳۔

2 ...درمختارمع ردالمحتار، کتاب الصلاۃ، ۲/۱۳۵، बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा, 3, 1 / 487

3 .....बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा, 3, 1 / 487

4 ...درمختارمع ردالمحتار، کتاب الصلاۃ، باب شروط الصلاۃ، مطلب فی ستر العورۃ، ۲/۹۳۔

लिये सिवाए मुंह की टिकली और हथेलियों और पाउं के तल्वों के सारा बदन सत्र है। औ़रत के सर के लटकते हुए बाल, गर्दन और कलाइयां भी सत्र में दाख़िल हैं।(1) अलबत्ता अगर दोनों हाथ (गिट्टों तक), पाउं (टख़्नों तक) मुकम्मल ज़ाहिर हों तो एक मुफ़्ता बेह क़ौल पर नमाज़ दुरुस्त है।(2)

सुवाल जिन आ'ज़ा का छुपाना फ़र्ज़ है उन में से कोई उ़ज़्व नमाज़ में खुल गया तो क्या हुक्म है?

जवाब अगर चौथाई हिस्से से कम खुला तो नमाज़ हो गई और अगर चौथाई उ़ज़्व खुल गया और फ़ौरन छुपा लिया जब भी हो गई और अगर तीन मरतबा سُبْحٰنَ اللہ कहने की मिक़्दार बराबर खुला रहा या जान बूझ कर खोला अगर्चे फ़ौरन छुपा लिया तो नमाज़ जाती रही।(3)

सुवाल इमाम को नमाज़ में पाया और मा'लूम नहीं कि नमाज़े इ़शा है या तरावीह़ तो किस निय्यत से इक़्तिदा की जाए?

जवाब उसे चाहिये कि फ़र्ज़ की निय्यत करे कि अगर फ़र्ज़ की जमाअ़त थी तो फ़र्ज़, वरना नफ़्ल हो जाएंगे।(4)

सुवाल क्या नफ़्ल, सुन्नत और तरावीह़ में मुत़लक़ नमाज़ की निय्यत काफ़ी है?

जवाब तरावीह़ में तरावीह़ या सुन्नते वक़्त की निय्यत करे और बाक़ी सुन्नतों में सुन्नत या हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की

---

1 . . . درمختار، کتاب الصلاۃ، باب شروط الصلاۃ، ۲/ ۹۵۔

2.....इस्लामी बहनों की नमाज़, स. 91

3 . . . درمختار مع ردالمحتار، کتاب الصلاۃ، باب شروط الصلاۃ، مطلب فی النظر الی وجہ الامرد، ۲/ ۱۰۰۔

4 . . . درمختار، کتاب الصلاۃ، باب شروط الصلاۃ، ۲/ ۱۵۳۔

मुताबअ़त (पैरवी) की निय्यत करे। नफ़्ल नमाज़ में मुत़लक़ नमाज़ की निय्यत काफ़ी है।(1)

सुवाल नमाज़ी के पैरों तले कितनी नजासत हो तो नमाज़ नहीं होगी ?

जवाब नमाज़ी के एक पाउं के नीचे दिरहम की मिक़्दार से ज़ियादा नजासत हो तो नमाज़ न होगी।(2) यूंही अगर दोनों पाउं के नीचे थोड़ी थोड़ी नजासत है कि जम्अ़ करने से एक दिरम हो जाएगी (तो नमाज़ मकरूहे तह़रीमी वाजिबुल इआ़दा और दिरहम से ज़ाइद हो तो नमाज़ नहीं होगी)।(3)

सुवाल नजासत पर रखे शीशे के ऊपर खड़े हो कर नमाज़ पढ़ी तो क्या हुक्म है ?

जवाब नमाज़ हो जाएगी अगर्चे नुमायां हो।(4)

सुवाल नमाज़े मग़रिब का वक़्त कब से कब तक है ?

जवाब मग़रिब की नमाज़ का वक़्त ग़ुरूबे आफ़्ताब से ग़ुरूबे शफ़क़(5) तक है।(6)

सुवाल वोह कौन सी नमाज़ें हैं जिन के अवक़ात में अव्वल से आख़िर तक कोई कराहत नहीं ?

जवाब फ़ज्र और ज़ोहर के अवक़ात में अव्वल से आख़िर तक कोई कराहत नहीं है ब ख़िलाफ़ बाक़ी (तीन नमाज़ों के) अवक़ात के कि वोह आख़िर में मकरूह हो जाते हैं।(7)

---

1 ...منیۃ المصلی، الشرط السادس النیۃ، ص ۲۲۵، बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 3, 1 / 493

2 ...درمختار مع ردالمحتار، کتاب الصلاۃ، باب شروط الصلاۃ، ۲/۹۲۔

3 .....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 3, 1 / 477

4 ...ردالمحتار، کتاب الصلاۃ، باب شروط الصلاۃ، ۲/۹۲۔

5 .....शफ़क़ उस सपेदी का नाम है जो जानिबे मग़रिब में सुर्ख़ी डूबने के बा'द जुनूबन शिमालन सुब्हे सादिक़ की त़रह़ फैली हुई रहती है। (الهداية، کتاب الصلاۃ، باب المواقیت، ۱/۴۰)

6 ...قدوری، کتاب الصلاۃ، ص ۳۵۔

7 .....फ़तावा रज़विय्या, 5 / 320

सुवाल फ़ज्र किस वक़्त अदा करना मुस्तह़ब है ?

जवाब फ़ज्र में ताख़ीर मुस्तह़ब है या'नी इस्फ़ार में (जब ख़ूब उजाला हो कि ज़मीन रौशन हो जाए) शुरूअ़ करे मगर ऐसा वक़्त होना मुस्तह़ब है कि 40 से 60 आयात तक तरतील के साथ पढ़ सके फिर सलाम फेरने के बा'द इतना वक़्त बाक़ी रहे कि अगर नमाज़ में फ़साद ज़ाहिर हो तो त़हारत कर के तरतील के साथ 40 से 60 आयत तक दोबारा पढ़ सके और इतनी ताख़ीर मकरूह है कि तुलूए़ आफ़्ताब का शक हो जाए।(1)

नमाज़ के फ़राइज़

सुवाल कौन सी नमाज़ों में तक्बीरे तह़रीमा के लिये खड़े होना फ़र्ज़ है ?

जवाब जिन नमाज़ों में क़ियाम फ़र्ज़ है उन में तक्बीरे तह़रीमा के लिये क़ियाम फ़र्ज़ है, तो अगर बैठ कर اَللّٰهُ اَكْبَر कहा फिर खड़ा हो गया, नमाज़ शुरूअ़ ही न हुई।(2)

सुवाल वोह कौन सी नमाज़ें हैं जिन में क़ियाम फ़र्ज़ है ?

जवाब फ़र्ज़, वित्र, ईदैन और सुन्नते फ़ज्र में क़ियाम फ़र्ज़ है। अगर बिला उ़ज़्रे सह़ीह़ कोई येह नमाज़ें बैठ कर अदा करेगा तो न होंगी।(3)

सुवाल अगर इस में शक हो जाए कि इमाम से पहले तक्बीर कही या बा'द में तो क्या करे ?

जवाब अगर ग़ालिब गुमान है कि इमाम से पहले कही (तो नमाज़) न हुई और अगर ग़ालिब गुमान है कि इमाम से पहले नहीं कही तो

1 ...درمختار مع ردالمحتار، کتاب الصلاۃ، مطلب فی طلوع الشمس من مغربها، ۲/ ۳۰۔

2 ...فتاوی هندیة، کتاب الصلاۃ، الباب الرابع فی صفة الصلاۃ، ۱/ ۶۸۔

3 ...درمختار مع ردالمحتار، کتاب الصلاۃ، باب صفة الصلاۃ، بحث القیام، ۲/ ۱۶۳۔

(नमाज़) हो गई और अगर किसी त़रफ़ ग़ालिब गुमान न हो तो एह़तियात़ येह है कि (नमाज़) क़त़अ़ करे (या'नी तोड़ दे) और फिर से तह़रीमा बांधे।(1)

सुवाल गूंगा या वोह शख़्स जिस की ज़बान बन्द हो वोह तक्बीरे तह़रीमा किस त़रह़ कहें ?

जवाब उन पर तलफ़्फ़ुज़ वाजिब नहीं, दिल में इरादा कर लेना काफ़ी है।(2)

सुवाल नमाज़ में कितनी देर तक क़ियाम ज़रूरी है ?

जवाब क़ियाम इतनी देर तक है जितनी देर क़िराअत है, या'नी ब क़दरे क़िराअते फ़र्ज़, क़ियाम भी फ़र्ज़, ब क़दरे वाजिब, वाजिब और ब क़दरे सुन्नत, सुन्नत।(3) लेकिन पहली रक्अ़त में क़ियामे फ़र्ज़ में मिक़्दारे तक्बीरे तह़रीमा भी शामिल होगी।(4)

सुवाल किस सूरत में खड़े हो कर नमाज़ पढ़ने की त़ाक़त होने के बा वुजूद बैठ कर नमाज़ पढ़ना बेहतर है ?

जवाब जो शख़्स क़ियाम पर क़ादिर है मगर सजदा नहीं कर सकता या'नी ज़मीन पर या ज़मीन पर इतनी ऊंची रखी हुई चीज़ पर जिस की ऊंचाई बारह (12) उंगल से ज़ियादा न हो सजदा करने से आ़जिज़ हो तो उस शख़्स से क़ियाम साक़ित़ हो जाएगा उस के लिये बेहतर येह है कि बैठ कर इशारे से नमाज़ पढ़े लेकिन खड़े हो कर भी पढ़ सकता है।(5)

---

1 ...درمختارمع ردالمحتار، کتاب الصلاۃ، باب صفۃ الصلاۃ، ۲/۲۱۹۔

2 ...درمختار، کتاب الصلاۃ، باب صفۃ الصلاۃ، ۲/۲۲۰۔

3 ...درمختار، کتاب الصلاۃ، باب صفۃ الصلاۃ، ۲/۱۶۳۔

4 .....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 3, 1 / 510

5 ...درمختار، کتاب الصلاۃ، باب صفۃ الصلاۃ، بحث القیام، ۲/۱۶۴، कुरसी पर नमाज़ पढ़ने के अह़काम, स. 4

सुवाल वोह कौन सी आयत है जिसे पढ़ने से क़िराअत का फ़र्ज़ अदा नहीं होगा ?

जवाब सूरतों के शुरूअ़ में بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡم ط एक पूरी आयत है, मगर सिर्फ़ इस के पढ़ने से फ़र्ज़ अदा न होगा।(1)

सुवाल अगर किसी ने पहली रक्अ़त में सूरतुन्नास पढ़ ली तो दूसरी में क्या पढ़े ?

जवाब पहली रक्अ़त में सूरतुन्नास अ़मदन (जान बूझ कर) नहीं पढ़नी चाहिये ताकि तकरार की ज़रूरत न पड़ जाए अगर सह्वन (भूल कर) या अ़मदन पढ़ चुका तो अब दूसरी रक्अ़त में वोही सूरत या'नी सूरतुन्नास दोबारा पढ़े क्यूंकि तरतीब बदल कर पढ़ना तकरार से भी सख़्त है ब ख़िलाफ़ ख़त्मे क़ुरआन की सूरत के कि इस में पहली रक्अ़त में सूरतुन्नास तक पढ़ना और दूसरी रक्अ़त में الٓمّٓ ता مُفۡلِحُوۡنَ पढ़ना जाइज़ और दुरुस्त है।(2)

सुवाल अगर किसी शख़्स ने रुकूअ़ करने से पहले सजदा कर लिया तो क्या हुक्म है ?

जवाब क़ियाम, रुकूअ़, सुजूद और क़ा'दए अख़ीरा में तरतीब फ़र्ज़ है, अगर रुकूअ़ से पहले सजदा कर लिया फिर रुकूअ़ किया तो वोह सजदा जाता रहा, अगर रुकूअ़ के बा'द दोबारा सजदा करेगा तो नमाज़ हो जाएगी वरना नहीं।(3)

सुवाल कारपेट पर सजदा करते वक़्त किस चीज़ की एह़तियात़ ज़रूरी है नीज़ क्या स्प्रिंग वाले गद्दे पर सजदा किया जा सकता है ?

जवाब कारपेट पर सजदा करते वक़्त इस बात का ख़ास ख़याल रखना है कि पेशानी अच्छी त़रह़ जम जाए वरना नमाज़ न होगी और नाक

---

1 . . . درمختار، کتاب الصلاۃ، باب صفۃ الصلاۃ، ۲/ ۲۳۶۔

2 .....फ़तावा रज़विय्या, 6 / 266

3 . . . درمختار مع ردالمحتار، کتاب الصلاۃ، باب صفۃ الصلاۃ، ۲/ ۱۴۲۔

की हड्डी न दबी तो नमाज़ मकरूहे तह़रीमी वाजिबुल इआ़दा होगी। स्प्रिंग वाले गद्दे पर पेशानी ख़ूब नहीं जमती लिहाज़ा (इस पर सजदा करने से) नमाज़ न होगी।(1)

सुवाल किस सूरत में चौथी रक्अ़त का सजदा करते ही फ़र्ज़ बात़िल हो जाते हैं?

जवाब मग़रिब की नमाज़ में तीसरी रक्अ़त पर न बैठा और चौथी का सजदा कर लिया तो फ़र्ज़ बात़िल हो जाएंगे।(2)

सुवाल सजदे की जगह क़दमों वाली जगह से ऊंची हो तो क्या सजदा हो जाएगा ?

जवाब ऐसी जगह सजदा किया जो क़दम की ब निस्बत बारह उंगल से ज़ियादा ऊंची है तो सजदा नहीं होगा और बारह उंगल से कम या सिर्फ़ बारह उंगल ऊंची है तो हो जाएगा।(3)

वाजिबाते नमाज़ और सजदए सह्व

सुवाल वोह कौन सी सूरत है कि सह्व होने के बा वुजूद सजदए सह्व न करना औला है?

जवाब इस सूरत में जब कि जुमुआ़ व ईदैन में ह़ाज़िरीन कसीर हों और फ़ितने का ख़ौफ़ हो तो सजदए सह्व न करना औला है।(4)

सुवाल किस सूरत में इमाम के सजदए सह्व के लिये सलाम फेरने पर मुक़्तदी ने सलाम फेर दिया तो उस की नमाज़ टूट जाएगी?

जवाब मस्बूक़ या'नी वोह शख़्स जो पहली रक्अ़त के बा'द जमाअ़त में शामिल हुवा जब तक अपनी रक्अ़तें मुकम्मल न कर ले सलाम

1.....नमाज़ के अह़काम, स. 214

2...غنیۃ المتملی،فرائض الصلاۃ،السادس القعدۃ الاخیرۃ،ص ۲۹۰۔

3...درمختارمع ردالمحتار،کتاب الصلاۃ،باب صفۃ الصلاۃ، ۲/۲۵۷۔

4...درمختارمع ردالمحتار،کتاب الصلاۃ،باب سجود السھو ۲/۶۷۵۔

नहीं फेर सकता लिहाज़ा अगर इमाम ने सजदए सहव से पहले या बा'द सलाम फेरा और मस्बूक़ ने भी क़सदन सलाम फेरा तो उस की नमाज़ टूट जाएगी हां अगर भूल कर फेरा तो नहीं टूटेगी।[1]

सुवाल मस्बूक़ ने भूल कर इमाम के साथ सलाम फेरा तो उस पर सजदए सहव है या नहीं ?

जवाब अगर मस्बूक़ ने (भूल कर) इमाम के साथ मअ़न बिला वक़्फ़ा सलाम फेरा तो उस पर सजदए सहव नहीं और अगर सलाम इमाम के कुछ भी बा'द फेरा तो खड़ा हो जाए अपनी नमाज़ पूरी कर के सजदए सहव करे।[2]

सुवाल फ़ातिहा के बा'द सूरत पढ़ना भूल गया और रुकूअ़ या सजदे में याद आया तो क्या करे ?

जवाब जो सूरत मिलाना भूल गया अगर उसे रुकूअ़ में याद आया तो फ़ौरन खड़े हो कर सूरत पढ़े फिर रुकूअ़ दोबारा करे फिर नमाज़ तमाम कर के सजदए सहव करे और अगर रुकूअ़ के बा'द सजदे में याद आया तो सिर्फ़ अख़ीर में सजदए सहव कर ले नमाज़ हो जाएगी।[3]

सुवाल इमाम ने रुकूअ़ से उठते वक़्त سَمِعَ اللّٰهُ لِمَنْ حَمِدَهٗ की जगह اَللّٰهُ اَكْبَر कहा और सजदए सहव नहीं किया तो नमाज़ हो गई या नहीं ?

जवाब नमाज़ हो गई और सजदए सहव की अस्लन ह़ाजत नहीं।[4]

सुवाल अगर किसी ने क़ियाम की ह़ालत में तशह्हुद पढ़ा या क़ा'दए ऊला में एक से ज़ियादा मरतबा तशह्हुद पढ़ा तो क्या हुक्म है ?

1 ...ردالمحتار، کتاب الصلاۃ، باب سجود السھو ۲/ ۶۵۹۔

2 ...ردالمحتار، کتاب الصلاۃ، باب سجود السھو ۲/ ۶۵۹۔

3.....फ़तावा रज़विय्या, 8 / 196

4.....फ़तावा रज़विय्या, 8 / 216

जवाब पहली दो रक्अ़तों के क़ियाम में اَلْحَمْد के बा'द तशह्हुद पढ़ा (तो) सजदए सह्व वाजिब है और اَلْحَمْد से पहले पढ़ा तो नहीं। पिछली (या'नी आख़िरी) रक्अ़तों के क़ियाम में तशह्हुद पढ़ा तो सजदा वाजिब न हुवा और अगर क़ा'दए ऊला में चन्द बार तशह्हुद पढ़ा सजदा वाजिब हो गया।(1)

सुवाल नमाज़ का सलाम फेरते वक़्त कौन सा लफ़्ज़ कहना वाजिब और कौन सा सुन्नत है ?

जवाब दोनों त़रफ़ सलाम फेरते वक़्त लफ़्ज़ "اَلسَّلَام" दोनों बार वाजिब है जब कि लफ़्ज़ "عَلَيْكُم" वाजिब नहीं बल्कि सुन्नत है।(2)

सुवाल अगर किसी ने दो बार सूरए फ़ातिहा पढ़ कर फिर कोई सूरत पढ़ी तो क्या हुक्म है ?

जवाब फ़र्ज़ की पहली दो रक्अ़तों में और नफ़्ल व वित्र की किसी रक्अ़त में सूरत से पहले दो बार सूरए फ़ातिहा पढ़ी तो सजदए सह्व वाजिब है।(3)

सुवाल मस्बूक़ इमाम के साथ सजदए सह्व करेगा या आख़िर में ?

जवाब मस्बूक़ इमाम के साथ सजदए सह्व करे और अगर इमाम के साथ सजदा न किया और बक़िय्या रक्अ़तें पढ़ने खड़ा हो गया तो आख़िर में सजदए सह्व करे।(4) मगर बिला ज़रूरत इमाम के सलाम फेरने से पहले खड़ा होना मकरूहे तह़रीमी है।(5)

सुवाल वोह कौन सी सूरत है कि इमाम के सजदए सह्व से पहले जो लोग जमाअ़त में शरीक हुए उन की नमाज़ हो गई और जो

1.....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 4, 1 / 713

2...درمختارمع ردالمحتار، کتاب الصلاۃ، باب صفۃ الصلاۃ، ۲/۱۹۹، नमाज़ के अह़काम, स. 220

3...فتاوی ھندیۃ، کتاب الصلاۃ، الباب الثانی عشر فی سجود السھو ۱/۱۲۶۔

4...ردالمحتار، کتاب الصلاۃ، باب سجود السھو ۲/۶۵۹۔

5.....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 3, 1 / 591

सजदए सह्व के बा'द शरीक हुए उन की न हुई ?

जवाब जब मुक़्तदी सजदए सह्व के बा'द इमाम के साथ मिलें और बा'द में उन्हें पता चले कि इमाम पर सजदए सह्व वाजिब नहीं था तो उन मुक़्तदियों की नमाज़ फ़ासिद हो जाएगी।(1)

सुवाल क़ा'दए ऊला में इमाम आ़दत से ज़ियादा देर लगाए तो मुक़्तदी लुक़्मा दे सकता है या नहीं ?

जवाब अगर कोई इतना क़रीब है कि इमाम की आवाज़ सुनी कि अत्तहिय्यात के बा'द दुरूद शरीफ़ शुरूअ़ किया तो जब तक इमाम اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی से आगे नहीं बढ़ा है येह मुक़्तदी سُبْحٰنَ اللہ कह कर बता दे और अगर इस से ज़ियादा पढ़ चुका है तो अब बताना जाइज़ नहीं।(2)

सुवाल किसी ने सजदए सह्व कर के फ़ौरन सलाम फेर दिया तो क्या हुक्म है ?

जवाब सजदए सह्व करने से पहला क़ा'दा बातिल न हुवा मगर तशह्हुद वाजिब है या'नी अगर सजदए सह्व कर के सलाम फेर दिया तो फ़र्ज़ अदा हो गया मगर गुनाहगार हुवा और नमाज़ का इआ़दा वाजिब है।(3)

नमाज़े वित्र

सुवाल ह़दीस शरीफ़ में वित्र की क्या अहम्मिय्यत बयान हुई है ?

जवाब हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ वित्र है वित्र को मह़बूब रखता है तो ऐ क़ुरआन वालो ! वित्र पढ़ो।(4) नीज़ इरशाद फ़रमाया : अल्लाह तआ़ला

---

1 ...فتاوی قاضی خان، کتاب الصلاۃ، باب افتتاح الصلاۃ، فصل فی مسبوق، ۱/ ۴۹۔

2 .....फ़तावा रज़विय्या, 8 / 212 मुलख़्ख़सन।

3 ...درمختار مع ردالمحتار، کتاب الصلاۃ، مطلب کل شفع من النفل صلاۃ، ۲/ ۱۹۳، बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 3,1 / 516

4 ...ترمذی، کتاب الوتر، باب ماجاء ان الوتر لیس بحتم، ۲/ ۴، حدیث: ۴۵۳۔

ने एक नमाज़ से तुम्हारी मदद फ़रमाई कि वोह सुर्ख़ ऊंटों से बेहतर है वोह नमाज़े वित्र है।(1)

सुवाल नमाज़े वित्र न पढ़ने वाले के मुतअ़ल्लिक़ क्या वईद आई है ?

जवाब हुज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : वित्र ह़क़ है जो वित्र न पढ़े वोह हम में से नहीं, वित्र ह़क़ है जो वित्र न पढ़े वोह हम में से नहीं, वित्र ह़क़ है जो वित्र न पढ़े वोह हम में से नहीं।(2)

सुवाल अगर किसी शख़्स ने वित्र की निय्यत में वाजिब की निय्यत न की तो उस के वित्र अदा हो जाएंगे ?

जवाब वित्र में फ़क़त़ वित्र की निय्यत काफ़ी है, अगर्चे इस के साथ निय्यते वुजूब न हो, हां निय्यते वाजिब बेहतर है और अगर वाजिब न होने की निय्यत है तो काफ़ी नहीं।(3)

सुवाल माहे रमज़ान में वित्र की जमाअ़त तर्क करना कैसा है ?

जवाब जमाअ़ते वित्र न वाजिब न सुन्नते मुअक्कदा, इस के तर्क में कोई गुनाह नहीं।(4)

सुवाल नमाज़े वित्र की रक्अ़तों में शक हो जाए तो क्या हुक्म है ?

जवाब वित्र में शक हुवा कि दूसरी है या तीसरी तो इस में क़ुनूत पढ़ कर क़ा'दे के बा'द एक रक्अ़त और पढ़े और इस में भी क़ुनूत पढ़े और सजदए सह्व करे।(5)

सुवाल क्या वित्र की तीनों रक्आ़त में फ़ातिह़ा के बा'द सूरत मिलाना ज़रूरी है ?

---

1 ...ابوداود، کتاب الوتر، باب استحباب الوتر، ۲/۸۸، حدیث: ۱۴۱۸۔

2 ...ابوداود، کتاب الوتر، باب فیمن لم یوتر، ۲/۸۹، حدیث: ۱۴۱۹۔

3 ...درمختار مع ردالمحتار، کتاب الصلاۃ، مطلب فی منکر الوتر والسنن او الاجماع، ۲/۵۳۷۔

4 .....फ़तावा रज़विय्या, 7 / 483

5 ...فتاوی ھندیۃ، کتاب الصلاۃ، الباب الثانی عشر فی سجود السھو، ۱/۱۳۱۔

जवाब नमाज़े वित्र की तीनों रक्अ़तों में मुत़्लक़न क़िराअत फ़र्ज़ है और हर एक में फ़ातिह़ा के बा'द सूरत मिलाना वाजिब है।(1)

सुवाल नमाज़े वित्र में कौन कौन सी सूरतें पढ़ना बेहतर है ?

जवाब बेहतर येह है कि पहली में ''سَبِّحِ اسْمَ رَبِّكَ الْاَعْلٰى'' या ''اِنَّآ اَنْزَلْنَا'' दूसरी में ''قُلْ يٰٓاَيُّهَا الْكٰفِرُوْنَ'' तीसरी में ''قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ'' पढ़े और कभी कभी और सूरतें भी पढ़ ले।(2)

सुवाल क्या रमज़ान के इ़लावा नमाज़े वित्र जमाअ़त के साथ पढ़ सकते हैं ?

जवाब नहीं पढ़ना चाहिये। दुर्रे मुख़्तार में है : रमज़ान शरीफ़ के इ़लावा और दिनों में वित्र जमाअ़त से न पढ़े और अगर तदाई के त़ौर पर हो तो मकरूह है।(3)

सुवाल वित्र के बा'द कितने नवाफ़िल पढ़े जाएं और इन में कौन सी सूरतें पढ़ें ?

जवाब वित्र के बा'द दो रक्अ़त नफ़्ल पढ़ना बेहतर है, इस की पहली रक्अ़त में اِذَا زُلْزِلَتْ (सूरए ज़िलज़ाल) दूसरी में قُلْ يٰٓاَيُّهَا الْكٰفِرُوْنَ (सूरए काफ़िरून) पढ़ना बेहतर है। ह़दीस में है कि अगर रात में न उठा तो येह तहज्जुद के क़ाइम मक़ाम हो जाएंगे।(4)

सुवाल तक्बीरे क़ुनूत के लिये नमाज़ी किस सूरत में हाथ न उठाए ?

जवाब वित्र की क़ज़ा में तक्बीरे क़ुनूत के लिये हाथ न उठाए जब कि

1.....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 4, 1 / 654
2.....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 4, 1 / 654
3...درمختار، کتاب الصلاۃ، باب الوتر والنوافل، ۲/ ۶۰۴۔
4...غنیۃ المتملی، صلاۃ الوتر، ص ۴۲۴،
बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 4, 1 / 658

लोगों के सामने पढ़ता हो कि लोग इस की तक़्सीर व कोताही पर मुत्तलअ़ होंगे।(1)

सुवाल अगर भूल कर वित्र की पहली या दूसरी रक्अ़त में दुआ़ए क़ुनूत पढ़ ली तो क्या हुक्म है ?

जवाब भूल कर पहली या दूसरी में दुआ़ए क़ुनूत पढ़ ली तो तीसरी में फिर पढ़े येही राजेह़ है।(2)

सुवाल इ़शा से पहले वित्र पढ़ लिये तो किस सूरत में हो जाएंगे ?

जवाब इ़शा से पहले वित्र पढ़े तो नहीं होंगे, हां अगर भूल कर वित्र पहले पढ़ लिये तो हो गए।(3)

सुन्नतें और नवाफ़िल

सुवाल सुन्नते मुअक्कदा से क्या मुराद है और इस का हुक्म क्या है ?

जवाब जिन सुन्नतों पर शरीअ़त में ताकीद आई है उन्हें सुन्नते मुअक्कदा कहते हैं, जो बिग़ैर उ़ज़्र एक बार भी तर्क करे वोह मलामत का मुस्तह़िक़ है और तर्क की आ़दत बनाए तो फ़ासिक़ है, उस की गवाही क़बूल नहीं और वोह जहन्नम का ह़क़दार है और बा'ज़ उ़लमा के नज़्दीक गुमराह और गुनहगार है, अगर्चे इस का गुनाह वाजिब के तर्क से कम है। तलवीह़ में है कि इस का तर्क ह़राम के क़रीब है और तर्क करने वाला इस का मुस्तह़िक़ है कि مَعَاذَ اللہ शफ़ाअ़त से मह़रूम हो जाए क्यूंकि हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जो मेरी सुन्नत को तर्क करेगा उसे मेरी शफ़ाअ़त न

---

1 ...ردالمحتار، کتاب الصلاۃ، باب الوتر والنوافل، ۲/ ۵۳۳۔

2 ...غنیۃ المتملی، صلاۃ الوتر، ص ۴۲۴۔

3 ...درمختار، کتاب الصلاۃ، ۲/ ۲۳۔

मिलेगी।" सुन्नते मुअक्कदा को सुननुल हुदा भी कहते हैं।[1]

सुवाल ताकीद के ए'तिबार से सुन्नते मुअक्कदा के दरजात बयान कीजिये ?

जवाब सब सुन्नतों में क़वी तर सुन्नते फ़ज्र है, यहां तक कि बा'ज़ इस को वाजिब कहते हैं। सुन्नते फ़ज्र के बा'द मग़रिब की सुन्नतों का दरजा है, फिर ज़ोहर के बा'द की, फिर इ़शा के बा'द की, फिर ज़ोहर से पहले की सुन्नतें हैं और ज़ियादा सह़ीह़ क़ौल के मुत़ाबिक़ सुन्नते फ़ज्र के बा'द ज़ोहर की पहली सुन्नतों का मर्तबा है कि ह़दीस में ख़ास इन के बारे में फ़रमाया कि जो इन को तर्क करेगा उसे मेरी शफ़ाअ़त न पहुंचेगी।[2]

सुवाल फ़ज्र की सुन्नतों में कौन सी सूरतें पढ़ना सुन्नत है ?

जवाब सुन्नते फ़ज्र की पहली रक्अ़त में सूरए फ़ातिह़ा के बा'द قُلۡ یٰۤاَیُّهَا الۡكٰفِرُوۡنَ (सूरए काफ़िरून) और दूसरी में قُلۡ هُوَ اللّٰهُ पढ़ना सुन्नत है।[3]

सुवाल ज़ोहर की सुन्नतें और नवाफ़िल अदा करने की क्या फ़ज़ीलत है ?

जवाब ह़दीसे पाक में है : जिस ने ज़ोहर से पहले चार और बा'द में चार (रक्आ़त) पर मुह़ाफ़ज़त की अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे दोज़ख़ पर ह़राम फ़रमा देगा।[4] ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ल्लामा इब्ने आ़बिदीन शामी قُدِّسَ سِرُّهُ السّامی फ़रमाते हैं : ऐसे शख़्स के लिये खुश ख़बरी

1.....माख़ूज़ अज़ बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 4, 1 / 662

2...درمختار، کتاب الصلاۃ، باب الوتر والنوافل، ۲/۵۴۸۔

فتاوی ھندیۃ، کتاب الصلاۃ، الباب التاسع فی النوافل، ۱/۱۱۲، बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 4, 1 / 663 मुलख़्ख़सन

3...مسلم، کتاب صلاۃ المسافرین وقصرھا، باب استحباب رکعتی سنۃ الفجر۔۔۔الخ، ص۲۸۶، حدیث:۱۶۹۰۔

4...نسائی، کتاب قیام اللیل وتطوع النھار، باب الاختلاف علی اسماعیل بن ابی خالد، ص۳۱۰، حدیث:۱۸۱۳۔

है कि उस का ख़ातिमा सआ़दत पर होगा और दोज़ख़ में न जाएगा।[1]

सुवाल कौन सी चार रक्अ़त वाली नमाज़ की तीसरी रक्अ़त में सना और तअ़व्वुज़ पढ़ने का हुक्म है ?

जवाब फ़र्ज़ और ज़ोहर व जुमुआ़ की पहली और बा'द की चार रक्अ़त वाली सुन्नत के इलावा हर चार रक्अ़त वाली नमाज़ की तीसरी रक्अ़त में सना और तअ़व्वुज़ पढ़ने का हुक्म है।[2]

सुवाल सलातुल अव्वाबीन की फ़ज़ीलत बयान कीजिये ?

जवाब हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जो शख़्स मग़रिब के बा'द छे रक्अ़तें पढ़े और दरमियान में कोई बुरी बात न कहे तो येह छे रक्अ़तें 12 साल की इबादत के बराबर होंगी।[3] और एक ह़दीस शरीफ़ में है : जो बा'दे मग़रिब छे रक्अ़तें पढ़े उस के गुनाह बख़्श दिये जाएंगे अगर्चे समुन्दर के झाग बराबर हों।[4]

सुवाल सूरज गहन की नमाज़ का हुक्म बताइये और इस की जमाअ़त की क्या शराइत़ हैं ?

जवाब सूरज गहन की नमाज़ सुन्नते मुअक्कदा है और जमाअ़त से पढ़ना मुस्तह़ब है, अगर जमाअ़त से पढ़ी जाए तो ख़ुत़बा के सिवा तमाम शराइते़ जुमुआ़ इस के लिये शर्त़ हैं, वोही शख़्स इस

---

1 ... ردالمحتار، کتاب الصلاۃ، باب الوتر والنوافل، مطلب فی السنن والنوافل، ۲/۵۴۷۔

2 ... درمختار مع ردالمحتار، کتاب الصلاۃ، باب الوتر والنوافل، ۲/۵۵۲۔

3 ... ابن ماجه، کتاب اقامة الصلاۃ، باب ماجاء فی الست رکعات بعد المغرب، ۲/۴۵، حدیث: ۱۱۶۷۔

4 ... معجم اوسط، ۵/۲۵۵، حدیث: ۷۲۴۵۔

की जमाअ़त क़ाइम कर सकता है जो जुमुआ़ की कर सकता है, वोह न हो तो तन्हा घर में या मस्जिद में पढ़ें।(1)

सुवाल सूरज गहन की नमाज़ किस वक़्त पढ़ने का हुक्म है ?

जवाब गहन की नमाज़ उसी वक़्त पढ़ें जब आफ़्ताब गहना हो, गहन छूटने के बा'द नहीं और गहन छूटना शुरूअ़ हो गया मगर अभी बाक़ी है उस वक़्त भी शुरूअ़ कर सकते हैं और गहन की ह़ालत में इस पर अब्र (या'नी बादल) आ जाए जब भी नमाज़ पढ़ें। ऐसे वक़्त गहन लगा कि उस वक़्त नमाज़ ममनूअ़ है तो नमाज़ न पढ़ें, बल्कि दुआ़ में मश्ग़ूल रहें और इसी ह़ालत में डूब जाए तो दुआ़ ख़त्म कर दें और मग़रिब की नमाज़ पढ़ें।(2)

सुवाल सलातुत्तस्बीह़ की फ़ज़ीलत बयान कीजिये ?

जवाब सदरुश्शरीअ़ा मुफ़्ती अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : इस नमाज़ में बे इन्तिहा सवाब है, बा'ज़ मुह़क़्क़िक़ीन फ़रमाते हैं : इस की बुज़ुर्गी सुन कर तर्क न करेगा मगर दीन में सुस्ती करने वाला। हुज़ूर ताजदारे ख़त्मे नुबुव्वत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से फ़रमाया : "ऐ चचा ! क्या मैं तुम को अ़त़ा न करूं, क्या मैं तुम को बख़्शिश न करूं, क्या मैं तुम को न दूं, तुम्हारे साथ एह़सान न करूं, दस ख़स्लतें हैं कि जब तुम करो तो **अल्लाह** तआ़ला तुम्हारे गुनाह बख़्श देगा। अगला पिछला पुराना नया जो भूल कर किया और जो क़स्दन किया छोटा और बड़ा पोशीदा और ज़ाहिर। इस के बा'द सलातुत्तस्बीह़ की तरकीब ता'लीम फ़रमाई फिर फ़रमाया : अगर तुम से हो सके कि हर रोज़ एक बार पढ़ो तो

---

1 . . . درمختار مع ردالمحتار، کتاب الصلاۃ، باب الکسوف، ۳/۷۷-۷۹۔

2 . . . جوھرۃ نیرۃ، کتاب الصلاۃ، باب صلاۃ الکسوف، ص ۱۲۳۔

करो और अगर रोज़ न करो तो हर जुमुआ में एक बार और येह भी न करो तो हर महीने में एक बार और येह भी न करो तो साल में एक बार और येह भी न करो तो उम्र में एक बार ज़रूर पढ़ो।[1]

सुवाल सलातुत्तस्बीह़ अदा करने का क्या त़रीक़ा है?

जवाब इस नमाज़ की तरकीब येह है कि तक्बीरे तह़रीमा के बा'द सना पढ़े, फिर पन्दरह मरतबा येह तस्बीह़ पढ़े سُبْحٰنَ اللہِ وَالْحَمْدُ لِلّٰہِ وَلَآ اِلٰہَ اِلَّا اللہُ وَاللہُ اَکْبَرُ, फिर सूरए फ़ातिह़ा और कोई सूरत पढ़ कर रुकूअ़ से पहले दस बार येही तस्बीह़ पढ़े फिर रुकूअ़ करे और रुकूअ़ में سُبْحٰنَ رَبِّیَ الْعَظِیْم तीन बार पढ़ कर फिर दस मरतबा येही तस्बीह़ पढ़े, फिर रुकूअ़ से सर उठाए और سَمِعَ اللہُ لِمَنْ حَمِدَہٗ۔ اَللّٰھُمَّ رَبَّنَا وَلَکَ الْحَمْدُ के बा'द फिर खड़े खड़े दस मरतबा येही तस्बीह़ पढ़े, फिर सजदे में जाए और سُبْحٰنَ رَبِّیَ الْاَعْلٰی तीन बार पढ़ कर फिर दस मरतबा येही तस्बीह़ पढ़े फिर सजदे से सर उठाए और दोनों सजदों के दरमियान बैठ कर दस मरतबा येही तस्बीह़ पढ़े, फिर दूसरे सजदे में जाए और पहले की त़रह़ سُبْحٰنَ رَبِّیَ الْاَعْلٰی तीन बार पढ़ कर येही तस्बीह़ दस मरतबा पढ़े, इसी त़रह़ चार रक्अ़त पढ़े और ख़याल रहे कि खड़े होने की ह़ालत में सूरए फ़ातिह़ा से पहले पन्दरह मरतबा और बाक़ी सब जगह येह तस्बीह़ दस दस बार पढ़े यूं हर रक्अ़त में 75 मरतबा तस्बीह़ पढ़ी जाएगी और चार रक्अ़तों में तस्बीह़ की गिनती तीन सौ मरतबा होगी।[2]

---

1 . . . ابن ماجه، کتاب اقامة الصلاة، باب ماجاء فی صلاة التسبیح، ۲/۱۵۸، حدیث: ۱۳۸۷۔
غنیة المتملی، صلاۃ التسبیح، ص ۴۳۱، बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 4, 1 / 683

2 . . . ترمذی، کتاب الوتر، باب ماجاء فی صلاة التسبیح، ۲/۲۴، حدیث: ۴۸۱، غنیة المتملی، صلاۃ التسبیح، ص ۴۳۱۔

सुवाल कब कब नवाफ़िल पढ़ना मुस्तहब है ?

जवाब जब तेज़ आंधी आए या दिन में सख़्त तारीकी छा जाए या रात में ख़ौफ़नाक रौशनी हो या लगातार कसरत से बारिश बरसे या ब कसरत ओले पड़ें या आस्मान सुर्ख़ हो जाए या बिजलियां गिरें या ब कसरत तारे टूटें या ताऊन वग़ैरा वबा फैले या ज़लज़ले आएं या दुश्मन का ख़ौफ़ हो या और कोई दहशतनाक अम्र पाया जाए इन सब के लिये दो रक्अत नमाज़ मुस्तहब है।(1)

सुवाल कौन से अवक़ात में नवाफ़िल पढ़ना मन्अ़ है ?

जवाब बारह वक़्तों में नवाफ़िल पढ़ना मन्अ़ है : (1) तुलूए़ फ़ज्र से तुलूए़ आफ़्ताब तक (2) अपने मज़हब (मसलन फ़िक़्हे ह़नफ़ी वालों) की जमाअ़त के लिये इक़ामत हुई तो इक़ामत से ख़त्मे जमाअ़त तक (अलबत्ता अगर नमाज़े फ़ज्र क़ाइम हो चुकी और जानता है कि सुन्नत पढ़ेगा जब भी जमाअ़त मिल जाएगी अगर्चे क़ा'दे में शिर्कत होगी तो हुक्म है कि जमाअ़त से अलग और दूर सुन्नते फ़ज्र पढ़ कर शरीके जमाअ़त हो) (3) नमाज़े अ़स्र से आफ़्ताब ज़र्द होने तक (4) ग़ुरूबे आफ़्ताब से फ़र्ज़े मग़रिब तक (5) जिस वक़्त इमाम अपनी जगह से ख़ुत़बए जुमुआ़ के लिये खड़ा हुवा उस वक़्त से फ़र्ज़े जुमुआ़ ख़त्म होने तक (6) ऐ़न ख़ुत़बे के वक़्त अगर्चे जुमुआ़ का हो या ख़ुत़बए ईदैन या कुसूफ़ व इस्तिस्क़ा व ह़ज व निकाह़ का (7) नमाज़े ईदैन से पहले (8) नमाज़े ईदैन के बा'द जब कि ईदगाह या मस्जिद में पढ़े, घर में पढ़ना मकरूह नहीं (9) अ़रफ़ात में जो ज़ोहर व अ़स्र मिला कर पढ़ते हैं, इन के दरमियान और बा'द में भी (10) मुज़्दलिफ़ा में जो मग़रिब व इशा जम्अ़ किये जाते हैं, फ़क़त़ इन के दरमियान,

1 . . . فتاوی هندية، كتاب الصلاة، الباب الثامن عشر في صلاة الكسوف، ۱ / ۱۵۳ ـ

बा'द में मकरूह नहीं (11) फ़र्ज़ का वक़्त तंग हो तो हर नमाज़ यहां तक कि सुन्नते फ़ज्र व ज़ोहर मकरूह है (12) जिस बात से दिल बटे और दफ़्अ़ कर सकता हो उसे बे दफ़्अ़ किये हर नमाज़ मकरूह है, कोई ऐसा अम्र दरपेश हो जिस से दिल बटे ख़ुशूअ़ में फ़र्क़ आए उन वक़्तों में भी नमाज़ पढ़ना मकरूह है।(1)

तरावीह़

सुवाल कैसे ह़ाफ़िज़ साह़िब को इमाम बनाना चाहिये ?

जवाब ख़ुश ख़्वान (या'नी मह़ज़ अच्छी आवाज़ वाले) को इमाम न बनाना चाहिये बल्कि दुरुस्त ख़्वान (सह़ीह़ पढ़ने वाले) को बनाएं।(2) अफ़्सोस सद अफ़्सोस कि इस ज़माने में ह़ुफ़्फ़ाज़ की ह़ालत निहायत नागुफ़्ता बेह है, अक्सर तो ऐसा पढ़ते हैं कि يَعْلَمُوْنَ تَعْلَمُوْنَ के सिवा कुछ पता नहीं चलता अल्फ़ाज़ व ह़ुरूफ़ खा जाया करते हैं जो अच्छा पढ़ने वाले कहे जाते हैं उन्हें देखिये तो ह़ुरूफ़ सह़ीह़ नहीं अदा करते ہمزہ، الف، عین और ذ، ز، ظ और ث، س، ص और ت، ط वग़ैरा ह़ुरूफ़ में फ़र्क़ नहीं करते जिस से क़त्अ़न नमाज़ ही नहीं होती।(3)

सुवाल तरावीह़ में इमाम साह़िब को किस त़रह़ तिलावत करनी चाहिये ?

जवाब तरावीह़ में मुतवस्सित़ अन्दाज़ पर क़िराअत करे मगर ऐसा पढ़े कि समझ में आ सके या'नी कम से कम मद का जो दरजा क़ारियों ने रखा है इस को अदा करे, वरना ह़राम है इस लिये कि तरतील से

---

1 . . . فتاوی ھندیۃ، کتاب الصلاۃ، الباب الاول فی المواقیت، ۱/ ۵۲، ۵۳۔
درمختار، کتاب الصلاۃ، ۲/ ۴۲۔ ۵۰، बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 3, 1 / 455-457

2 . . . فتاوی ھندیۃ، کتاب الصلاۃ، الباب التاسع فی النوافل، فصل فی تراویح، ۱/ ۱۱۶۔

3 .....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 4, 1 / 691

कुरआन पढ़ने का हुक्म है। आज कल के अक्सर हुफ़्फ़ाज़ इस तरह पढ़ते हैं कि मद का अदा होना तो बड़ी बात है يَعْلَمُوْنَ تَعْلَمُوْنَ के सिवा किसी लफ़्ज़ का पता भी नहीं चलता न तस्ह़ीहे हुरूफ़ होती, बल्कि जल्दी में लफ़्ज़ के लफ़्ज़ खा जाते हैं और इस पर तफ़ाखुर होता है कि फुलां इस क़दर जल्दी पढ़ता है, ह़ालांकि इस तरह़ कुरआने मजीद पढ़ना ह़राम व सख़्त ह़राम है।(1)

सुवाल सत्ताईसवीं शब को ख़त्मे कुरआन के लिये हर रक्अ़त में कितनी तिलावत की जाए?

जवाब मुजद्दिदे आ'ज़म, आ'ला ह़ज़रत, शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं: रुकूअ़ जारी हुए आठ सौ बरस हुए। मशाइख़े किराम ने اَلْحَمْد शरीफ़ के बा'द पांच सौ चालीस (रुकूअ़) रखे कि तरावीह़ की हर रक्अ़त में एक रुकूअ़ पढ़े तो सत्ताईसवीं शब में शबे क़द्र है ख़त्म हो।(2)

सुवाल ख़त्मे कुरआन में सूरए बक़रह की इब्तिदाई पांच आयात क्यूं पढ़ी जाती हैं?

जवाब बारगाहे रिसालत में अ़र्ज़ की गई: अल्लाह عَزَّوَجَلَّ को सब से मह़बूब अ़मल क्या है? हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया: मन्ज़िल पर पहुंचना और कूच करना। अ़र्ज़ की: मन्ज़िल पर पहुंचना और कूच करना क्या है? इरशाद फ़रमाया: येह कि बन्दा कुरआने करीम को शुरूअ़ से आख़िर तक पढ़े और हर बार ख़त्म करते ही फिर शुरूअ़ कर दे।(3) सय्यिदी आ'ला

1 ...درمختار مع ردالمحتار، کتاب الصلاۃ، باب صفۃ الصلاۃ، ۲/۳۲۰، बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 3, 1 / 547

2 .....मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत, स. 149

3 ...ترمذی، کتاب القراءات، باب ۱۱، ۴/۴۳۷، حدیث: ۲۹۵۷

हज़रत عَلَیْہِ رَحمَۃُ رَبِّ الْعِزَّت फ़रमाते हैं : जब वोह एक पारह पढ़ चुकता है शैतान कहता है अब शायद रुक जाए न पढ़े। जब दूसरा पारह ख़त्म करता है तो कहता है अब शायद न पढ़े। इसी त़रह़ हर पारह पर कहता है, यहां तक कि जब तीसों पारे ख़त्म हो जाते हैं कहता है अब न पढ़ेगा अब ख़त्म कर चुका। फिर اَلْمُفْلِحُوْن तक पढ़ता है। कहता है : येह न मानेगा पढ़ता ही रहेगा। मायूस हो जाता है, उस की उम्मीद टूट जाती है।(1)

सुवाल एक ही ह़ाफ़िज़ साह़िब का दो मस्जिदों में तरावीह़ पढ़ाना कैसा है ?

जवाब एक इमाम दो मस्जिदों में तरावीह़ पढ़ाता है अगर दोनों में पूरी पूरी पढ़ाए तो नाजाइज़ है और अगर घर में तरावीह़ पढ़ कर मस्जिद में आया और इमामत की तो मकरूह है।(2)

सुवाल इमाम के सलाम फेरने के बा'द रक्अ़तों की ता'दाद में शक हो जाए तो क्या हुक्म है ?

जवाब सलाम फेरने के बा'द कोई कहता है दो हुई कोई कहता है तीन तो इमाम के इ़ल्म में जो हो उस का ए'तिबार है और इमाम को किसी बात का यक़ीन न हो तो जिस को सच्चा जानता हो उस के क़ौल पर ए'तिबार करे। अगर इस में लोगों को शक हो कि बीस हुई या अठ्ठारह तो दो रक्अ़त तन्हा तन्हा पढ़ें।(3)

सुवाल क़ा'दे में सो गया और इमाम अगली दो रक्अ़तों के क़ा'दे में पहुंच गया तो अब क्या हुक्म है ?

जवाब क़ा'दे में मुक़्तदी सो गया, इमाम सलाम फेर कर और दो रक्अ़त

---

(1).....मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत, स. 524

(2)...فتاوی ھندیۃ، کتاب الصلاۃ، الباب التاسع فی النوافل، فصل فی تراویح، ۱/۱۱۶۔

(3)...فتاوی ھندیۃ، کتاب الصلاۃ، الباب التاسع فی النوافل، فصل فی تراویح، ۱/۱۱۷۔

पढ़ कर क़ा'दे में आया अब येह बेदार हुवा तो अगर मा'लूम हो गया तो सलाम फेर कर शामिल हो जाए और इमाम के सलाम फेरने के बा'द जल्द पूरी कर के इमाम के साथ हो जाए।(1)

सुवाल क्या मुक़्तदा शख़्स तन्हा तरावीह़ की नमाज़ पढ़ सकता है?

जवाब जो शख़्स मुक़्तदा हो कि उस के होने से जमाअ़त बड़ी होती है और छोड़ देगा तो लोग कम हो जाएंगे उसे बिला उ़ज़्र जमाअ़त छोड़ने की इजाज़त नहीं।(2)

सुवाल तरावीह़ की 20 रक्अ़तें एक ही सलाम के साथ पढ़ना कैसा है?

जवाब तरावीह़ की 20 रक्अ़तें दस सलाम के साथ पढ़े या'नी हर दो रक्अ़त पर सलाम फेरे और अगर किसी ने 20 पढ़ कर आख़िर में सलाम फेरा तो अगर हर दो रक्अ़त पर क़ा'दा करता रहा तो हो जाएगी मगर कराहत के साथ और अगर क़ा'दा न किया था तो दो रक्अ़त के क़ाइम मक़ाम हुईं।(3)

सुवाल अगर तरावीह़ फ़ौत हो गई तो इस की क़ज़ा कब करे?

जवाब तरावीह़ अगर वक़्त में न पढ़ी और फ़ौत हो गई तो इस की क़ज़ा नहीं, न जमाअ़त से न तन्हा और अगर कोई क़ज़ा कर भी लेता है तो येह जुदागाना नफ़्ल हो जाएंगे, तरावीह़ से इन का तअ़ल्लुक़ न होगा।(4)

सुवाल नमाज़े तरावीह़ फ़ासिद हो जाने पर उस में की गई तिलावत का क्या हुक्म है?

जवाब अगर किसी वज्ह से नमाज़े तरावीह़ फ़ासिद हो जाए तो जितना

---

1 ...فتاوی ھندیۃ، کتاب الصلاۃ، الباب التاسع فی النوافل، فصل فی تراویح، ۱/۱۱۹۔

2 ...فتاوی ھندیۃ، کتاب الصلاۃ، الباب التاسع فی النوافل، فصل فی تراویح، ۱/۱۱۶۔

3 ...درمختار، کتاب الصلاۃ، باب الوتر والنوافل، ۲/۵۹۹۔

4 ...درمختار، کتاب الصلاۃ، باب الوتر والنوافل، ۲/۵۹۸۔

कुरआने मजीद इन रक्अ़तों में पढ़ा है उसे दोबारा पढ़ा जाए ताकि ख़त्मे कुरआन में कमी न रहे।(1)

सुवाल मुरव्वजा शबीना के बारे में सदरुश्शरीआ़ رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने क्या फ़रमाया है ?

जवाब सदरुश्शरीआ़ मुफ़्ती अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَیْهِ رَحمَةُاللهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : शबीना कि एक रात की तरावीह़ में पूरा कुरआन पढ़ा जाता है, जिस त़रह़ आज कल रवाज है कि कोई बैठा बातें कर रहा है, कुछ लोग लेटे हैं, कुछ लोग चाए पीने में मश्ग़ूल हैं, कुछ लोग मस्जिद के बाहर हुक़्क़ा नोशी कर रहे हैं और जब जी में आया एक आध रक्अ़त में शामिल भी हो गए येह नाजाइज़ है।(2)

क़ज़ा नमाज़ें

सुवाल अदा और क़ज़ा की ता'रीफ़ बयान कीजिये ?

जवाब जिस चीज़ का बन्दों को हुक्म है उसे वक़्त में बजा लाने को अदा कहते हैं और वक़्त के बा'द अ़मल में लाना क़ज़ा कहलाता है।(3)

सुवाल ग़ज़्वए ख़न्दक़ में कितनी नमाज़ों की क़ज़ा अदा की गई ?

जवाब ग़ज़्वए ख़न्दक़ में हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की चार नमाज़ें मुश्रिकीन की वज्ह से जाती रहीं यहां तक कि रात का कुछ हिस्सा चला गया, ह़ज़रते बिलाल رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه को हुक्म फ़रमाया, इन्हों ने अज़ानो इक़ामत कही, हुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

1 ...فتاوی هندیة، کتاب الصلاة، الباب التاسع فی النوافل، فصل فی تراویح، ۱/ ۱۱۸۔

2 .....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 4, 1 / 695

3 ...درمختار، کتاب الصلاة، باب قضاء الفوائت، ۲/ ۶۲۷، ۶۳۲۔

ने ज़ोहर की नमाज़ पढ़ी, फिर इक़ामत कही तो अ़स्र पढ़ी, फिर इक़ामत कही तो मग़रिब पढ़ी, फिर इक़ामत कही तो इशा पढ़ी।(1)

सुवाल क़ज़ा नमाज़ों के गुनाह से तौबा के लिये क्या चीज़ ज़रूरी है ?

जवाब बहारे शरीअ़त, जिल्द 1, सफ़्हा 700 पर मज़्कूर हुक्म का खुलासा है : तौबा उसी वक़्त सहीह़ है जब क़ज़ा भी पढ़ ले। क़ज़ा नमाज़ों को तो अदा न करे फ़क़त़ तौबा किये जाए तो येह तौबा नहीं है क्यूंकि वोह नमाज़ जो इस के ज़िम्मे थी उस का न पढ़ना तो अब भी बाक़ी है। जब गुनाह से ही बाज़ न आया तो फिर तौबा कहां हुई।(2)

सुवाल कौन सी नमाज़ों में वक़्त के अन्दर अन्दर सलाम फेर लेना ज़रूरी है ?

जवाब फ़ज्र, जुमुआ़ और ईदैन की नमाज़ों में सलाम से पहले अगर वक़्त निकल गया तो नमाज़ न होगी इन के इ़लावा नमाज़ों में अगर वक़्त में तह़रीमा बांध लिया तो नमाज़ क़ज़ा न हुई बल्कि अदा है।(3)

सुवाल किस सूरत में सोए हुए शख़्स को जगा देना वाजिब है ?

जवाब कोई सो रहा है या नमाज़ पढ़ना भूल गया है तो जिसे मा'लूम है उस पर वाजिब है कि सोते को जगा दे और भूले हुए को याद दिला दे।(4) (वरना गुनहगार होगा) याद रहे ! जगाना या याद

---

1 ...سنن کبری للبیهقی، کتاب الصلاۃ، باب الاذان والاقامۃ للجمع۔۔۔الخ، ۱/ ۵۹۲، حدیث:۱۸۹۲۔

2 ...ردالمحتار، کتاب الصلاۃ، باب قضاء الفوائت، ۲/ ۶۲۷۔

3 ...درمختار، کتاب الصلاۃ، باب قضاء الفوائت، ۲/ ۶۲۸، माख़ूज़ अज़ बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 4, 1 / 701

4 .....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 4, 1 / 701

दिलाना उस वक़्त वाजिब होगा जब कि ज़न्ने ग़ालिब हो कि येह नमाज़ पढ़ेगा वरना वाजिब नहीं ।(1)

सुवाल जिस शख़्स के ज़िम्मे बहुत ज़ियादा नमाज़ें हों शरीअ़ते मुत़ह्हरा में उस के लिये कोई आसानी की सूरत हो तो बताइये ?

जवाब जिस पर ब कसरत क़ज़ा नमाज़ें हों वोह आसानी के लिये हर रुकूअ़ और सजदे में "سُبۡحٰنَ رَبِّیَ الۡعَظِیۡم" और "سُبۡحٰنَ رَبِّیَ الۡاَعۡلٰی" सिर्फ़ एक बार कहे और फ़र्ज़ों की तीसरी और चौथी रक्अ़त में "اَلۡحَمۡد" शरीफ़ की जगह फ़क़त "سُبۡحٰنَ اللہ" तीन बार कह कर रुकूअ़ कर ले, तीसरी तख़्फ़ीफ़ येह कि क़ा'दए अख़ीरा में अत्तहिय्यात के बा'द दोनों दुरूदों और दुआ़ की जगह सिर्फ़ "اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَّاٰلِہٖ" कह कर सलाम फेर दे चौथी तख़्फ़ीफ़ येह कि वित्र की तीसरी रक्अ़त में दुआ़ए क़ुनूत की जगह फ़क़त एक या तीन बार "رَبِّ اغۡفِرۡلِیۡ" कहे ।(2)

सुवाल अगर फ़ज्र की सुन्नतें क़ज़ा हो जाएं तो इन को कब पढ़ा जाए ?

जवाब फ़ज्र की सुन्नत क़ज़ा हो गई और फ़र्ज़ पढ़ लिये तो अब सुन्नतों की क़ज़ा नहीं अलबत्ता इमाम मुहम्मद رَحۡمَۃُ اللہِ تَعَالٰی फ़रमाते हैं कि तुलूए़ आफ़्ताब के बा'द पढ़ ले तो बेहतर है ।(3) और तुलूअ़ से पेशतर (या'नी सूरज निकलने से पहले) बिल इत्तिफ़ाक़ ममनूअ़ है ।(4) आज कल अक्सर अ़वाम फ़र्ज़ के बा'द फ़ौरन पढ़ लिया

1.....नमाज़ के अह़काम, स. 332

2.....नमाज़ के अह़काम, स. 338-339 मुल्तक़त़न ।

3 . . . غنیۃ المتملی، فصل فی النوافل، ص۳۹۷۔

4 . . . ردالمحتار، کتاب الصلاۃ، باب الوتر والنوافل، ۲/۵۵۰۔

करते हैं येह नाजाइज़ है, पढ़ना हो तो आफ़्ताब बुलन्द होने के बा'द ज़वाल से पहले पढ़ें।(1)

सुवाल सफ़र में चार रक्अ़त वाली नमाज़ क़ज़ा हुई तो इक़ामत में कितनी रक्अ़त अदा करे ?

जवाब जो नमाज़ जैसी फ़ौत हुई उस की क़ज़ा वैसी ही पढ़ी जाएगी, मसलन सफ़र में नमाज़ क़ज़ा हुई तो चार रक्अ़त वाली दो ही पढ़ी जाएगी अगर्चे इक़ामत की ह़ालत में पढ़े और ह़ालते इक़ामत में फ़ौत हुई तो चार रक्अ़त वाली की क़ज़ा चार रक्अ़त है अगर्चे सफ़र में पढ़े।(2)

सुवाल क्या क़ज़ा नमाज़ बा जमाअ़त पढ़ी जा सकती है ?

जवाब अगर किसी अम्रे आ़म की वज्ह से जमाअ़त भर की नमाज़ क़ज़ा हो गई तो जमाअ़त से पढ़ें, येही अफ़्ज़ल व मस्नून है और मस्जिद में भी पढ़ सकते हैं, और जह्री नमाज़ों में इमाम पर जह्र वाजिब है अगर्चे क़ज़ा हो और अगर किसी ख़ास वज्ह से बा'ज़ अफ़राद की नमाज़ जाती रही तो घर में तन्हा पढ़ें कि मा'सिय्यत का इज़्हार भी मा'सिय्यत है।(3)

सुवाल क्या जुमुअ़तुल वदाअ़ में बा जमाअ़त क़ज़ाए उ़म्री पढ़ने से उ़म्र भर की क़ज़ा अदा हो जाती है ?

जवाब नहीं, रमज़ानुल मुबारक के आख़िरी जुमुआ़ में बा'ज़ लोग बा जमाअ़त क़ज़ाए उ़म्री पढ़ते हैं और येह समझते हैं कि उ़म्र भर की क़ज़ाएं इसी एक नमाज़ से अदा हो गईं येह बाति़ल मह़्ज़ है।(4)

1.....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 4, 1 / 664, 665

2...فتاوی هندية، كتاب الصلاة، الباب الحادی عشر فی قضاء الفوائت، ١ / ١٢١۔

3.....फ़तावा रज़विय्या, 8 / 162

4.....नमाज़ के अह़काम, स. 336

सुवाल पागल पन या बेहोशी की हालत में रह जाने वाली नमाज़ों का क्या हुक्म है ?

जवाब जुनून या बेहोशी अगर पूरे छे वक़्त को घेर ले तो उन नमाज़ों की क़ज़ा भी नहीं, अगर्चे बेहोशी आदमी या दरिन्दे के ख़ौफ़ से हो और इस से कम हो तो क़ज़ा वाजिब है ।(1)

सुवाल नमाज़ों में तरतीब से क्या मुराद है और तरतीब किस पर फ़र्ज़ है किस पर नहीं ?

जवाब पांचों फ़र्ज़ों में बाहम और फ़र्ज़ व वित्र में तरतीब ज़रूरी है कि पहले फ़ज्र फिर ज़ोहर फिर अ़स्र फिर मग़रिब फिर इ़शा फिर वित्र पढ़े, ख़्वाह येह सब क़ज़ा हों या बा'ज़ अदा बा'ज़ क़ज़ा, मसलन ज़ोहर की क़ज़ा हो गई तो फ़र्ज़ है कि उसे पढ़ कर अ़स्र पढ़े अगर याद होते हुए अ़स्र पढ़ ली तो नाजाइज़ है ।(2) अलबत्ता जिस की छे नमाज़ें क़ज़ा हो गईं कि छटी का वक़्त ख़त्म हो गया उस पर तरतीब फ़र्ज़ नहीं, अब अगर्चे वक़्त में गुन्जाइश हो और वोह पिछली नमाज़ अदा किये बिग़ैर वक़्ती नमाज़ पढ़े तो हो जाएगी ।(3)

सजदए तिलावत, सजदए शुक्र

सुवाल किस सूरत में आयते सजदा पढ़े और सुने बिग़ैर सजदए तिलावत वाजिब हो जाता है ?

जवाब इमाम ने आयते सजदा पढ़ी तो इस सूरत में अगर्चे मुक़्तदी ने आयते सजदा न पढ़ी और न सुनी मगर इमाम के साथ इस पर भी सजदए तिलावत करना वाजिब है ।(4)

---

1 ...درمختار، کتاب الصلاۃ، باب صلاۃ المریض، ۲/۶۹۲-

2 ...فتاوی ھندیۃ، کتاب الصلاۃ، الباب الحادی عشر فی قضاء الفوائت، ۱/۱۲۱-

3 ...درمختار مع ردالمحتار، کتاب الصلاۃ، باب قضاء الفوائت، ۲/۶۳۷-

4 ...فتاوی ھندیۃ، کتاب الصلاۃ، الباب الثالث عشر فی سجود التلاوۃ، ۱/۱۳۳-

सुवाल सजदए तिलावत में दो सुन्नत और दो मुस्तहब कौन से हैं ?

जवाब सजदए तिलावत से पहले और बा'द दोनों बार اَللّٰہُ اَکْبَر कहना सुन्नत है और खड़े हो कर सजदे में जाना और सजदे के बा'द खड़ा होना येह दोनों क़ियाम मुस्तहब हैं।(1)

सुवाल वोह क्या सूरत है कि आयते सजदा सुनी और सजदा किये बिग़ैर उस का सजदा हो गया ?

जवाब अगर इमाम से आयत सुनी मगर इमाम के सजदा करने के बा'द उसी रक्अ़त में शामिल हुवा तो इमाम का सजदा उस के लिये भी है और दूसरी रक्अ़त में शामिल हुवा तो नमाज़ के बा'द सजदा करे।(2)

सुवाल नमाज़ में आयते सजदा पढ़ी तो सजदा करने में कितनी ताख़ीर करने से गुनहगार होगा ?

जवाब तीन आयत से ज़ियादा देर लगाना गुनाह है। तरावीह़ या किसी भी नमाज़ में अगर आयते सजदा पढ़े तो फ़ौरन सजदा वाजिब है।(3)

सुवाल क्या नमाज़ के इलावा आयते सजदा पढ़ते ही फ़ौरन सजदा वाजिब हो जाता है ?

जवाब आयते सजदा बैरूने नमाज़ पढ़ी तो फ़ौरन सजदा कर लेना वाजिब नहीं, हां बेहतर है कि फ़ौरन कर ले और वुज़ू हो तो ताख़ीर मकरूहे तन्ज़ीही है।(4)

सुवाल नमाज़ में सजदए तिलावत के बा'द खड़े हो कर बिग़ैर कुछ तिलावत किये रुकूअ़ करना कैसा ?

जवाब ऐसी सूरत में सजदा अदा तो हो जाएगा मगर ऐसा करना मकरूह है।(5)

---

1 ...فتاوی ھندیۃ، کتاب الصلاۃ، الباب الثالث عشر فی سجود التلاوۃ، ۱/۱۳۵۔

2 ...درمختار مع ردالمحتار، کتاب الصلاۃ، باب سجود التلاوۃ، ۲/۶۹۶، बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 4, 1 / 728

3 .....माख़ूज़ अज़ फ़तावा रज़विय्या, 8 / 239

4 ...درمختار مع ردالمحتار، کتاب الصلاۃ، باب سجود التلاوۃ، ۲/۷۰۳۔

5 .....माख़ूज़ अज़ फ़तावा रज़विय्या, 8 / 235

सुवाल अगर किसी पर बहुत से सजदए तिलावत हों और वोह उन्हें अदा किये बिग़ैर मर जाए या अदा करने से आ़जिज़ हो जाए तो इस की सुबुकदोशी की क्या सूरत होगी ?

जवाब शरीअ़त में सजदए तिलावत का कोई बदल या फ़िदया नहीं है इसी लिये जो अदा न कर सका उस पर मरते वक़्त इस बारे में कोई वसिय्यत करना लाज़िम नहीं। या तो अदा कर ले और अदा करने से आ़जिज़ हो तो तौबा। इस के इ़लावा कोई सूरत नहीं।[1]

सुवाल क्या सजदए तिलावत में "سُبۡحٰنَ رَبِّیَ الۡاَعۡلٰی" के इ़लावा भी कुछ पढ़ा जा सकता है ?

जवाब फ़र्ज़ नमाज़ में सजदए तिलावत किया तो "سُبۡحٰنَ رَبِّیَ الۡاَعۡلٰی" पढ़े और नफ़्ल नमाज़ में सजदा किया तो चाहे येह पढ़े या और दुआ़एं जो अह़ादीस में वारिद हैं वोह पढ़े[2]।[3]

सुवाल अगर आयते सजदा पढ़ने या सुनने वाला फ़ौरन सजदा न कर सके तो उसे क्या कह लेना चाहिये ?

जवाब उस वक़्त अगर किसी वज्ह से सजदा न कर सके तो तिलावत करने वाले और सुनने वाले को येह कह लेना मुस्तह़ब है "سَمِعۡنَا وَاَطَعۡنَا غُفۡرَانَكَ رَبَّنَا وَاِلَيۡكَ الۡمَصِيۡرُ"[4]

सुवाल सजदए शुक्र किसे कहते हैं ?

1.....माख़ूज़ अज़ फ़तावा रज़विय्या, 8 / 238

2.....मसलन येह दुआ़ पढ़े :

سَجَدَ وَجۡهِیَ لِلَّذِیۡ خَلَقَهٗ وَصَوَّرَهٗ وَشَقَّ سَمۡعَهٗ وَبَصَرَهٗ بِحَوۡلِهٖ وَقُوَّتِهٖ فَتَبَارَكَ اللّٰهُ اَحۡسَنُ الۡخَالِقِيۡنَ

(**तर्जमा :** मेरे चेहरे ने सजदा किया उस के लिये जिस ने इसे पैदा किया और इस की सूरत बनाई और अपनी त़ाक़त व क़ुव्वत से कान और आंख की जगह फाड़ी, बरकत वाला है अल्लाह عَزَّوَجَلَّ जो अच्छा पैदा करने वाला है।) या येह कह ले : سُبۡحٰنَ رَبِّنَاۤ اِنۡ كَانَ وَعۡدُ رَبِّنَا لَمَفۡعُوۡلًا (तर्जमा : पाक है हमारा रब, बेशक हमारे परवर दगार का वा'दा हो कर रहेगा।) (बहारे शरीअ़त, 1 / 732)

3...ردالمحتار، کتاب الصلاۃ، باب سجود التلاوۃ، ۲ /۷۰۰۔

4...فتاوی تاتارخانیۃ، کتاب الصلاۃ، الفصل الحادی والعشرون فی سجدۃ التلاوۃ، ۱ /۷۸۹۔

जवाब हकीमुल उम्मत मुफ़्ती अहमद यार ख़ान عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْمَنَّان फ़रमाते हैं : दीनी या दुन्यवी ख़ुशी की ख़बर सुन कर सजदा करने को सजदए शुक्र कहा जाता है।(1)

सुवाल किन मवाके़अ़ पर सजदए शुक्र करना मुस्तह़ब है ?

जवाब औलाद पैदा हुई या माल पाया या गुमी हुई चीज़ मिल गई या मरीज़ ने शिफ़ा पाई या मुसाफ़िर वापस आया अल ग़रज़ किसी भी ने'मत के हुसूल पर सजदए शुक्र करना मुस्तह़ब है।(2)

सुवाल हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने किस के क़त्ल का सुना तो सजदए शुक्र अदा किया ?

जवाब हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अबू जह्ल के क़त्ल की ख़बर सुन कर सजदए शुक्र अदा किया।(3)

जुमुआ़

सुवाल नमाज़े जुमुआ़ अदा करने की क्या फ़ज़ीलत है ?

जवाब ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ से मरवी है कि हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जिस ने अच्छी तरह़ वुज़ू किया फिर जुमुआ़ पढ़ने के लिये आया, (ख़ुत़बा) सुना और चुप रहा तो उस के वोह गुनाह बख़्श दिये जाएंगे जो इस जुमुआ़ और दूसरे जुमुआ़ के दरमियान हैं और तीन दिन मज़ीद और जिस ने कंकरी छूई उस ने लग़्व किया।(4)

1.....माख़ूज़ अज़ मिरआतुल मनाजीह़, 2 / 388

2 . . . فتاوی ھندیۃ، کتاب الصلاۃ، الباب الثالث عشر فی سجود التلاوۃ، ۱/۱۳۶۔

3 . . . اشعۃ اللمعات، کتاب الصلاۃ، باب فی سجود الشکر، ۱/۶۲۳۔

4 . . . مسلم، کتاب الجمعۃ، باب فضل من استمع وانصت فی الخطبۃ، ص ۳۳۲، حدیث: ۱۹۸۸۔

सुवाल नमाज़े जुमुआ़ के लिये गुस्ल करने और ख़ुश्बू लगाने वाले के लिये क्या इन्आ़म है ?

जवाब ह़ज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जो शख़्स जुमुआ़ के दिन नहाए, जिस त़हारत की इस्तित़ाअ़त हो करे, तेल लगाए, घर में जो ख़ुश्बू हो मले फिर नमाज़ के लिये निकले, दो शख़्सों में जुदाई न करे (या'नी दो शख़्स बैठे हुए हों उन्हें हटा कर बीच में न बैठे), जो नमाज़ उस के लिये लिखी गई है पढ़े और इमाम जब ख़ुत़बा पढ़े तो चुप रहे उस के इस जुमुआ़ और दूसरे जुमुआ़ के दरमियान होने वाले गुनाहों की मग़फ़िरत हो जाएगी ।[1]

सुवाल नमाज़े जुमुआ़ में लोगों की गर्दनें फलांगने वाले के लिये क्या वईद है ?

जवाब ह़दीसे मुबारक में है कि जिस ने जुमुआ़ के दिन लोगों की गर्दनें फलांगीं उस ने जहन्नम की त़रफ़ पुल बनाया[2] ।[3]

सुवाल कौन से मरीज़ और तीमारदार पर जुमुआ़ फ़र्ज़ नहीं ?

जवाब मरीज़ पर जुमुआ़ फ़र्ज़ नहीं, मरीज़ से मुराद वोह है कि मस्जिद तक न जा सकता हो या चला तो जाएगा मगर मरज़ बढ़ जाएगा या देर में अच्छा होगा ।[4] जो शख़्स मरीज़ का तीमारदार हो,

---

1 . . . بخاری، کتاب الجمعة، باب الدھن للجمعة، ۱/۳۰۶، حدیث: ۸۸۳-

2 .....ह़दीस में अल्फ़ाज़ اِتَّخَذَ جِسْرًا वाक़ेअ़ हुवा है इस को मा'रूफ़ व मजहूल (या'नी اِتَّخَذَ और اُتُّخِذَ) दोनों त़रह़ पढ़ते हैं और येह तर्जमा मा'रूफ़ का है और मजहूल पढ़ें तो मत़लब येह होगा कि ख़ुद पुल बना दिया जाएगा या'नी जिस त़रह़ लोगों की गर्दनें उस ने फलांगी हैं, उस को क़ियामत के दिन जहन्नम में जाने का पुल बनाया जाएगा कि उस के ऊपर चढ़ कर लोग जाएंगे ।

(बहारे शरीअ़त, हिस्सा 4, 1 / 761)

3 . . . ترمذی، کتاب الجمعة، باب ماجاء فی کراھیة التخطی یوم الجمعة، ۲/۴۸، حدیث: ۵۱۳-

4 . . . غنیة المتملی، فصل فی صلاۃ الجمعة، ص ۵۴۸-

(अगर वोह) जानता है कि जुमुआ को जाएगा तो मरीज़ दिक़्क़तों में पड़ जाएगा और उस का कोई पुरसाने ह़ाल न होगा तो उस तीमारदार पर जुमुआ फ़र्ज़ नहीं।(1)

सुवाल किस नाबीना पर जुमुआ फ़र्ज़ है और किस पर नहीं ?

जवाब वोह नाबीना जो खुद मस्जिदे जुमुआ तक बिला तकल्लुफ़ न जा सकता हो उस पर जुमुआ फ़र्ज़ नहीं। बा'ज़ नाबीना बिला तकल्लुफ़ बिग़ैर किसी की मदद के बाज़ारों रास्तों में चलते फिरते हैं और जिस मस्जिद में चाहें बिला पूछे जा सकते हैं उन पर जुमुआ फ़र्ज़ है।(2)

सुवाल जुमुआ फ़र्ज़ न होने के बा वुजूद पढ़ लेना कैसा है ?

जवाब जुमुआ वाजिब होने के लिये ग्यारह शर्तें हैं(3) उन में से एक भी न पाई जाए तो फ़र्ज़ नहीं फिर भी अगर पढ़ेगा तो हो जाएगा बल्कि मर्द आ़क़िल बालिग़ के लिये जुमुआ पढ़ना अफ़्ज़ल है और औ़रत के लिये ज़ोहर अफ़्ज़ल और नाबालिग़ ने जुमुआ पढ़ा तो नफ़्ल है कि उस पर नमाज़ फ़र्ज़ ही नहीं।(4)

सुवाल खुत़बा सुनने वालों के लिये क्या अह़काम व आदाब हैं ?

जवाब सुनने वाला अगर इमाम के सामने हो तो इमाम की त़रफ़ मुंह करे और दहने बाएं हो तो इमाम की त़रफ़ मुड़ जाए, इमाम से क़रीब होना अफ़्ज़ल है मगर येह जाइज़ नहीं कि इमाम से क़रीब होने के लिये लोगों की गर्दनें फलांगे, अलबत्ता अगर इमाम अभी खुत़बा

---

1 ...درمختار، کتاب الصلاۃ، باب الجمعۃ، ۳/ ۳۱، बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 4, 1 / 770

2 ...درمختار مع ردالمحتار، کتاب الصلاۃ، باب الجمعۃ، مطلب فی شروط وجوب الجمعۃ، ۳/ ۳۲۔

3.....जुमुआ वाजिब होने की येह शराइत़ दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ किताब बहारे शरीअ़त जिल्द अव्वल, सफ़ह़ा 770 ता 772 पर और "दिलचस्प मा'लूमात" ह़िस्सा अव्वल, सफ़ह़ा 84 पर मुलाह़ज़ा फ़रमाइये।

4 ...درمختار مع ردالمحتار، کتاب الصلاۃ، باب الجمعۃ، مطلب فی شروط وجوب الجمعۃ، ۳/ ۳۰، ۳۳۔

को नहीं गया है और आगे जगह बाक़ी है तो आगे जा सकता है और ख़ुत़बा शुरूअ़ होने के बा'द मस्जिद में आया तो मस्जिद के कनारे ही बैठ जाए और ख़ुत़बा सुनने की ह़ालत में दो ज़ानू बैठे जैसे नमाज़ में बैठते हैं।(1)

सुवाल जिस पर जुमुआ़ फ़र्ज़ है अगर उस ने जुमुआ़ की नमाज़ से पहले ज़ोहर की नमाज़ पढ़ ली तो क्या जुमुआ़ की नमाज़ उसे पढ़नी होगी या नहीं ?

जवाब जिस पर जुमुआ़ फ़र्ज़ है उसे शहर में जुमुआ़ हो जाने से पहले ज़ोहर पढ़ना मकरूहे तह़रीमी है बल्कि इमाम इब्ने हुमाम رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने फ़रमाया : ह़राम है और पढ़ लिया जब भी जुमुआ़ के लिये जाना फ़र्ज़ है और जुमुआ़ हो जाने के बा'द ज़ोहर पढ़ने में कराहत नहीं, बल्कि अगर जुमुआ़ दूसरी जगह न मिल सके तो ज़ोहर ही पढ़ना फ़र्ज़ है मगर जुमुआ़ तर्क करने का गुनाह उस के सर रहा।(2)

सुवाल नमाज़े जुमुआ़ के लिये जाते हुए ख़रीदो फ़रोख़्त करना कैसा है ?

जवाब पहली अज़ान के होते ही सअ़्य वाजिब है और बैअ़ (ख़रीदो फ़रोख़्त) वग़ैरा उन चीज़ों का जो सअ़्य के मुनाफ़ी हों छोड़ देना वाजिब यहां तक कि रास्ते चलते हुए अगर ख़रीदो फ़रोख़्त की तो येह भी नाजाइज़ और मस्जिद में ख़रीदो फ़रोख़्त तो सख़्त गुनाह है।(3)

सुवाल दौराने ख़ुत़बा नामे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم आने पर दुरूद का क्या हुक्म है ?

जवाब हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का नामे पाक ख़त़ीब ने लिया तो

---

1 ...غنیۃ المتملی، فصل فی صلاۃ الجمعۃ، ص ۵٦۵، बहारे शरीअ़त, हिस़्सा, 4, 1 / 767 मुलख़्ख़सन

2 ...ردالمحتار، کتاب الصلاۃ، باب الجمعۃ، مطلب فی شروط وجوب الجمعۃ، ۳/ ۳۳، बहारे शरीअ़त, हिस़्सा, 4, 1 / 773

3 ...درمختار مع ردالمحتار، کتاب الصلاۃ، باب الجمعۃ، ۳/ ۴۲۔

हाज़िरीन दिल में दुरूद शरीफ़ पढ़ें, ज़बान से पढ़ने की उस वक़्त इजाज़त नहीं।(1) यूंही सहाबए किराम के ज़िक्र पर उस वक़्त رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم ज़बान से कहने की इजाज़त नहीं।(2)

सुवाल जुमुआ के दिन सूरए कह्फ़ पढ़ने की क्या फ़ज़ीलत है और ज़ियादा बेहतर किस वक़्त है ?

जवाब जुमुआ के दिन या रात में सूरए कह्फ़ की तिलावत अफ़्ज़ल है और ज़ियादा बुज़ुर्गी रात में पढ़ने की है। ह़दीसे मुबारका में है कि जो शख़्स जुमुआ के दिन सूरए कह्फ़ की तिलावत करे उस के लिये दोनों जुमुओं के दरमियान नूर रौशन होगा।(3) नीज़ इरशाद फ़रमाया : जो जुमुआ के दिन सूरए कह्फ़ पढ़े उस के क़दम से आस्मान तक नूर बुलन्द होगा जो क़ियामत में उस के लिये रौशन होगा और दो जुमुओं के दरमियान जो गुनाह हुए हैं बख़्श दिये जाएंगे।(4)

सुवाल जुमुअ़तुल मुबारक के दिन फ़ौत होने वाले के लिये ह़दीस में क्या बिशारत है ?

जवाब हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जो रोज़े जुमुआ या शबे जुमुआ मरेगा अ़ज़ाबे क़ब्र से बचा लिया जाएगा और क़ियामत के दिन इस त़रह़ आएगा कि उस पर शहीदों की मोहर होगी।(5)

---

1 ...درمختار، کتاب الصلاۃ، باب الجمعۃ، ۳/۴۰۔

2 .....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 4, 1 / 775

3 ...سنن صغری، کتاب الصلاۃ، باب فضل الجمعۃ، ۱/۲۱۰، حدیث:۶۰۸۔

4 ...الترغیب والترھیب، کتاب الجمعۃ، الترغیب فی قراءۃ سورۃ الکھف۔۔۔الخ، ۱/۲۹۸، حدیث:۲۔

5 ...ترمذی، کتاب الجنائز، باب ماجاء فیمن مات یوم الجمعۃ، ۲/۳۳۹، حدیث:۱۰۷۶۔

مسند فردوس، ۲/۲۷۴، حدیث:۵۹۶۸۔

ईदैन

सुवाल बक़रह ईद के दिन कौन सी नेकी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को सब से ज़ियादा महबूब है ?

जवाब हुज़ूर ताजदारे ख़त्मे नुबुव्वत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : इन्सान बक़रह ईद के दिन कोई ऐसी नेकी नहीं करता जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को (जानवर का) ख़ून बहाने से ज़ियादा प्यारी हो, येह क़ुरबानी क़ियामत में अपने सींगों, बालों और ख़ुरों के साथ आएगी (और उस की नेकियों के पलड़े में रखी जाएगी) और क़ुरबानी का ख़ून ज़मीन पर गिरने से पहले **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के हां क़बूल हो जाता है लिहाज़ा क़ुरबानी ख़ुश दिली से करो।(1)

सुवाल बा जमाअ़त पढ़ी जाने वाली कौन सी नमाज़ों के लिये अज़ान व इक़ामत नहीं ?

जवाब वोह ईदुल फ़ित्र, बक़र ईद और जनाज़ा वग़ैरा की नमाज़ें हैं क्यूंकि फ़र्ज़ नमाज़ों के इलावा किसी नमाज़ में अज़ान व इक़ामत नहीं।(2)

सुवाल ईदैन की नमाज़ का मुस्तह़ब वक़्त बताइये ?

जवाब इन दोनों नमाज़ों का वक़्त सूरज के एक नेज़ा की मिक़्दार बुलन्द होने (या'नी तुलूए़ आफ़्ताब के बीस मिनट बा'द) से ज़ह़वए कुब्रा या'नी निस्फ़ुन्नहारे शरई तक है।(3) मगर ईदुल फ़ित्र में देर करना और ईदुल अज़्ह़ा में जल्द पढ़ना मुस्तह़ब है।(4)

---

1 ...ترمذی، کتاب الاضاحی، باب ماجاء فی فضل الاضحیۃ، ۳/ ۱۶۲، حدیث:۱۴۹۸۔

2 ...فتاوی خانیہ، کتاب الصلاۃ، باب الاذان، ۱/ ۳۸۔

3 ...تبیین الحقائق، کتاب الصلاۃ، باب صلاۃ العیدین، ۱/ ۵۴۰۔

4 ...خلاصۃ الفتاوی، کتاب الصلاۃ، الفصل الرابع والعشرون فی صلاۃ العیدین، ۱/ ۲۱۴۔

सुवाल नमाज़े ईद की निय्यत किस त़रह़ करे ?

जवाब मैं निय्यत करता हूं दो रक्अ़त नमाज़ ईदुल फ़ित्र (या ईदुल अज़्ह़ा) की, साथ छे ज़ाइद तक्बीरों के, वासिते़ **अल्लाह** तआ़ला के, पीछे इस इमाम के।(1)

सुवाल ईदैन की नमाज़ का त़रीक़ा बयान कीजिये ?

जवाब (इमाम साहि़ब जब اَللّٰهُ اَكْبَر कहें तो) कानों तक हाथ उठाइये और اَللّٰهُ اَكْبَر कह कर ह़स्बे मा'मूल नाफ़ के नीचे बांध लीजिये और सना पढ़िये। फिर कानों तक हाथ उठाइये और اَللّٰهُ اَكْبَر कहते हुए लटका दीजिये। फिर हाथ कानों तक उठाइये और اَللّٰهُ اَكْبَر कह कर लटका दीजिये। फिर कानों तक हाथ उठाइये और اَللّٰهُ اَكْبَر कह कर बांध लीजिये या'नी पहली तक्बीर के बा'द हाथ बांधिये इस के बा'द दूसरी और तीसरी तक्बीर में लटकाइये और चौथी में हाथ बांध लीजिये। इस को यूं याद रखिये कि जहां क़ियाम में तक्बीर के बा'द कुछ पढ़ना है वहां हाथ बांधने हैं और जहां नहीं पढ़ना वहां हाथ लटकाने हैं।(2) फिर इमाम तअ़व्वुज़ और तस्मिया आहिस्ता पढ़ कर اَلْحَمْد शरीफ़ और सूरत जह्र (या'नी बुलन्द आवाज़) के साथ पढ़े, फिर रुकूअ़ करे। दूसरी रक्अ़त में पहले اَلْحَمْد शरीफ़ और सूरत जह्र के साथ पढ़े, फिर तीन बार कानों तक हाथ उठा कर اَللّٰهُ اَكْبَر कहिये और हाथ न बांधिये और चौथी बार बिग़ैर हाथ उठाए اَللّٰهُ اَكْبَر कहते हुए रुकूअ़ में जाइये और नमाज़ मुकम्मल कर लीजिये।(3)

1.....नमाज़ के अह़काम, स. 439

2...درمختار، کتاب الصلاۃ، باب العیدین، ۳/۶۲۔

3...فتاوی ھندیۃ، کتاب الصلاۃ، الباب السابع عشر فی صلاۃ العیدین، ۱/۱۵۰۔

सुवाल मुक़्तदी रुकूअ़ में ज़ाइद तक्बीरें पूरी नहीं कर सका या फिर क़ौमा में शामिल हुवा तो अब तक्बीरें कब कहेगा ?

जवाब अगर उस ने रुकूअ़ में तक्बीरें पूरी न की थीं कि इमाम ने सर उठा लिया तो बाक़ी साक़ित़ हो गईं और अगर इमाम के रुकूअ़ से उठने के बा'द शामिल हुवा तो अब तक्बीरें न कहे बल्कि जब अपनी पढ़े उस वक़्त कहे और रुकूअ़ में जहां तक्बीर कहना बताया गया उस में हाथ न उठाए और अगर दूसरी रक्अ़त में शामिल हुवा तो पहली रक्अ़त की तक्बीरें अब न कहे बल्कि जब अपनी फ़ौतशुदा पढ़ने खड़ा हो उस वक़्त कहे।[1]

सुवाल इमाम साहिब ने छे से ज़ियादा तक्बीरें कह दीं तो मुक़्तदी क्या करेगा ?

जवाब इमाम ने छे तक्बीरों से ज़ियादा कहीं तो मुक़्तदी भी इमाम की पैरवी करे मगर तेरह से ज़ियादा में इमाम की पैरवी नहीं (की जाएगी कि ईदैन में तेरह तक तक्बीरें मशरूअ़ हैं)।[2]

सुवाल वोह कौन सी नमाज़ है जिस में रुकूअ़ की तक्बीर कहना वाजिब है ?

जवाब ईदैन में दूसरी रक्अ़त के रुकूअ़ की तक्बीर कहना वाजिब है।[3]

सुवाल पहली रक्अ़त में इमाम साहिब ने तक्बीरों से पहले क़िराअत शुरूअ़ कर दी तो क्या हुक्म है ?

जवाब पहली रक्अ़त में इमाम तक्बीरें भूल गया और क़िराअत शुरूअ़ कर दी तो क़िराअत के बा'द कह ले या रुकूअ़ में

---

1 ...فتاوی ہندیة، کتاب الصلاة، الباب السابع عشر فی صلاة العیدین، ١/١٥١۔

2 ...ردالمحتار، کتاب الصلاة، باب العیدین، ٣/٦٣، बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 4, 1 / 782

3 ...درمختار، کتاب الصلاة، باب صفة الصلاة، ٢/٢٠٠۔

और क़िराअत का इआदा न करे।[1]

सुवाल जिस शख़्स की नमाज़े ईद की जमाअत निकल जाए क्या वोह अपने तौर पर पढ़ सकता है ?

जवाब इमाम ने नमाज़ पढ़ ली और कोई शख़्स बाक़ी रह गया ख़्वाह वोह शामिल ही न हुवा था या शामिल तो हुवा मगर उस की नमाज़ फ़ासिद हो गई तो अगर दूसरी जगह मिल जाए पढ़ ले वरना नहीं पढ़ सकता, हां बेहतर येह है कि येह शख़्स चार रक्अत चाश्त की नमाज़ पढ़े।[2]

सुवाल इमाम का ख़ुत्बए ईद से पहले और बा'द में तक्बीर कहने का हुक्म बयान कीजिये ?

जवाब नमाज़े ईद में पहले ख़ुत्बे से क़ब्ल नौ बार और दूसरे से पहले सात बार और मिम्बर से उतरने से पहले चौदह बार **अल्लाहु** अक्बर कहना सुन्नत है।[3]

सुवाल क्या नमाज़े ईद दूसरे दिन भी पढ़ी जा सकती है ?

जवाब किसी उ़ज़्र के सबब ईद के दिन नमाज़ न हो सकी (मसलन सख़्त बारिश हुई या अब्र के सबब चांद नहीं देखा गया और गवाही ऐसे वक़्त गुज़री कि नमाज़ न हो सकी या अब्र था और नमाज़ ऐसे वक़्त ख़त्म हुई कि ज़वाल हो चुका था) तो दूसरे दिन पढ़ी जाए और दूसरे दिन भी न हुई तो ईदुल फ़ित्र की नमाज़ तीसरे दिन नहीं हो सकती और दूसरे दिन भी नमाज़ का वोही वक़्त है जो पहले दिन था या'नी एक नेज़ा आफ़्ताब बुलन्द होने से निस्फ़ुन्नहारे शरई तक और बिला उ़ज़्र ईदुल फ़ित्र की नमाज़ पहले दिन न पढ़ी तो दूसरे दिन नहीं पढ़ सकते।[4]

---

1 ...فتاوی ہندیة، کتاب الصلاة، الباب السابع عشر۔۔۔الخ، ۱/ ۱۵۱، غنیة المتملی، فصل فی صلاة العید، ص ۵۷۲۔

2 ...درمختار، کتاب الصلاة، باب العیدین، ۳/ ۶۷۔

3 ...درمختار، کتاب الصلاة، باب العیدین، ۳/ ۶۷۔

4 ...فتاوی ہندیة، کتاب الصلاة، الباب السابع عشر فی صلاة العیدین، ۱/ ۱۵۱، बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 4, 1 / 784

बीमारी और इलाज

सुवाल हदीसे पाक में बुख़ार की क्या फ़ज़ीलत बयान की गई है ?

जवाब ताजदारे ख़त्मे नुबुव्वत صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : बुख़ार को बुरा न कहो क्यूंकि वोह बन्दए मोमिन को गुनाहों से इस तरह पाक कर देता है जैसे आग लोहे का ज़ंग साफ़ कर देती है।(1)

सुवाल हदीसे पाक में मरज़े ताऊन का सबब किसे फ़रमाया गया है ?

जवाब हदीस शरीफ़ में है : ताऊन तुम्हारे दुश्मन जिन्नात के नेज़े का ज़ख़्म है।(2)

सुवाल "ताऊन" का मरज़ अज़ाब है या रहमत ?

जवाब "ताऊन" बनी इसराईल के हक़ में अज़ाब था मगर उम्मते मुहम्मदिय्या عَلٰی صَاحِبِہَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के हक़ में येह मरज़ रहमत है।(3) क्यूंकि हदीस शरीफ़ में आया है कि ताऊन की बीमारी में मरने वाला शहीद होता है।(4)

सुवाल कौन सी बीमारियों को नापसन्द करना मन्अ़ है ?

जवाब (1) आशूबे चश्म (2) ज़ुकाम (3) खांसी और (4) खुजली।(5)

सुवाल हदीसे पाक की रौशनी में रात का खाना छोड़ देने का नुक़्सान बताइये ?

---

1 ...مسلم، کتاب البر والصلة، باب ثواب المومن فیمایصیبه...الخ، ص ١٠٦٨، حدیث: ٦٥٧٠۔

2 ...مسندامام احمد، مسندالکوفیین، حدیث ابی موسی الاشعری، ٧/ ١٣١، حدیث: ١٩٥٤٥۔

3 ...تفسیر صاوی، پ ١، البقرة، تحت الآیة: ٥٩، ١/ ٦٨۔

4 ...بخاری، کتاب الجهادوالسیر، باب الشهادة سبع سوی القتل، ٢/ ٢٦٢، حدیث: ٢٨٢٩۔

5 ...شعب الایمان، باب فی عیادة المریض، فصل فی آداب العیادة، ٦/ ٥٤١، حدیث: ٩٢١٢۔

जवाब मीठे मीठे आक़ा मदीने वाले मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने सिह्हत निशान है : रात का खाना न छोड़ो चाहे एक मुठ्ठी खजूर ही क्यूं न हो क्यूंकि रात का खाना तर्क करना आदमी को ज़ईफ़ कर देता है।[1]

सुवाल "उम्मुस्सिब्यान" किस बीमारी को कहते हैं नीज़ इस से हिफ़ाज़त का त़रीक़ा बताएं ?

जवाब आ'ला ह़ज़रत رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : "मिरगी बहुत ख़बीस बला है और इसी को "उम्मुस्सिब्यान" कहते हैं।" मज़ीद फ़रमाते हैं : "अगर बच्चा पैदा होने के बा'द पहला काम येह किया जाए कि नहला कर अज़ान व इक़ामत बच्चे के कान में कह दी जाए तो اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ उम्र भर मिरगी से मह़फ़ूज़ी है।"

सुवाल क़ै (उल्टी) के फ़वाइद व नुक़्सानात के ह़वाले से कुछ मदनी फूल इरशाद फ़रमाइये ?

जवाब (1) क़ै (उल्टी) से मे'दे की सफ़ाई होती है। (2) ज़ियादा क़ै (उल्टी) आना नुक़्सान देह है कि इस से सीने और मे'दे में दर्द पैदा होता है (3) जब क़ै (उल्टी) आने लगे तो उस को ज़बरदस्ती न रोका जाए कि सख़्त अमराज़ पैदा होने का ख़त़रा है।[2]

सुवाल खुद डॉक्टर न होने के बा वुजूद क्लीनिक खोल कर लोगों का इलाज करना शरअ़न कैसा है ?

जवाब बा'ज़ लोग ह़क़ीक़ी मा'नों में बा क़ाइदा डॉक्टर या ह़कीम न होने के बा वुजूद क्लीनिक या मत़ब खोल कर मरीज़ों का इलाज शुरूअ़ कर देते हैं। ऐसा करना क़ानूनन जुर्म होने के साथ साथ शरअ़न भी ममनूअ़ है। याद रखिये ! जो माहिर त़बीब न हो उस

---

1 . . . ابن ماجہ، کتاب الاطعمۃ، باب ترک العشاء، ۴/ ۵۰، حدیث: ۳۳۵۵۔

2 .....घरेलू इलाज, स. 92 मुल्तक़त़न।

को मरीज़ के इलाज में हाथ डालना कारे सवाब नहीं बल्कि ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है। अगर कोई ऐसा ग़ैर माहिर त़बीब क्लीनिक या दवाख़ाना खोल कर मरीज़ों का इलाज करने बैठ गया हो तो फ़ौरन येह नाजाइज़ काम बन्द करना फ़र्ज़ है और तौबा के तक़ाज़े भी पूरे करने होंगे।[1]

सुवाल बा'ज़ अवक़ात दवाएं लेने के बा वुजूद भी शिफ़ा ह़ासिल नहीं होती इस की क्या वज्ह है ?

जवाब जब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ किसी बीमार की शिफ़ा नहीं चाहता तो दवा और मरज़ के दरमियान एक फ़िरिश्ते के ज़रीए़ आड़ कर देता है जिस की वज्ह से दवा मरज़ तक नहीं पहुंचती, जब शिफ़ा का इरादा होता है तो वोह पर्दा हटा दिया जाता है जिस से दवा मरज़ तक पहुंच जाती है और शिफ़ा मिल जाती है।[2]

सुवाल "ग़ीबत की तबाहकारियां" किताब में मज़्कूर केन्सर के दो घरेलू इलाज बयान कीजिये ?

जवाब (1) पिसा हुवा काला ज़ीरा तीन तीन ग्राम दिन में तीन मरतबा पानी से इस्ति'माल कीजिये। (2) रोज़ाना चुटकी भर पिसी हुई ख़ालिस हल्दी खाने से اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ कभी केन्सर नहीं होगा।[3]

सुवाल गुर्दे में पथरी का देसी इलाज बताइये ?

जवाब हम वज़्न मूली और आलू भून कर ह़स्बे ज़रूरत सोंफ़, नमक और काली मिर्च शामिल कर के इस्ति'माल करना गुर्दे के दर्द और पथरी के लिये मुफ़ीद है।[4]

1.....घरेलू इलाज, स. 13 मुल्तक़त़न।

2...مرقاۃ المفاتیح، ۸/۲۸۹، تحت الحدیث:۴۵۱۵۔

3.....ग़ीबत की तबाहकारियां, स. 153

4.....घरेलू इलाज, स. 55

सुवाल जिस्म में किसी जगह दर्द हो तो इस का रूहानी इलाज बयान कीजिये ?

जवाब बदन में दर्द या किसी चीज़ की शिकायत हो तो तक्लीफ़ की जगह पर सीधा हाथ रख कर بِسۡمِ اللّٰہِ तीन बार और फिर सात मरतबा येह दुआ पढ़िये : اَعُوۡذُ بِاللّٰہِ وَقُدۡرَتِہٖ مِنۡ شَرِّ مَا اَجِدُ وَاُحَاذِرُ۔[1] पढ़ कर दम करना ज़रूरी नहीं।

इयादत और मौत

सुवाल मुसलमान की बीमार पुरसी की फ़ज़ीलत बयान कीजिये ?

जवाब ह़दीसे पाक में है : जो मुसलमान किसी मुसलमान की इयादत के लिये सुब्ह़ को जाए तो शाम तक और शाम को जाए तो सुब्ह़ तक उस के लिये 70 हज़ार फ़िरिश्ते मग़्फ़िरत की दुआ करते हैं और जन्नत में उस के लिये एक बाग़ होगा।[2]

सुवाल बीमारी और तक्लीफ़ में मुब्तला शख़्स को कौन से दीनी फ़वाइद ह़ासिल होते हैं ?

जवाब फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : (1) जब भी मोमिन की कोई रग चढ़ जाती है तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस का एक गुनाह मिटाता, एक नेकी लिखता और एक दरजा बुलन्द फ़रमाता है।[3] (2) जब बन्दा बीमार होता है या सफ़र पर जाता है तो उस के वोह आ'माल भी लिखे जाते हैं जो वोह तनदुरुस्ती की ह़ालत में किया करता था।[4]

1.....या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और उस की कुदरत के साथ उस चीज़ के शर से पनाह चाहता हूं जिसे मैं पाता हूं और जिस से आइन्दा ख़ौफ़ करता हूं। (الحصن الحصین، ص ۱۰۹)

2 ...ترمذی، کتاب الجنائز، باب ماجاء فی عیادۃ المریض، ۲/۲۹۰، حدیث: ۹۷۱۔

3 ...مستدرک حاکم، کتاب الجنائز، باب قصۃ اعرابی لم تأخذہ الحمی ـــ الخ، ۱/۲۲۸، حدیث: ۱۳۲۴۔

4 ...مسند امام احمد، ۷/۱۲۱، حدیث: ۱۹۶۹۹۔

सुवाल किस सूरत में मरीज़ की इयादत (बीमार पुरसी) नहीं करनी चाहिये ?

जवाब मरीज़ की इयादत करना सुन्नत है, लेकिन अगर मा'लूम है कि इयादत करने जाएगा तो उस बीमार पर गिरां गुज़रेगा (या'नी ना गवार व तक्लीफ़ देह होगा) तो ऐसी हालत में इयादत न करे।(1)

सुवाल इयादत के वक़्त किन चीज़ों का ख़याल रखना चाहिये ?

जवाब इयादत करने जाए और मरज़ की सख़्ती देखे तो मरीज़ के सामने येह ज़ाहिर न करे कि तुम्हारी हालत ख़राब है और न सर हिलाए जिस से हालत का ख़राब होना समझा जाता है, उस के सामने ऐसी बातें करनी चाहियें जो उस के दिल को अच्छी मा'लूम हों, उस की मिज़ाज पुरसी करे, उस के सर पर हाथ न रखे मगर जब कि वोह खुद इस की ख़्वाहिश करे।(2)

सुवाल येह दुआ (3)"اَسْئَلُ اللّٰہَ الْعَظِیْمَ رَبَّ الْعَرْشِ الْعَظِیْمِ اَنْ یَّشْفِیَكَ" किस वक़्त पढ़ी जाती है और इस का क्या फ़ाएदा है ?

जवाब येह दुआ इयादत के वक़्त पढ़ी जाती है। हदीसे पाक में है : जिस ने ऐसे मरीज़ की इयादत की जिस की मौत का वक़्त न आया हो पस इयादत करने वाला सात बार येह दुआ पढ़े तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे उस मरज़ से शिफ़ा अ़ता फ़रमा देगा।(4)

सुवाल जिन मुसलमानों के नाबालिग़ बच्चे फ़ौत हो जाएं उन के लिये क्या अज्र है ?

जवाब हुज़ूर रह़मते आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जिन

---

1 ... ردالمحتار، کتاب الحظر والاباحۃ، فصل فی البیع، ۹/۶۴۰۔

2 ... ردالمحتار، کتاب الحظر والاباحۃ، فصل فی البیع، ۹/۶۴۰۔

3 .....**तर्जमा :** मैं अ़ज़मत वाले, अ़र्शे अ़ज़ीम के मालिक अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से तेरे लिये शिफ़ा का सुवाल करता हूं।

4 ... ابوداود، کتاب الجنائز، باب الدعاء للمریض عند العیادۃ، ۳/۲۵۱، حدیث: ۳۱۰۶۔

मुसलमान वालिदैन के तीन बच्चे फ़ौत हो जाएं तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उन वालिदैन को अपनी रहमत से जन्नत में दाख़िल फ़रमाएगा । सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُمۡ ने अ़र्ज़ की : अगर दो बच्चे फ़ौत हों तो ? इरशाद फ़रमाया : दो हों तब भी येही फ़ज़ीलत है । अ़र्ज़ की : अगर एक बच्चा हो तो ? इरशाद फ़रमाया : एक हो फिर भी येही फ़ज़ीलत है ।(1)

सुवाल अचानक आने वाली मौत के मुतअ़ल्लिक़ ह़दीसे पाक में क्या फ़रमाया गया है ?

जवाब हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इरशाद फ़रमाते हैं कि अचानक मौत मोमिन के लिये राह़त और फ़ाजिर (काफ़िर व फ़ासिक़) के लिये पकड़ है ।(2)

सुवाल कौन सा शख़्स जन्नत में जा कर भी दुन्या में वापसी की तमन्ना करेगा ?

जवाब ह़दीस शरीफ़ में है कि शहीद इस बात की तमन्ना करेगा कि वोह फिर लौट कर दुन्या में जाए और दस मरतबा राहे ख़ुदा में क़त्ल हो कर शहीद हो ।(3)

सुवाल ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने ह़ज़रते का'ब अह़बार رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ से जब मौत की सख़्तियों के बारे में पूछा तो उन्हों ने क्या जवाब दिया ?

जवाब आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने अ़र्ज़ की : ऐ अमीरुल मोमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ! मौत एक ऐसी कांटेदार टहनी की त़रह़ है जिसे किसी आदमी के पेट में दाख़िल किया जाए और उस का हर कांटा एक एक रग में

---

(1) ...مسندامام احمد، مسندمعاذبن جبل، ۸/۲۵۴، حدیث: ۲۲۱۵۱-

(2) ...شعب الایمان، باب فی الصبر علی المصائب، فصل فی النھی عن شق الثوب ولطم الوجہ، ۷/۲۵۵، حدیث: ۱۰۲۱۸-

(3) ...بخاری، کتاب الجھاد، باب تمنی المجاھد ان یرجع الی الدنیا، ۲/۲۵۹، حدیث: ۲۸۱۷-

पैवस्त हो जाए, फिर कोई ताक़तवर शख़्स उस टहनी को अपनी पूरी कुव्वत से खींचे तो उस टहनी की ज़द में आने वाली हर चीज़ कट जाए और जो ज़द में न आए वोह बच जाए।(1)

सुवाल किसी की हालते नज़्अ़ में किन चीज़ों का ख़याल रखना चाहिये ?

जवाब जांकनी की हालत में जब तक रूह़ गले को न आई उसे तल्क़ीन करें, तल्क़ीन करने वाला कोई नेक शख़्स हो, ऐसे वक़्त नेक और परहेज़गार लोगों का उस के पास होना बहुत अच्छा है और उस वक़्त वहां सूरए यासीन शरीफ़ की तिलावत और ख़ुश्बू होना मुस्तह़ब है, मसलन लूबान या अगर की बत्तियां सुलगा दें। मकान में कोई तस्वीर या कुत्ता न हो, अगर येह चीज़ें हों तो फ़ौरन निकाल दी जाएं कि जहां येह होती हैं रह़मत के फ़िरिश्ते नहीं आते, उस की नज़्अ़ के वक़्त अपने और उस के लिये दुआ़ए ख़ैर करते रहें, कोई बुरा कलिमा ज़बान से न निकालें कि उस वक़्त जो कुछ कहा जाता है मलाइका उस पर आमीन कहते हैं।(2)

सुवाल मय्यित की आंखें बन्द करते वक़्त कौन सी दुआ़ पढ़नी चाहिये ?

जवाब بِسْمِ اللّٰهِ وَعَلٰى مِلَّةِ رَسُوْلِ اللّٰهِ اَللّٰهُمَّ يَسِّرْ عَلَيْهِ اَمْرَهٗ وَسَهِّلْ عَلَيْهِ مَا بَعْدَهٗ وَاَسْعِدْهُ بِلِقَآئِكَ وَاجْعَلْ مَا خَرَجَ اِلَيْهِ خَيْرًا مِّمَّا خَرَجَ عَنْهُ

तर्जमा : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नाम के साथ और रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मिल्लत पर। ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! तू इस के काम को इस पर आसान फ़रमा, इस के बा'द वाले मुआ़मले को इस पर आसान बना, अपनी मुलाक़ात से इसे नेक बख़्त बना और जिस (आख़िरत) की त़रफ़ येह गया है इस को इस (दुन्या) से बेहतर कर जिस से निकला है।(3)

---

1 . . . احياء علوم الدين، كتاب ذكر الموت ومابعده، الباب الثالث، ۵/۲۱۰-

2 . . . فتاوى هندية، كتاب الصلاة، الباب الحادى والعشرون فى الجنائز، ۱/۱۵۷، बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 4, 1 / 808

3 . . . درمختار، كتاب الصلاة، باب صلاة الجنازة، ۳/۹۷-

सुवाल क्या मौत को भी मौत आएगी ?

जवाब जी हां ! जब जन्नती जन्नत में और जहन्नमी जहन्नम में चले जाएंगे तो उस वक़्त मौत को जन्नत और जहन्नम के दरमियान मेंढे की शक्ल में ला कर ज़ब्ह कर दिया जाएगा।(1)

मय्यित का ग़ुस्ल और कफ़न

सुवाल मय्यित को ग़ुस्ल देने के लिये मशरिक़ो मग़रिब की सम्त लिटाएं या शिमालो जुनूब ?

जवाब हर त़रह़ दुरुस्त है, असह़ मज़हब के मुत़ाबिक़ इस बारे में कोई ता'यीन व क़ैद नहीं लिहाज़ा जो सूरत मुयस्सर हो उस पर अ़मल करें।(2)

सुवाल मय्यित को ग़ुस्ल देते वक़्त कुल्ली किस त़रह़ करवाई जाए ?

जवाब मय्यित को ग़ुस्ल देते वक़्त न कुल्ली करवाई जाए और न ही नाक में पानी डाला जाए। हां कोई कपड़ा या रूई भिगो कर दांतों, मसूढ़ों, होंटों और नथनों पर फेर दें।(3)

सुवाल मय्यित के बाल काटना या कंघी करना कैसा ?

जवाब मय्यित की दाढ़ी या सर के बालों में कंघा करना या नाखुन तराशना या किसी जगह के बाल मूंडना, कतरना या उखाड़ना नाजाइज़ व मकरूहे तह़रीमी है बल्कि हुक्म येह है कि जिस ह़ालत पर है उसी ह़ालत में दफ़्न कर दें, हां अगर नाखुन टूटा हो तो ले सकते हैं और अगर नाखुन या बाल तराश लिये तो कफ़न में रख दें।(4)

---

1 ... بخاری، کتاب التفسیر، باب وانذرھم یوم الحسرۃ، ۳/۲۷۱، حدیث:۴۷۳۰۔

2 .....माख़ूज़ अज़ फ़तावा रज़विय्या, 9 / 91

3 ... فتاوی ھندیۃ، کتاب الصلاۃ، الباب الحادی والعشرون فی الجنائز ۱/۱۵۸۔

4 ... فتاوی ھندیۃ، کتاب الصلاۃ، الباب الحادی والعشرون فی الجنائز ۱/۱۵۸۔
ردالمحتار، کتاب الصلاۃ، باب صلاۃ الجنازۃ، مطلب فی القراءۃ عند المیت، ۳/۱۰۴۔

सुवाल क्या शौहर अपनी फ़ौतशुदा बीवी को ग़ुस्ल दे सकता है ?

जवाब शौहर का अपनी फ़ौतशुदा बीवी को ग़ुस्ल देना नाजाइज़ है।[1]

सुवाल क्या बीवी अपने फ़ौतशुदा शौहर को ग़ुस्ल दे सकती है ?

जवाब अगर शौहर मर गया और औ़रत इ़द्दते वफ़ात में है या शौहर ने त़लाक़े रजई दी थी और अभी इ़द्दत बाक़ी थी कि उस का इन्तिक़ाल हो गया तो इन सूरतों में औ़रत अपने शौहर को ग़ुस्ल दे सकती है क्यूंकि अभी वोह शौहर की ज़ौजिय्यत में है।[2]

सुवाल बा'दे ग़ुस्ल, मय्यित के जिस्म से नजासत निकली तो क्या ग़ुस्ल दोबारा दिया जाएगा ?

जवाब नहीं दिया जाएगा। दोबारा ग़ुस्ल देने की मुत़्लक़न किसी ह़ाल में ह़ाजत नहीं, अगर नजासत निकले तो वोह धो दी जाए।[3]

सुवाल मय्यित के छोड़े हुए माल में तक़्सीम की क्या तरतीब है ?

जवाब सब से पहले कफ़न फिर क़र्ज़ फिर वसिय्यत और इस के बा'द मीरास।[4]

सुवाल मर्द के कफ़न में जो तीन कपड़े हैं उन की मिक़्दार बयान कीजिये ?

जवाब (1) लिफ़ाफ़ा या'नी चादर की मिक़्दार येह है कि मय्यित के क़द से इतना ज़ियादा हो कि दोनों त़रफ़ बांध सकें और (2) इज़ार या'नी तहबन्द सर की चोटी से क़दम तक या'नी लिफ़ाफ़ा का जितना हिस्सा बांधने के लिये ज़ाइद था येह इतना हिस्सा कम हो और (3) क़मीस जिस को कफ़नी कहते हैं गर्दन से घुटनों के नीचे

---

1 . . . درمختار، کتاب الصلاۃ، باب صلاۃ الجنازۃ، ۳/۱۰۵۔

2 . . . درمختار مع ردالمحتار، کتاب الصلاۃ، باب صلاۃ الجنازۃ، مطلب فی حدیث کل سبب۔۔۔الخ، ۳/۱۰۶۔

3 . . . فتاوی ہندیۃ، کتاب الصلاۃ، الباب الحادی والعشرون فی الجنائز، ۱/۱۵۸۔

4 . . . جوہرۃ نیرۃ، کتاب الصلاۃ، باب الجنائز، ص ۱۳۴۔

तक और येह आगे और पीछे दोनों त़रफ़ बराबर हों।[1]

सुवाल क्या मय्यित को ज़ा'फ़रान का रंगा हुवा या रेशम का कफ़न पहनाया जा सकता है ?

जवाब ज़ा'फ़रान का रंगा हुवा या रेशम का कफ़न मर्द को ममनूअ़ है और औ़रत के लिये जाइज़ या'नी जो कपड़ा ज़िन्दगी में पहन सकता है उस का कफ़न दिया जा सकता है और जो ज़िन्दगी में नाजाइज़ उस का कफ़न भी नाजाइज़।[2]

सुवाल क्या मय्यित को पुराने कपड़े का कफ़न दिया जा सकता है ?

जवाब पुराने कपड़े का भी कफ़न हो सकता है, मगर पुराना हो तो धुला हुवा हो कि कफ़न सुथरा होना मरग़ूब है।[3]

सुवाल ह़ज़रते अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अपने कफ़न के लिये क्या वसिय्यत फ़रमाई थी ?

जवाब जब ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का आख़िरी वक़्त आया तो उन्हों ने वसिय्यत फ़रमाई कि उन्हें उस क़मीस में कफ़न दिया जाए जो हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन्हें अ़ता फ़रमाई थी और येह उन के जिस्म से मुत्तसिल रखी जाए नीज़ आप के पास हुज़ूर रह़मते दो आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के नाख़ुने पाक के कुछ तराशे भी थे उन के मुतअ़ल्लिक़ वसिय्यत फ़रमाई कि बारीक कर के उन की आंखों और मुंह में रख दिये जाएं। फ़रमाया : येह काम अन्जाम देना और मुझे अरह़मुर्राह़िमीन के सिपुर्द कर देना।[4]

---

1 ...فتاوی ھندیۃ، کتاب الصلاۃ، الباب الحادی والعشرون فی الجنائز، ۱/۱۶۰، बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 4, 1 / 818

2 ...جوھرۃ نیرۃ، کتاب الصلاۃ، باب الجنائز ص ۱۳۴، فتاوی ھندیۃ، کتاب الصلاۃ، الباب الحادی والعشرون فی الجنائز، ۱/۱۶۱۔

3 ...جوھرۃ النیرۃ، کتاب الصلاۃ، باب الجنائز ص ۱۳۵۔

4 ...اسد الغابۃ، رقم ۴۹۷۷، معاویۃ بن ابی سفیان، ۵/۲۲۳۔

सुवाल हज़रते अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के साथ कौन से तबर्रुकात रखे गए ?

जवाब हज़रते सय्यिदुना साबित बुनानी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَالِی का बयान है कि हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मुझ से फ़रमाया : येह मूए मुबारक हुज़ूर सय्यिदे आलम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का है इसे मेरी ज़बान के नीचे रख देना। मैं ने रख दिया और वोह यूं ही दफ़्न किये गए।[1] नीज़ हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास हुज़ूर ताजदारे दो जहान, रह़मते आलमिय्यान صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की एक छड़ी थी वोह उन के सीने पर क़मीस के नीचे उन के साथ दफ़्न की गई।[2]

नमाज़े जनाज़ा

सुवाल मरने के बा'द मोमिन को सब से पहला तोह़फ़ा क्या दिया जाता है ?

जवाब हुज़ूर सरवरे कौनैन, शहनशाहे दारैन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : मोमिन को सब से पहला तोह़फ़ा येह दिया जाता है कि उस की नमाज़े जनाज़ा पढ़ने वालों की मग़फ़िरत कर दी जाती है।[3]

सुवाल जनाज़े के साथ चलते हुए किन उमूर को पेशे नज़र रखना चाहिये ?

जवाब जनाज़े के साथ चलने वालों को ख़ामोश रहना चाहिये। मौत, क़ब्र के ह़ालात और हौलनाकियों को पेशे नज़र रखें, दुन्या की बातें करें न हंसें और ज़िक्र करना चाहें तो दिल में करें। अब ह़ालाते ज़माना के पेशे नज़र उलमाए किराम ने ज़िक्र बिल जह्‌र (ब आवाज़े

---

1 ...الاصابة، رقم ۲۷۷، انس بن مالک، ۱/۲۷۶۔

2 ...تاریخ ابن عساکر، رقم ۸۲۹، انس بن مالک، ۹/۳۷۸۔

3 ...نوادر الاصول، الاصل الرابع والخمسون، ۱/۲۲۹، حدیث: ۳۲۲۔

www.dawateislami.net

बुलन्द ज़िक्रो दुरूद और ना'त ख़्वानी वग़ैरा) की भी इजाज़त दी है।[1]

सुवाल नमाज़े जनाज़ा पढ़ने वाले के लिये क्या शराइत़ हैं?

जवाब (1) नमाज़ी का नजासते हुक्मिय्या व ह़क़ीक़िय्या[2] से पाक होना, नीज़ इस के कपड़े और जगह का पाक होना (2) सत्रे औ़रत (3) क़िब्ला रुख़ होना (4) निय्यत।[3]

सुवाल नमाज़े जनाज़ा के लिये मय्यित में किन शराइत़ का पाया जाना ज़रूरी है?

जवाब (1) मय्यित का मुसलमान होना (2) मय्यित के बदन और कफ़न का पाक होना (3) जनाज़े का वहां मौजूद होना या'नी (मय्यित के जिस्म का) कुल या अक्सर या निस्फ़ हिस्सा सर समेत मौजूद होना (4) जनाज़ा ज़मीन पर रखा होना या हाथ पर हो मगर क़रीब हो (5) जनाज़ा नमाज़ी के आगे क़िब्ले की त़रफ़ होना (6) मय्यित के बदन का वोह हिस्सा जिस का छुपाना फ़र्ज़ है उस का छुपा हुवा होना (7) मय्यित इमाम के मुह़ाज़ी हो या'नी उस के बदन का कोई हिस्सा इमाम के सामने हो।[4]

सुवाल क्या ख़ुदकुशी करने वाले की नमाज़े जनाज़ा पढ़ी जाएगी?

जवाब अगर्चे ख़ुदकुशी बहुत बड़ा गुनाह है लेकिन ख़ुदकुशी करने वाले की नमाज़े जनाज़ा पढ़ी जाएगी।[5]

सुवाल किन लोगों की नमाज़े जनाज़ा पढ़ना मन्अ़ है?

जवाब (1) बाग़ी जो इमामे बरह़क़ पर नाह़क़ ख़ुरूज करे और उसी

---

1 ...درمختارمع ردالمحتار، کتاب الصلاۃ، باب صلاۃ الجنائز، مطلب فی حمل المیت، ۳/ ۱۶۳۔

2 .....इन की ता'रीफ़ात और तफ़्सील जानने के लिये इसी किताब का सफ़ह़ा 60 मुलाह़ज़ा कीजिये।

3 ...ردالمحتار، کتاب الصلاۃ، باب صلاۃ الجنازۃ، مطلب فی صلاۃ الجنازۃ، ۳/ ۱۲۱۔

4 ...درمختارمع ردالمحتار، کتاب الصلاۃ، باب صلاۃ الجنازۃ، مطلب فی صلاۃ الجنازۃ، ۳/ ۱۲۱ تا ۱۲۳۔

5 ...درمختار، کتاب الصلاۃ، باب صلاۃ الجنازۃ، ۳/ ۱۲۷۔

बग़ावत में मारा जाए (2) वोह डाकू जो डाके में मारा गया (3) जो लोग अपनी क़ौम की नाहक़ हिमायत करते हुए लड़ें और मर जाएं (4) जिस ने कई लोग गला घोंट कर मार डाले (5) जो शहर में रात को हथयार ले कर लूट मार करें (6) जिस ने अपनी मां या बाप को मार डाला (7) जो किसी का माल छीन रहा था और इस हालत में मारा गया।[1]

सुवाल नमाज़े जनाज़ा की इमामत का हक़ किस को है ?

जवाब नमाज़े जनाज़ा में इमामत का हक़ बादशाहे इस्लाम को है, फिर क़ाज़ी, फिर इमामे जुमुआ, फिर इमामे महल्ला और फिर (मय्यित के) वली को। वली से पहले इमामे महल्ला को हक़ होना बतौरे इस्तिहबाब है और येह भी उस वक़्त है जब महल्ले का इमाम वली से अफ़्ज़ल हो वरना वली बेहतर है।[2]

सुवाल नमाज़े जनाज़ा में सूरए फ़ातिहा पढ़ना कब जाइज़ है ?

जवाब नमाज़े जनाज़ा में हम्दो सना की निय्यत से सूरए फ़ातिहा पढ़ना जाइज़ है।[3]

सुवाल जो शख़्स चौथी तक्बीर के बा'द जनाज़े में शामिल हुवा वोह क्या करे ?

जवाब जो शख़्स चौथी तक्बीर के बा'द आया तो जब तक इमाम ने सलाम न फेरा हो शामिल हो जाए और इमाम के सलाम के बा'द तीन बार اَللّٰہُ اَکْبَر कह ले।[4]

सुवाल जब कई जनाज़े जम्अ़ हों तो एक साथ नमाज़ पढ़ी जाए या अलग अलग ?

---

1 ...درمختار مع ردالمحتار، کتاب الصلاۃ، باب صلاۃ الجنازۃ، مطلب ھل یسقط فرض...الخ، ۳/۱۲۵ تا ۱۲۸۔
فتاوی ھندیۃ، کتاب الصلاۃ، الباب الحادی والعشرون فی الجنائز، ۱/۱۶۳۔

2 ...غنیۃ المتملی، فصل فی الجنائز، ص ۵۸۴، बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 4, 1 / 836

3 ...عمدۃ الرعایۃ، کتاب الصلاۃ، باب الجنائز، ۱/۲۵۳۔

4 ...درمختار، کتاب الصلاۃ، باب صلاۃ الجنائز، ۳/۱۳۶۔

जवाब कई जनाज़े जम्अ़ हों तो एक साथ सब की नमाज़ पढ़ सकता है या'नी एक ही नमाज़ में सब की निय्यत कर ले और अफ़्ज़ल येह है कि सब की अ़लाह़दा अ़लाह़दा पढ़े। अगर सब की एक साथ पढ़ीं तो इस बात का इख़्तियार है कि सब को आगे पीछे रखें या'नी सब का सीना इमाम के मुक़ाबिल हो या बराबर बराबर रखें या'नी एक के पाउं की त़रफ़ दूसरे का सर हो और दूसरे के पाउं की त़रफ़ तीसरे का सर हो। अगर आगे पीछे रखे तो इमाम के क़रीब उस का जनाज़ा हो जो सब में अफ़्ज़ल हो फिर उस के बा'द जो अफ़्ज़ल हो।(1)

सुवाल क्या एक मरतबा नमाज़े जनाज़ा पढ़ने के बा'द दोबारा पढ़ी जा सकती है ?

जवाब अगर वली नमाज़े जनाज़ा पढ़ चुका या उस की इजाज़त से एक बार नमाज़ हो चुकी तो अब दूसरों को मुत़्लक़न जाइज़ नहीं, न उन को जो पढ़ चुके न उन को जो बाक़ी रहे।(2) मगर जब वली के सिवा किसी ऐसे शख़्स ने नमाज़ पढ़ाई जो वली पर मुक़द्दम न हो और वली ने उसे इजाज़त भी न दी थी तो अगर वली नमाज़ में शरीक न हुवा तो नमाज़ का इआ़दा कर सकता है लेकिन इस दूसरी नमाज़ में वोही लोग जनाज़ा पढ़ सकते हैं जिन्हों ने पहले न पढ़ी हो, जो पहले शरीक थे अब वली के साथ नहीं पढ़ सकते और अगर ऐसे शख़्स ने नमाज़ पढ़ाई जो वली पर मुक़द्दम है जैसे बादशाहे इस्लाम या क़ाज़ी या महल्ले का वोह इमाम जो वली से अफ़्ज़ल हो तो अब वली भी नमाज़ का इआ़दा नहीं कर सकता।(3)

---

1 . . . درمختار، کتاب الصلاۃ، باب صلاۃ الجنائز ۳/ ۱۳۸۔

2 .....फ़तावा रज़विय्या, 9 / 318

3 . . . درمختار مع ردالمحتار، کتاب الصلاۃ، باب صلاۃ الجنازۃ، مطلب تعظیم اولی الامر واجب، ۳/ ۱۴۴۔

فتاوی ہندیۃ، کتاب الصلاۃ، الباب الحادی والعشرون فی الجنائز ۱/ ۱۶۳۔

सुवाल अगर मय्यित को ग़ुस्ल दिये बिग़ैर नमाज़े जनाज़ा पढ़ ली तो क्या हुक्म है ?

जवाब ग़ुस्ल के बिग़ैर नमाज़ पढ़ी गई तो नहीं होगी लिहाज़ा मय्यित को ग़ुस्ल दे कर दोबारा नमाज़ पढ़ें और अगर क़ब्र में रख चुके मगर अभी मिट्टी नहीं डाली गई तो क़ब्र से निकालें और ग़ुस्ल दे कर नमाज़ पढ़ें और मिट्टी डाल चुके तो अब नहीं निकाल सकते लिहाज़ा अब उस की क़ब्र पर नमाज़ पढ़ें क्यूंकि ग़ुस्ल न होने की वज्ह से पहली नमाज़ हुई ही नहीं थी और अब चूंकि ग़ुस्ल नामुमकिन है लिहाज़ा अब हो जाएगी।(1)

क़ब्र व दफ़्न

सुवाल मय्यित को ताबूत में रख कर दफ़्न करना कैसा है ?

जवाब ताबूत कि मय्यित को किसी लकड़ी वग़ैरा के सन्दूक़ में रख कर दफ़्न करें येह मकरूह है, मगर जब ज़रूरत हो मसलन ज़मीन बहुत तर है तो ह़रज नहीं और इस सूरत में ताबूत के मसारिफ़ (या'नी अख़राजात) उस माल में से लिये जाएं जो मय्यित ने छोड़ा है।(2)

सुवाल ताबूत में रख कर दफ़्न करने का त़रीक़ा क्या है ?

जवाब अगर ताबूत में रख कर दफ़्न करें तो सुन्नत येह है कि उस में मिट्टी बिछा दें और दाएं बाएं कच्ची ईंटें लगा दें और ऊपर मिट्टी की लिपाई कर दें, ग़रज़ येह कि अन्दर का हिस्सा लह़द की त़रह़ हो जाए।(3)

सुवाल मय्यित की तदफ़ीन कहां मुस्तह़ब है और क़ब्र किस जगह बनानी बेहतर है ?

---

1 . . . درمختار مع ردالمحتار، کتاب الصلاۃ، باب صلاۃ الجنازۃ، مطلب فی صلاۃ الجنازۃ، ۳/۱۲۱۔

2 .....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 4, 1 / 843

3 . . . ردالمحتار، کتاب الصلاۃ، باب صلاۃ الجنازۃ، ۳/۱۶۵ ملخصاً۔

जवाब जिस शहर या गाऊं वग़ैरा में इन्तिक़ाल हुवा वहीं के क़ब्रिस्तान में दफ़्न करना मुस्तह़ब है अगर्चे येह वहां रहता न हो बल्कि जिस घर में इन्तिक़ाल हुवा उस घर वालों के क़ब्रिस्तान में दफ़्न करें।(1) ऐसी जगह दफ़्न करना बेहतर है जहां सालिह़ीन की क़ब्रें हों।(2)

सुवाल किन जगहों पर मुर्दा दफ़्न करना ह़राम है ?

जवाब मालिक की इजाज़त के बिग़ैर उस की ज़मीन में नीज़ और जगह होते हुए पुरानी क़ब्र में मुर्दा दफ़्न करना ह़राम है। यूंही मस्जिद ता'मीर होने के बा'द मस्जिद के सिह़न में भी मुर्दे को दफ़्न करना ह़राम है।(3)

सुवाल क़ब्र में उतरने वाले अफ़राद कितने और कैसे हों ?

जवाब क़ब्र में उतरने वाले दो तीन जो मुनासिब हों, कोई ता'दाद इस में ख़ास नहीं और बेहतर येह कि क़वी व नेक व अमीन हों कि कोई बात नामुनासिब देखें तो लोगों पर ज़ाहिर न करें।(4)

सुवाल क़ब्र में शजरह व अ़ह्दनामा रखना कैसा नीज़ कफ़न पर लिखने की क्या बरकत है ?

जवाब शजरह या अ़ह्दनामा क़ब्र में रखना जाइज़ है और बेहतर येह है कि मय्यित के मुंह के सामने क़िब्ले की जानिब ताक़ खोद कर उस में रखें, बल्कि दुर्रे मुख़्तार में कफ़न पर अ़ह्दनामा लिखने को जाइज़ कहा है और फ़रमाया कि इस से मग़फ़िरत की उम्मीद है

1.....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 4, 1 / 846-847

2...جوهرة نيرة، كتاب الصلاة، باب الجنائز، الجزء الاول، ص ۱۴۱۔

3.....फ़तावा रज़विय्या, 9 / 379, 385, 407 माख़ूज़न।

4...فتاوی هندية، كتاب الصلاة، الباب الحادی والعشرون فی الجنائز، ۱/ ۱۶۶،

बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 4, 1 / 843-844

और मय्यित के सीने और पेशानी पर بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ लिखना जाइज़ है। यूं भी हो सकता है कि पेशानी पर بِسْمِ اللّٰهِ शरीफ़ लिखें और सीने पर कलिमए त़य्यिबा لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰه صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मगर नहलाने के बा'द कफ़न पहनाने से पेश्तर (या'नी पहले), कलिमे की उंगली से लिखें, रौशनाई से न लिखें।(1)

सुवाल मय्यित को क़ब्र में उतारते वक़्त कौन सी दुआ पढ़ी जाती है?

जवाब (2) بِسْمِ اللّٰهِ وَبِاللّٰهِ وَعَلٰى مِلَّةِ رَسُوْلِ اللّٰهِ और एक रिवायत में بِسْمِ اللّٰهِ के बा'द وَفِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ भी आया है।(3)

सुवाल मय्यित को मिट्टी देने का मुस्तह़ब त़रीक़ा बताइये नीज़ उस वक़्त क्या पढ़ना चाहिये?

जवाब मुस्तह़ब येह है कि सिरहाने की त़रफ़ दोनों हाथों से तीन बार मिट्टी डालें। पहली बार कहें : مِنْهَا خَلَقْنٰكُمْ (इसी से हम ने तुम को पैदा किया) दूसरी बार : وَفِيْهَا نُعِيْدُكُمْ (और इसी में तुम को लौटाएंगे) और तीसरी बार : وَمِنْهَا نُخْرِجُكُمْ تَارَةً اُخْرٰى (और इसी से तुम को दोबारा निकालेंगे) (फिर) बाक़ी मिट्टी हाथ या खुरपी या फावड़े वग़ैरा जिस से मुमकिन हो क़ब्र में डालें और जितनी मिट्टी क़ब्र से निकली उस से ज़ियादा डालना मकरूह है।(4)

सुवाल बा'दे तदफ़ीन मय्यित के सिरहाने और पाउं की त़रफ़ खड़े हो कर क्या पढ़ा जाए?

जवाब मुस्तह़ब येह है कि दफ़्न के बा'द क़ब्र पर सूरए बक़रह का अव्वल

---

1 ...درمختار مع ردالمحتار، کتاب الصلاۃ، باب صلاۃ الجنازۃ، ۳/۱۸۵-۱۸۶ ملتقطا، बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 4, 1 / 848

2 ...ترمذی، کتاب الجنائز، باب مایقول اذا ادخل المیّت القبر، ۲/۳۲۷، حدیث:۱۰۴۸۔

3 ...ابن ماجه، کتاب الجنائز، باب ماجاء فی ادخال المیت القبر، ۲/۲۴۱، حدیث:۱۵۵۰۔

4 ...جوهرۃ نیرۃ، کتاب الصلاۃ، باب الجنائز، الجزء الاول، ص ۱۴۱، बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 4, 1 / 845 मुल्तक़त़न

व आख़िर पढ़ें, सिरहाने الٓمّٓ से مُفْلِحُوْنَ तक और पाइंती (पाउं की जानिब) اٰمَنَ الرَّسُوْلُ से ख़त्मे सूरत तक पढ़ें।[1]

सुवाल दफ़्न के बा'द क़ब्र के पास अज़ान देने से क्या फ़वाइद ह़ासिल होते हैं?

जवाब दफ़्न के बा'द क़ब्र के पास अज़ान देने से मुर्दे को मुन्करो नकीर के सुवालों का जवाब देने में आसानी होती है नीज़ मुर्दे की वह़्शत और घबराहट दूर हो जाती है।[2]

सुवाल तदफ़ीन के बा'द क़ब्र के पास कितनी देर तक ठहरना मुस्तह़ब है?

जवाब दफ़्न के बा'द क़ब्र के पास इतनी देर तक ठहरना मुस्तह़ब है जितनी देर में ऊंट ज़ब्ह़ कर के गोश्त तक़्सीम कर दिया जाए कि उन के रहने से मय्यित को उन्स होगा और नकीरैन का जवाब देने में वह़्शत न होगी और इतनी देर तक तिलावते क़ुरआन और मय्यित के लिये दुआ़ व इस्तिग़फ़ार करें और येह दुआ़ करें कि सुवालाते नकीरैन के जवाब में साबित क़दम रहे।[3]

सुवाल रिश्तेदार की क़ब्र पर जाने के लिये क़ब्रों पर गुज़रना और क़ब्रिस्तान में जूते पहनना कैसा?

जवाब अपने किसी रिश्तेदार की क़ब्र तक जाना चाहता है मगर क़ब्रों पर गुज़रना पड़ेगा तो वहां तक जाना मन्अ़ है, दूर ही से फ़ातिह़ा पढ़ दे, क़ब्रिस्तान में जूतियां पहन कर न जाए।[4] एक शख़्स

---

1 ...جوہرۃ نیرۃ، کتاب الصلاۃ، باب الجنائز، الجزء الاول، ص ۱۴۱، बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 4, 1 / 846 माख़ूज़न

2 .....फ़तावा रज़विय्या, 5 / 672 माख़ूज़न।

3 ...جوہرۃ نیرۃ، کتاب الصلاۃ، الجزء الاول، ص ۱۴۱، बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 4, 1 / 846

4 .....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 4, 1 / 848

को हुज़ूरे अक्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने जूते पहने देखा तो फ़रमाया : जूते उतार दे।(1)

ज़कात

सुवाल ज़कात को ज़ाहिर कर के देना मुस्तहब है मगर किस सूरत में छुपा कर देना मुस्तहब है ?

जवाब जब माल की ज़ियादती ज़ाहिर होने से ज़ालिमों का ख़ौफ़ हो तो इस सूरत में ज़कात को छुपा कर देना मुस्तहब है।(2)

सुवाल ज़कात को ज़ाहिर कर के देना अफ़्ज़ल क्यूं है ?

जवाब ज़कात में ए'लान इस वज्ह से है कि छुपा कर देने में लोगों को तोहमत और बद गुमानी का मौक़अ़ मिलेगा, नीज़ ए'लान औरों के लिये बाइसे तरग़ीब है कि इस को देख कर और लोग भी देंगे मगर येह ज़रूर (या'नी लाज़िमी) है कि रिया न आने पाए कि सवाब जाता रहेगा बल्कि गुनाह व इस्तिह्क़ाक़े अ़ज़ाब है।(3)

सुवाल ह़ाजते अस्लिय्या से क्या मुराद है ?

जवाब ह़ाजते अस्लिय्या या'नी जिस की त़रफ़ ज़िन्दगी बसर करने में आदमी को ज़रूरत है इस में ज़कात वाजिब नहीं, जैसे रहने का मकान, जाड़े गर्मियों में पहनने के कपड़े, ख़ानादारी के सामान, सुवारी के जानवर, आलाते ह़र्ब, पेशावरों के औज़ार, अहले इ़ल्म के लिये ह़ाजत की किताबें, खाने के लिये ग़ल्ला।(4)

---

1 . . . نوادرالاصول، الاصل الحادی عشر والمائتان، ۲/۷۷۵، حدیث: ۱۰۷۱۔

2 . . . الاشباہ والنظائر، الفن الرابع، کتاب الزکاۃ، ص ۳۴۲

3 .....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 5, 1 / 890

4 .....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 5, 1 / 880-881 मुल्तक़तन।

सुवाल क्या हाजते अस्लिय्या पूरी करने के लिये जम्अ की गई रक़म पर भी ज़कात है ?

जवाब हाजते अस्लिय्या में ख़र्च करने के रुपै रखे हैं तो साल में जो कुछ ख़र्च किया किया और जो बाक़ी रहे अगर ब क़दरे निसाब हैं तो उन की ज़कात वाजिब है, अगर्चे इसी निय्यत से रखे हैं कि आइन्दा हाजते अस्लिय्या ही में सर्फ़ होंगे और अगर साल तमाम (या'नी साल मुकम्मल होने) के वक़्त हाजते अस्लिय्या में ख़र्च करने की ज़रूरत है तो ज़कात वाजिब नहीं।(1)

सुवाल किस सूरत में ज़कात देते वक़्त निय्यत न होने के बा वुजूद ज़कात अदा हो जाएगी ?

जवाब (1) एक शख़्स को वकील बनाया उसे देते वक़्त तो निय्यते ज़कात न की, मगर जब वकील ने फ़क़ीर को दिया उस वक़्त मुअक्किल ने निय्यत कर ली, हो गई।(2) (2) देते वक़्त निय्यत नहीं की थी, बा'द में की तो अगर वोह माल फ़क़ीर के पास मौजूद है या'नी उस की मिल्क में है तो ज़कात अदा हो जाएगी वरना नहीं।(3)

सुवाल क्या एडवान्स ज़कात दी जा सकती है ?

जवाब साल पूरा होने से पहले ज़कात दी जा सकती है लेकिन इस के लिये तीन शराइत़ हैं : (1) ज़कात अदा करते वक़्त उस माल पर साल शुरूअ हो चुका हो (2) जिस निसाब की ज़कात अदा की वोह निसाब साल के आख़िर में कामिल तौर पर पाया जाए (3) ज़कात अदा करने और साल पूरा होने के दरमियान वोह माल हलाक न हो।(4) अगर साल पूरा होने से पहले आख़िरी दो शर्तें

---

1 ...ردالمحتار، کتاب الزکاۃ، مطلب فی زکاۃ ثمن المبیع وفاء، ۳/۲۱۳ ملخصاً، बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 5, 1 / 881

2 ...جوھرۃ نیرۃ، کتاب الزکاۃ، الجزء الاول، ص ۱۴۹۔

3 ...درمختار، کتاب الزکاۃ، ۳/۲۲۲، बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 5, 1 / 886 माख़ूज़न

4 ...فتاوی ھندیۃ، کتاب الزکاۃ، الباب الاول فی تفسیرھا وصفتھا وشرائطھا، ۱/۱۷۶۔

नहीं पाई गईं तो दी हुई ज़कात नफ़्ली सदक़ा शुमार होगी।[1]

सुवाल क्या मुस्तहिक़ को ज़कात देते वक़्त ज़कात कह कर देना ज़रूरी है?

जवाब ज़कात देने में इस की ज़रूरत नहीं कि फ़क़ीर को ज़कात कह कर दे, बल्कि सिर्फ़ निय्यते ज़कात काफ़ी है यहां तक कि अगर हिबा या क़र्ज़ कह कर दे और निय्यत ज़कात की हो अदा हो गई। बा'ज़ मोहताज ज़रूरत मन्द ज़कात का रूपिया नहीं लेना चाहते, उन्हें ज़कात कह कर दिया जाएगा तो नहीं लेंगे लिहाज़ा ज़कात का लफ़्ज़ न कहे।[2]

सुवाल क्या ज़कात की निय्यत से किसी शरई फ़क़ीर को खाना खिलाने से ज़कात अदा हो जाएगी?

जवाब मुबाह कर देने से ज़कात अदा न होगी मसलन फ़क़ीर को ब निय्यते ज़कात खाना खिला दिया ज़कात अदा न हुई कि मालिक कर देना नहीं पाया गया, हां अगर खाना दे दिया कि चाहे खाए या ले जाए तो अदा हो गई। यूंही ब निय्यते ज़कात फ़क़ीर को कपड़ा दे दिया या पहना दिया अदा हो गई।[3]

सुवाल कोई शै गिरवी रखवाई तो उस की ज़कात कौन अदा करेगा?

जवाब जो चीज़ गिरवी रखवाई गई है उस की ज़कात न गिरवी रखवाने वाले पर लाज़िम है और न ही जिस के पास गिरवी रखवाई गई है उस पर लाज़िम है क्यूंकि जिस के पास वोह चीज़ गिरवी है वोह उस का मालिक नहीं और गिरवी रखवाने वाले की भी मिल्किय्यत कामिल नहीं क्यूंकि वोह चीज़ अब उस के क़ब्ज़े में ही नहीं और जब वोह चीज़ गिरवी रखवाने वाले के क़ब्ज़े में आएगी तो जितनी मुद्दत वोह चीज़ गिरवी थी उस के क़ब्ज़े में नहीं थी उस पर

1 .....फ़तावा अह्ले सुन्नत, अहकामे ज़कात, स. 165

2 . . . فتاوی ھندیۃ، کتاب الزکاۃ، الباب الاول فی تفسیرھا...الخ، ۱/۱۷۱، बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 5, 1 / 890 मुल्तक़तन

3 . . . درمختار مع ردالمحتار، کتاب الزکاۃ، ۳/۲۰۴ ملخصا، बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 5, 1 / 874

इतने अ़र्से की ज़कात भी लाज़िम नहीं।[1]

सुवाल क्या साल भर सदक़ा व ख़ैरात करने के बा'द उस में निय्यते ज़कात हो सकती है ?

जवाब साल भर तक ख़ैरात करता रहा, अब निय्यत की, कि जो कुछ दिया है ज़कात है तो अदा न हुई। ज़कात देते वक़्त या ज़कात के लिये माल अ़लाहि़दा करते वक़्त निय्यते ज़कात शर्त़ है। निय्यत के येह मा'ना हैं कि अगर पूछा जाए तो बिला तअम्मुल बता सके कि ज़कात है।[2]

सुवाल क्या मस्जिद की ता'मीर या मय्यित की तजहीज़ो तक्फ़ीन में ज़कात की रक़म लगाई जा सकती है ?

जवाब ज़कात का रूपिया मुर्दे की तजहीज़ो तक्फ़ीन या मस्जिद की ता'मीर में नहीं सर्फ़ कर सकते कि तम्लीके फ़क़ीर नहीं पाई गई और इन उमूर में सर्फ़ करना चाहें तो इस का त़रीक़ा येह है कि फ़क़ीर को मालिक कर दें और वोह सर्फ़ (या'नी ख़र्च) करे और सवाब दोनों को होगा।[3]

सुवाल क्या ऐसा मक़रूज़ जो शरई फ़क़ीर भी हो उस को क़र्ज़ मुआ़फ़ कर देने से क़र्ज़ ख़्वाह की ज़कात अदा हो जाएगी ?

जवाब किसी का फ़क़ीर पर क़र्ज़ है और वोह उस क़र्ज़ को अपने माल की ज़कात में देना चाहता है या'नी येह चाहता है कि क़र्ज़ फ़क़ीर को मुआ़फ़ कर दे और वोह मेरे माल की ज़कात हो जाए तो येह नहीं हो सकता। अलबत्ता येह हो सकता है कि पहले उसे ज़कात का माल दे फिर वोही माल अपने क़र्ज़ के त़ौर पर उस से वापस ले ले, अब अगर वोह देने से इन्कार करे तो छीन भी सकता है।[4]

---

1 ...درمختار مع ردالمحتار، کتاب الزکاة، مطلب فی زکاة ثمن المبیع وفاء، ۳/۲۱۴، बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 5, 1 / 877 मुलख़्ख़सन

2 ...فتاوی ھندیة، کتاب الزکاة، الباب الاول فی تفسیرھا وصفتھا وشرائطھا، ۱/۱۷۰۔

3 ...درمختار مع ردالمحتار، کتاب الزکاة، ۳/۲۲۷، बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 5, 1 / 890 मुल्तक़त़न

4 ...درمختار، کتاب الزکاة، ۳/۲۲۶، बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 5, 1 / 890 मुलख़्ख़सन

सदक़ा

सुवाल आदमी का कौन सा अ़मल बरोज़े क़ियामत उस के लिये साया बनेगा ?

जवाब वोह अ़मल सदक़ा है । हुज़ूर नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : बेशक सदक़ा करने वालों को सदक़ा क़ब्र की गर्मी से बचाता है, और बिलाशुबा मुसलमान क़ियामत के दिन अपने सदक़े के साए में होगा ।(1)

सुवाल आ़म मिस्कीन पर सदक़ा करने और रिश्तेदार पर सदक़ा करने में क्या फ़र्क़ है ?

जवाब हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहि़बे लौलाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : रिश्तेदार को सदक़ा देने में दो सवाब हैं एक सदक़ा करने का और दूसरा सिलए रेह़मी करने का ।(2)

सुवाल सदक़ए नाफ़िला देते वक़्त क्या निय्यत होनी चाहिये ?

जवाब जो शख़्स नफ़्ली सदक़ा दे उस के लिये अफ़्ज़ल येह है कि तमाम अहले ईमान को सवाब पहुंचाने की निय्यत करे इस त़रह़ उन्हें भी सवाब पहुंचेगा और उस का सवाब भी कम न होगा ।(3)

सुवाल छुपा कर सदक़ा करने की कोई फ़ज़ीलत बयान कीजिये ?

जवाब हुज़ूरे पुरनूर, शाफ़ेए यौमुन्नुशूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : सात शख़्स हैं जिन पर **अल्लाह** तआ़ला उस दिन साया करेगा जिस दिन उस के (अ़र्श के) साए के सिवा कोई

---

1 . . . شعب الایمان، باب فی الزکاۃ، التحریض علی صدقۃ التطوع، ۲۱۲/۳، حدیث:۳۳۴۷۔

2 . . . ترمذی، کتاب الزکاۃ، باب ماجاء فی الصدقۃ علی ذی القرابۃ، ۱۴۲/۲، حدیث:۶۵۸۔

3 . . . ردالمحتار، کتاب الحج، مطلب في إهداء ثواب الأعمال للغير، ۱۳/۴۔

साया न होगा। (इन में से एक) वोह शख़्स है जिस ने कुछ सदक़ा किया और इसे इतना छुपाया कि बाएं हाथ को भी ख़बर न हुई कि दाएं ने क्या ख़र्च किया।[1]

सुवाल आदमी का अपने नफ़्स पर सदक़ा क्या है ?

जवाब हज़रते सय्यिदुना अबू ज़र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि हुज़ूर ताजदारे ख़त्मे नुबुव्वत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : तुम लोगों को (अपने) शर से महफ़ूज़ रखो, येह एक सदक़ा है जो तुम अपने नफ़्स पर करोगे।[2]

सुवाल सदक़ा वुसूल करने वाले के लिये क्या चीज़ सुन्नत है ?

जवाब सदक़ा वुसूल करने वाले के लिये सुन्नत येह है कि सदक़ा देने वाले को दुआए ख़ैर से नवाज़े।[3]

सुवाल कुरआने मजीद में सदक़ा करने वाले को किन दो चीज़ों से मन्अ़ किया गया ?

जवाब एहसान जतलाने और ईज़ा देने से मन्अ़ किया गया।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

﴿یٰۤاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا لَا تُبْطِلُوْا صَدَقٰتِكُمْ بِالْمَنِّ وَ الْاَذٰىۙ﴾ (پ۳، البقرۃ:۲۶۴)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ ईमान वालो अपने सदक़े बातिल न कर दो एहसान रख कर और ईज़ा दे कर।

सुवाल दुआ से पहले कौन सा अ़मल किया जाए तो वोह उसे क़बूलिय्यत के ज़ियादा क़रीब कर देता है ?

जवाब अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

﴿فَقَدِّمُوْا بَیْنَ یَدَیْ نَجْوٰىكُمْ صَدَقَةً﴾ (پ۲۸، المجادلۃ:۱۲)

---

1 ...بخاری، کتاب الاذان، باب من جلس فی المسجد... الخ، ۱/ ۲۳۶، حدیث: ۶۶۰۔

2 ...بخاری، کتاب العتق، باب ای الرقاب افضل، ۲/ ۱۵۰، حدیث: ۲۵۱۸۔

3 .....तफ़्सीर सिरातुल जिनान, पारह 11, अत्तौबह, तह़्तुल आयत : 99, 4 / 216

"**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** तो अपनी अर्ज़ से पहले कुछ सदक़ा दे लो।" इमामे अहले सुन्नत आ'ला हज़रत عَلَيْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعِزَّت फ़रमाते हैं : सदक़ा ख़ुसूसन पोशीदा इस अम्र में असरे तमाम रखता है (या'नी दुआ़ की क़बूलिय्यत में बहुत मुअस्सिर है)।[1]

सुवाल सदक़ा करने वाले को कितने शैतान सदक़े से रोकते हैं ?

जवाब उसे 70 शैतान रोकते हैं। हज़रते सय्यिदुना अबू ज़र ग़िफ़ारी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि ज़मीन पर जो भी सदक़ा दिया जाता है वोह 70 शैतानों के जबड़ों से छुड़ा कर दिया जाता है वोह सब बन्दे को सदक़ा देने से रोकते हैं।[2]

सुवाल माली सदक़ात के इ़लावा और कौन सी चीज़ें सदक़े में शामिल हैं ?

जवाब (1) अच्छी बात कहना (2) रास्ते से तक्लीफ़ देह चीज़ दूर करना (3) दो लोगों के दरमियान इन्साफ़ से फ़ैसला करना (4) सुवारी पर सुवार होने में किसी की मदद करना (5) नमाज़ की त़रफ़ उठने वाला हर क़दम[3] (6) नेकी का हुक्म देना और बुराई से मन्अ़ करना (7) मुसलमान भाई के लिये मुस्कुराना (8) भटके हुए को रास्ता दिखाना[4] (9) लोगों पर मेहरबानी करना[5] (10) इ़ल्म सीख कर दूसरों को सिखाना।[6] वग़ैरा।

सुवाल बुराई के 70 दरवाज़े बन्द करने वाला अ़मल कौन सा है ?

1.....फ़ज़ाइले दुआ़, स. 59

2...كتاب الزهد، باب الصدقة، ص ٢٢٨، حديث: ٦٤٩۔

3...بخاری، کتاب الجهاد، باب من اخذ بالركاب ونحوه، ٢/ ٣٠٦، حدیث: ٢٩٨٩۔

4...ترمذی، کتاب البر والصلة، باب ماجاء فی صنائع المعروف، ٣/ ٣٨٤، حدیث: ١٩٦٣۔

5...شعب الايمان، باب فی حسن الخلق، فصل فی الحلم والتؤدة، ٦/ ٣٤٣، حدیث: ٨٤٤٥۔

6...ابن ماجه، كتاب السنة، باب ثواب معلم الناس الخير، ١/ ١٥٨، حديث: ٢٤٣۔

जवाब हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का इरशादे पाक है : सदक़ा बुराई के 70 दरवाज़ों को बन्द कर देता है।(1) और एक मक़ाम पर इरशाद फ़रमाया कि सदक़ा देने में जल्दी किया करो क्यूंकि बला सदक़े से आगे नहीं बढ़ सकती।(2)

सुवाल किसी भूके मुसलमान को खिलाने और पिलाने की क्या फ़ज़ीलत है ?

जवाब हदीसे पाक में है : जिस ने किसी भूके मुसलमान को खाना खिलाया **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे जन्नती फल खिलाएगा और जिस ने किसी प्यासे मुसलमान को पानी पिलाया **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे रह़ीके़ मख़्तूम (या'नी मोहर लगी हुई पाकीज़ा शराब) पिलाएगा।(3)

रोज़ा

सुवाल किस सूरत में बिला उ़ज़्रे शरई जान बूझ कर रोज़ा तोड़ने में कफ़्फ़ारा नहीं ?

जवाब रमज़ान शरीफ़ के इ़लावा किसी दूसरे रोज़े के तोड़ने में कफ़्फ़ारा नहीं अगर्चे बिला उ़ज़्रे शरई और जान बूझ कर हो।(4) लेकिन नफ़्ली रोज़ा जान बूझ कर शुरूअ़ कर देने से उस को पूरा करना वाजिब है अगर तोड़ेगा तो क़ज़ा वाजिब होगी। याद रहे नफ़्ली रोज़ा बिला उ़ज़्र तोड़ना नाजाइज़ है।(5)

सुवाल किस रोज़े का तोड़ना वाजिब है और क़स्दन तोड़ने पर क़ज़ा भी नहीं ?

---

1 ...معجم کبیر، ۴/۲۸۴، حدیث: ۴۴۰۲۔

2 ...معجم اوسط، ۴/۱۸۰، حدیث: ۵۶۴۳۔

3 ...ابوداود، کتاب الزکاۃ، باب فی فضل سقی الماء، ۲/۱۸۰، حدیث: ۱۶۸۲۔

4 ...قدوری، کتاب الصوم، ص ۹۴۔

5 ...درمختار، کتاب الصوم، ۳/۴۱۱، ۴۱۳، ملتقطاً۔

जवाब ईद, बक़र ईद या अय्यामे तशरीक़ में नफ़्ली रोज़ा रख कर क़स्दन तोड़ने से उस की क़ज़ा वाजिब नहीं होती बल्कि उस रोज़े का तोड़ देना वाजिब है।(1)

सुवाल वोह कौन है जिसे माहे रमज़ान में रमज़ान के इलावा दूसरा रोज़ा रखना सह़ीह़ है ?

जवाब मुसाफ़िर और मरीज़ को माहे रमज़ान में रमज़ान के इलावा दूसरा रोज़ा रखना सह़ीह़ है।(2)

सुवाल रोज़े की ह़ालत में नाक में स्प्रे करने से रोज़ा टूट जाएगा या नहीं ?

जवाब अगर अपना रोज़ादार होना मा'लूम होने के बा वुजूद उस ने ऐसा किया तो इस सूरत में उस का रोज़ा टूट जाएगा और इस पर उस रोज़े की क़ज़ा या'नी उस रोज़े के बदले में एक और रोज़ा लाज़िम होगा।(3)

सुवाल ह़दीसे पाक में किन चीज़ों से रोज़ा इफ़्त़ार करने की तरग़ीब आई है ?

जवाब हु़ज़ूर ताजदारे दो जहान صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जब तुम में कोई रोज़ा इफ़्त़ार करे तो खजूर या छूहारे से इफ़्त़ार करे कि वोह बरकत है और अगर न मिले तो पानी से कि वोह पाक करने वाला है।(4)

सुवाल किस शख़्स को रोज़ा न रखने की इजाज़त है और उसे फ़िदया देने का हुक्म है ?

जवाब वोह बूढ़े अफ़राद जिन की उ़म्र ऐसी हो गई कि अब वोह रोज़ बरोज़ कमज़ोर ही होते जाएंगे, जब उन में रोज़ा रखने की त़ाक़त

---

(1) ...درمختارمع ردالمحتار، کتاب الصوم، باب مایفسد الصوم ومالا یفسدہ، فصل فی العوارض، ۳/ ۴۷۴۔

(2) ...فتاوی خانیہ، کتاب الصوم، الفصل الثانی فی النیۃ، ۱/ ۹۷ ماخوذا۔

(3) .....फ़तावा अह्ले सुन्नत, क़िस्त़, 9 स. 18–19 मुलख़्ख़सन।

(4) ...ترمذی، کتاب الصوم، باب ماجاء مایستحب علیہ الافطار، ۲/ ۱۴۲، حدیث: ۶۵۸۔

न रहे और न उन्हें आइन्दा रोज़े की त़ाक़त आने की उम्मीद हो तो अब उन्हें रोज़ा न रखने की इजाज़त है, लिहाज़ा हर रोज़े के बदले में "**फ़िदया**" या'नी दोनों वक़्त एक मिस्कीन को पेट भर खाना खिलाना उस पर वाजिब है या हर रोज़े के बदले एक सदक़ए फ़ित्र की मिक़्दार मिस्कीन को दे दें।(1)

सुवाल किन दिनों में रोज़ा रखना मन्अ़ है और येह क्यूं मन्अ़ है ?

जवाब पांच दिनों में रोज़ा रखना मन्अ़ है, चार दिन ईदुल अज़्हा के (10 से 13 ज़िल हिज्जा) और एक दिन ईदुल फ़ित्र का। क्यूंकि येह दिन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से बन्दों की दा'वत के हैं।(2)

सुवाल जिस दिन सफ़र पर रवाना होना है क्या उस दिन रोज़ा न रखने की इजाज़त है ?

जवाब अगर सफ़र का आग़ाज़ दिन में करना है तो उस दिन का रोज़ा छोड़ना जाइज़ नहीं अलबत्ता अगर दौराने सफ़र रोज़ा तोड़ दिया तो कफ़्फ़ारा लाज़िम नहीं आएगा मगर गुनाह ज़रूर होगा और रोज़ा क़ज़ा करना फ़र्ज़ रहेगा।(3)

सुवाल किसी ने ग़ुरूबे आफ़्ताब से पहले कल के रोज़े की निय्यत की फिर बेहोश हो गया और ज़ह़वए कुब्रा के बा'द होश आया तो क्या उस का रोज़ा हो जाएगा ?

जवाब नहीं होगा क्यूंकि अदाए रोज़ए रमज़ान, नज़्रे मुअ़य्यन और नफ़्ली रोज़ों के लिये निय्यत का वक़्त ग़ुरूबे आफ़्ताब से ज़ह़वए कुब्रा तक है इस वक़्त के अन्दर जब भी निय्यत कर ले रोज़ा हो जाएगा

---

1 . . . درمختار، کتاب الصوم، باب مایفسد الصوم وما لا یفسدہ، فصل فی العوارض، ۳/ ۴۷۱۔

2 .....फ़तावा रज़विय्या, 10 / 351 माख़ूज़न।

3 . . . فتاوی ھندیۃ، کتاب الصوم، الباب الخامس فی الاعذار التی تبیح الافطار، ۱/ ۲۰۶، फ़ैज़ाने रमज़ान, स. 144

जब कि उस शख़्स ने आफ़्ताब डूबने से पहले निय्यत की थी लिहाज़ा येह रोज़ा न हुवा अगर आफ़्ताब डूबने के बा'द निय्यत करता तो हो जाता।(1)

सुवाल अगर किसी शख़्स ने एक मुल्क में रोज़ा शुरूअ़ किया और इफ़्तार से पहले किसी दूसरे मुल्क पहुंच गया तो वोह इफ़्तार कब करेगा ?

जवाब इस सूरत में वोह शख़्स जिस मुल्क में मौजूद है उसी के वक़्त के हिसाब से इफ़्तार करेगा।(2)

सुवाल अगर आंसू मुंह में चले गए और उन्हें निगल लिया तो रोज़ा टूटेगा या नहीं ?

जवाब अगर क़त्रा दो क़त्रा है तो रोज़ा न टूटा और ज़ियादा था कि उस की नमकीनी पूरे मुंह में महसूस हुई तो रोज़ा टूट गया। पसीने का भी येही हुक्म है।(3)

सुवाल क्या शूगर का मरीज़ रोज़े की हालत में इन्सूलीन का इन्जिक्शन लगवा सकता है ?

जवाब हालते रोज़ा में इन्सूलीन का इन्जिक्शन लगाना जाइज़ है इस से रोज़ा नहीं टूटता। (यूंही आ़म इन्जिक्शन चाहे रग में लगाया जाए या गोश्त में उस से रोज़ा नहीं टूटेगा) क्यूंकि उ़मूमी तौ़र पर इन्जिक्शन की सूई जौफ़ (मे'दे या मे'दे तक जाने वाले रास्तों के अन्दरूनी हिस्से) या दिमाग़ तक नहीं पहुंचाई जाती लिहाज़ा येह इन्जिक्शन रोज़ा टूटने का सबब नहीं।(4)

---

1 ...فتاوی خانیه، کتاب الصوم، الفصل الثانی فی النیة، ۱/ ۹۷، बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 5, 1 / 967

2 .....फ़तावा अहले सुन्नत, क़िस्त़ 9, स. 21 माख़ूज़न।

3 ...خلاصة الفتاوی، کتاب الصوم، الفصل الثالث فیما یفسد الصوم وفیما لا یفسد، ۱/ ۲۵۳-

4 .....फ़तावा अहले सुन्नत, क़िस्त़ 9, स. 10

ह़ज व उ़म्रह

सुवाल सफ़रे ह़ज के दौरान मौत आने की क्या फ़ज़ीलत है ?

जवाब हु़ज़ूरे अकरम, शफ़ीए़ मुअ़ज़्ज़म صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जो ह़ज के लिये निकला और मर गया क़ियामत तक उस के लिये ह़ज का सवाब लिखा जाएगा ।(1)

सुवाल ह़ज्जे मबरूर किसे कहते हैं और इस का सवाब क्या है ?

जवाब वोह ह़ज जिस में रियाकारी और नामवरी का कोई शाइबा भी न हो और न ही कोई फ़ोह़्श कलामी हो और न कोई गुनाह और वोह ह़ज माले ह़लाल से हो ।(2) ह़दीसे पाक में है : ह़ज्जे मबरूर का सवाब जन्नत ही है ।(3)

सुवाल मीक़ात कितने और कौन कौन से हैं ?

जवाब मीक़ात पांच हैं : (1) ज़ुल हुलैफ़ा : येह मदीनए त़य्यिबा से मक्कए मुकर्रमा आने वालों के लिये मीक़ात है (2) ज़ाते इ़र्क़ : येह इ़राक़ वालों के लिये मीक़ात है (3) जुह़फ़ा : येह अह्ले शाम के लिये मीक़ात है (4) क़र्नुल मनाज़िल : येह नज्द (रियाज़) से आने वालों के लिये मीक़ात है (5) यलम्लम : येह अह्ले यमन के लिये मीक़ात है ।(4)

सुवाल ह़ज के अरकान कितने और कौन कौन से हैं नीज़ इस का रुक्ने आ'ज़म कौन सा है ?

जवाब ह़ज के दो रुक्न हैं : (1) त़वाफ़ुज़्ज़ियारह । (2) वुक़ूफ़े अ़रफ़ा ।(5)

---

1 ...مسندابی یعلی، مسندابی ھریرۃ، ۵/۲۲۱، حدیث: ۶۳۲۷۔

2 ...شرح المؤطاللزرقانی، کتاب الحج، باب جامع ماجاءفی العمرۃ، ۲/۴۷۶، تحت الحدیث: ۷۸۳۔

3 ...بخاری، کتاب العمرۃ، باب العمرۃ۔۔۔الخ، ۱/۵۸۶، حدیث: ۱۷۷۳۔

4 ...مسلم، کتاب الحج، باب مواقیت الحج والعمرۃ، ص۶۲۶، حدیث: ۲۸۰۹، ۲۸۱۰، रफ़ीक़ुल ह़रमैन, 63-64

5 ...درمختار، کتاب الحج، ۳/۵۳۷۔

9 ज़ुल हिज्जा को वुक़ूफ़े अ़रफ़ा ह़ज का रुक्ने आ'ज़म है।[1]

सुवाल का'बए मुशर्रफ़ा पर जब पहली नज़र पड़े तो क्या करना चाहिये ?

जवाब जूं ही पहली नज़र पड़े तीन बार لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ وَاللّٰہُ اَکْبَر कहिये और दुरूद शरीफ़ पढ़ कर दुआ़ मांगिये कि का'बतुल्लाह शरीफ़ पर पहली नज़र जब पड़ती है उस वक़्त मांगी हुई दुआ़ ज़रूर क़बूल होती है।[2]

सुवाल दौराने त़वाफ़ सीना या पीठ का'बे की त़रफ़ हो जाए तो क्या हुक्म है ?

जवाब भीड़ के सबब या बे ख़याली में किसी त़वाफ़ के दौरान थोड़ी देर के लिये अगर सीना या पीठ का'बे की त़रफ़ हो जाए तो त़वाफ़ में सीना या पीठ किये जितना फ़ासिला तै किया हो उतने फ़ासिले का इआ़दा (या'नी दोबारा करना) वाजिब है और अफ़्ज़ल येह है कि वोह फेरा ही नए सिरे से कर लिया जाए।[3]

सुवाल त़वाफ़ व सअ़्य में कौन से सात काम जाइज़ हैं ?

जवाब (1) सलाम करना (2) जवाब देना (3) ज़रूरत के वक़्त बात करना (4) पानी पीना (सअ़्य में खा भी सकते हैं) (5) ह़म्दो ना'त या मन्क़बत के अश्आ़र आहिस्ता आहिस्ता पढ़ना (6) दौराने त़वाफ़ नमाज़ी के आगे से गुज़रना कि त़वाफ़ भी नमाज़ ही की त़रह़ है मगर सअ़्य के दौरान गुज़रना जाइज़ नहीं (7) फ़तवा पूछना या फ़तवा देना।[4]

1.....रफ़ीक़ुल ह़रमैन, स. 159-160
2.....रफ़ीक़ुल मो'तमिरीन, स. 40
3.....रफ़ीक़ुल मो'तमिरीन, स. 139
4...المسلک المتقسط، باب دخول مکۃ، فصل فی مباحاتہ، ص ۱۶۲-۱۶۴، फ़तावा रज़विय्या, 10 / 745

सुवाल बहालते एह़राम अगर वुज़ू करने में बाल झड़ें तो क्या इस पर भी कफ़्फ़ारा है ?

जवाब वुज़ू करने में, खुजाने में या कंघा करने में अगर दो या तीन बाल गिरे तो हर बाल के बदले में एक एक मुठ्ठी अनाज या एक एक टुकड़ा रोटी या एक छुवारा ख़ैरात करें और तीन से ज़ियादा गिरे तो सदक़ा देना होगा।(1)

सुवाल एह़राम में ख़ुश्बू लगा ली और कफ़्फ़ारा भी दे दिया तो अब लगी रहने दें या क्या करें ?

जवाब ख़ुश्बू लगाना जब जुर्म क़रार पाया तो बदन या कपड़े से दूर करना वाजिब है और कफ़्फ़ारा देने के बा'द अगर ज़ाइल (या'नी दूर) न किया तो फिर दम वग़ैरा वाजिब होगा।(2)

सुवाल मोह़रिम ने अगर भूल कर सिला हुवा लिबास पहन लिया और याद आते ही उतार दिया तो कोई कफ़्फ़ारा वग़ैरा है या नहीं ?

जवाब कफ़्फ़ारा है ! अगर्चे एक लम्ह़े के लिये पहना हो। जान बूझ कर पहना हो या भूले से "सदक़ा" वाजिब हो गया और अगर चार पहर या इस से ज़ियादा चाहे लगातार कई दिन तक पहने रहा "दम" वाजिब होगा।(3)

सुवाल रह़मते आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने कितने उ़मरे और फ़रज़िय्यते ह़ज के बा'द कितने ह़ज किये ?

जवाब मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْمَنَّان फ़रमाते हैं : हुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने बा'दे फ़रज़िय्यते ह़ज सिर्फ़ एक ह़ज किया, उ़मरे कुल चार किये।(4)

1 ...المسلک المتقسط، باب الجنایات، فصل فی سقوط الشعر، ص ۳۲۷۔

2 ...فتاوی ھندیة، کتاب المناسک، الباب الثامن فی الجنایات، ۱/ ۲۴۱۔

3 ...فتاوی ھندیة، کتاب المناسک، الباب الثامن فی الجنایات، ۱/ ۲۴۲۔

4 .....मिरआतुल मनाजीह़, 4 / 108

सुवाल उ़मरे के त़वाफ़ का एक फेरा छूट गया तो क्या कफ़्फ़ारा है ?

जवाब उ़मरे का त़वाफ़ फ़र्ज़ है, इस का अगर एक फेरा भी छूट गया तो दम वाजिब है, अगर बिल्कुल त़वाफ़ न किया या अक्सर (या'नी चार फेरे) तर्क किये तो कफ़्फ़ारा नहीं बल्कि उन का अदा करना लाज़िम है।(1)

क़सम

सुवाल क़सम खा कर तोड़ दी तो इस का कफ़्फ़ारा क्या है ?

जवाब क़सम का कफ़्फ़ारा **ग़ुलाम आज़ाद करना** या **दस मिस्कीनों को दोनों वक़्त पेट भर कर खाना खिलाना** या **उन को मुतवस्सित़ दरजे के कपड़े पहनाना** है या'नी येह इख़्तियार है कि इन तीन बातों में से जो चाहे करे। और जिन मसाकीन को सुब्ह़ के वक़्त खिलाया उन्हीं को शाम के वक़्त भी खिलाए। अगर ग़ुलाम आज़ाद करने या दस मिस्कीन को खाना या कपड़े देने पर क़ादिर न हो तो पै दर पै (या'नी लगातार) तीन रोज़े रखे(2)।(3)

सुवाल क़सम का कफ़्फ़ारा लाज़िम होने की शराइत़ बयान कीजिये ?

जवाब क़सम के लिये चन्द शर्तें हैं कि अगर वोह न हों तो कफ़्फ़ारा नहीं। क़सम खाने वाला (1) मुसलमान (2) आ़क़िल (3) बालिग़ हो (4) जिस की क़सम खाई वोह चीज़ अ़क़्लन मुमकिन हो या'नी हो सकती हो अगर्चे मुह़ाले आ़दी हो और (5) क़सम और जिस चीज़ की क़सम खाई दोनों को एक साथ कहा हो, दरमियान

1 . . . المسلک المتقسط، باب الجنایات، فصل فی الجنایۃ فی طواف العمرۃ، ص ۳۵۳۔

2 .....क़सम के कफ़्फ़ारे के मसाइल की मा'लूमात के लिये बहारे शरीअ़त, जिल्द 2, हिस्सा, 9 का मुत़ालआ़ कीजिये।

3 .....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 9, 2 / 305, 309 मुल्तक़त़न।

में फ़ासिला होगा तो क़सम न होगी मसलन किसी ने उस से कहलाया कि कहो : खुदा की क़सम । उस ने कहा : खुदा की क़सम । उस ने कहा कहो : फ़ुलां काम करूंगा । उस ने कहा तो येह क़सम न हुई ।(1)

सुवाल किस तरह़ की क़सम को पूरा करना ज़रूरी है ?

जवाब बा'ज़ क़समें ऐसी हैं कि उन का पूरा करना ज़रूरी है मसलन किसी ऐसे काम के करने की क़सम खाई जिस का बिग़ैर क़सम करना ज़रूरी था या गुनाह से बचने की क़सम खाई तो इस सूरत में क़सम सच्ची करना ज़रूरी है । मसलन खुदा की क़सम ! ज़ोहर पढूंगा या चोरी या बदकारी न करूंगा ।(2)

सुवाल वोह कौन सी क़सम है जिस का तोड़ना ज़रूरी है ?

जवाब गुनाह करने या फ़राइज़ो वाजिबात न अदा करने की क़सम खाई मसलन क़सम खाई कि नमाज़ न पढूंगा । या चोरी करूंगा या मां बाप से कलाम न करूंगा तो इस तरह़ की क़सम तोड़ना शरअ़न ज़रूरी है मगर इस सूरत में भी कफ़्फ़ारा लाज़िम होगा ।(3)

सुवाल "यमीने फ़ौर" की ता'रीफ़ और इस का हुक्म बयान कीजिये ?

जवाब अगर किसी ख़ास वज्ह से या किसी बात के जवाब में क़सम खाई जिस से उस काम का फ़ौरन करना या न करना समझा जाता है उस को यमीने फ़ौर कहते हैं । ऐसी क़सम में अगर फ़ौरन वोह बात हो गई तो क़सम टूट गई और अगर कुछ देर के बा'द हो तो उस का कुछ असर नहीं मसलन किसी ने उस को नाश्ते के लिये कहा कि मेरे साथ नाश्ता कर लो । उस ने कहा : खुदा की क़सम !

---

1 ...فتاوی ہندیة، کتاب الایمان، الباب الاول ـــ الخ، ۲/ ۵۱، ملتقطا، बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 9, 2 / 300-301 माख़ूज़न

2 ...المبسوط، کتاب الایمان، الجزء:۸، ۴/ ۱۳۲، बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 9, 2 / 299 मुल्तक़तन

3 ...المبسوط، کتاب الایمان، الجزء:۸، ۴/ ۱۳۲، बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 9, 2 / 299 मुल्तक़तन

नाश्ता नहीं करूंगा। और उस के साथ नाश्ता न किया तो क़सम नहीं टूटी अगर्चे घर जा कर उसी रोज़ नाश्ता किया हो।(1)

सुवाल "यमीने मुवक़्क़त" कौन सी क़सम को कहते हैं और इस का हुक्म क्या है ?

जवाब जिस के लिये कोई वक़्त, एक दिन दो दिन या कमो बेश मुक़र्रर कर दिया उस में अगर वक़्ते मुअ़य्यन के अन्दर क़सम के ख़िलाफ़ किया तो (क़सम) टूट गई वरना नहीं मसलन क़सम खाई कि इस घड़े में जो पानी है उसे आज पियूंगा और आज न पिया तो क़सम टूट गई और कफ़्फ़ारा देना होगा और पी लिया तो क़सम पूरी हो गई।(2)

सुवाल ऐसा कहना कैसा कि "अगर मैं ऐसा करूं तो मुझ पर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ला'नत हो ?"

जवाब येह (या'नी दर्जे ज़ैल) अल्फ़ाज़ क़सम नहीं अगर्चे इन के बोलने से गुनहगार होगा जब कि अपनी बात में झूटा है : अगर ऐसा करूं तो मुझ पर अल्लाह (عَزَّوَجَلَّ) का ग़ज़ब हो, उस की ला'नत हो, उस का अ़ज़ाब हो। ख़ुदा का क़हर टूटे, मुझ पर आस्मान फट पड़े, मुझे ज़मीन निगल जाए। मुझ पर ख़ुदा की मार हो, ख़ुदा की फिटकार हो, रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की शफ़ाअ़त न मिले, मुझे ख़ुदा का दीदार न नसीब हो, मरते वक़्त कलिमा न नसीब हो।(3)

सुवाल अगर येह कहा कि "ख़ुदा की क़सम कि इस से बढ़ कर कोई क़सम नहीं ! मैं येह काम नहीं करूंगा।" क्या इस सूरत में क़सम हो जाएगी ?

1.....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 9, 2 / 299-300 मुल्तक़तन।
2.....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 9, 2 / 300
3.....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 9, 2 / 301-302

जवाब अगर कहा : ख़ुदा की क़सम कि इस से बढ़ कर कोई क़सम नहीं या उस के नाम से बुज़ुर्ग कोई नाम नहीं या उस से बढ़ कर कोई नहीं ! मैं इस काम को न करूंगा तो येह क़सम हो गई।(1)

सुवाल अगर कोई शख़्स किसी ह़लाल चीज़ या काम को अपने ऊपर ह़राम कर ले तो क्या हुक्म है ?

जवाब जो शख़्स किसी चीज़ को अपने ऊपर ह़राम करे मसलन कहे कि फ़ुलां चीज़ मुझ पर ह़राम है तो इस कह देने से वोह शै ह़राम नहीं होगी कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने जिस चीज़ को ह़लाल किया उसे कौन ह़राम कर सके मगर इस के बरतने से कफ़्फ़ारा लाज़िम आएगा या'नी येह भी क़सम है।(2) (इसी त़रह़ अगर किसी ने येह कहा कि) तुझ से बात करना ह़राम है येह यमीन (या'नी क़सम) है बात करेगा तो कफ़्फ़ारा लाज़िम होगा।(3)

सुवाल अगर किसी काम के लिये चन्द क़समें खाईं तो तोड़ने की सूरत में क्या हुक्म है ?

जवाब अगर किसी काम की चन्द क़समें खाईं और उस के ख़िलाफ़ किया तो जितनी क़समें हैं उतने ही कफ़्फ़ारे लाज़िम होंगे मसलन कहा : मैं येह नहीं करूंगा ख़ुदा की क़सम, परवर दगार की क़सम तो येह दो क़समें हैं। किसी काम के बारे में क़सम खाई कि "मैं इसे कभी न करूंगा।" फिर दोबारा उसी मजलिस में क़सम खा कर कहा कि "मैं इस काम को कभी न करूंगा।" फिर उस काम को किया तो दो कफ़्फ़ारे लाज़िम होंगे।(4)

---

1 ...فتاوی ھندیۃ، کتاب الایمان، الباب الثانی فیمایکون یمینا۔۔۔ الخ، ۲/ ۵۷، बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 9, 2 / 302

2 ...تبیین الحقائق، کتاب الایمان، ۳/ ۴۳۲ ملتقطاً، बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 9, 2 / 302

3 ...فتاوی ھندیۃ، کتاب الایمان، الباب الثانی فیمایکون یمینا۔۔۔ الخ، ۲/ ۵۸، बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 9, 2 / 302 मुल्तक़त़न

4 ...فتاوی ھندیۃ، کتاب الایمان، الباب الثانی فیمایکون یمینا۔۔۔ الخ، ۲/ ۵۸، ملتقطاً، बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 9, 2 / 302 माख़ूज़न

सुवाल अगर कहा कि "मैं ने क़सम खाई है कि येह काम नहीं करूंगा।" तो क्या हुक्म है ?

जवाब अगर कहा : "मैं ने क़सम खाई है कि येह काम न करूंगा।" और वाक़ेई क़सम खाई है तो क़सम है और झूट कहा तो क़सम नहीं, झूट बोलने का गुनाह हुवा।(1)

सुवाल किसी ने दूसरे से दो मरतबा कहा : ख़ुदा की क़सम ! तुम्हें येह काम करना होगा। और दूसरे ने "हां" कहा तो येह क़सम किस की त़रफ़ से होगी ?

जवाब अगर पहले का मक़्सूद क़सम खाना है और दूसरे का भी "हां" कहने से क़सम खाना मक़्सूद है तो दोनों की क़सम हो गई और अगर पहले का मक़्सूद क़सम खिलाना है और दूसरे का क़सम खाना तो दूसरे की क़सम हो गई और अगर पहले का मक़्सूद क़सम खिलाना है और दूसरे का मक़्सूद "हां" कहने से क़सम खाना नहीं बल्कि वा'दा करना है तो किसी की क़सम न हुई।(2)

लुक़्ता

सुवाल मुसलमान भाई की गिरी हुई चीज़ बद निय्यती से उठाने पर क्या वईद है ?

जवाब हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने तीन मरतबा इरशाद फ़रमाया : मुसलमान की गुमशुदा चीज़ आग की चिंगारी है।(3) हकीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان इस की शर्ह़ में फ़रमाते हैं : जो मुसलमान की गुमी चीज़ बद

---

1 ...فتاوی هندية، کتاب الایمان، الباب الثانی فیمایکون یمینا... الخ، ۱/۵۷، बहारे शरीअ़त, हिस़्सा, 9, 2 / 302 माख़ूज़न

2 ...فتاوی هندية، کتاب الایمان، الباب الثانی فیمایکون یمینا... الخ، ۱/۶۰، बहारे शरीअ़त, हिस़्सा, 9, 2 / 304 मुल्तक़तन

3 ...دارمي، کتاب البیوع، باب فی الضالة، ۲/۳۴۴، حدیث: ۲۶۰۲۔

निय्यती से उठाए कि मालिक को पहुंचाने का इरादा न हो ख़ियानत की निय्यत हो वोह दोज़ख़ी है अगर्चे ज़िम्मी काफ़िर का लुक़्ता भी खाना जाइज़ नहीं मगर मुसलमान के लुक़्ते में डबल अ़ज़ाब है इस लिये ख़ुसूसिय्यत से इस का ज़िक्र हुवा।(1)

सुवाल जिस की कोई चीज़ गुम हुई उस ने तलाश करने वाले के लिये रक़म का ए'लान किया तो उस का क्या हुक्म है ?

जवाब जिस की कोई चीज़ गुम हो गई है उस ने ए'लान किया कि जो उस का पता बताएगा उस को इतना माल दूंगा तो तलाश करने वाले को बत़ौरे उजरत नहीं दे सकता अलबत्ता अगर बत़ौरे इन्आ़म देना चाहे तो दे सकता है।(2)

सुवाल अगर लुक़्ता (गिरी पड़ी शै) की तश्हीर के बा वुजूद मालिक न मिले तो क्या किया जाए ?

जवाब अगर बाज़ारों, आ़म शाहराहों और मसाजिद में ए'लान करता रहा और येह गुमान ग़ालिब हो गया कि अब मालिक उसे तलाश नहीं करता होगा तो अब उसे इख़्तियार है कि चाहे तो लुक़्ते की हिफ़ाज़त करे या किसी मिस्कीन पर सदक़ा कर दे।(3) नीज़ मसारिफ़े ख़ैर मसलन मसाजिद, मदारिस व अहले सुन्नत के तबाअ़ती इदारों वग़ैरा में भी सर्फ़ कर सकता है।(4) और अगर उठाने वाला ख़ुद फ़क़ीर है तो मज़्कूरा मुद्दत तक ए'लान के बा'द अपने इस्ति'माल में भी ला सकता है।(5)

सुवाल अगर मिस्कीन को देने के बा'द लुक़्ते का मालिक आ जाए तो क्या हुक्म है ?

---

(1).....मिरआतुल मनाजीह़, 4 / 365

(2)...البحر الرائق مع منحة الخالق، كتاب اللقطة، ۵/۲۵۹، बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 10, 2 / 483 मुलख़्ख़सन

(3)...مجمع البحرين، كتاب اللقطة، ص ۴۹۱ ماخوذاً، बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 10, 2 / 475 मुलख़्ख़सन

(4).....फ़तावा रज़विय्या, 23 / 563 माख़ूज़न।

(5)...فتاوى تاتارخانيه، كتاب اللقطة، الفصل الثاني في تعريف اللقطة ـــ الخ، ۵/۵۹۲۔

www.dawateislami.net

जवाब अब मालिक को इख़्तियार है चाहे तो इस सदके़ को जाइज़ कर दे या'नी मिस्कीन से वापस न ले इस सूरत में वोह सवाब पाएगा और अगर वोह इस सदके़ को जाइज़ नहीं करना चाहता तो अपनी चीज़ वापस ले ले। फिर अगर वोह चीज़ ख़र्च हो चुकी या हलाक हो गई तो अब मिस्कीन या लुक़्ता उठाने वाले में से जिस से चाहे तावान ले और जिस से भी तावान का मुतालबा किया जाए वोह दूसरे से रुजूअ़ नहीं कर सकता।(1)

सुवाल अगर बच्चा बाहर से कोई चीज़ उठा कर ले आए तो क्या हुक्म है?

जवाब बच्चे को कोई चीज़ पड़ी हुई मिली और वोह उठा लाया तो उस का सरपरस्त तश्हीर करे, अगर मालिक का पता न चले और वोह बच्चा खुद फ़क़ीर है तो सरपरस्त उस बच्चे पर सदक़ा कर सकता है और बा'द में मालिक आया और सदक़ा जाइज़ न किया तो सरपरस्त को तावान देना होगा।(2)

सुवाल अगर लुक़्ता उठाने वाला तश्हीर नहीं कर सकता मसलन वोह बूढ़ा या मरीज़ है तो क्या करे?

जवाब अगर ऐसा है तो वोह किसी को अपना नाइब बना दे जो ए'लान व तश्हीर करे लेकिन नाइब को देने के बा'द उस से वापस नहीं ले सकता और नाइब के पास से वोह चीज़ ज़ाएअ़ हो गई तो उस से तावान भी नहीं ले सकता।(3)

सुवाल फल और खाने की अश्या की कब तक तश्हीर की जाए?

जवाब जो चीजें ख़राब हो जाने वाली हैं जैसे फल और खाना उन का ए'लान सिर्फ़ इतने वक़्त तक करना लाज़िम है कि ख़राब न हों

(1) ...فتاوی قاضی خان، کتاب اللقطة، ۲/۳۵۲ ملتقطاً

(2) ...البحر الرائق، کتاب اللقطة، ۵/۲۵۵-۲۵۶ ملخصاً

(3) ...البحر الرائق ومنحة الخالق، کتاب اللقطة، ۵/۲۵۲ ملتقطاً

और ख़राब होने का अन्देशा हो तो मिस्कीन को दे दे।[1]

सुवाल कोई मकान ख़रीदा उस के बा'द उस की दीवार में से कुछ रक़म मिली तो इस का क्या हुक्म है ?

जवाब मकान ख़रीदा और उस की दीवार वग़ैरा में रुपै मिले अगर बाएअ़ (या'नी मकान फ़रोख़्त करने वाला) कहता है येह मेरे हैं तो उसे दे दे वरना लुक़्ता है।[2]

सुवाल इजतिमाअ़ या मस्जिद में जूते तब्दील हो गए तो उन्हें इस्ति'माल करना कैसा ?

जवाब मजमओं या मसाजिद में अक्सर जूते बदल जाते हैं इन को काम में लाना जाइज़ नहीं हां अगर येह किसी फ़क़ीर को अगर्चे अपनी औलाद को तसद्दुक़ कर दे फिर वोह इसे हिबा कर दे तो तसर्रुफ़ में ला सकता है या इस का अच्छा जूता कोई उठा ले गया और अपना ख़राब छोड़ गया कि देखने से मा'लूम होता है उस ने क़स्दन ऐसा किया है धोके से नहीं हुवा है तो जब येह शख़्स ख़राब जोड़ा उठा लाया इस को पहन सकता है कि येह उस का इवज़ है।[3]

सुवाल रास्ते में कोई चीज़ देखी और दूसरे से उसे उठा कर लाने का कहा वोह अपने लिये ले आया तो इस सूरत में लुक़्ते के अह़काम किस पर लागू होंगे ?

जवाब दोनों जा रहे थे एक ने कोई चीज़ देखी उस ने दूसरे से कहा : उठा लाओ। उस ने अपने लिये उठाई तो येह ज़िम्मेदार है और लुक़्ते के अह़काम इस पर हैं हुक्म देने वाले पर नहीं।[4]

---

1 ...درمختار، کتاب اللقطۃ، ۲/۴۲۵، बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 10, 2 / 476

2 .....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 10, 2 / 483

3 ...البحر الرائق، کتاب اللقطۃ، ۵/۲۶۵، बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 10, 2 / 482

4 .....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 10 , 2 / 475

सुवाल सोते हुए शख़्स के हाथ में कोई पैसे रख कर चला जाए तो क्या हुक्म है ?

जवाब येह पैसे उस के हैं अपने ख़र्च में ला सकता है ।(1)

सुवाल मछली के पेट से मोती निकला तो वोह किस का है ?

जवाब अगर येह मोती सीप के अन्दर है तो मछली वाला इस का मालिक है । अगर शिकारी ने मछली बेच डाली तो वोह मोती ख़रीदने वाले का है और अगर मोती सीप में नहीं है तो ख़रीदार को चाहिये कि शिकारी को दे दे क्यूंकि येह लुक़्ता है और इस पर लुक़्ता के तमाम अह़काम जारी होंगे ।(2)

मसाजिद

सुवाल ह़दीसे पाक में जन्नत की क्यारियां किसे फ़रमाया गया है ?

जवाब हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मस्जिदों को जन्नत की क्यारियां फ़रमाया है ।(3)

सुवाल ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा रूहुल्लाह عَلَيْهِ السَّلَام ने अपना घर कौन सी जगह को क़रार दिया ?

जवाब आप عَلَيْهِ السَّلَام ने इरशाद फ़रमाया : ऐ लोगो ! क्या तुम जानते हो कि मेरा घर कहां है ? लोगों ने अ़र्ज़ की : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नबी ! आप का घर कहां है ? आप عَلَيْهِ السَّلَام ने फ़रमाया : मस्जिदें मेरी क़ियाम गाह हैं ।(4)

---

1 ...فتاوی تاتارخانیہ، کتاب اللقطۃ، الفصل الثانی فی تعریف اللقطۃ ـــ الخ، ۵/۵۹۴، बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा, 10, 2 / 483

2 ...فتاوی قاضی خان، کتاب البیع، فصل فیما یدخل فی بیع المنقول من غیر ذکر، ۱/۳۹۰ ماخوذاً۔

3 ...ترمذی، کتاب الدعوات، باب ۸۲، ۵/۳۰۲، حدیث: ۳۵۲۰۔

4 ...عیون الحکایات، الحکایۃ الثامنۃ والتسعون من نصائح عیسی علیہ السلام، ص ۱۱۹۔

सुवाल आख़िरत का बाज़ार किसे कहते हैं ?

जवाब हज़रते सय्यिदुना अ़ता बिन यसार عَلَیْہِ رَحْمَةُ اللّٰہِ الْغَفَّار ने एक शख़्स को मस्जिद में कुछ बेचते देखा तो उसे बुला कर फ़रमाया : येह आख़िरत का बाज़ार है, तू अगर कुछ बेचना चाहता है तो दुन्या के बाज़ार में चला जा ।(1)

सुवाल ज़मीन पर सब से पहले बनाई जाने वाली मसाजिद के नाम बताइये ?

जवाब हुज़ूर नबिय्ये ग़ैबदान, सरवरे ज़ीशान صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ज़मीन पर सब से पहले मस्जिदे ह़राम बनाई गई, फिर मस्जिदे अक़्सा और इन दोनों के दरमियान 40 साल का अ़र्सा था(2) ।(3)

सुवाल क़ियामत के दिन कामिल नूर की ख़ुश ख़बरी का मुज़्दा किन अफ़राद को सुनाया गया है ?

जवाब हज़रते सय्यिदुना बुरैदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि हुज़ूर ताजदारे ख़त्मे नुबुव्वत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : अंधेरियों में मस्जिदों की त़रफ़ जाने वालों को क़ियामत के दिन कामिल नूर की बिशारत है ।(4)

---

1 ...الزھدلامام احمد، زھدمحمدبن سیرین، ص٣٢٠، رقم:١٨٤٢۔

2 .....ख़याल रहे कि इब्राहीम عَلَیْہِ السَّلَام ने ख़ानए का'बा की और ह़ज़रते सुलैमान عَلَیْہِ السَّلَام ने बैतुल मुक़द्दस की बुन्याद न रखी बल्कि पहली बुन्यादों पर इमारतें बनाईं । इन दो पैग़म्बरों के दरमियान एक हज़ार साल से ज़ियादा फ़ासिला है । इस ह़दीस में या तो इन दोनों मस्जिदों की बुन्यादों का ज़िक्र है कि आदम عَلَیْہِ السَّلَام ने तौबा क़बूल होते ही का'बतुल्लाह की बुन्याद डाली, फिर चालीस साल के बा'द जब आप की औलाद बहुत हो गई और फैल गई तो इन में से किसी ने बैतुल मुक़द्दस की बुन्याद रखी । बा'ज़ रिवायात में है कि ख़ुद आदम عَلَیْہِ السَّلَام ने ही का'बा के चालीस साल बा'द बैतुल मुक़द्दस की बुन्याद रखी या कोई ख़ास ता'मीर मुराद है, जैसा कि बा'ज़ रिवायात में है कि इब्राहीम عَلَیْہِ السَّلَام के ता'मीरे का'बा के चालीस साल बा'द या'क़ूब عَلَیْہِ السَّلَام ने बैतुल मुक़द्दस की ता'मीर की । (मिरआतुल मनाजीह़, 1 / 464)

3 ...بخاری، کتاب احادیث الانبیاء، باب ١١، ٢/٤٢٧، حدیث:٣٣٦٦۔

4 ...ابوداود، کتاب الصلاة، باب ماجاء فی المشی الی الصلاة فی الظلام، ١/٢٣٢، حدیث:٥٦١۔

सुवाल हदीस में मस्जिद में बैठने वाले की कितनी और कौन कौन सी ख़स्लतें बयान हुई हैं ?

जवाब हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : मस्जिद में बैठने वाले में तीन ख़स्लतें होती हैं : (1) इस से फ़ाएदा हासिल किया जाता है या (2) वोह हिक्मत भरा कलाम करता है या (3) रहमत का मुन्तज़िर होता है।[(1)]

सुवाल मस्जिद में दुन्यावी बातें करने पर क्या वईद आई है ?

जवाब हुज़ूर नबिय्ये रहमत, शफ़ीए उम्मत صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : एक ऐसा ज़माना आएगा कि मसाजिद में दुन्या की बातें होंगी, तुम उन के साथ न बैठो कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ को उन से कुछ काम नहीं।[(2)]

सुवाल हदीसे मुबारका में बद तरीन मजलिस और बेहतरीन मजलिस किसे क़रार दिया गया है ?

जवाब हदीस शरीफ़ में फ़रमाया गया : बद तरीन मजलिस रास्ते के बाज़ार हैं और बेहतरीन मजलिस मसाजिद हैं पस अगर तू मस्जिद में न बैठे तो अपने घर को लाज़िम कर।[(3)]

सुवाल क्या मुख़्तलिफ़ मसाजिद में नमाज़ पढ़ने से सवाब में कमी ज़ियादती होती है ?

जवाब जी हां ! हुज़ूरे पुरनूर صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : किसी शख़्स का अपने घर में नमाज़ पढ़ना एक नमाज़ का सवाब है, महल्ले की मस्जिद में नमाज़ पढ़ना पच्चीस नमाज़ों का सवाब है, जामेअ़ मस्जिद में नमाज़ पढ़ना पांच सौ नमाज़ों का सवाब है,

---

1 ...مسند امام احمد، مسند ابی ہریرۃ، ۳/۳۹۹، حدیث:۹۴۲۵-

2 ...شعب الایمان، باب فی الصلوات، فصل المشی الی المساجد، ۳/۸۶، حدیث:۲۹۶۲-

3 ...معجم کبیر، ۲۲/۶۰، حدیث:۱۴۲-

मस्जिदे अक़्सा में नमाज़ पढ़ना पचास हज़ार नमाज़ों का सवाब है, मेरी मस्जिद में नमाज़ पढ़ना पचास हज़ार नमाज़ों का सवाब है और उस का मस्जिदे ह़राम में नमाज़ पढ़ना एक लाख नमाज़ों का सवाब है।(1)

सुवाल ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی ने मसाजिद आबाद करने की क्या क्या सूरतें बयान फ़रमाई हैं ?

जवाब (1) मस्जिद ता'मीर करना (2) इस में इज़ाफ़ा करना (3) इसे वसीअ़ करना (4) इस की मरम्मत करना (5) इस में चटाइयां, फ़र्श फ़ुरोश बिछाना (6) इस की क़लई चूना करना (7) इस में रौशनी व ज़ीनत करना (8) इस में नमाज़ व तिलावते क़ुरआन करना (9) इस में दीनी मदारिस क़ाइम करना (10) वहां दाख़िल होना, वहां अक्सर जाना आना, रहना (11) वहां अज़ान व तक्बीर कहना, इमामत करना।(2)

सुवाल मसाजिद आबाद करना किस की अ़लामत है और उसे इस की क्या बरकत ह़ासिल होगी ?

जवाब ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَلِی फ़रमाते हैं : मस्जिद बनाने या उसे आबाद करने या वहां बा जमाअ़त नमाज़ अदा करने का शौक़ सह़ीह़ मोमिन होने की अ़लामत है, اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ ऐसे लोगों का ख़ातिमा ईमान पर होगा।(3)

सुवाल मह़ल्ले की मस्जिद में नमाज़ अफ़्ज़ल है या जामेअ़ मस्जिद में ?

जवाब मस्जिदे मह़ल्ला में नमाज़ पढ़ना, अगर्चे जमाअ़त क़लील हो मस्जिदे जामेअ़ से अफ़्ज़ल है, अगर्चे वहां बड़ी जमाअ़त हो, बल्कि अगर मस्जिदे मह़ल्ला में जमाअ़त न हुई हो तो तन्हा जाए

---

1 . . . ابن ماجہ، کتاب اقامۃ الصلاۃ، باب ماجاء فی الصلاۃ فی المسجد الجامع، ۲/۱۷۶، حدیث: ۱۴۱۳۔

2 .....तफ़्सीरे नईमी, पारह 10, अत्तौबह, तह़्तुल आयत : 17, 10 / 201

3 .....तफ़्सीरे नईमी, पारह 10, अत्तौबह, तह़्तुल आयत : 18, 10 / 204

और अज़ान व इक़ामत कहे, नमाज़ पढ़े, वोह मस्जिदे जामेअ़ की जमाअ़त से अफ़्ज़ल है।[1]

कस्ब और तिजारत

सुवाल रिज़्के़ हलाल के लिये जाइज़ पेशा इख़्तियार करने की क्या फ़ज़ीलत है?

जवाब (1) हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رضی اللہ تعالٰی عنہ से मरवी है कि हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم ने इरशाद फ़रमाया : तुम में से कोई अपनी पीठ पर लकड़ियों का गठ्ठा लाद कर लाए तो येह इस से बेहतर है कि वोह किसी से सुवाल करे, फिर कोई उसे दे या कोई मन्अ़ कर दे।[2] (2) हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رضی اللہ تعالٰی عنہما से मरवी है कि हुज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم ने इरशाद फ़रमाया : अल्लाह عزوجل किसी पेशे के ज़रीए़ त़लबे मआ़श में मश्ग़ूल मोमिन को मह़बूब रखता है।[3]

सुवाल कौन सा अ़मल वोह गुनाह मिटाता है जिन्हें नमाज़, रोज़े और ह़ज नहीं मिटाते?

जवाब हुज़ूर ताजदारे ख़त्मे नुबुव्वत صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم ने इरशाद फ़रमाया : बहुत से गुनाह ऐसे हैं जिन्हें नमाज़ मिटाती है न रोज़ा और न ही ह़ज व उ़म्रह मिटाते हैं। सह़ाबए किराम رضی اللہ تعالٰی عنہم ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم ! फिर कौन सी चीज़ उन गुनाहों को मिटाती है? इरशाद फ़रमाया : तलाशे रिज़्क़ में ग़मज़दा होना।[4]

---

1 .....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 3, 1 / 650

2 ...بخاری، کتاب البیوع، باب کسب الرجل وعملہ بیدہ، ۲/ ۱۱، حدیث: ۲۰۷۴۔

3 ...معجم اوسط، ۶/ ۳۲۷، حدیث: ۸۹۳۴۔

4 ...معجم اوسط، ۱/ ۴۲، حدیث: ۱۰۲۔

सुवाल ऐब ज़ाहिर किये बिग़ैर शै को फ़रोख़्त कर देने पर क्या वईद आई है ?

जवाब (1) हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जिस ने ऐब बयान किये बिग़ैर ऐबदार चीज़ फ़रोख़्त की वोह **अल्लाह** तआला की नाराज़ी में रहेगा और फ़िरिश्ते उस पर ला'नत करते रहेंगे ।[1] (2) और एक ह़दीसे पाक में है कि हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ग़ल्ले के एक ढेर के पास से गुज़रे तो अपना हाथ मुबारक उस में डाल दिया, आप की उंगलियों ने उस में तरी पाई तो इरशाद फ़रमाया : ऐ ग़ल्ले वाले ! येह क्या है ? उस ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! इस पर बारिश पड़ गई थी । आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : तू ने गीला ग़ल्ला ऊपर क्यूं न कर दिया ताकि लोग उसे देख लेते । जिस ने धोका दिया वोह हम में से नहीं ।[2]

सुवाल बेचते वक़्त वज़्न पूरा करने का शरई हुक्म और सह़ीह़ नाप तोल के फ़वाइद बताइये ?

जवाब देते वक़्त नाप तोल पूरा करना फ़र्ज़ है बल्कि कुछ नीचा तोल देना या'नी बढ़ा कर देना मुस्तह़ब है । **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने ख़ुद इस की फ़ज़ीलत बयान फ़रमाई कि येह बेहतर है और इस का अन्जाम अच्छा है, आख़िरत में तो यक़ीनन अच्छा ही अन्जाम है, दुन्या में भी इस का अन्जाम अच्छा होता है कि लोगों में नेक नामी होती है जिस से तिजारत चमकती है । आज दुन्या भर में लोग उन ममालिक से ख़रीदने में दिलचस्पी लेते हैं जहां से सह़ीह़ माल सह़ीह़ वज़्न से मिलता है और जहां सेब की पेटियों के नीचे आलू पियाज़ निकलें या पहली तेह आ'ला दरजे की निकलने के बा'द

1 . . . ابن ماجه، کتاب التجارات، باب من باع عیبا فلیبینه، ۳/ ۵۹، حدیث: ۲۲۴۷۔

2 . . . مسلم، کتاب الایمان، باب قول النبی صلی اللّٰہ علیہ وسلم من غشنا فلیس منا، ص ۶۴، حدیث: ۲۸۴۔

नीचे सड़ा हुवा माल निकले वहां का जो अन्जाम होता है वोह सब समझ सकते हैं।(1)

सुवाल क़समें खा कर चीज़ फ़रोख़्त करने का क्या नुक़्सान है ?

जवाब मुअ़ल्लिमे काइनात, शाहे मौजूदात صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इब्रत निशान है : क़सम सामान बिकवा देती है और बरकत मिटा देती है।(2) ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى इस के तह़त फ़रमाते हैं : मुमकिन है कि यहां क़सम से मुराद झूटी क़सम हो (और) बरकत (मिटने) से मुराद आइन्दा कारोबार बन्द हो जाना हो या किये हुए व्यापार में घाटा पड़ जाना या'नी अगर तुम ने किसी को झूटी क़सम खा कर धोके से ख़राब माल दे दिया वोह एक बार तो धोका खा जाएगा मगर दोबारा न आएगा न किसी को आने देगा या जो रक़म तुम ने उस से ह़ासिल कर ली उस में बरकत न होगी कि ह़राम में बे बरकती है।(3)

सुवाल भीक मांगना और भिकारियों को देना कैसा है ?

जवाब आ'ला ह़ज़रत इमामे अह्ले सुन्नत मौलाना शाह अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن इरशाद फ़रमाते हैं : गदाई (भीक मांगना) तीन क़िस्म है : एक ग़नी मालदार जैसे अक्सर जोगी और साधू बच्चे, उन्हें सुवाल करना ह़राम और उन्हें देना ह़राम और उन को देने से ज़कात अदा नहीं हो सकती। दूसरे वोह कि वाक़ेअ़ में फ़क़ीर हैं, क़दरे निसाब के मालिक नहीं मगर क़वी व तनदुरुस्त, कमाने पर क़ादिर हैं और सुवाल किसी ऐसी ज़रूरत के लिये नहीं जो उन के

---

1 .....तफ़्सीर सिरातुल जिनान, पारह 15, बनी इसराईल, तह़्तुल आयत : 35, 5 / 460

2 ...بخاری، کتاب البیوع، باب یمحق اللہ الربا۔۔۔الخ، ۲/۱۵، حدیث:۲۰۸۷۔

3 .....मिरआतुल मनाजीह़, 4 / 244

कस्ब व कमाई से बाहर हो, कोई मज़दूरी नहीं की जाती, मुफ़्त का खाना खाने के आ़दी हैं और इस के लिये भीक मांगते फिरते हैं। उन्हें सुवाल करना ह़राम और जो कुछ उन्हें इस से मिले वोह उन के ह़क़ में ख़बीस, उन्हें भीक देना मन्अ़ है कि गुनाह पर मदद है, लोग अगर न दें तो मजबूर हों, कुछ मेह़नत मज़दूरी करें मगर उन को देने से ज़कात अदा हो जाएगी जब कि और कोई शरई रुकावट न हो। तीसरे वोह आ़जिज़ नातुवां (बेबस व कमज़ोर) कि न माल रखते हैं न कस्ब पर क़ुदरत या जितने की ह़ाजत है उतना कमाने पर क़ादिर नहीं, उन्हें ब क़दरे ह़ाजत सुवाल ह़लाल और इस से जो कुछ मिले उन के लिये त़य्यिब और येह उ़म्दा मसारिफ़े ज़कात से हैं और उन्हें देना बाइ़से अज्रे अ़ज़ीम, येही हैं वोह जिन्हें झिड़कना ह़राम है।[1]

सुवाल कारोबार में बड़ों से मश्वरा करने का क्या फ़ाएदा है?

जवाब दुन्यावी कारोबार में बुज़ुर्गों से मश्वरा करना सुन्नते सह़ाबा है, इस से तिजारत में बुज़ुर्गों का फ़ैज़ भी शामिल हो जाता है।[2]

सुवाल क्या ख़रीदो फ़रोख़्त हो जाने के बा'द और क़ीमत की अदाएगी से पहले करन्सी रेट ज़ियादा या कम हो जाए तो ख़रीदने या बेचने वाला इस मुआ़हदए तिजारत को ख़त्म कर सकता है?

जवाब नहीं कर सकता। अगर वोह करन्सी बन्द नहीं हुई सिर्फ़ उस की क़ीमत ही कम हुई है तो येह ख़रीदो फ़रोख़्त ब दस्तूर बर क़रार रहेगी और बेचने वाला इसे मन्सूख़ नहीं कर सकता। यूंही अगर करन्सी की क़ीमत ज़ियादा हो गई हो तो ख़रीदार को वोह तिजारती

1.....फ़तावा रज़विय्या, 10 / 253 माख़ूज़न।
2.....मिरआतुल मनाजीह़, 4 / 240

मुआ़हदा ख़त्म करने का इख़्तियार नहीं और जितनी क़ीमत पहले तै हुई थी दोनों सूरतों में वोही अदा की जाएगी।[1]

सुवाल तिजारत के वक़्त ताजिर को क्या क्या अच्छी निय्यतें करनी चाहियें ?

जवाब (1) बाज़ार इस लिये जाता हूं ताकि ह़लाल कमाई से अपने अह्लो अ़याल की शिकम परवरी करूं और वोह मख़्लूक़ से बे नियाज़ हो जाएं और (2) मुझे इतनी फ़राग़त मिल जाए कि मैं अल्लाह तआ़ला की बन्दगी करता रहूं और राहे आख़िरत पर गामज़न रहूं। (3) मैं मख़्लूक़ के साथ शफ़्क़त, ख़ुलूस और अमानत दारी करूंगा, (4) नेकी का हुक्म दूंगा, (5) बुराई से मन्अ़ करूंगा और (6) ख़ियानत करने वाले से बाज़ पुर्स करूंगा[2]।[3]

सुवाल तिजारत के कुछ आदाब बयान कीजिये ?

जवाब (1) तिजारत करने वाला जा'ली और अस्ली नोटों को पहचानने का त़रीक़ा सीखे और न ख़ुद जा'ली नोट ले न किसी और को दे। (2) अगर कोई जा'ली नोट दे जाए तो येह किसी और को नहीं दे सकता बल्कि फाड़ के फैंक दे ताकि वोह किसी और को धोका न दे सके। (3) अपने माल की ह़द से ज़ियादा ता'रीफ़ न करे। (4) ऐ़बदार माल ख़रीदे ही नहीं अगर ख़रीदे तो दिल में येह अ़ह्द करे कि मैं ख़रीदार को तमाम ऐ़ब बता दूंगा और अगर किसी ने मुझे धोका दिया तो इस नुक़्सान को अपनी ज़ात तक मह़दूद रखूंगा दूसरों पर न डालूंगा। (5) अगर अपने पास मौजूद

1 ...درمختار، کتاب البیوع، باب الصرف، ۷/ ۵۷۱۔

2 .....मुख़्तलिफ़ चीज़ों की ख़रीदारी, बाज़ार जाने और तिजारत की मज़ीद निय्यतें जानने के लिये दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़्बूआ़ किताब "बहारे निय्यत" के सफ़्ह़ा 117-130-134-135 और 136 का मुत़ालआ़ फ़रमा लीजिये।

3 .....तफ़्सीर सिरातुल जिनान, पारह 5, अन्निसा, तह़्तुल आयत : 29, 2 / 184

सह़ीह़ माल में कोई ऐ़ब पैदा हो गया तो उसे गाहक से न छुपाए वरना ज़ालिम और गुनाहगार होगा। (6) वज़्न करने और नापने में फ़रेब न करे बल्कि पूरा तोले और पूरा नापे। (7) अस्ल क़ीमत को छुपा कर किसी आदमी को क़ीमत में धोका न दे। (8) बहुत ज़ियादा नफ़्अ़ न ले अगर्चे ख़रीदार किसी मजबूरी की वज्ह से इस ज़ियादती पर राज़ी हो। (9) मोह़ताजों का माल ज़ियादा क़ीमत से ख़रीदे ताकि उन्हें भी मसर्रत नसीब हो। (10) क़र्ज़ ख़्वाह के तक़ाज़े से पहले क़र्ज़ अदा कर दे और अपने पास बुला कर देने के बजाए उस के पास जा कर दे। (11) जिस शख़्स से मुआ़मला करे अगर वोह मुआ़मले के बा'द परेशान हो तो उस से मुआ़मला फ़स्ख़ कर दे। (12) दुन्या का बाज़ार उसे आख़िरत के बाज़ार से न रोके और आख़िरत का बाज़ार मसाजिद हैं। (13) बाज़ार में ज़ियादा देर रहने की कोशिश न करे।(1)

सुवाल सच्चा ताजिर ज़ियादा पसन्दीदा है या ख़ुद को इ़बादत के लिये फ़ारिग़ रखने वाला ?

जवाब ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन यज़ीद नख़्ई़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی से पूछा गया : आप के नज़्दीक सच्चा ताजिर ज़ियादा पसन्दीदा है या फिर वोह शख़्स जिस ने ख़ुद को इ़बादत के लिये फ़ारिग़ कर रखा है ? इरशाद फ़रमाया : मेरे नज़्दीक सच्चा ताजिर ज़ियादा पसन्दीदा है क्यूंकि वोह जिद्दो जहद कर रहा होता है कि नाप तोल और लेन देन के रास्ते में उस के पास शैत़ान आता है तो यूं वोह उस के साथ जिद्दो जहद करता है।(2)

---

1 . . . کیمیائے سعادت، رکن دوم درمعاملات، اصل سوم آداب کسب، ۱/۳۲۶ تا ۳۴۰ مُلتقطاً۔

2 . . . احیاء علوم الدین، کتاب آداب الکسب والمعاش، الباب الاول فی فضل الکسب والحث علیه، ۲/۸۰۔

सुवाल क़बीलए क़ुरैश के ख़ुशहाल और मालदार होने का राज़ क्या था ?

जवाब क़ुरैश साल में दो मरतबा तिजारती सफ़र करते थे, जाड़े के मौसिम में यमन और गर्मी के मौसिम में शाम का सफ़र किया करते थे, हर जगह के लोग उन के साथ तिजारतें करते थे और क़ुरैश उन तिजारतों में ख़ूब नफ़्अ़ उठाते थे।(1)

क़र्ज़ और सूद

सुवाल किस त़रह़ की चीज़ें क़र्ज़ ली और दी जा सकती हैं ?

जवाब जो चीज़ क़र्ज़ दी जाए ली जाए उस का मिस्ली होना ज़रूरी है या'नी माप की चीज़ हो या तोल की हो या गिनती की हो मगर गिनती की चीज़ में शर्त़ येह है कि उस के अफ़राद में ज़ियादा तफ़ावुत (या'नी फ़र्क़) न हो जैसे अन्डे, अख़रोट, बादाम और अगर गिनती की चीज़ में तफ़ावुत ज़ियादा हो जिस की वज्ह से क़ीमत में इख़्तिलाफ़ हो जैसे आम, अमरूद, इन को क़र्ज़ नहीं दे सकते। यूंही हर क़ीमती चीज़ जैसे जानवर, मकान, ज़मीन इन का क़र्ज़ देना सह़ीह़ नहीं।(2)

सुवाल क़र्ज़ का लेन देन करते वक़्त हुक्मे क़ुरआनी क्या है ?

जवाब इरशादे बारी तआ़ला है :

﴿يَاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِذَا تَدَايَنْتُمْ بِدَيْنٍ اِلٰۤى اَجَلٍ مُّسَمًّى فَاكْتُبُوْهُ﴾ (پ۳، البقرة:۲۸۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ ईमान वालो जब तुम एक मुक़र्रर मुद्दत तक किसी दैन का लेन देन करो तो उसे लिख लो।"

तफ़्सीर सिरातुल जिनान में है : जब उधार का कोई मुआ़मला हो, ख़्वाह क़र्ज़ का लेन देन हो या ख़रीदो फ़रोख़्त का, रक़म पहले दी

1.....ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, पारह 30, क़ुरैश, तह़्तुल आयत : 1, स. 1121 माख़ूज़न।

2...درمختار مع ردالمحتار، کتاب البیوع، فصل فی القرض، ۷/۴۰۷، बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 11, 2 / 755

हो और माल बा'द में लेना है या माल उधार पर दे दिया और रक़म बा'द में वुसूल करनी है, यूंही दुकान या मकान किराये पर लेते हुए एडवान्स या किराये का मुआमला हो, इस त़रह़ की तमाम सूरतों में मुआहदा लिख लेना चाहिये। येह हुक्म वाजिब नहीं लेकिन इस पर अ़मल करना बहुत सी तकालीफ़ से बचाता है।(1)

सुवाल क़र्ज़ की अदाएगी का कोई वज़ीफ़ा बताइये ?

जवाब येह दुआ اَللّٰهُمَّ اكْفِنِىْ بِحَلَالِكَ عَنْ حَرَامِكَ وَاَغْنِنِىْ بِفَضْلِكَ عَمَّنْ سِوَاكَ **तर्जमा :** ऐ **अल्लाह** मुझे ह़लाल चीज़ों में किफ़ायत कर, ह़राम चीज़ों से दूर रख और तेरे मासिवा से मुझे अपने फ़ज़्ल से ग़नी कर दे।" हर नमाज़ के बा'द 11, 11 बार और सुब्ह़ो शाम सौ, सौ बार रोज़ाना अव्वल व आख़िर दुरूद शरीफ़। इसी दुआ की निस्बत मौला अ़ली كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم ने फ़रमाया कि अगर तुझ पर मिस्ल पहाड़ के भी क़र्ज़ होगा तो उसे अदा कर देगा।(2)

सुवाल किन कामों में जल्द बाज़ी शैत़ान की त़रफ़ से नहीं ?

जवाब मन्क़ूल है कि जल्द बाज़ी शैत़ान की त़रफ़ से है मगर इन छे कामों में जल्दी करना शैत़ान की त़रफ़ से नहीं : (1) जब नमाज़ का वक़्त हो जाए तो उस में जल्दी करना (2) मेहमान आए तो उस की मेहमान नवाज़ी करना (3) किसी के मरने पर उस की तजहीज़ो तक्फ़ीन करना (4) बच्ची के बालिग़ होने पर उस की शादी करना (5) क़र्ज़ की अदाएगी का वक़्त आ जाए तो उसे जल्द अदा करना और (6) कोई गुनाह हो जाए तो फ़ौरन तौबा करना।(3)

---

1 .....तफ़्सीर सिरातुल जिनान, पारह 3, अल बक़रह, तह़्तुल आयत : 282, 1 / 422

2 ...ترمذی، کتاب الدعوات، باب ۱۱۰، ۵/۳۲۹، حدیث: ۳۵۷۴ मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत, स. 439

3 ...الروض الفائق، المجلس الثالث عشر فی ذکر جھنم، باب صفۃ الفقیر، ص ۸۶۔

सुवाल अपने मुसलमान भाई का क़र्ज़ अदा करने की क्या फ़ज़ीलत है ?

जवाब हुज़ूर ताजदारे रिसालत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में एक जनाज़ा लाया गया, आप ने इरशाद फ़रमाया : इस पर दैन (क़र्ज़) है ? लोगों ने कहा : हां । फ़रमाया : दैन अदा करने के लिये कुछ छोड़ा है ? अ़र्ज़ की : नहीं । इरशाद फ़रमाया : तुम लोग इस की नमाज़ पढ़ लो । हज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم ने अ़र्ज़ की : इस का दैन मेरे ज़िम्मे है । तब हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने नमाज़ पढ़ाई । एक रिवायत में है कि इस मौक़अ़ पर फ़रमाया : **अल्लाह** तआ़ला तुम्हारे नफ़्स को आग से आज़ाद करे जिस त़रह़ तुम ने अपने मुसलमान भाई की जान छुड़ाई, जो मुसलमान अपने भाई का दैन अदा करेगा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ क़ियामत के दिन उस की जान को छोड़ देगा ।(1)

सुवाल क़र्ज़ की वुसूली में नर्मी करने की क्या फ़ज़ीलत है ?

जवाब ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है कि सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़्मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : एक शख़्स लोगों को क़र्ज़ दिया करता था और अपने गुलाम से कहा करता था कि जब तुम किसी तंगदस्त के पास जाओ तो उस से नर्मी किया करो शायद **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हम पर नर्मी फ़रमाए । (मरने के बा'द) जब वोह बारगाहे इलाही में ह़ाज़िर हुवा तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उसे बख़्श दिया ।(2)

सुवाल अदा न करने की निय्यत से क़र्ज़ लेने पर क्या वईदें आई हैं ?

---

1 ...شرح السنة، كتاب البيوع، باب ضمان الدين، ۴/ ۲۰ ۳، حديث: ۲۱۴۸۔

2 ...مسلم، كتاب المساقاة، باب فضل انظار المعسر، ص ۰ ۲۵، حديث: ۳۹۹۸۔

जवाब (1) हुज़ूर ताजदारे ख़त्मे नुबुव्वत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जिस ने अदा न करने के इरादे से क़र्ज़ लिया और मर गया तो क़ियामत के दिन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस से इरशाद फ़रमाएगा : तू ने येह गुमान किया कि मैं अपने बन्दे को किसी दूसरे के हक़ की वज्ह से नहीं पकड़ूंगा। पस उस की नेकियां ले ली जाएंगी और दूसरे की नेकियों में डाल दी जाएंगी और अगर उस के पास नेकियां न होंगी तो दूसरे के गुनाह ले कर उस पर डाले जाएंगे।[1] (2) हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इब्रत निशान है : जो आदमी इस अ़ज़्म से क़र्ज़ लेता है कि अदा न करेगा तो वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से चोर बन कर मिलेगा।[2]

सुवाल सूद की हुरमत कब नाज़िल हुई ?

जवाब सूद की हुरमत 9 हिजरी में नाज़िल हुई और इस के एक साल बा'द 10 हिजरी में "हिज्जतुल विदाअ़" के मौक़अ़ पर अपने खुत़बों में हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इस का ख़ूब ख़ूब ए'लान फ़रमाया।[3]

सुवाल सूद को किस लिये ह़राम क़रार दिया गया ?

जवाब सूद को ह़राम फ़रमाने में बहुत सी ह़िक्मतें हैं इन में से बा'ज़ येह हैं : (1) सूद में जो ज़ियादती ली जाती है वोह माली मुआ़वज़े वाली चीज़ों में बिग़ैर किसी इ़वज़ के माल लिया जाता है और येह सरीह़ ना इन्साफ़ी है। (2) सूद का रवाज तिजारतों को ख़राब करता है कि सूदख़ोर को बे मेह़नत माल का ह़ासिल होना, तिजारत

1 ...معجم کبیر، ۸/ ۲۴۳، حدیث: ۷۹۴۹۔

2 ...ابن ماجہ، کتاب الصدقات، باب من ادان دینا لم ینو قضاءہ، ۳/ ۱۴۳، حدیث: ۲۴۱۰۔

3 .....सीरते मुस्त़फ़ा, स. 504

की मशक़्क़तों और ख़तरों से कहीं ज़ियादा आसान मा'लूम होता है और तिजारतों की कमी इन्सानी मुआशरत को ज़रर पहुंचाती है। (3) सूद के रवाज से बाहमी महब्बत के सुलूक को नुक़्सान पहुंचता है कि जब आदमी सूद का आदी हुवा तो वोह किसी को क़र्ज़े हसन से इम्दाद पहुंचाना गवारा नहीं करता। (4) सूद से इन्सान की तबीअत में दरिन्दों से ज़ियादा बे रहमी पैदा होती है और सूदख़ोर अपने मक़रूज़ की तबाही व बरबादी का ख़्वाहिश मन्द रहता है।[1]

सुवाल सूद के मुआशरती ज़िन्दगी पर क्या नुक़्सानात मुरत्तब होते हैं ?

जवाब सूद वाला बे रहम हो जाता है, वोह मुफ़्त में किसी को रक़म देने का तसव्वुर नहीं करता, इन्सानी हमदर्दी उस से रुख़्सत हो जाती है, क़र्ज़ लेने वाला डूबे, मरे, तबाह हो येह बहर सूरत उसे निचोड़ने पर तुला रहता है।[2]

सुवाल सूद के मआशी नुक़्सान बताइये ?

जवाब सूद के सबब मुल्क से तिजारत का दीवालिया निकल जाता है। ज़ाहिर है कि दौलत चन्द इदारों ही में महदूद हो कर रह जाती है और येह दौलत (Wealth) कि जिस के ज़रीए तिजारत (Trade) होती है जब चन्द इदारों ही तक महदूद हो जाएगी तो मईशत की गाड़ी का पहिय्या भी रुक जाएगा।[3]

सुवाल सूद खाने वाला बरोज़े क़ियामत किस हाल में होगा ?

जवाब उन के पेट ऐसे होंगे जैसे बड़े बड़े मकान और शीशे की तरह

1.....तफ़्सीर सिरातुल जिनान, पारह 3, अल बक़रह, तहतुल आयत : 275, 1 / 412
2.....तफ़्सीर सिरातुल जिनान, पारह 3, अल बक़रह, तहतुल आयत : 275, 1 / 413
3.....सूद और उस का इलाज, स. 40 माख़ूज़न।

चमकेंगे कि लोगों को उन की ह़ालत नज़र आए, उन में सांप और बिच्छू भरे होंगे ।(1)

ज़ब्ह़

सुवाल ज़ब्ह़ करते वक़्त कौन से अल्फ़ाज़ कहना मुस्तह़ब हैं और क्या एह़तियात़ ज़रूरी है ?

जवाब मुस्तह़ब येह है कि ज़ब्ह़ के वक़्त بِسۡمِ اللّٰہِ اَللّٰہُ اَکۡبَر कहे या'नी بِسۡمِ اللہ और اَللّٰہُ اَکۡبَر के दरमियान "و" न लाए और بِسۡمِ اللہ की "ہ" को ज़ाहिर करना चाहिये अगर ज़ाहिर न की जैसा कि बा'ज़ अ़वाम इस का तलफ़्फ़ुज़ इस त़रह़ करते हैं कि "ہ" ज़ाहिर नहीं होती और मक़्सूद अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का नाम ज़िक्र करना है तो जानवर ह़लाल है और अगर येह मक़्सूद न हो और "ہ" का छोड़ना ही मक़्सूद हो तो ह़लाल नहीं ।(2)

सुवाल गाए, बकरी वग़ैरा को किस जगह से ज़ब्ह़ किया जाए ?

जवाब ज़ब्ह़ की जगह ह़ल्क़ और लुब्बा के माबैन है ।(3) लुब्बा सीने के बालाई ह़िस्से को कहते हैं । लिहाज़ा गले के बालाई, दरमियानी या निचले जिस जगह से भी ज़ब्ह़ किया जाएगा जानवर ह़लाल होगा ।(4)

सुवाल नह़्र का मत़लब बताइये और क्या ऊंट को बजाए नह़्र के ज़ब्ह़ किया जा सकता है ?

जवाब ह़ल्क़ के आख़िरी ह़िस्से में नेज़ा वग़ैरा भोंक कर रगें काट देने को

---

1 . . . ابن ماجہ، کتاب التجارات، باب التغلیظ فی الربا، ۳/ ۷۱، حدیث: ۲۲۷۳، مفہوماً۔

2 . . . درمختار مع ردالمحتار، کتاب الذبائح، ۹/ ۵۰۳۔

3 . . . بخاری، کتاب الذبائح، باب النحر والذبائح، ۳/ ۵۱۲۔

4 . . . درمختار مع ردالمحتار، کتاب الذبائح، ۹/ ۴۹۱۔

नह्‌र कहते हैं । ऊंट को नह्‌र करना और गाए बकरी वग़ैरा को ज़ब्ह़ करना सुन्नत है और अगर इस का अ़क्स किया या'नी ऊंट को ज़ब्ह़ किया और गाए वग़ैरा को नह्‌र किया तो जानवर इस सूरत में भी ह़लाल हो जाएगा मगर ऐसा करना मकरूह है कि सुन्नत के ख़िलाफ़ है ।(1)

सुवाल ऊंट को तीन जगह से नह्‌र करना कैसा है ?

जवाब अ़वाम में येह मश्हूर है कि ऊंट को तीन जगह ज़ब्ह़ किया जाता है ग़लत़ है और यूं करना मकरूह है कि बिला फ़ाएदा ईज़ा देना है ।(2)

सुवाल ज़ब्ह़ करते हुए जानवर का सर ही अलग कर दिया तो जानवर ह़लाल होगा या नहीं ?

जवाब इस त़रह़ ज़ब्ह़ करना कि छुरी ह़राम मग़ज़ तक पहुंच जाए या सर कट कर जुदा हो जाए मकरूह है मगर वोह ज़बीह़ा खाया जाएगा या'नी कराहत इस फ़े'ल में है न कि ज़बीह़ा में ।(3) आ़म लोगों में येह मश्हूर है कि ज़ब्ह़ करने में अगर सर जुदा हो जाए तो उस सर का खाना मकरूह है येह कुतुबे फ़िक़्ह में नज़र से नहीं गुज़रा बल्कि फ़ुक़हा का येह इरशाद कि ज़बीह़ा खाया जाएगा इस से येही साबित होता है कि सर भी खाया जाएगा ।(4)

सुवाल जानवर को बिला वज्ह तक्लीफ़ पहुंचाना कैसा है ?

जवाब हर वोह फ़े'ल जिस से जानवर को बिला फ़ाएदा तक्लीफ़ पहुंचे मकरूह है मसलन जानवर में अभी ह़यात बाक़ी हो ठन्डा होने से पहले उस की खाल उतारना, उस के आ'ज़ा काटना या ज़ब्ह़ से पहले उस के सर को खींचना कि रगें ज़ाहिर हो जाएं या गर्दन को

---

1 ...فتاوی ھندیۃ، کتاب الذبائح، الباب الاول فی رکنہ۔۔۔ الخ، ۵/۲۸۵۔

2 .....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 15, 3 / 312

3 ...ھدایۃ، کتاب الذبائح، ۲/۳۵۰۔

4 .....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 15, 3 / 315

तोड़ना, यूंही जानवर को गर्दन की त़रफ़ से ज़ब्ह़ करना मकरूह है बल्कि इस की बा'ज़ सूरतों में जानवर ह़राम हो जाएगा।(1)

सुवाल किस सूरत में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का नाम लिये बिग़ैर ज़ब्ह़ किया हुवा जानवर ह़लाल होता है?

जवाब भूल कर "بِسْمِ اللهِ اَللهُ اَكْبَر" कहे बिग़ैर जानवर ज़ब्ह़ कर दिया तो इस सूरत में उस जानवर का गोश्त खाना ह़लाल है।(2)

सुवाल क्या بِسْمِ الله पढ़ कर ज़ब्ह़ करने के बा वुजूद भी जानवर ह़राम हो सकता है?

जवाब जी हां। بِسْمِ الله किसी दूसरे मक़्सद से पढ़ी और जानवर को ज़ब्ह़ कर दिया तो जानवर ह़लाल नहीं और अगर ज़बान से بِسْمِ الله कही और दिल में येह निय्यत ह़ाज़िर नहीं कि जानवर ज़ब्ह़ करने के लिये بِسْمِ الله कहता हूं तो जानवर ह़लाल है।(3)

सुवाल بِسْمِ الله कह कर पानी पिया या छुरी तेज़ की फिर ज़ब्ह़ किया तो क्या जानवर ह़लाल हो जाएगा?

जवाब بِسْمِ الله कहने और ज़ब्ह़ करने के दरमियान त़वील फ़ासिला न हो और मजलिस बदलने न पाए। अगर मजलिस बदल गई और अ़मले कसीर बीच में पाया गया तो जानवर ह़लाल न हुवा। एक लुक़्मा खाया या ज़रा सा पानी पिया या छुरी तेज़ कर ली येह अ़मले क़लील है जानवर इस सूरत में ह़लाल है।(4)

सुवाल क्या दो बकरियों को एक साथ بِسْمِ الله पढ़ कर ज़ब्ह़ किया जा सकता है?

जवाब दो बकरियों को नीचे ऊपर लिटा कर दोनों को एक साथ بِسْمِ الله पढ़ कर ज़ब्ह़ कर दिया दोनों ह़लाल हैं और अगर एक को ज़ब्ह़ कर

---

1 ...هداية، كتاب الذبائح، ٢/٣٥٠، बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 15, 3 / 315

2 ...هداية، كتاب الذبائح، ٢/٣٤٧۔

3 ...درمختار، كتاب الذبائح، ٩/٥٠٤۔

4 ...درمختار مع ردالمحتار، كتاب الذبائح، ٩/٥٠٤۔

के फ़ौरन दूसरी को ज़ब्ह करना चाहता है तो उस को फिर بِسۡمِ الله पढ़नी होगी पहले जो पढ़ चुका है वोह दूसरी के लिये काफ़ी नहीं।(1)

सुवाल जानवर को ज़ब्ह के लिये लिटाया, بِسۡمِ الله पढ़ी थी कि जानवर भागा फिर उसे पकड़ कर लाया तो दोबारा بِسۡمِ الله पढ़नी होगी या पहले जो पढ़ी थी वोह काफ़ी होगी ?

जवाब बकरी ज़ब्ह के लिये लिटाई थी بِسۡمِ الله कह कर ज़ब्ह करना चाहता था कि वोह उठ कर भाग गई फिर उसे पकड़ के लाया और लिटाया तो अब दोबारा بِسۡمِ الله पढ़े क्यूंकि पहले का पढ़ना ख़त्म हो गया।(2) इसी त़रह़ बकरियों का रेवड़ देखा और بِسۡمِ الله पढ़ कर उन में से एक बकरी पकड़ लाया और ज़ब्ह कर दी और उस वक़्त जान बूझ कर येह सोच कर بِسۡمِ الله नहीं पढ़ी कि पहले पढ़ चुका है ऐसी सूरत में वोह बकरी ह़राम हो गई।(3)

सुवाल गाए या ऊंट वग़ैरा ज़ब्ह के वक़्त भाग जाएं और पकड़ में न आएं तो क्या करें ?

जवाब पाला हुवा जानवर अगर भाग जाए और पकड़ने में न आए तो उस के लिये ज़ब्हे इज़्तिरारी जाइज़ है या'नी तीर या नेज़ा वग़ैरा से ब निय्यते ज़ब्ह بِسۡمِ الله पढ़ कर मारें और इस के लिये गर्दन में ही ज़ब्ह करना ज़रूरी नहीं बल्कि जिस जगह भी ज़ख़्मी कर दिया जाए काफ़ी है।(4) गाए, बेल, ऊंट अगर भाग जाएं और पकड़ में न आएं तो उन के लिये भी ज़ब्हे इज़्तिरारी हो सकता है।(5)

---

1 ...درمختار، کتاب الذبائح، ۹/ ۵۰۴۔

2 ...فتاوی ھندیۃ، کتاب الذبائح، الباب الاول فی رکنہ۔۔۔الخ، ۵/ ۲۸۹۔

3 ...بدائع الصنائع، کتاب الذبائح والصیود، باب مایرجع الی محل الذکاۃ، ۴/ ۱۷۳۔

4 ...درمختار مع ردالمحتار، کتاب الذبائح، ۹/ ۵۰۵۔

5 ...ھدایۃ، کتاب الذبائح، ۲/ ۳۵۰۔

कु़रबानी

सुवाल कुरबानी की फ़ज़ीलत और बा वुजूदे इस्तित़ाअ़त न करने की क्या वईद है ?

जवाब हु़ज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जिस ने खुश दिली से त़ालिबे सवाब हो कर कुरबानी की, तो वोह आतिशे जहन्नम से हि़जाब (या'नी रोक) हो जाएगी।(1) नीज़ फ़रमाया : ऐ फ़ाति़मा ! अपनी कुरबानी के पास हाज़िर रहो क्यूंकि इस के खून का पहला क़त़रा गिरते ही तुम्हारे सारे गुनाह मुआ़फ़ कर दिये जाएंगे।(2) और इस्तित़ाअ़त के बा वुजूद न करने वालों के मुतअ़ल्लिक़ फ़रमाया : जिस शख़्स में कुरबानी करने की वुस्अ़त हो फिर भी वोह कुरबानी न करे तो वोह हमारी ईदगाह के क़रीब न आए।(3)

सुवाल कुरबानी के वक़्त क्या निय्यत होनी चाहिये ?

जवाब ज़ब्ह़ करते वक़्त या अपनी कुरबानी हो रही हो उस के पास हाज़िर रहते वक़्त अदाए सुन्नत की निय्यत होनी चाहिये और साथ ही येह भी निय्यत करे कि मैं जिस त़रह़ आज राहे खुदा में जानवर कुरबान कर रहा हूं, ब वक़्ते ज़रूरत اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ अपनी जान भी कुरबान कर दूंगा नीज़ येह भी निय्यत हो कि जानवर ज़ब्ह़ कर के अपने नफ़्से अम्मारा को भी ज़ब्ह़ कर रहा हूं और

---

(1) ...معجم کبیر، ۳/۸۴، حدیث: ۲۷۳۶۔

(2) ...سنن کبری للبیهقی، کتاب الضحایا، باب مایستحب للمرء ۔۔۔ الخ، ۹/۴۷۶، حدیث: ۱۹۱۶۱۔

(3) ...ابن ماجه، کتاب الاضاحی، باب الاضاحی واجبة ام لا، ۳/۵۲۹، حدیث: ۳۱۲۳۔

आइन्दा गुनाहों से बचूंगा ।[1]

सुवाल कुरबानी की इस्तिताअत न रखने वाला शख़्स कुरबानी का सवाब कैसे हासिल कर सकता है ?

जवाब हकीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْمَنَّان फ़रमाते हैं : जो कुरबानी न कर सके वोह भी इस अशरह (ज़ुल हिज्जतिल हराम के इब्तिदाई दस अय्याम) में हजामत न कराए (बाल व नाखुन न काटे), बक़रह ईद के दिन बा'दे नमाज़े ईद हजामत कराए तो اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ (कुरबानी का) सवाब पाएगा ।[2]

सुवाल क्या कुरबानी के बजाए इस की रक़म सदक़ा कर देना काफ़ी होगा ?

जवाब कुरबानी के वक़्त में कुरबानी करना ही लाज़िम है कोई दूसरी चीज़ इस के क़ाइम मक़ाम नहीं हो सकती मसलन बजाए कुरबानी के बकरा या उस की क़ीमत सदक़ा (ख़ैरात) कर दी जाए येह ना काफ़ी है ।[3]

सुवाल चांद नज़र आने से कुरबानी करने तक नाखुन और बाल न काटने में क्या हिक्मत है ?

जवाब जो अमीर वुजूबन या फ़क़ीर नफ़्लन कुरबानी का इरादा करे वोह ज़ुल हिज्जतिल हराम का चांद देखने से कुरबानी करने तक नाखुन बाल और (अपने बदन की) मुर्दार खाल वग़ैरा न काटे न कटवाए ताकि हाजियों से क़द्रे (या'नी थोड़ी) मुशाबहत हो जाए कि वोह लोग एहराम में हजामत नहीं करा सकते और ताकि कुरबानी हर बाल, नाखुन (के लिये जहन्नम से आज़ादी) का फ़िदया बन जाए । येह हुक्म इस्तिह़बाबी है वुजूबी नहीं (या'नी वाजिब

---

1 .....अब्लक़ घोड़े सुवार, स. 17

2 .....मिरआतुल मनाजीह, 2 / 370

3 . . فتاوی ھندیۃ، کتاب الاضحیۃ، الباب الاول فی تفسیرھا۔۔۔الخ، ۵/۲۹۳۔

नहीं,) मुस्तहब है) ।[1]

सुवाल साहिबे निसाब न होने के बा वुजूद किस शख़्स पर कुरबानी वाजिब है ?

जवाब जो शख़्स मालिके निसाब नहीं है उस ने कुरबानी की मन्नत मानी तो इस सूरत में उस पर कुरबानी वाजिब है या उस ने कुरबानी की निय्यत से कोई जानवर ख़रीदा तो उस जानवर की कुरबानी वाजिब है ।[2]

सुवाल किस सूरत में मालदार मालिके निसाब पर कुरबानी वाजिब नहीं ?

जवाब मालदार मालिके निसाब अगर मुसाफ़िर है तो इस सूरत में उस पर कुरबानी वाजिब नहीं क्यूंकि कुरबानी वाजिब होने के लिये मुक़ीम होना शर्त़ है ।[3]

सुवाल इब्तिदाए वक़्त में वुजूबे कुरबानी की शराइत़ नहीं पाई गईं और आख़िर वक़्त में पाई गईं तो कुरबानी का क्या हुक्म है ?

जवाब येह ज़रूर नहीं कि दसवीं ही को कुरबानी कर डाले, उस के लिये गुन्जाइश है कि पूरे वक़्त में जब चाहे करे लिहाज़ा अगर इब्तिदाए वक़्त में इस का अह्ल न था वुजूब के शराइत़ नहीं पाए जाते थे और आख़िर वक़्त में (या'नी 12 ज़ुल हिज्जा को ग़ुरूबे आफ़्ताब से पहले) अह्ल हो गया या'नी वुजूब के शराइत़ पाए गए तो उस पर वाजिब हो गई और अगर इब्तिदाए वक़्त में वाजिब थी और अभी (कुरबानी) की नहीं और आख़िरे वक़्त में शराइत़ जाते रहे तो (कुरबानी) वाजिब न रही ।[4]

1.....मिरआतुल मनाजीह़, 2 / 370

2...فتاوی ھندیۃ، کتاب الاضحیۃ، الباب الاول فی تفسیرھا ورکنھا۔۔۔الخ، ۵/ ۲۹۱۔

3...فتاوی ھندیۃ، کتاب الاضحیۃ، الباب الاول فی تفسیرھا ورکنھا۔۔۔الخ، ۵/ ۲۹۲۔

4...فتاوی ھندیۃ، کتاب الاضحیۃ، الباب الاول فی تفسیرھا۔۔۔الخ، ۵/ ۲۹۳۔

सुवाल क्या पूरे घर की तरफ़ से एक बकरे की कुरबानी किफ़ायत कर सकती है ?

जवाब नहीं कर सकती। बा'ज़ लोग पूरे घर की तरफ़ से सिर्फ़ एक बकरा कुरबान करते हैं हालांकि बा'ज़ अवक़ात घर के कई अफ़राद साहिबे निसाब होते हैं और इस बिना पर उन सारों पर कुरबानी वाजिब होती है उन सब की तरफ़ से अलग अलग कुरबानी की जाए। एक बकरा जो सब की तरफ़ से किया गया किसी का भी वाजिब अदा न हुवा कि बकरे में एक से ज़ियादा हिस्से नहीं हो सकते किसी एक तै शुदा फ़र्द ही की तरफ़ से बकरा कुरबान हो सकता है।(1)

सुवाल किस सूरत में ऐबदार जानवर की कुरबानी जाइज़ है ?

जवाब कुरबानी करते वक़्त जानवर उछला कूदा जिस की वज्ह से ऐब पैदा हो गया येह ऐब मुज़िर नहीं या'नी कुरबानी हो जाएगी और अगर उछलने कूदने से ऐब पैदा हो गया और वोह छूट कर भाग गया और फ़ौरन पकड़ कर लाया गया और ज़ब्ह कर दिया गया जब भी कुरबानी हो जाएगी।(2)

सुवाल किस सूरत में कुरबानी करने वाला कुरबानी का गोश्त नहीं खा सकता ?

जवाब कुरबानी अगर मन्नत की है तो उस का गोश्त न खुद खा सकता है न अग़निया को खिला सकता है बल्कि इस को सदक़ा कर देना वाजिब है, वोह मन्नत मानने वाला फ़क़ीर हो या ग़नी दोनों का एक ही हुक्म है।(3) यूंही अगर मय्यित ने कुरबानी की वसिय्यत

---

1 .....अब्लक़ घोड़े सुवार, स. 8

2 ...درمختار مع ردالمحتار، کتاب الاضحیة، ۹/۵۳۹، बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 15, 3 / 342

3 ...تبیین الحقائق، کتاب الاضحیة، ۶/۴۸۶۔

की थी तो अब भी इस में से न खाए बल्कि सारा गोश्त सदक़ा कर दे।[1]

सुवाल अपनी क़ुरबानी की खाल बेचना कैसा है?

जवाब यहां निय्यत का ए'तिबार है। अगर अपनी क़ुरबानी की खाल अपनी ज़ात के लिये रक़म के इवज़ बेची तो यूं बेचना भी नाजाइज़ है और येह रक़म उस शख़्स के हक़ में माले ख़बीस है और इस का सदक़ा करना वाजिब है लिहाज़ा किसी शरई फ़क़ीर को दे दे और तौबा भी करे और अगर किसी कारे ख़ैर के लिये मसलन मस्जिद में देने ही की निय्यत से बेची तो बेचना भी जाइज़ है और अब मस्जिद में देने में कोई ह़रज (भी) नहीं।[2]

खाना

सुवाल "फ़ैज़ाने सुन्नत" में दी गई खाने की 43 निय्यतों में से कोई 6 बयान कीजिये?

जवाब (1, 2) खाने से क़ब्ल और बा'द का वुज़ू करूंगा (या'नी हाथ, मुंह का अगला हिस्सा धोऊंगा और कुल्लिय्यां करूंगा) (3) इबादत पर क़ुव्वत ह़ासिल करूंगा (4) इत्तिबाए सुन्नत में दस्तर ख़्वान पर खाऊंगा (5) खाने से पहले بِسْمِ الله पढ़ूंगा (6) सुन्नत के मुत़ाबिक़ बैठ कर खाऊंगा (7) तीन उंगलियों से खाऊंगा (8) जो दाना वग़ैरा गिर गया उठा कर खा लूंगा (9) खाने के बा'द ब मअ़ अव्वलो आख़िर दुरूद शरीफ़ मस्नून दुआएं पढ़ूंगा (10) ख़िलाल करूंगा।[3]

---

1 ...ردالمحتار، کتاب الاضحیۃ، ۹/۵۴۲۔

2 ...فتاوی ہندیۃ، کتاب الاضحیۃ، الباب السادس فی بیان مایستحب ــــ الخ، ۵/۳۰۱،
अब्लक़ घोड़े सुवार, स. 28

3 .....फ़ैज़ाने सुन्नत, स. 182, माख़ूज़न।

सुवाल वोह कौन से बुज़ुर्ग हैं जो भूका रहने पर बहुत ज़ोर दिया करते और इस की क्या वज्ह बयान फ़रमाते थे ?

जवाब हज़रते सय्यिदुना बायज़ीद बिस्तामी عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡوَالِی से भूका रहने पर बहुत ज़ियादा ज़ोर देने की वज्ह पूछी गई तो आप ने फ़रमाया : अगर फ़िरऔन भूका होता तो कभी खुदाई का दा'वा न करता और अगर क़ारून भूका होता तो कभी बग़ावत न करता । (मत़लब येह कि उन लोगों पर माल की फ़िरावानी हुई तो सरकश हो गए)(1)

सुवाल खाने से पहले की दुआ और इस की बरकत बयान कीजिये ?

जवाब بِسۡمِ اللّٰهِ الَّذِیۡ لَا یَضُرُّ مَعَ اسۡمِهٖ شَیۡءٌ فِی الۡاَرۡضِ وَلَا فِی السَّمَآءِ وَهُوَ السَّمِیۡعُ الۡعَلِیۡمُ इस की बरकत येह है कि अगर खाने में ज़हर भी होगा तो اِنۡ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ असर नहीं करेगा ।(2)

सुवाल ह़दीसे मुबारका की रौशनी में खाने से पहले और बा'द में हाथ मुंह धोने का फ़ाएदा बताइये ?

जवाब सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने बरकत निशान है, खाने से पहले और बा'द वुज़ू (या'नी हाथ मुंह धोना) रिज़्क़ में कुशादगी करता और शैत़ान को दूर करता है ।(3)

सुवाल पेट भर कर खाने से मुतअ़ल्लिक़ इमाम शाफ़ेई عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡكَافِی ने क्या फ़रमाया ?

जवाब हज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡكَافِی फ़रमाते हैं : "एक

---

1 ...كشف المحجوب، باب آدابهم فی الآكل، ص ۳۹۰۔

2 ...مسند الفردوس، ۱/۱۲۸، حدیث: ۱۱۱۳۔

3 ...كنز العمال، ۸/۱۰۶، حدیث: ۴۰۷۵۵۔

बार के इलावा मैं ने 16 साल से कभी पेट भर कर खाना नहीं खाया क्यूंकि शिकम सेरी बदन को भारी, दिल को सख़्त और अ़क़्ल को ज़ाइल करती है नीज़ नींद लाती और इबादत में कमज़ोरी का बाइस है।"[1]

सुवाल खड़े हो कर खाने का तिब्बी नुक़्सान क्या है ?

जवाब इटली के एक माहिरे अग़्ज़िया डॉक्टर का कहना है : खड़े हो कर खाना खाने से तिल्ली और दिल की बीमारियां नीज़ नफ़्सियाती अमराज़ पैदा होते हैं यहां तक कि बा'ज़ अवक़ात इन्सान ऐसा पागल हो जाता है कि अपनों तक को पहचान नहीं पाता।[2]

सुवाल खाने की पांच सुन्नतें और आदाब बयान कीजिये ?

जवाब (1) अपने आगे से खाए (2) कोई साथ खा रहा हो उस के आगे से न खाए (3) रिकाबी के दरमियान से न खाए (4) पहले दस्तर ख़्वान उठाया जाए इस के बा'द खाने वाले उठें। (अफ़्सोस ! आज कल उ़मूमन उल्टा अन्दाज़ है या'नी पहले खाने वाले उठते हैं इस के बा'द दस्तर ख़्वान उठाया जाता है) (5) दूसरे भी खाने में शामिल हों तो उस वक़्त तक हाथ न रोके जब तक सारे फ़ारिग़ न हो जाएं।[3]

सुवाल टेक लगा कर खाने के तिब्बी नुक़्सानात क्या हैं ?

जवाब (1) खाना अच्छी त़रह़ चबाया नहीं जा सकेगा और इस में लुआ़ब जिस मिक़्दार में मिलना चाहिये उतना नहीं मिलेगा जो कि मे'दे में जा कर नशास्तादार ग़िज़ाओं को हज़्म कर सके और यूं निज़ामे

1 ...حلية الاولياء، الامام الشافعی، ۹/۱۳۵، رقم: ۱۳۳۸۶-

2.....फ़ैज़ाने सुन्नत, स. 230

3.....फ़ैज़ाने सुन्नत, स. 241

इन्हिज़ाम (या'नी हाज़िमा) मुतअस्सिर होगा (2) टेक लगा कर बैठने से मे'दा फैल जाता है लिहाज़ा इस त़रह़ ग़ैर ज़रूरी ख़ूराक मे'दे में चली जाएगी और हाज़िमा ख़राब होगा (3) टेक लगा कर खाने से आंतों और जिगर को नुक़्सान पहुंचता है।[1]

सुवाल "फ़ैज़ाने सुन्नत" में बयान कर्दा तंगदस्ती के अस्बाब में से 9 अस्बाब बयान कीजिये ?

जवाब (1) बिग़ैर हाथ धोए खाना (2) मय्यित के क़रीब बैठ कर खाना (3) निकला हुवा खाना खाने में देर करना (4) जिस बरतन में खाना खाया है उसी में हाथ धोना (5) ख़िलाल करते वक़्त जो रेशा निकले उसे फिर मुंह में रख लेना (6) ज़ियादा सोने की आ़दत (7) रात को झाड़ू देना (8) वालिदैन को उन के नाम से पुकारना (9) नमाज़ में सुस्ती करना।[2]

सुवाल खाने के बा'द उंगलियां चाटने की तरतीब बयान कीजिये ?

जवाब ह़ज़रते सय्यिदुना का'ब बिन उ़जरह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि मैं ने सरवरे काइनात, शाहे मौजूदात صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को अंगूठा, शहादत वाली और दरमियानी उंगली मिला कर तीन उंगलियों से खाते देखा। फिर मैं ने देखा कि सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन्हें पोंछने से पहले चाट लिया, सब से पहले दरमियानी फिर शहादत वाली और फिर अंगूठा शरीफ़ चाटा।[3]

सुवाल खाने के बा'द बरतन चाटने की ह़िक्मत बताइये ?

---

1 .....फ़ैज़ाने सुन्नत, स. 253

2 .....फ़ैज़ाने सुन्नत, स. 264

3 ...معجم اوسط، ۱/۴۴۸، حدیث: ۱۶۴۹۔

जवाब हकीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : बरतन चाटने में खाने का अदब है, इस को बरबादी से बचाना है, बरतन यूं ही छोड़ देने से इस पर मख्खियां भिनभिनाती हैं, बरतन में लगे हुए खाने के अज्ज़ा مَعَاذَالله عَزَّوَجَلَّ नालियों, गन्दगियों में फैंक दिये जाते हैं, जिस से इस की सख़्त बे अदबी होती है। अगर एक वक़्त में हर फ़र्द चन्द दाने भी बरतन में छोड़ कर ज़ाएअ़ कर दे तो रोज़ाना कई मन खाना बरबाद होगा। ग़र्ज़ येह कि बरतन चाटने में कई हिक्मतें हैं।(1)

सुवाल रोटी का कनारा तोड़ कर अलग कर लेना और सिर्फ़ दरमियान का हिस्सा खा लेना कैसा है ?

जवाब रोटी का कनारा तोड़ कर डाल देना और बीच का हिस्सा खा लेना इसराफ़ है। हां अगर कनारे कच्चे रह गए हैं, इस के खाने से नुक़्सान होगा तो तोड़ सकता है, इसी त़रह़ येह मा'लूम है कि रोटी के कनारे दूसरे लोग खा लेंगे ज़ाएअ़ न होंगे तो तोड़ने में ह़रज नहीं, येही हुक्म इस का भी है कि रोटी में जो हिस्सा फूला हुवा है उसे खा लेता है बाक़ी को छोड़ देता है।(2)

लिबास अंगूठी और ज़ेवर

सुवाल हुज़ूर जाने आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को कौन सी चादर बहुत पसन्द थी ?

जवाब ह़दीसे पाक में है कि हुज़ूर जाने आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को ह़िबरह (या'नी धारीदार यमनी चादर) बहुत पसन्द थी।(3)

1.....मिरआतुल मनाजीह़, 6 / 37

2.....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 16, 3 / 377 माख़ूज़न।

3 ...بخاری،کتاب اللباس،باب البرود۔۔۔الخ، ۴/۵۴،حدیث:۵۸۱۳،فیض القدیر ۵/۱۰۵،تحت الحدیث:۲۵۰۴-

सुवाल क्या मर्द ऐसा लिबास पहन सकता है जिस के कनारों पर रेशम लगा हुवा हो ?

जवाब मर्दों के कपड़ों में रेशम की गोट चार उंगल तक की जाइज़ है इस से ज़ियादा नाजाइज़ या'नी उस की चौड़ाई चार उंगल तक हो, लम्बाई का शुमार नहीं। इसी त़रह़ अगर कपड़े का कनारा रेशम से बुना हो जैसा कि बा'ज़ इमामे या चादरों या तह्बन्द के कनारे इस त़रह़ के होते हैं, इस का भी येही हुक्म है कि अगर चार उंगल तक का कनारा हो तो जाइज़ है, वरना नाजाइज़।[1]

सुवाल लिबासे शोहरत किसे कहते हैं और ह़दीसे पाक में इस पर क्या वईद आई है ?

जवाब लिबासे शोहरत से मुराद येह है कि तकब्बुर के त़ौर पर अच्छे कपड़े पहने या जो शख़्स दरवेश न हो वोह ऐसे कपड़े पहने जिस से लोग उसे दरवेश समझें या आ़लिम न हो और उ़लमा के से कपड़े पहन कर लोगों के सामने अपना आ़लिम होना जताता है या'नी कपड़े से मक़्सूद किसी ख़ूबी का इज़्हार हो।[2] सरकारे दो आ़लम صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जिस ने (दुन्या में) शोहरत का लिबास पहना क़ियामत के दिन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस को ज़िल्लत का लिबास पहनाएगा।[3]

सुवाल उ़लमा और फ़ुक़हा को किस त़रह़ का लिबास पहनना चाहिये ?

जवाब उ़लमा और फ़ुक़हा को ऐसा लिबास पहनना चाहिये कि वोह पहचाने जाएं ताकि लोगों को उन से मसाइल पूछने और दीनी

---

1 . . . ردالمحتار، کتاب الحظر والاباحة، فصل فی اللبس، ۹/ ۵۸۱ ماخوذا۔

2 .....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 16, 3 / 404

3 . . . ابن ماجه، کتاب اللباس، باب من لبس شهرة من الثياب، ۴/ ۱۶۳، حديث: ۳۶۰۶۔

मा'लूमात हासिल करने का मौक़अ़ मिले और इल्मे दीन की इ़ज़्ज़त व वक़्अ़त लोगों के दिलों में पैदा हो।(1)

सुवाल ख़ास मवाक़ेअ़ पर उ़म्दा कपड़े पहनना कैसा ?

जवाब ख़ास मौक़अ़ पर मसलन जुमुआ़ या ई़द के दिन उ़म्दा कपड़े पहनना मुबाह़ (जाइज़) है। इस क़िस्म के कपड़े रोज़ न पहने क्यूंकि हो सकता है कि इतराने लगे और ग़रीबों को जिन के पास ऐसे कपड़े नहीं हैं नज़रे ह़क़ारत से देखे, लिहाज़ा इस से बचना ही चाहिये।(2)

सुवाल सय्यिदतुना आ़इशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने बारीक दूपट्टे ओढ़ने वाली के साथ क्या किया ?

जवाब उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने उन का बारीक दूपट्टा फाड़ दिया और मोटा दूपट्टा ओढ़ा दिया।(3)

सुवाल नया कपड़ा पहनने का आग़ाज़ किस दिन से करना चाहिये ?

जवाब नया कपड़ा जुमुआ़ के दिन पहनना शुरूअ़ करें कि हु़ज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم आ़म तौर पर नया कपड़ा जुमुआ़ के दिन पहना करते थे।(4)

सुवाल ग़म दूर करने और अ़क़्ल बढ़ाने का कोई नुस्ख़ा बताइये ?

जवाब ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन इदरीस शाफ़ेई़ عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْکَافِی फ़रमाते हैं : जो अपना लिबास साफ़ रखे उस के ग़म कम हो जाएंगे और जो ख़ुश्बू लगाए उस की अ़क़्ल में इज़ाफ़ा होगा।(5)

1 ...ردالمحتار، کتاب الحظر والاباحۃ، فصل فی اللبس، ۹/۵۸۶، ماخوذاً

2 .....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 16, 3 / 409

3 ...موطاامام مالک، کتاب اللباس، باب مایکرہ للنساء لبسہ من الثیاب، ۲/۴۱۰، حدیث: ۱۷۳۹۔

4 ...اخلاق النبی وادابہ، ذکر وقت لباسہ اذا استجدہ، ص ۱۲۱، حدیث: ۲۵۰۔

5 ...احیاء علوم الدین، کتاب اسرار الصلاۃ، الباب الخامس فی فضل الجمعۃ۔۔۔الخ، بیان آداب الجمعۃ۔۔۔الخ، ۱/۲۴۴۔

सुवाल क्या ता'वीज़ चांदी की डिबया में डाल कर पहना जा सकता है ?

जवाब सोने या चांदी या किसी भी धात की डिबया में ता'वीज़ पहनना मर्द को जाइज़ नहीं। इसी त़रह़ किसी भी धात की ज़न्जीर ख़्वाह उस में ता'वीज़ हो या न हो मर्द को पहनना नाजाइज़ व गुनाह है। इसी त़रह़ सोने, चांदी और स्टील वग़ैरा किसी भी धात की तख़्ती या कड़ा जिस पर कुछ लिखा हुवा हो या न लिखा हुवा हो अगर्चे **अल्लाह** का मुबारक नाम या कलिमए त़य्यिबा वग़ैरा खुदाई किया हुवा हो उस का पहनना मर्द के लिये नाजाइज़ है। औ़रत सोने चांदी की डिबया में ता'वीज़ पहन सकती है।[1]

सुवाल ह़दीस में सोने की अंगूठी उतार कर फैंके जाने का क्या वाक़िआ़ आया है?

जवाब हु़ज़ूर मुअ़ल्लिमे काइनात, शाहे मौजूदात صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने एक शख़्स के हाथ में सोने की अंगूठी देखी तो उसे उतार कर फैंक दिया और फ़रमाया : क्या कोई अपने हाथ में अंगारा रखता है ? जब आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तशरीफ़ ले गए तो किसी ने उन साहि़ब से कहा : अपनी अंगूठी उठा लो और किसी काम में लाना। तो उन्हों ने कहा : ख़ुदा की क़सम ! मैं उसे कभी न लूंगा जब कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उसे फैंक दिया।[2]

सुवाल प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की अंगूठी में क्या नक़्श था ?

जवाब हु़ज़ूर नबिय्ये मुकर्रम, रसूले मोह़तरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की चांदी की अंगूठी में "مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰه" नक़्श था। आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

---

1 .....अह़कामे ता'वीज़ात, स. 166, 171 मुल्तक़त़न, फ़ैज़ाने सुन्नत, स. 69

2 ...مسلم، كتاب اللباس والزينة، باب في طرح خاتم الذهب، ص ١١٨٩، حديث: ٥٤٧٢-

ने फ़रमाया : कोई शख़्स मेरी इस अंगूठी के नक़्श के मुवाफ़िक़ अपनी अंगूठी में नक़्श कन्दा न कराए।(1)

सुवाल अगर अपना नाम अंगूठी में कन्दा (या'नी लिखा हुवा) हो तो बैतुल ख़ला में जा सकता है या नहीं ?

जवाब नाम अगर ऐसा ज़ियादा मुअ़ज़्ज़म (या'नी ता'ज़ीम वाला) न हो जब भी ह़र्फ़ों की ता'ज़ीम तो चाहिये और अगर मुतबर्रक नाम हो तो पहन कर जाना नाजाइज़ है, हां ! जेब में रख ले तो ह़रज नहीं।(2)

ज़ीनत का बयान

सुवाल कुरआने करीम में बनी आदम को किस वक़्त ज़ीनत इख़्तियार करने का हुक्म दिया गया है ?

जवाब मस्जिद में जाते वक़्त ज़ीनत का हुक्म दिया गया। चुनान्चे, इरशादे बारी तआ़ला है : ﴿يٰبَنِیْۤ اٰدَمَ خُذُوْا زِیْنَتَكُمْ عِنْدَ كُلِّ مَسْجِدٍ﴾ (پ۸،الاعراف:۳۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ आदम की औलाद अपनी ज़ीनत लो जब मस्जिद में जाओ।

सुवाल कौन सी सूरत में सुर्मा लगाना मकरूह है ?

जवाब सियाह सुर्मा (या काजल) ख़ूब सूरती के लिये मर्द को लगाना मकरूह है और ज़ीनत मक़्सूद न हो तो कराहत नहीं।(3)

सुवाल बालों का बिखरा हुवा होना कैसा है ?

जवाब हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने एक

---

1 ...مسلم، کتاب اللباس، باب لبس النبی صلی اللّٰہ علیہ وسلم خاتما۔۔۔الخ، ص ۸۹۲، حدیث:۵۴۷۷۔

2 .....मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत, स. 327

3 ...فتاوی ہندیۃ، کتاب الکراہیۃ، الباب العشرون فی الزینۃ، ۵/ ۳۵۹۔

शख़्स को परागन्दा सर देखा, जिस के बाल बिखरे हुए थे, इरशाद फ़रमाया : क्या इस को ऐसी चीज़ नहीं मिलती जिस से बालों को इकठ्ठा कर ले और दूसरे शख़्स को मैले कपड़े पहने हुए देखा तो फ़रमाया : क्या इसे ऐसी चीज़ नहीं मिलती जिस से कपड़े धो ले।(1)

सुवाल सर के बालों में मांग निकालने का सुन्नत तरीक़ा क्या है ?

जवाब सुन्नत येह है कि अगर सर पर बाल हों तो बीच में मांग निकाली जाए। बा'ज़ लोग दाहने या बाईं जानिब मांग निकालते हैं, येह सुन्नत के ख़िलाफ़ है और बा'ज़ लोग मांग नहीं निकालते बल्कि बालों को सीधे रखते हैं येह भी सुन्नते मन्सूख़ा और यहूदो नसारा का तरीक़ा है।(2)

सुवाल किस हालत में बाल मूंडना या नाख़ुन तराशना मकरूह है ?

जवाब जनाबत की हालत में न बाल मूंडाए और न नाख़ुन तरशवाए कि येह मकरूह है।(3)

सुवाल मर्द को जिस्म के किस हिस्से में मेहंदी लगाना हराम और किस हिस्से में मुस्तहब है ?

जवाब हाथ पाउं में मेहंदी की रंगत मर्द के लिये हराम है जब कि सर और दाढ़ी में मुस्तहब है।(4)

सुवाल क्या मर्दों को दाढ़ी या सर के बालों में ख़िज़ाब लगाना जाइज़ है ?

जवाब मर्द को दाढ़ी और सर वग़ैरा के बालों में ख़िज़ाब लगाना जाइज़

1...ابوداود، کتاب اللباس، باب فی غسل الثوب وفی الخلقان، ۴/۷۲، حدیث:۴۰۶۲۔

2.....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 16, 3 / 587

3...فتاوی ھندیۃ، کتاب الکراھیۃ، الباب التاسع عشر فی الختان۔۔۔الخ، ۵/۳۵۸۔

4.....फ़तावा रज़विय्या, 23 / 490

बल्कि मुस्तहब है मगर सियाह ख़िज़ाब लगाना मन्अ़ है।(1)

सुवाल ख़ुश्बू लगाने में कौन कौन सी अच्छी निय्यतें की जा सकती हैं ?

जवाब ख़ुश्बू लगाने में इत्तिबाए़ सुन्नत और (मस्जिद में जाते हुए लगाने पर) ता'ज़ीमे मस्जिद (की निय्यत भी की जा सकती है), फ़रहते दिमाग़ (या'नी दिमाग़ की ताज़गी) और अपने इस्लामी भाइयों से नापसन्दीदा बू दूर करने की निय्यतें हों तो हर निय्यत का अलग सवाब मिलेगा।(2)

सुवाल किस इन्सान को दाढ़ी मुन्डाना मुस्तहब है ?

जवाब अगर औ़रत को दाढ़ी निकले तो उसे मुन्डाना मुस्तहब है।(3)

सुवाल चेहरे पर झन्डा (Flag) पेइन्ट करवाना कैसा है ?

जवाब चेहरे पर पेइन्ट के ज़रीए़ परचम या कोई और डीज़ाइन बनाने की जाइज़ व नाजाइज़ दोनों सूरतें हो सकती हैं। जिन सूरतों में चेहरे पर पेइन्ट की वज्ह से चेहरा बिगड़ा हुवा, बद नुमा दिखाई दे इन सूरतों में पेइन्ट करना, करवाना शरई ए'तिबार से मुस्ला या'नी चेहरा बिगाड़ने के हुक्म में है और येह ह़राम है और जिन सूरतों में पेइन्ट की वज्ह से चेहरा ख़ूब सूरत लगे या कम अज़ कम बिगड़ा हुवा न लगे तो येह नाजाइज़ व गुनाह नहीं।

सुवाल बदन गूदवाना या'नी जिस्म पर टेटू (Tatto) बनवाना कैसा है ?

जवाब आ'ला ह़ज़रत, इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : बदन गूदवाना शरअ़न ह़राम है।(4) मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान

1 . . . درمختار، کتاب الحظر والاباحۃ، فصل فی البیع، ۹/۲۹۲۔

2 . . . اشعۃ اللمعات، خطبۃ الکتاب، ۱/۳۷۔

3 . . . ردالمحتار، کتاب الحظر والاباحۃ، فصل فی النظر والمس، ۹/۶۱۵۔

4 .....फ़तावा रज़विय्या, 24 / 343

नईमी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللہِ القَوِی फ़रमाते हैं : गुदवाने से मुराद सूई के ज़रीए नील या सुर्मा जिस्म में लगा कर नक़्शो निगार कराना या अपना नाम लिखवाना येह दोनों काम ममनूअ़ हैं, त़रीक़ए मुशरिकीन हैं और त़रीक़ए कुफ़्फ़ार व फ़ुज्जार।[1]

सुवाल सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان के पास तशरीफ़ ले जाते वक़्त हुज़ूर रह़मते आ़लम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم किस त़रह़ ज़ीनत फ़रमाते ?

जवाब सरवरे कौनैन, शहनशाहे दारैन صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जब सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان के पास तशरीफ़ ले जाना चाहते तो पानी में देख कर अपने मुबारक इमामे और मुक़द्दस बालों को दुरुस्त फ़रमाते। ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने अ़र्ज़ की : क्या आप भी ऐसा करते हैं ? इरशाद फ़रमाया : हां, बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पसन्द फ़रमाता है कि बन्दा अपने मुसलमान भाइयों के पास जाने के लिये ज़ीनत इख़्तियार करे।[2]

बैठने, सोने और चलने के आदाब

सुवाल बैठते वक़्त मुंह किस सम्त रखना सुन्नत है ?

जवाब बैठते वक़्त का'बतुल्लाह शरीफ़ की सम्त मुंह रखना सुन्नत है।[3]

सुवाल एह़तिबा किसे कहते हैं और क्या येह सुन्नत है ?

जवाब एह़तिबा (बैठने का एक अन्दाज़) की सूरत येह है कि आदमी सुरीन को ज़मीन पर रख दे और घुटने खड़े कर के दोनों हाथों से घेर ले और एक हाथ को दूसरे से पकड़ ले इस क़िस्म का बैठना

1.....मिरआतुल मनाजीह़, 4 / 231

2...اتحاف السادۃ المتقین، کتاب ذم الجاہ والریاء، بیان حقیقۃ الریاء۔۔۔الخ، ۱۰/ ۹۳۔

3...ابوداود، کتاب الجنائز، باب الجلوس عند القبر، ۳/ ۲۸۶، حدیث: ۳۲۱۲ ماخوذاً۔

तवाज़ोअ़ और इन्किसार में शुमार होता है।[1] ह़ज़रते अबू सईद खुदरी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जब मस्जिद में बैठते तो दोनों हाथों से एह़्तिबा करते।[2]

सुवाल कौन से जानवरों की खाल पर बैठना मन्अ़ है और क्यूं ?

जवाब शेर और चीते की खाल पर बैठना मन्अ़ है क्यूंकि इस से गुरूर पैदा होता है।[3]

सुवाल मजलिस के इख़्तिताम पर कौन सी दुआ़ पढ़ी जाती है और इस की क्या फ़ज़ीलत है ?

जवाब हुज़ूर मुअ़ल्लिमे काइनात, शाहे मौजूदात صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : चन्द कलिमात हैं कि जो शख़्स मजलिस से फ़ारिग़ हो कर इन को तीन मरतबा कह लेगा तो येह उस के गुनाहों के लिये कफ़्फ़ारा हो जाते हैं और जो शख़्स मजलिसे ख़ैर व मजलिसे ज़िक्र में इन को कहेगा तो येह उस के लिये तस्दीक़ की मोहर हो जाते हैं जिस त़रह़ किसी तह़रीर पर अंगूठी से मोहर लगाई जाती है। वोह कलिमात येह हैं :

سُبْحَانَكَ اللّٰهُمَّ وَبِحَمْدِكَ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ اَسْتَغْفِرُكَ وَاَتُوْبُ اِلَيْكَ۔[4]

सुवाल ह़दीसे पाक में रात के वक़्त बरतन छुपाने का क्या हुक्म है ?

जवाब ह़दीसे पाक में है कि साल में एक रात ऐसी होती है कि उस में वबा उतरती है, अगर वोह ऐसी जगह से गुज़रे जहां कोई बरतन

1.....बहारे शरीअ़त, हि़स्सा, 16, 3 / 432

2...مشکاۃ المصابیح، کتاب الادب، باب الجلوس والنوم والمشی، ۲/۱۷۴، حدیث: ۴۷۱۳۔

3.....इस्लामी ज़िन्दगी, स. 84

4...ابوداود، کتاب الادب، باب فی کفارۃ المجلس، ۴/۳۴۷، حدیث: ۴۸۵۷۔

छुपा (ढका) हुवा न हो या मुश्क का मुंह बन्धा हुवा न हो तो वोह वबा उस में उतर जाती है।(1) इसी लिये फ़रमाया गया कि शाम के वक़्त बरतन छुपा दो और मुश्क का मुंह बान्ध दो, अगर कुछ न मिले तो بِسۡمِ الله कह कर एक लकड़ी आड़ी कर के रख दे।(2)

सुवाल सोते वक़्त कौन सा अ़मल करने से اِنۡ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ ईमान पर ख़ातिमा होगा ?

जवाब सोते वक़्त अपने सब औराद के बा'द सूरए काफ़िरून रोज़ाना पढ़ लिया कीजिये इस के बा'द कलाम वग़ैरा न कीजिये हां अगर ज़रूरत हो तो कलाम करने के बा'द फिर सूरए काफ़िरून तिलावत कर लें, اِنۡ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ ख़ातिमा ईमान पर होगा।(3)

सुवाल सोते वक़्त कौन सा अ़मल करने से ना गहानी आफ़ात से हिफ़ाज़त होती है ?

जवाब अगर सोते वक़्त आयतुल कुरसी पढ़ ले तो रात भर वोह मकान चोरी, आग और ना गहानी आफ़ात से मह़फ़ूज़ रहेगा और पढ़ने वाला बद ख़्वाबी और जिन्नात के ख़लल से बचा रहेगा।(4)

सुवाल क़ुरआने करीम में नेक बन्दों के चलने का अन्दाज़ क्या बताया गया है ?

जवाब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

﴿وَعِبَادُ الرَّحۡمٰنِ الَّذِيۡنَ يَمۡشُوۡنَ عَلَى الۡاَرۡضِ هَوۡنًا﴾ (پ۱۹، الفرقان: ۶۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और रह़मान के वोह बन्दे कि ज़मीन पर आहिस्ता चलते हैं। या'नी इत़मीनान व वक़ार के साथ

---

1 ...مسلم، کتاب الاشربۃ، باب الامر بتغطیۃ الاناء۔۔۔الخ، ص ۸۵۹، حدیث: ۵۲۵۵۔

2 ...مسلم، کتاب الاشربۃ، باب الامر بتغطیۃ الاناء۔۔۔الخ، ص ۸۵۸، حدیث: ۵۲۴۶۔

3 .....मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत, स. 311

4 .....इस्लामी ज़िन्दगी, स. 130

मुतवाज़ेआना शान से न कि मुतकब्बिराना त़रीक़े पर, जूते खट खटाते, पाउं ज़ोर से मारते, इतराते कि येह मुतकब्बिरीन की शान है और शरअ़ ने इस को मन्अ़ फ़रमाया।[1]

सुवाल प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم किस त़रह़ चलते थे ?

जवाब ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि जब रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم चलते तो झुके हुए मा'लूम होते थे।[2]

सुवाल चलते चलते दो आदमियों के बीच कोई चीज़ ह़ाइल हो जाए तो दोबारा मिलने पर वोह क्या करें ?

जवाब रास्ते में चलते हुए दो आदमियों के बीच में कोई चीज़ ह़ाइल हो जाए तो दोबारा मुलाक़ात पर फिर सलाम किया जाए। ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि हुज़ूर ताजदारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जब तुम में से कोई शख़्स अपने इस्लामी भाई को मिले तो उस को सलाम करे और अगर उन के दरमियान दरख़्त दीवार या पथ्थर वग़ैरा ह़ाइल हो जाए और वोह फिर उस से मिले तो दोबारा उस को सलाम करे।[3]

सुवाल वोह कौन सी ज़मीन है जिस पर चलना ह़राम है ?

जवाब (क़ब्रिस्तान में क़ब्रें मिटा कर) जो नया रास्ता निकाला गया हो उस पर चलना ह़राम है।[4] बल्कि नए रास्ते का सिर्फ़ गुमान हो तब भी उस पर चलना नाजाइज़ व गुनाह है।[5]

---

1 .....ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, पारह 19, अल फ़ुरक़ान, तह़्तुल आयत : 63, स. 678

2 . . . ابوداود، کتاب الادب، باب فی ھدی الرجل، ۴/۳۴۹، حدیث: ۴۸۶۳۔

3 . . . ابوداود، کتاب الادب، باب فی الرجل یفارق الرجل۔۔۔ الخ، ۴/۴۵۰، حدیث: ۵۲۰۰۔

4 . . . ردالمحتار، کتاب الطھارۃ، مطلب القول مرجح علی الفعل، ۱/۲۱۲۔

5 . . . درمختار، کتاب الصلاۃ، باب صلاۃ الجنازۃ، ۳/۱۸۳۔

सुवाल रास्ते से तक्लीफ़ देह चीज़ हटा देने का क्या सवाब है ?

जवाब अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के ह़बीब, ह़बीबे लबीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जिस ने मुसलमानों के रास्ते से तक्लीफ़ देह चीज़ हटा दी उस के लिये एक नेकी लिखी जाएगी और जिस के लिये अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के हां एक नेकी लिख दी गई तो वोह उस नेकी के सबब उसे जन्नत में दाख़िल फ़रमा देगा ।(1) नीज़ मरवी है कि ह़ुज़ूर नबिय्ये रह़मत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : एक शख़्स ने कभी कोई नेक अ़मल नहीं किया था सिवाए येह कि उस ने रास्ते से कांटेदार शाख़ को हटा दिया तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने उस का येह अ़मल क़बूल फ़रमा कर उसे जन्नत में दाख़िल फ़रमा दिया ।(2)

सलाम और मुसाफ़ह़ा

सुवाल सब से पहले "اَلسَّلَامُ عَلَيْكُم" के अल्फ़ाज़ किस ने अदा किये ?

जवाब सब से पहले "اَلسَّلَامُ عَلَيْكُم" के अल्फ़ाज़ ह़ज़रते सय्यिदुना आदम عَلَيْهِ السَّلَام ने अदा किये और जवाब में फ़िरिश्तों ने "وَعَلَيْكَ السَّلَامُ وَرَحْمَةُ اللّٰه" के अल्फ़ाज़ कहे ।(3)

सुवाल सलाम में बुख़्ल करने वाले को ह़दीस शरीफ़ में क्या फ़रमाया गया है ?

जवाब ह़ुज़ूर नबिय्ये पाक, साह़िबे लौलाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : लोगों में सब से बड़ा बख़ील वोह है जो सलाम करने में बुख़्ल करे ।(4)

---

1 ...معجم اوسط، ۱/۹، حدیث:۳۲۔

2 ...ابوداود، کتاب الادب، باب فی اماطة الاذی عن الطریق، ۴/۴۶۲، حدیث:۵۲۴۵۔

3 ...بخاری، کتاب الاستئذان، باب بدء السلام، ۴/۱۶۴، حدیث:۶۲۲۷۔

4 ...معجم صغیر، ۱/۱۲۱، حدیث:۳۳۶۔

सुवाल अल्लाह عَزَّوَجَلَّ कौन से तीन अफ़राद का ज़ामिन है ?

जवाब हज़रते सय्यिदुना अबू उमामा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि हुज़ूर नबिय्ये रहमत, शफ़ीए उम्मत صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : तीन अश्ख़ास का ज़ामिन अल्लाह عَزَّوَجَلَّ है, अगर ज़िन्दा रहें तो रिज़्क़ दिये जाएं और अगर मर जाएं तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उन्हें जन्नत में दाख़िल फ़रमाएगा : (1) जो अपने घर में दाख़िल हो कर सलाम करे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस का ज़ामिन है (2) जो मस्जिद की तरफ़ चले अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस का ज़ामिन है और (3) जो राहे खुदा में निकले अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस का ज़ामिन है।[1]

सुवाल हदीसे पाक की रौशनी में बताइये कि कौन किस को सलाम करे ?

जवाब हुज़ूर ताजदारे रिसालत صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : सुवार पैदल को सलाम करे, चलने वाला बैठे हुए को, थोड़े लोग ज़ियादा को और छोटा बड़े को सलाम करे।[2] नीज़ फ़तावा आलमगीरी में है : पीछे से आने वाला आगे वाले को सलाम करे।[3]

सुवाल एक जगह जम्अ लोगों को किसी ने आ कर सलाम किया तो किस पर जवाब देना लाज़िम होगा ?

जवाब लोग जम्अ हों और कोई आ कर सलाम करे तो किसी एक का जवाब दे देना काफ़ी है। अगर एक ने भी जवाब न दिया तो सब गुनाहगार होंगे।[4]

सुवाल घर में बरकत का कोई नुस्ख़ा बताइये ?

---

1 ...الاحسان، کتاب البر والاحسان، باب الرحمة، ۱/۳۵۹، حدیث: ۴۹۹۔

2 ...مسلم، کتاب السلام، باب یسلم الراکب علی الماشی...الخ، ص۹۱۸، حدیث: ۵۶۴۶۔
بخاری، کتاب الاستئذان، باب تسلیم القلیل علی الکثیر، ۴/۱۶۶، حدیث: ۶۲۳۱۔

3 ...فتاوی ھندیة، کتاب الکراھیة، الباب السابع فی السلام وتشمیت العاطس، ۵/۳۲۵۔

4 ...فتاوی ھندیة، کتاب الکراھیة، الباب السابع فی السلام وتشمیت العاطس، ۵/۳۲۵۔

जवाब जब घर में दाख़िल हों तो घर वालों को सलाम किया करें इस से घर में बरकत होती है। मरवी है कि सरकारे मदीना, राहते क़ल्बो सीना صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से फ़रमाया : बेटा ! जब तुम अपने घर में दाख़िल हो तो सलाम कहो, येह तुम्हारे लिये और तुम्हारे घर वालों के लिये बरकत का बाइस होगा।[1]

सुवाल किस अ़मल से "सलाम" की तक्मील होती है ?

जवाब सलाम के साथ साथ मुसाफ़ह़ा करने से सलाम की तक्मील होती है। हुज़ूर नबिय्ये मुकर्रम, रसूले मोह़तशम صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : मरीज़ की पूरी इ़यादत येह है कि उस की पेशानी पर हाथ रख कर पूछे कि मिज़ाज कैसा है ?[2] और पूरी तह़िय्यत (या'नी सलाम की तक्मील) येह है कि मुसाफ़ह़ा भी किया जाए।[3]

सुवाल सब से पहले हुज़ूर रह़मते आ़लम صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से मुसाफ़ह़ा का शरफ़ किन को ह़ासिल हुवा ?

जवाब वोह यमनी अफ़राद थे जिन्हों ने सब से पहले मक्की मदनी आक़ा, दो आ़लम के दाता صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से मुसाफ़ह़ा किया था। हज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि जब अहले यमन बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िर हुए तो हुज़ूर नबिय्ये करीम,

---

1 ...ترمذی، کتاب الاستئذان والادب، باب ماجاء فی التسلیم اذا دخل بیتہ، ۴/۳۲۰، حدیث:۲۷۰۷۔

2 .....मरीज़ के सर या पेशानी पर हाथ रख कर इ़यादत करना उस वक़्त है जब कोई शरई रुकावट न हो और मरीज़ की ख़ुद ख़्वाहिश हो वरना उस के सर पर हाथ न रखे।
(बहारे शरीअ़त, 3 / 505 माख़ूज़न)

3 ...ترمذی، کتاب الاستئذان والادب، باب ماجاء فی المصافحۃ، ۴/۳۳۴، حدیث:۲۷۴۰۔

रऊफ़ुर्रहीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : तुम्हारे पास अह्ले यमन आए हैं और वोह पहले आदमी हैं जिन्हों ने आ कर मुसाफ़हा किया।(1)

सुवाल मुसाफ़हा किस त़रह़ करना चाहिये ?

जवाब मुस्कुरा कर गर्म जोशी से मुसाफ़हा करें। दुरूद शरीफ़ पढ़ें और हो सके तो येह दुआ भी पढ़ें : يَغْفِرُ اللّٰهُ لَنَا وَلَكُمْ (या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमारी और तुम्हारी मग़्फ़िरत फ़रमाए)।(2)

सुवाल मुसाफ़हा की बरकत से कौन से बात़िनी मरज़ का ख़ातिमा होता है ?

जवाब आपस में हाथ मिलाने से बुग़्ज़ो कीना ख़त्म होता है। हुज़ूर ताजदारे दो जहान, रह़मते आ़लमिय्यान صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : एक दूसरे के साथ मुसाफ़हा करो इस से कीना जाता रहता है और तोह़्फ़ा भेजो आपस में मह़ब्बत होगी और दुश्मनी जाती रहेगी।(3)

सुवाल ख़ुशी के मौक़अ़ पर गले मिलना कैसा है ?

जवाब ख़ुशी में किसी से गले मिलना सुन्नत है।(4) ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا बयान करती हैं कि ह़ज़रते ज़ैद बिन ह़ारिसा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه मदीनए त़य्यिबा आए तो उस वक़्त हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मेरे घर में थे। ह़ज़रते ज़ैद رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه काशानए रिसालत पर ह़ाज़िर हुए और दरवाज़ा खट

---

1 ...ابوداود، کتاب الادب، باب فی المصافحۃ، ۴/ ۴۵۳، حدیث: ۵۲۱۳۔

2 .....सुन्नतें और आदाब, स. 28

3 ...موطا امام مالک، کتاب حسن الخلق، باب ماجاء فی المهاجرۃ، ۲/ ۴۰۷، حدیث: ۱۷۳۱۔

4 .....मिरआतुल मनाजीह़, 6 / 359

खटाया तो हुज़ूर रहमते आलम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उठे और कपड़ा खींचते हुए उन की तरफ़ तशरीफ़ ले गए और उन से मुआनक़ा किया और उन को बोसा दिया।(1)

सुवाल बुज़ुर्गाने दीन की दस्तबोसी की फ़ज़ीलत बयान कीजिये ?

जवाब शैख़ुल मशाइख़ हज़रते सय्यिदुना बाबा फ़रीदुद्दीन गंजे शकर رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ इरशाद फ़रमाते हैं : क़ियामत के दिन बहुत सारे गुनाहगार, बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَھُمُ اللّٰہُ الْمُبِیْن की दस्तबोसी की बरकत से बख़्शे जाएंगे और दोज़ख़ के अ़ज़ाब से नजात ह़ासिल करेंगे।(2)

क़ुरआने करीम (फ़ज़ाइल व मा'लूमात)

सुवाल क़ुरआने पाक ह़िफ़्ज़ करने के मुतअ़ल्लिक़ शरई हुक्म क्या है ?

जवाब एक आयत का ह़िफ़्ज़ करना हर मुकल्लफ़ (या'नी आ़क़िल बालिग़) मुसलमान पर फ़र्ज़े ऐन है और पूरे क़ुरआने मजीद का ह़िफ़्ज़ करना फ़र्ज़े किफ़ाया है (कि अगर चन्द मुसलमान ह़िफ़्ज़ कर लें तो दूसरों के ज़िम्मे ज़बानी याद करना लाज़िम नहीं रहेगा) और सूरए फ़ातिह़ा और एक दूसरी छोटी सूरत या इस की मिस्ल तीन छोटी आयतें या एक बड़ी आयत का याद करना हर एक के लिये वाजिब है।(3)

सुवाल कम अ़र्से में ह़िफ़्ज़ करने वाले बा'ज़ बुज़ुर्गों के नाम बताइये ?

---

1 . . . ترمذی، کتاب الاستئذان، باب ماجاء فی المعانقۃ والقبلۃ، ۴/۳۲۵، حدیث: ۲۷۴۱۔

2 .....हिश्त बिहिश्त, स. 382

3 . . . درمختار، کتاب الصلاۃ، فصل فی القراءۃ، ۲/۳۱۵۔

जवाब थोड़ी मुद्दत में हिफ़्ज़ करने वाले चन्द बुज़ुर्गों के नाम येह हैं :

(1) हज़रते सय्यिदुना इमाम मुहम्मद बिन हसन शैबानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّورانی ने सात दिन में हिफ़्ज़ किया।[1]

(2) सय्यिदुना आ'ला हज़रत इमाम अहमद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْمَنَّان ने एक माह में हिफ़्ज़ किया।[2]

(3) हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद मा'सूम नक़्शबन्दी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَلِى ने 3 महीने में हिफ़्ज़ किया।[3]

सुवाल शैतान आदमी के किस अ़मल से रोता है ?

जवाब जब औलादे आदम में से कोई शख़्स तिलावते क़ुरआन करता है और सजदे की आयत पढ़ कर सजदा करता है तो शैतान ज़ारो क़ितार रोता है और कहता है : हाए अफ़्सोस ! इब्ने आदम को सजदे का हुक्म मिला और उस ने सजदा कर लिया। उस के लिये जन्नत है और मुझे सजदे का हुक्म दिया गया तो मैं ने इन्कार किया मेरे लिये दोज़ख़ है।[4]

सुवाल क़ुरआने मजीद में किस की आवाज़ को सब से बुरा फ़रमाया गया है ?

जवाब क़ुरआने करीम में गधे की आवाज़ को सब से बुरा कहा गया है। इरशादे बारी तआ़ला है : ﴿اِنَّ اَنْكَرَ الْاَصْوَاتِ لَصَوْتُ الْحَمِيْرِ﴾ (پ۲۱، لقمان:۱۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक सब आवाज़ों में बुरी आवाज़, आवाज़ गधे की।

1 . . . مناقب امام اعظم للکردری، الامام محمد حفظ القرآن فی سبعة ایام، ۲/۱۵۵۔

2 .....हयाते आ'ला हज़रत, 1 / 208

3 . . . جامع کرامات اولیاء، محمد معصوم النقشبندی، ۱/۳۳۳۔

4 . . . مسلم، کتاب الایمان، باب بیان اطلاق اسم الکفر ـــ الخ، ص ۵۸، حدیث: ۲۴۴۔

सुवाल सात मश्हूर क़ारी सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان के नाम बताइये ?

जवाब सात मश्हूर क़ुर्रा सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم के नाम येह हैं : (1) अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्मान बिन अ़फ़्फ़ान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ (2) अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْھَہُ الْکَرِیْم (3) ह़ज़रते सय्यिदुना उबय बिन का'ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ (4) ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन साबित رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ (5) ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ (6) ह़ज़रते सय्यिदुना अद्दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ (7) ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ।[1]

सुवाल क़िराअते सब्आ़ के इमामों के नाम क्या हैं ?

जवाब क़िराअते सब्आ़ के इमामों के नाम येह हैं : (1) ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम नाफ़ेअ़ عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الرَّافِع । (2) ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अ़ब्दुल्लाह बिन कसीर عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَدِیْر । (3) ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबू अ़म्र ज़ब्बान رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ । (4) ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अ़ब्दुल्लाह इब्ने आ़मिर عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْغَافِر । (5) ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम आ़सिम رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ । (6) ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ह़म्ज़ा رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ । (7) ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम किसाई عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی ।[2]

सुवाल क़ुरआने करीम में लफ़्ज़ "सूरत" कितनी बार आया है ?

जवाब क़ुरआने पाक में लफ़्ज़ "सूरत" 9 बार आया है ।

सुवाल क़ुरआने करीम में मज़्कूर "اَرْذَلِ الْعُمُر" से क्या मुराद है ?

---

1 ... الاتقان، النوع العشرون فی معرفۃ حفاظہ ورواتہ، فصل فی ذکر المشتھرین بالاقراء، ۱/۲۲۸۔

2 ... الاتقان، النوع العشرون فی معرفۃ حفاظہ ورواتہ، فصل فی ذکر المشتھرین بالاقراء، ۱/۲۲۹۔
الکنز فی قراءات العشر، ص ۲۰، ۲۳، مُلتقطاً۔

जवाब जिस का ज़माना उ़म्रे इन्सानी के मरातिब में साठ साल के बा'द आता है कि कुवा (त़ाक़तें) और ह़वास सब नाकारा हो जाते हैं और इन्सान की येह ह़ालत हो जाती है कि जानने के बा'द कुछ न जाने और नादानी में बच्चों से ज़ियादा बदतर हो जाए।(1)

सुवाल वोह कौन लोग हैं जो "اَرْذَلِ الْعُمُر" की ह़ालत से मह़फ़ूज़ रहेंगे ?

जवाब जो क़ुरआने पाक की तिलावत के साथ साथ इस के अह़कामात पर अ़मल पैरा हो, इसी त़रह़ बा अ़मल उ़लमाए किराम "اَرْذَلِ الْعُمُر" की ह़ालत से मह़फ़ूज़ रहेंगे बल्कि जूं जूं उन की उ़म्र में इज़ाफ़ा होगा उन के इ़ल्म, उन की समझ और मा'रिफ़त में भी तरक़्क़ी होती रहेगी।

सुवाल क़ुरआने पाक की सूरए क़मर में "शक़्क़ुल क़मर" से क्या मुराद है ?

जवाब "शक़्क़ुल क़मर" से मुराद ह़ुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام का वोह "मो'जिज़ा" है जिस में आप ने चांद को दो ह़िस्से कर के दिखाया।(2)

सुवाल क़ुरआने पाक में मज़्कूर "तूरे सीना" से क्या मुराद है ?

जवाब येह वोह पहाड़ है जिस पर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा عَلٰی نَبِیِّنَاوَعَلَیْهِ الصَّلٰوةُوَالسَّلَام से कलाम फ़रमाया।(3)

सुवाल क़ुरआने करीम में लफ़्ज़े "क़ुरआन" कितनी बार आया है ?

जवाब क़ुरआने करीम में कलिमा "क़ुरआन" सत्तर (70) बार आया है।

---

(1).....ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, पारह 14, अन्नह़्ल, तह़्तुल आयत : 70, स. 512

(2).....ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, पारह 27, अल क़मर, तह़्तुल आयत : 1, स. 976 मुलख़्ख़सन।

(3)...درمنثور،پ۱۸، المؤمنون، تحت الآیۃ:۲۰، ۶/۹۵۔

आयात और सूरतों की मा'लूमात

सुवाल सूरए आले इमरान में मज़्कूर दो मश्हूर ग़ज़्वात के नाम बताइये ?

जवाब सूरए आले इमरान में बयान होने वाले दो मश्हूर ग़ज़्वात ग़ज़्वए बद्र[1] और ग़ज़्वए उहुद हैं।[2]

सुवाल किस सूरत के नुज़ूल के वक़्त 70 हज़ार फ़िरिश्ते उतरे थे ?

जवाब सूरए अन्आम के नुज़ूल के वक़्त 70 हज़ार फ़िरिश्ते आए जिन से आस्मानों के कनारे भर गए।[3]

सुवाल मक्की सूरतों में सब से बड़ी सूरत कौन सी है ?

जवाब सूरए आ'राफ़ मक्की सूरतों में सब से बड़ी सूरत है।[4]

सुवाल सूरए यासीन में कितने हुरूफ़ हैं ?

जवाब तीन हज़ार हुरूफ़ हैं।[5]

सुवाल सूरए वाक़िआ की कोई एक फ़ज़ीलत सुनाइये ?

जवाब हुज़ूर सय्यिदे आलम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जो शख़्स सूरए वाक़िआ को हर रात पढ़े वोह फ़ाक़े से हमेशा महफ़ूज़ रहेगा।[6]

---

1 ...پ۴،اٰل عمران:۱۲۳۔

2 ...پ۴،اٰل عمران:۱۶۸،۱۷۲۔

3 .....ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, पारह 7, अल अन्आम, स. 245

4 .....तफ़्सीर सिरातुल जिनान, पारह 8, अल आ'राफ़, 3 / 263

5 .....ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, पारह 22, यासीन, स. 814

6 ...مسند حارث، کتاب التفسیر، سورۃ الواقعۃ، ۲/۷۲۹، حدیث:۷۲۱۔

सुवाल दुश्मन का ख़ौफ़ हो तो कौन सी सूरत पढ़ी जाए ?

जवाब जब दुश्मन का ख़ौफ़ हो तो सूरए क़ुरैश पढ़ लेने से हर बला से अमान मिलेगी ।(1)

सुवाल कौन सी आयते तृय्यिबा तमाम आयतों की सरदार है ?

जवाब आयतुल कुरसी ।(2)

सुवाल ह़ज़रते सय्यिदुना उ़ज़ैर عَلَيْهِ السَّلَام के दोबारा ज़िन्दा होने का वाक़िआ़ किस सूरत में है ?

जवाब ह़ज़रते सय्यिदुना उ़ज़ैर عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के सौ बरस बा'द दोबारा ज़िन्दा होने के वाक़िए़ को पारह 3 सूरतुल बक़रह की आयत नम्बर 259 में बयान किया गया है ।

सुवाल क़ुरआने पाक की वोह कौन सी आयत है जो तौरैत की सब से पहली आयत थी ?

जवाब सूरए अन्आ़म की पहली आयत ।(3)

सुवाल ब वक़्ते हिजरत ग़ारे सौर में नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ के दरमियान होने वाली गुफ़्तगू किस सूरत में बयान की गई ?

जवाब येह मुबारक गुफ़्तगू पारह 10 सूरए तौबह की आयत नम्बर 40 में बयान की गई ।

सुवाल सूरए कह्फ़ की पहली दस आयतें याद करने की क्या फ़ज़ीलत है ?

जवाब हु़ज़ूर जाने आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : सूरए कह्फ़ की पहली दस आयतें जो शख़्स याद करे वोह दज्जाल से मह़फ़ूज़ रहेगा ।(4)

---

1 ... الحصن الحصين، كتاب ادعية السفر، ص ٨٠۔

2 ... ترمذی، کتاب فضائل القران، باب ماجاء فی سوره البقرۃ ۔۔۔ الخ، ۴/۴۰۲، حدیث: ۲۸۸۷۔

3 ... تفسیر خازن، پ۷، الانعام، تحت الآیۃ: ۱، ۲/۲۔

4 ... مسلم، کتاب صلاۃ المسافرین وقصرها، باب فضل سورۃ الکهف وایۃ الکرسی، ص ۳۱۵، حدیث: ۱۸۸۳۔

सुवाल सोते वक़्त कौन सी सूरत पढ़ना शिर्क से बराअत है ?

जवाब वोह सूरए काफ़िरून है, हुज़ूर नबिय्ये रह़मत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जब तुम अपने बिस्तर पर जाओ तो "قُلْ يٰۤاَيُّهَا الْكٰفِرُوْنَ" (पूरी सूरत) पढ़ लिया करो कि येह शिर्क से बराअत है।(1)

ह़दीस और मुह़द्दिसीन

सुवाल ह़दीसे मुबारका लिखते या पढ़ते वक़्त किस चीज़ की एह़तियात़ करनी चाहिये ?

जवाब ह़दीसे मुबारका लिखते या पढ़ते वक़्त जब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का नामे मुबारक आए वहां "عَزَّوَجَلَّ" या "تَعَالٰی" या "سُبْحَانَهٗ وَتَعَالٰی" या "تَبَارَكَ وَتَعَالٰی" जैसे अल्फ़ाज़ और जहां हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का ज़िक्रे मुबारक आए वहां दुरूद शरीफ़, इसी त़रह़ जहां सह़ाबए किराम व बुज़ुर्गाने दीन رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُم का नामे मुबारक आए वहां कलिमाते तरद्दी व तरह़्हुम (या'नी رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه और رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه) लिखना और पढ़ना मुस्तह़ब है।(2)

सुवाल ह़दीसे क़ुदसी किसे कहते हैं ?

जवाब वोह ह़दीस शरीफ़ जिस के रावी (बात बयान फ़रमाने वाले) हुज़ूर नबिय्ये पाक, स़ाह़िबे लौलाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हों और उस बात की निस्बत **अल्लाह** तआ़ला की त़रफ़ हो।(3)

सुवाल जब ह़दीसे क़ुदसी भी फ़रमाने इलाही है तो क़ुरआने पाक व ह़दीसे क़ुदसी में क्या फ़र्क़ है ?

---

1 ...معجم اوسط، ۱/۲۵۸، حدیث:۸۸۸۔

2 ...شرح صحیح مسلم للنووی، مقدمة الشارح، ۱/۳۹، ملخصاً۔

3 ...تیسیر مصطلح الحدیث، الباب الاول، الفصل الرابع، ص ۹۴۔

जवाब हदीसे कुदसी और कुरआन में फ़र्क़ येह है कि हदीसे कुदसी ख़्वाब, इल्हाम से भी हासिल हो सकती है। कुरआन बेदारी ही में आएगा। नीज़ कुरआन के लफ़्ज़ भी रब के हैं, हदीस का मज़्मून रब का, अल्फ़ाज़ हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के।[1]

सुवाल "मुक्सिरीन सहाबा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُم" से कौन मुराद हैं नीज़ इन में से चन्द के नाम भी बताइये ?

जवाब वोह सहाबए किराम رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُم जिन से कसीर ता'दाद में अहादीस मरवी हैं उन को "मुक्सिरीन सहाबा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُم" कहा जाता है, येह वोह हज़रात हैं जिन की मरविय्यात (रिवायत कर्दा अहादीस) की ता'दाद दो हज़ार से ज़ाइद है इन (में से चन्द) के अस्माए गिरामी दर्जे ज़ैल हैं : (1) हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه, आप से 5374 अहादीसे करीमा मरवी हैं। (2) हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا, आप से 2630 अहादीसे करीमा मरवी हैं। (3) हज़रते सय्यिदुना जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه, इन से 2540 अहादीसे तय्यिबा मरवी हैं।[2]

सुवाल अहादीसे कुदसिय्या की ता'दाद कितनी है ?

जवाब अहादीसे कुदसिय्या की ता'दाद 200 से ज़ियादा है।[3]

---

1 .....मिरआतुल मनाजीह, 1 / 42

2 . . . تیسیر مصطلح الحدیث، الباب الرابع، الفصل الثانی، ص ١٥١ -

3 . . . تیسیر مصطلح الحدیث، الباب الاول، الفصل الرابع، ص ٩٣ -

सुवाल हदीसे पाक याद कर के दूसरों तक पहुंचाने की क्या फ़ज़ीलत है ?

जवाब हुज़ूर ताजदारे ख़त्मे नुबुव्वत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस शख़्स को तरो ताज़ा रखे जिस ने हम से कोई हदीस सुनी फिर उसे याद कर लिया यहां तक कि उसे (दूसरों तक) पहुंचा दिया।(1)

सुवाल अपने पास से हदीस घड़ने की क्या वईद है ?

जवाब हुज़ूरे अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : मेरी हदीस रिवायत करने से बचो सिवा उन के जिन को तुम जानते हो क्यूंकि जो जान बूझ कर मुझ पर झूट बांधे वोह अपना ठिकाना जहन्नम में बना ले।(2) हकीमुल उम्मत, मुफ़्ती अहमद यार ख़ान नईमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَنِى इस हदीस शरीफ़ के तहत फ़रमाते हैं : अगर्चे हर एक पर झूट बांधना बोहतान और गुनाह है मगर हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर झूट बांधना बहुत गुनाह है कि इस से दीन बिगड़ता है।(3)

सुवाल चालीस अहादीस याद करने या किताबी शक्ल में शाएअ़ करने की क्या फ़ज़ीलत है ?

जवाब हज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه से मरवी है हुज़ूर ताजदारे रिसालत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया कि जो मेरी उम्मत पर चालीस अह़कामे दीन की हदीसें हिफ़्ज़ करे उसे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़क़ीह उठाएगा और क़ियामत के दिन मैं उस का शफ़ीअ़ व गवाह होऊंगा।(4) हकीमुल उम्मत, मुफ़्ती अहमद यार ख़ान नईमी

---

1 ...ابوداود، کتاب العلم، باب فضل نشر العلم، ۳/۴۵۰، حدیث:۳۶۶۰۔

2 ...ترمذی، کتاب التفسیر، باب ماجاء فی الذی یفسر القراٰن برأیه، ۴/۴۳۹، حدیث:۲۹۶۰۔

3 .....मिरआतुल मनाजीह, 1 / 207

4 ...شعب الایمان، باب فی طلب العلم، فصل فی فضل العلم وشرفه، ۲/۲۷۰، حدیث:۱۷۲۶۔

عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ القَوِی इस ह़दीस शरीफ़ की शर्ह़ में फ़रमाते हैं : इस ह़दीस के बहुत पहलू हैं : चालीस ह़दीसें याद कर के मुसलमान को सुनाना, छाप कर उन में तक़्सीम करना, तर्जमा या शर्ह़ कर के लोगों को समझाना, रावियों से सुन कर किताबी शक्ल में जम्अ़ करना, सब ही इस में दाख़िल हैं या'नी जो किसी त़रह़ दीनी मसाइल की चालीस ह़दीसें मेरी उम्मत तक पहुंचा दे तो क़ियामत में उस का ह़श्र उ़लमाए दीन के ज़ुमरे में होगा और मैं उस की ख़ुसूसी शफ़ाअ़त और उस के ईमान और तक़्वे की ख़ुसूसी गवाही दूंगा वरना उ़मूमी शफ़ाअ़त और गवाही तो हर मुसलमान को नसीब होगी। इसी ह़दीस की बिना पर क़रीबन तमाम मुह़द्दिसीन ने जहां ह़दीसों के दफ़्तर लिखे वहां अ़लाह़दा **चहल ह़दीस** जिसे "अरबईनिय्या" कहते हैं जम्अ़ कीं।(1)

सुवाल ह़दीस पर ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे आ'ज़म عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْاَکْرَم की किताब का नाम क्या है ?

जवाब ह़दीस पर आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की किताब का नाम "मुस्नदे इमामे आ'ज़म" है।(2)

सुवाल ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अह़मद बिन ह़म्बल عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْاَوَّل ने अपनी किताब "मुस्नद" कितनी अह़ादीस से इन्तिख़ाब कर के लिखी ?

जवाब आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने साढ़े सात लाख से ज़ाइद अह़ादीसे करीमा से मुन्तख़ब कर के "मुस्नदे अह़मद बिन ह़म्बल" तस्नीफ़ फ़रमाई।(3)

---

1 .....मिरआतुल मनाजीह़, 1 / 221

2 ...هدية العارفين، ۲/۴۹۵

3 ...طبقات شافعية، رقم ۷، احمد بن محمد بن حنبل، ۲/۳۱

सुवाल सिहाह सित्ता से कौन सी किताबें मुराद हैं नीज़ इन के नाम बताइये ?

जवाब हदीस शरीफ़ की छे मश्हूर व मो'तमद किताबों को सिहाह सित्ता कहते हैं। जिन के नाम येह हैं : (1) सहीह बुख़ारी (2) सहीह मुस्लिम (3) जामेअ़ तिरमिज़ी (4) सुनने अबी दावूद (5) सुनने नसाई और (6) सुनने इब्ने माजा।(1)

सुवाल हज़रते सय्यिदुना इमाम बुख़ारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِى ने कितने मुहद्दिसीन से अहादीस लीं नीज़ आप के शागिर्दों की ता'दाद कितनी थी ?

जवाब इमाम बुख़ारी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने 18 हज़ार मुहद्दिसीन से अहादीस नक़्ल कीं, एक लाख मुहद्दिसीन आप के शागिर्द हैं जिन में इमाम मुस्लिम, (इमाम) तिरमिज़ी, (इमाम) नसाई (वग़ैरा) ज़ियादा मश्हूर हैं।(2)

हुस्ने अख़्लाक़

सुवाल फ़राइज़ की अदाएगी के बा'द सब से पसन्दीदा अ़मल क्या है ?

जवाब हदीस शरीफ़ में है : फ़राइज़ की अदाएगी के बा'द **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक सब से ज़ियादा पसन्दीदा अ़मल मुसलमान के दिल में ख़ुशी दाख़िल करना है।(3)

सुवाल कौन से लोग रोज़े महशर मुस्तफ़ा जाने रहमत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सब से ज़ियादा क़रीब और महबूब होंगे ?

जवाब हज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से मरवी है कि हुज़ूर ताजदारे ख़त्मे नुबुव्वत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : रोज़े महशर तुम में मेरे नज़्दीक सब से ज़ियादा महबूब और मेरी मजलिस में

1 ...المقدمۃ فی الحدیث، الفصل العاشر فی الکتب الستۃ المشھورۃ، ص ۵۴-

2 .....मिरआतुल मनाजीह, 1 / 12, मुल्तक़तन।

3 ...معجم کبیر، ۱۱/ ۵۹، حدیث: ۱۱۰۷۹-

www.dawateislami.net

ज़ियादा क़रीब वोह लोग होंगे जो तुम में अच्छे अख़्लाक़ वाले और नर्म ख़ू हों, वोह लोगों से उल्फ़त रखते हों और लोग भी उन से महब्बत करते हों और क़ियामत के दिन तुम में से मेरे नज़्दीक सब से ज़ियादा ना पसन्दीदा और मेरी मजलिस में मुझ से ज़ियादा दूर वोह लोग होंगे जो फ़ुज़ूल गोई करने वाले, मुंह भर कर बातें करने वाले और तकब्बुर करने वाले हों।(1)

सुवाल हज़रते सय्यिदुना अबू ज़र गिफ़ारी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को बारगाहे रिसालत से हुस्ने अख़्लाक़ के मुतअ़ल्लिक़ क्या नसीहत फ़रमाई गई ?

जवाब हज़रते सय्यिदुना अबू ज़र गिफ़ारी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ बयान करते हैं कि हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझे यूं नसीहत फ़रमाई : जहां भी रहो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से डरते रहो और गुनाह सरज़द होने के बा'द नेकी कर लिया करो कि येह उस को मिटा देगी और लोगों के साथ अच्छे अख़्लाक़ से पेश आओ।(2)

सुवाल कौन सी बातें घरों को आबाद रखती और बन्दे की उम्र में इज़ाफ़ा करती हैं ?

जवाब उम्मुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا से रिवायत है कि हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जिसे नर्मी अ़ता की गई उसे दुन्या व आख़िरत की अच्छाइयों में से हिस्सा दिया गया और रिश्तेदारों से तअ़ल्लुक़ जोड़ना, पड़ोसियों के साथ अच्छा सुलूक करना और हुस्ने अख़्लाक़ घरों को आबाद रखते और उम्र

1 ...ترمذی، کتاب البر والصلۃ، ۳/ ۴۰۹، حدیث: ۲۰۲۵، بتغیر قلیل۔

2 ...ترمذی، کتاب البر والصلۃ، باب ماجاء فی معاشرۃ الناس، ۳/ ۳۹۷، حدیث: ۱۹۹۴۔

में इज़ाफ़ा करते हैं।[1]

सुवाल अपनी ज़ौजा के साथ नर्मी बरतने वाले को ह़दीस शरीफ़ में क्या फ़रमाया गया है ?

जवाब ह़दीसे पाक में है : कामिल ईमान वालों में से वोह भी है जो उ़म्दा अख़्लाक़ वाला और अपनी ज़ौजा के साथ सब से ज़ियादा नर्म तबीअ़त वाला है।[2]

सुवाल ह़ज़रते सहल رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه किस चीज़ को सब से बड़ी करामत फ़रमाते हैं ?

जवाब ह़ज़रते सय्यिदुना सहल बिन अ़ब्दुल्लाह رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : सब से बड़ी करामत येह है कि तू अपने बुरे अख़्लाक़ को अच्छे अख़्लाक़ से बदल डाल।[3]

सुवाल मोमिन की नर्म मिज़ाजी और शराफ़त की इन्तिहा क्या है ?

जवाब ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है कि हु़ज़ूर ताजदारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم इरशाद फ़रमाते हैं : मोमिन इतना नर्म मिज़ाज और शरीफ़ होता है कि लोग उस की शराफ़त की वज्ह से उसे अह़मक़ ख़याल करते हैं।[4]

सुवाल अख़्लाक़ के कितने हिस्से हैं ?

जवाब ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्मान बिन अ़फ़्फ़ान رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है कि हु़ज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने 100 मख़्लूक़ात बनाई हैं और 17 क़िस्म के अख़्लाक़ पैदा किये हैं तो जिसे **अल्लाह** तआ़ला इन

1 ...مسند امام احمد، مسند السیدۃ عائشۃ، ۹/۵۰۴، حدیث: ۲۵۳۱۴۔

2 ...ترمذی، کتاب الرضاع، باب ماجاء فی حق المراۃ علی زوجھا، ۲/۳۸۶، حدیث: ۱۱۶۵۔

3 ...الروض الفائق، المجلس السابع عشر فی اثبات کرمات الاولیاء، ص ۱۰۲۔

4 ...شعب الایمان، باب فی حسن الخلق، فصل فی لین الجانب وسلامۃ الصدر، ۶/۲۷۲، حدیث: ۸۱۲۷۔

में से एक से भी नवाज़ता है वोह जन्नत में दाख़िल होगा।[1]

सुवाल हुस्ने अख़्लाक़ की अ़लामात बयान कीजिये ?

जवाब हुस्ने अख़्लाक़ की अ़लामात को यूं बयान फ़रमाया गया है : हुस्ने अख़्लाक़ का पैकर वोह है जो ह़द से ज़ियादा ह़या वाला हो, बहुत कम किसी को अज़िय्यत दे, नेकियों का जामेअ़ हो, सच बोले, गुफ़्तगू कम और अ़मल ज़ियादा करे और वक़्त भी कम ज़ाएअ़ करे नीज़ बहुत कम लग़्ज़िश का शिकार हो। वोह नेक, पुर वक़ार, साबिर, क़ज़ाए इलाही पर राज़ी रहे, शुक्र गुज़ार, बुर्दबार, नर्म दिल, पाक दामन और शफ़ीक़ हो न कि ऐ़ब जू, गालियां देने वाला, ग़ीबत करने वाला, जल्दबाज़, कीना परवर, बख़ील और ह़ासिद हो बल्कि हश्शाश बश्शाश रहता हो, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ख़ातिर महब्बत और बुग़्ज़ रखे और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ही ख़ातिर किसी से राज़ी या नाराज़ हो तो वोही शख़्स हुस्ने अख़्लाक़ का पैकर कहलाने का ह़क़ रखता है।[2]

सुवाल कौन सी तीन चीज़ों के न होने पर सवाब की उम्मीद न रखने की वई़द आई है ?

जवाब ह़ज़रते सय्यिदतुना उम्मे सलमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से मरवी है कि हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जिस में तीन बातों में से कोई एक भी न पाई जाए तो वोह अपने किसी भी अ़मल के सवाब की उम्मीद न रखे : (1) ह़राम कामों से रोकने वाला तक़्वा (2) बे वुक़ूफ़ों से रोकने वाला ह़िल्म और (3) ऐसा हुस्ने अख़्लाक़ जिस के साथ वोह लोगों (मुआ़शरे) में ज़िन्दगी बसर करे।[3]

सुवाल बद अख़्लाक़ी के आ'माल पर क्या असरात पड़ते हैं ?

---

1 . . . مسند طیالسی، مسند عثمان بن عفان، ص ۱۴، حدیث: ۸۴۔

2 . . . الزواجر عن اقتراف الکبائر، الباب الاول فی الکبائر الباطنۃ، الکبیرۃ الثامنۃ والثلاثون، ۱ / ۱۸۴۔

3 . . . شعب الایمان، باب فی حسن الخلق، فصل فی الحلم والتؤدۃ، ۶ / ۳۴۹، حدیث: ۸۴۲۴۔

जवाब रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : बेशक बुरा अख़्लाक़ अ़मल को इस त़रह़ ख़राब करता है जैसे सिर्का शहद को ख़राब करता है।[1]

सुवाल आदमी की इ़ज़्ज़त, मुरव्वत और शराफ़त किन चीज़ों को क़रार दिया गया है ?

जवाब ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है कि हु़ज़ूर सय्यिदुल आ़लमीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : आदमी की इ़ज़्ज़त उस का दीन है, उस की मुरव्वत उस की अ़क़्ल है और उस की शराफ़त उस का अख़्लाक़ है।[2]

ख़ौफ़े ख़ुदा

सुवाल क़ुरआने पाक में ख़ौफ़े ख़ुदा वालों के लिये कौन सी अ़ज़ीम ख़ुश ख़बरियां हैं ?

जवाब क़ुरआने करीम में ख़ौफ़े ख़ुदा रखने वालों के लिये बा'ज़ अ़ज़ीमुश्शान ख़ुश ख़बरियां येह हैं : (1) दो जन्नतों की बिशारत[3] (2) आख़िरत में बे ख़ौफ़ी[4] (3) **अल्लाह** तआ़ला की ताईद व मदद[5] (4) आ'माल की क़बूलिय्यत[6] (5) बारगाहे इलाही में सब से बढ़ कर इ़ज़्ज़त[7] (6) जहन्नम से दूरी[8] (7) ज़रीअ़ए नजात[9]।

1 ...معجم اوسط، ۱/۲۴۷، حديث: ۸۵۰۔
2 ...مسند امام احمد، مسند ابی ہریرۃ، ۳/۲۹۲، حديث: ۸۷۸۲۔
3 ...پ۲۷، الرحمن: ۴۶۔
4 ...پ۲۵، الدخان: ۵۱۔
5 ...پ۱۴، النحل: ۱۲۸۔
6 ...پ۶، المائدۃ: ۲۷۔
7 ...پ۲۶، الحجرات: ۱۳۔
8 ...پ۳۰، اللیل: ۱۷۔
9 ...پ۲۸، الطلاق: ۲۔

सुवाल खौ़फे़ खुदा की अक़्साम बयान कीजिये ?

जवाब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का खौ़फ़ दो तृरह का है (1) अ़ज़ाब के खौ़फ़ से गुनाहों को तर्क कर देना। (2) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के जलाल, उस की अ़ज़मत और उस की बे नियाज़ी से डरना। पहली क़िस्म का खौ़फ़ आ़म मुसलमानों में से परहेज़गारों को होता है और दूसरी क़िस्म का खौ़फ़ ह़ज़राते अम्बिया व मुर्सलीन, औलियाए कामिलीन और मुक़र्रब फ़िरिश्तों को होता है और जिस का **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से जितना ज़ियादा कुर्ब होता है उसे उतना ही ज़ियादा खौ़फ़ होता है।(1)

सुवाल खौ़फे़ खुदा के हुसूल का सब से बड़ा सबब किस चीज़ को क़रार दिया गया है ?

जवाब खौ़फे़ खुदा के हुसूल और इस में इज़ाफे़ का सब से बड़ा ज़रीआ़ इल्म है, जैसा कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

﴿اِنَّمَا یَخْشَى اللّٰهَ مِنْ عِبَادِهِ الْعُلَمٰٓؤُا﴾ (پ۲۲، فاطر:۲۸) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** "**अल्लाह** से उस के बन्दों में वोही डरते हैं जो इल्म वाले हैं।"

येही वज्ह है कि उ़लमा सहा़बए किराम رِضْوَانُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْهِمْ اَجْمَعِیْن और इन के बा'द वाले उ़लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی पर खौ़फे़ खुदा का ग़लबा रहता था।(2)

सुवाल गुनाहों से बचने का सब से बड़ा ज़रीआ़ कौन सा है ?

जवाब गुनाहों से रोकने का सब से बड़ा ज़रीआ़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का खौ़फ़, उस के इन्तिक़ाम का डर, उस के इ़क़ाब, ग़ज़ब और पकड़ का अन्देशा है। **अल्लाह** तआ़ला इरशाद फ़रमाता है :

---

(1) ...تفسیر کبیر، پ ۹، الانفال، تحت الآیۃ:۲، ۵/۴۵۰، ملتقطاً۔

(2) ...الزواجر عن اقتراف الکبائر، مقدمۃ فی تعریف الکبیرۃ، ۱/۲۸۔

﴿فَلْيَحْذَرِ الَّذِيْنَ يُخَالِفُوْنَ عَنْ اَمْرِهٖۤ اَنْ تُصِيْبَهُمْ فِتْنَةٌ اَوْ يُصِيْبَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ﴾ (پ۱۸، النور:۶۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : तो डरें वोह जो रसूल के हुक्म के ख़िलाफ़ करते हैं कि उन्हें कोई फ़ितना पहुंचे या उन पर दर्दनाक अ़ज़ाब पड़े।[1]

सुवाल ख़ौफ़ के कितने दरजात हैं और सब से बेहतर दरजा कौन सा है ?

जवाब हुज्जतुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَالِی की तह़क़ीक़ की रौशनी में ख़ौफ़ के तीन दरजात हैं : (1) **ज़ईफ़ :** येह वोह ख़ौफ़ है जो इन्सान को किसी नेकी के अपनाने और गुनाह को छोड़ने पर आमादा करने की क़ुव्वत न रखता हो, मसलन जहन्नम की सज़ाओं के ह़ालात सुन कर मह़्ज़ झुर झुरी ले कर रह जाना और फिर से ग़फ़्लत व मा'सिय्यत में गिरिफ़्तार हो जाना। (2) **मो'तदिल :** येह वोह ख़ौफ़ है जो इन्सान को किसी नेकी के अपनाने और गुनाह को छोड़ने पर आमादा करने की क़ुव्वत रखता हो, मसलन अ़ज़ाबे आख़िरत की वई़दों को सुन कर उन से बचने के लिये अ़मली कोशिश करना और इस के साथ साथ रब तआ़ला से उम्मीदे रह़मत भी रखना। (3) **क़वी :** येह वोह ख़ौफ़ है जो इन्सान को ना उम्मीदी, बे होशी और बीमारी वग़ैरा में मुब्तला कर दे। मसलन **अल्लाह** तआ़ला के अ़ज़ाब वग़ैरा का सुन कर अपनी मग़फ़िरत से ना उम्मीद हो जाना। याद रहे कि इन सब में बेहतर दरजा **"मो'तदिल"** है।[2]

सुवाल ख़ौफ़े ख़ुदा की अ़लामत किन किन चीज़ों में ज़ाहिर होती है ?

---

1 . . . الزواجر عن اقتراف الکبائر، مقدمۃ فی تعریف الکبیرۃ، ۱/۳۳۔

2 . . . احیاء العلوم، کتاب الخوف والرجاء، بیان درجات الخوف۔۔۔الخ، ۴/۱۹۲، ماخوذاً۔

www.dawateislami.net

जवाब हज़रते सय्यिदुना फ़क़ीह अबुल्लैस समरक़न्दी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى इरशाद फ़रमाते हैं कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के ख़ौफ़ की अलामत सात चीज़ों में ज़ाहिर होती है : (1) इन्सान की ज़बान में कि उसे झूट, ग़ीबत और फ़ुज़ूल गोई से बचाए और ज़िक्रो तिलावत और मुज़ाकरए इल्म में मश्ग़ूल रखे (2) अपने पेट के मुआमले में ख़ौफ़ रखे कि इस में सिर्फ़ हलाल व तृय्यिब को दाख़िल करे और हलाल में से बक़दरे हाजत खाए (3) अपनी आंख के मुआमले में ख़ौफ़ रखे कि हराम की तरफ़ न देखे और दुन्या की तरफ़ बजाए रग़बत के इब्रत की नज़र से देखे (4) अपने हाथ के मुआमले में ख़ौफ़े इलाही रखे कि उन्हें हराम की तरफ़ न बढ़ाए बल्कि इताअ़ते बारी तआ़ला के कामों में लगाए (5) अपने पाउं के मुआमले में डरे कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ना फ़रमानी में न चलें (6) अपने दिल के मुआमले में ख़ौफ़ रखे कि उस में से बुग़्ज़ो अ़दावत और हसद निकल जाए और मुसलमानों के लिये शफ़्क़त व नसीहत पैदा हो और (7) बन्दा इताअ़ते इलाही के मुआमले में ख़ौफ़ज़दा रहे कि इताअ़त महज़ अल्लाह तआ़ला के लिये हो और रिया व निफ़ाक़ से डरता रहे।[1]

सुवाल कितना ख़ौफ़े ख़ुदा ज़रूरी है ?

जवाब हज़रते सय्यिदुना मुआज़ बिन जबल رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه ने बारगाहे रिसालत में नसीहत की दरख़्वास्त की तो हुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जहां तक मुमकिन हो अपने ऊपर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का ख़ौफ़ लाज़िम कर लो, हर शजर के पास अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र करते रहो और जब कोई बुरा काम कर बैठो तो हर बुरे काम के लिये नई तौबा करो, अगर

1 . . . تنبیہ الغافلین، باب ماجاء فی خوف اللہ تعالی، ص ۲۰۹۔

गुनाह ख़ुफ़्या किया हो तो तौबा भी ख़ुफ़्या करो और अगर गुनाह अ़लानिया है तो तौबा भी अ़लानिया करो।(1)

सुवाल आख़िरत में सब से ज़ियादा ख़ुशी किस शख़्स को होगी ?

जवाब ह़ज़रते सय्यिदुना आ़मिर बिन क़ैस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि आख़िरत में सब से ज़ियादा ख़ुश वोह होगा जो दुन्या में त़वील अ़र्से तक ग़म में रहा होगा, आख़िरत में सब से ज़ियादा हंसना उसी को नसीब होगा जो दुन्या में (ख़ौफ़े ख़ुदा के सबब) सब से ज़ियादा रोने वाला हो और बरोज़े क़ियामत सब से ज़ियादा सुथरा ईमान उसी का होगा जो दुन्या में ज़ियादा ग़ौरो फ़िक्र करने वाला है।(2)

सुवाल जो लोगों के सामने ख़ौफ़े ख़ुदा का इज़्हार ज़ियादा करे उसे क्या क़रार दिया गया है ?

जवाब ह़दीस शरीफ़ में है : जो लोगों को इस से ज़ियादा ख़ौफ़े ख़ुदा दिखाए जितना उस के पास है तो वोह मुनाफ़िक़ है।(3)

सुवाल किसी सह़ाबी के ख़ौफ़े ख़ुदा के मुतअ़ल्लिक़ बताइये ?

जवाब ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ज़र ग़िफ़ारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ग़लबए ख़ौफ़ के वक़्त इरशाद फ़रमाया : ख़ुदा की क़सम ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने जिस दिन मुझे पैदा फ़रमाया था काश ! उस दिन वोह मुझे ऐसा दरख़्त बना देता जिस को काट दिया जाता और उस के फल खा लिये जाते।(4)

सुवाल क्या जमादात पर भी ख़ौफ़े ख़ुदा की कैफ़िय्यत होती है ?

1 ...معجم کبیر، ۲۰/۱۵۹، حدیث: ۳۳۱-

2 ...تنبیہ الغافلین، باب التفکر، ص ۳۰۸-

3 ...مسندفردوس، ۲/۳۰۲، حدیث: ۳۲۹۱-

4 ...مصنف ابن ابی شیبۃ، کتاب الزھد، کلام ابی ذر رضی اللہ عنہ، ۸/۱۸۳، حدیث: ۱-

जवाब जी हां ! हज़रते सय्यिदुना ईसा عَلَيْهِ السَّلَام एक पथ्थर के क़रीब से गुज़रे जिस के दोनों तरफ़ से पानी बह रहा था। किसी को मा'लूम न था कि येह पानी कहां से आ रहा है और कहां जा रहा है ? आप عَلَيْهِ السَّلَام ने पथ्थर से दरयाफ़्त फ़रमाया : ऐ पथ्थर ! येह पानी कहां से आ रहा है और कहां जाएगा ? उस ने अ़र्ज़ की : जो पानी मेरी सीधी जानिब से आ रहा है वोह मेरी दाईं आंख के आंसू हैं और उलटी जानिब से आने वाला पानी मेरी बाईं आंख के आंसू हैं। आप عَلَيْهِ السَّلَام ने पूछा : तुम येह आंसू किस लिये बहा रहे हो ? पथ्थर ने जवाब दिया : अपने रब عَزَّوَجَلَّ के ख़ौफ़ की वज्ह से कि कहीं वोह मुझे जहन्नम का ईंधन न बना दे।(1)

सुवाल किन चीज़ों के ज़रीए ख़ौफ़े ख़ुदा पैदा होता है ?

जवाब ख़ौफ़े ख़ुदा की अ़मली कोशिश के सिलसिले में दर्जे ज़ैल चीज़ें मददगार साबित होंगी। اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ (1) रब तआ़ला की बारगाह में सच्ची तौबा और उस ने'मत के हुसूल की दुआ़ करना (2) कुरआने अ़ज़ीम व अह़ादीसे मुबारका में वारिद होने वाले ख़ौफ़े ख़ुदा के फ़ज़ाइल पेशे नज़र रखना (3) अपनी कमज़ोरी व नातुवानी को सामने रख कर जहन्नम के अ़ज़ाबात पर ग़ौरो तफ़क्कुर करना (4) ख़ौफ़े ख़ुदा के ह़वाले से अस्लाफ़ के ह़ालात का मुत़ालआ़ करना (5) ख़ुद एह़तिसाबी की आ़दत अपनाने की कोशिश करते हुए फ़िक्रे मदीना करना (6) ऐसे लोगों की सोह़बत इख़्तियार करना जो इस सिफ़ते अ़ज़ीमा से मुत्तसिफ़ हों।(2)

---

1 ...شعب الایمان، باب فی الخوف من اللہ تعالی، ۱/۵۲۸، حدیث:۹۳۲۔

2 .....ख़ौफ़े ख़ुदा, स. 23

अ़द्लो इन्साफ़

सुवाल अ़द्ल किसे कहते हैं ?

जवाब अ़द्ल अक़्वाल और अफ़्आ़ल में इन्साफ़ व मुसावात का नाम है।[1]

सुवाल क़ुरआने करीम में अ़द्लो इन्साफ़ के बारे में क्या हुक्म दिया गया ?

जवाब क़ुरआने करीम में मुतअ़द्दद मक़ामात पर अ़द्लो इन्साफ़ का हुक्म दिया गया है। चुनान्चे, इरशादे बारी तआ़ला है : ﴿اِذَا حَكَمْتُمْ بَیْنَ النَّاسِ اَنْ تَحْكُمُوْا بِالْعَدْلِ﴾ (پ٥، النساء: ٥٨) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** "जब तुम लोगों में फ़ैसला करो तो इन्साफ़ के साथ फ़ैसला करो।" एक मक़ाम पर इरशाद फ़रमाया : ﴿وَ اَقْسِطُوْاؕ اِنَّ اللّٰهَ یُحِبُّ الْمُقْسِطِیْنَ﴾ (پ٢٦، الحجرات: ٩) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** "और अ़द्ल करो बेशक अ़द्ल वाले अल्लाह को प्यारे हैं।"

सुवाल अहादीस में अ़द्ल करने वालों की क्या फ़ज़ीलत बयान की गई है ?

जवाब हुज़ूर इमामुल आ़दिलीन, राहतुल आ़शिक़ीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : बेशक अ़द्लो इन्साफ़ करने वाले अल्लाह तआ़ला के दरबार में नूर के मिम्बरों पर होंगे, येह वोह लोग होंगे जो अपने फ़ैसलों में, अपने घरवालों के बारे में और उन तमाम कामों में जिन के वोह वाली बने हैं अ़द्ल करते हैं।[2] नीज़ बुख़ारी शरीफ़ की ह़दीसे पाक के मुताबिक़ बरोज़े क़ियामत सायए अ़र्श पाने वालों में से एक आ़दिल हुक्मरान भी है।[3]

सुवाल इस्लाम में अ़द्लो इन्साफ़ की क्या अहम्मिय्यत है ?

जवाब इस का अन्दाज़ा इस बात से लगाया जा सकता है कि चाहे अ़द्लो

1.....तफ़्सीर सिरातुल जिनान, पारह 14, अन्नह़्ल, तह़्तुल आयत : 90, 5 / 371

2. . . مسلم، کتاب الامارۃ، باب فضیلۃ الامام العادل۔۔۔الخ، ص ٧٨٣، حدیث: ٤٧٢١۔

3. . . بخاری، کتاب الاذان، باب من جلس فی المسجد ینتظر الصلاۃ۔۔۔الخ، ١/٢٣٦، حدیث: ٦٦٠۔

इन्साफ़ की बात आदमी के अपने ख़िलाफ़ ही क्यूं न हो मगर इस वक़्त भी इसे अ़द्ल का हुक्म दिया गया। इरशादे बारी तआ़ला है :

﴿يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُوْنُوْا قَوّٰمِيْنَ بِالْقِسْطِ شُهَدَآءَ لِلّٰهِ وَ لَوْ عَلٰۤى اَنْفُسِكُمْ اَوِ الْوَالِدَيْنِ وَ الْاَقْرَبِيْنَ﴾ (پ۵، النساء:۱۳۵)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ ईमान वालो इन्साफ़ पर ख़ूब क़ाइम हो जाओ अल्लाह के लिये गवाही देते चाहे उस में तुम्हारा अपना नुक़्सान हो या मां बाप का या रिश्तेदारों का। नीज़ इरशाद फ़रमाया : ﴿وَ اِذَا قُلْتُمْ فَاعْدِلُوْا وَ لَوْ كَانَ ذَا قُرْبٰى﴾ (پ۸، الانعام:۱۵۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और जब बात कहो तो इन्साफ़ की कहो अगर्चे तुम्हारे रिश्तेदार का मुआ़मला हो। मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : ख़्वाह गवाही दो या फ़तवा या ह़ाकिम बन कर फ़ैसला करो कुछ भी हो इन्साफ़ से हो इस में क़राबत या वजाहत का लिह़ाज़ न हो। سُبْحَانَ اللّٰهِ عَزَّوَجَلَّ इस आयत की तफ़्सीर नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और ख़ुलफ़ाए राशिदीन की ज़िन्दगी शरीफ़ है, येही अ़द्लो इन्साफ़ मोमिन का तुर्रए इम्तियाज़ है।(1)

सुवाल : बरोज़े क़ियामत आदमी को अ़द्ल किस त़रह़ काम आएगा ?

जवाब : हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم इरशाद फ़रमाते हैं : जो शख़्स दुन्या में दस अफ़राद पर अमीर बना उसे मैदाने मह़शर में तौक़ पहना कर लाया जाएगा और उसे उस बन्धन से उस का अ़द्ल ही छुड़ा सकेगा।(2)

सुवाल : अ़द्ल न करने वाले का आख़िरत में क्या अन्जाम होगा ?

जवाब : ह़दीसे पाक में है : जो शख़्स इस उम्मत के किसी मुआ़मले का

(1).....नूरुल इरफ़ान, पारह 8, अल अन्आ़म, तह़तुल आयत : 152, स. 235

(2)...مسند امام احمد، حدیث سعد بن عبادۃ، ۸/۳۳۹، حدیث:۲۲۵۲۶۔

वाली बना और उस ने उन में अ़द्ल न किया तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे औंधे मुंह जहन्नम में गिराएगा ।(1)

सुवाल अ़द्लो इन्साफ़ किन किन चीज़ों में होता है ?

जवाब येह लफ़्ज़ बहुत सी चीज़ों को शामिल है, अ़क़ाइद में अ़द्लो इन्साफ़ करना, इबादात में अ़द्ल करना, मुआ़मलात में अ़द्ल करना, बादशाह का अ़द्ल करना, फ़क़ीर का इन्साफ़ करना, अपनी औलाद, रिश्तेदारों और अपने नफ़्स के मुआ़मले में अ़द्ल करना वग़ैरा ।(2)

सुवाल ह़दीसे पाक में आ़दिल बनने का क्या नुस्ख़ा इरशाद हुवा है ?

जवाब एक आ'राबी ने बारगाहे रिसालत में अ़र्ज़ की : मैं सब से ज़ियादा अ़द्ल करने वाला बनना चाहता हूं । ह़ुज़ूर सरवरे कौनैन صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जो अपने लिये पसन्द करते हो वोही दूसरों के लिये भी पसन्द करो, सब से ज़ियादा आ़दिल बन जाओगे ।(3)

सुवाल फ़ैसला करने वाले को फ़रीक़ैन के साथ कैसा बरताव करना चाहिये ?

जवाब उ़लमा ने फ़रमाया कि ह़ाकिम (और फ़ैसला करने वाले) को चाहिये कि पांच बातों में फ़रीक़ैन के साथ बराबर सुलूक करे : (1) अपने पास आने में जैसे एक को मौक़अ़ दे, दूसरे को भी दे (2) निशस्त दोनों को एक सी दे (3) दोनों की त़रफ़ बराबर मुतवज्जेह रहे (4) कलाम सुनने में हर एक के साथ एक ही

1 ...مستدرک حاکم، کتاب الاحکام، باب قاضیان فی النار وقاض فی الجنۃ، ۵/۱۲۳، حدیث:۷۰۹۷۔

2 ...روح المعانی، پ۸، الاعراف، تحت الآیۃ: ۲۹، ۴/۴۸۴، ماخوذا۔
तफ़्सीर सिरातुल जिनान, पारह 8, अल आ'राफ़, तह़्तुल आयत : 29, 3 / 296

3 ...جامع الاحادیث، مسند خالد بن الولید، ۱۹/۴۰۵، حدیث:۱۴۹۲۲۔

तरीक़ा रखे (5) फ़ैसला देने में हक़ की रिआयत करे जिस का दूसरे पर हक़ हो पूरा पूरा दिलाए।[1]

सुवाल सीरते नबवी से अद्लो इन्साफ़ के क़ियाम की कोई मिसाल बयान कीजिये ?

जवाब उम्मुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं : क़बीलए क़ुरैश की एक औरत ने चोरी की तो उस के ख़ानदान वालों ने हज़रते उसामा बिन ज़ैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को बारगाहे रिसालत में सिफ़ारिश के लिये कहा, उन्हों ने सिफ़ारिश की तो हुज़ूर ताजदारे रिसालत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : क्या तुम **अल्लाह** तआला की हदों में से एक हद में सिफ़ारिश करते हो ? फिर खड़े हो कर ख़ुत्बा दिया, इरशाद फ़रमाया : तुम से पहले लोगों को इस बात ने हलाक किया कि जब उन में से कोई मुअज़्ज़ज़ शख़्स चोरी करता तो उसे छोड़ देते और जब कोई कमज़ोर चोरी करता तो उस पर हद क़ाइम कर देते। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! अगर फ़ातिमा बिन्ते मुहम्मद भी चोरी कर लेती तो मैं उस का भी हाथ काट देता।[2]

सुवाल सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के अद्लो इन्साफ़ की कोई मिसाल दीजिये ?

जवाब अमीरुल मोमिनीन सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का दौरे ख़िलाफ़त अद्लो इन्साफ़ की बाला दस्ती का बेहतरीन नमूना है, आप फ़ैसला करने में किसी अमीर व ग़रीब का लिहाज़ न फ़रमाते। मन्क़ूल है कि मुल्के ग़स्सान के बादशाह जबला बिन ऐहम ने हाज़िरे ख़िदमत हो कर अपने साथियों समेत इस्लाम

1.....ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, पारह 5, अन्निसा, तह़्तुल आयत : 58 स. 171

2 . . . بخاری، کتاب احادیث الانبیاء، باب ۵۶، ۲/۴۶۸، حدیث: ۳۴۷۵

क़बूल किया, एक रोज़ एक दीहाती का पाउं जबला की चादर पर पड़ गया उस ने दीहाती को एक ज़ोरदार थप्पड़ मारा जिस से उस के दो दांत टूट गए और नाक भी ज़ख़्मी हो गई। येह मुआमला अदालते फ़ारूक़ी में पहुंचा तो आप ने फ़रमाया : या तो इस दीहाती से मुआफ़ी मांगो या मैं तुम से इस का क़िसास लूंगा। जबला ने हैरान हो कर कहा : क्या आप इस ग़रीब दीहाती की वज्ह से मुझ से क़िसास लेंगे हालांकि मैं तो बादशाह हूं? सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया : इस्लाम क़बूल करने के बा'द हुक़ूक़ में तुम दोनों बराबर हो।[1]

सुवाल अद्लो इन्साफ़ न होने की वज्ह से कौन सी मुआशरती ख़राबियां जनम लेती हैं?

जवाब जिस मुआशरे में अद्लो इन्साफ़ की बालादस्ती न हो वहां ना इन्साफ़ी, ज़ुल्म व जब्र, क़त्लो ग़ारत गरी और त़रह त़रह की बुराइयां आम हो जाती हैं और मुआशरा जराइम का घर बन जाता है।

सिलए रेह़मी

सुवाल वालिदैन के साथ सिलए रेह़मी के ह़वाले से क़ुरआने पाक में क्या हुक्म दिया गया है?

जवाब अल्लाह तआला ने इरशाद फ़रमाया :

﴿وَقَضٰى رَبُّكَ اَلَّا تَعْبُدُوْۤا اِلَّاۤ اِیَّاهُ وَ بِالْوَالِدَیْنِ
اِحْسَانًاؕ اِمَّا یَبْلُغَنَّ عِنْدَكَ الْكِبَرَ اَحَدُهُمَاۤ اَوْ كِلٰهُمَا فَلَا تَقُلْ لَّهُمَاۤ اُفٍّ وَّ لَا
تَنْهَرْهُمَا وَ قُلْ لَّهُمَا قَوْلًا كَرِیْمًا(۲۳) وَ اخْفِضْ لَهُمَا جَنَاحَ الذُّلِّ مِنَ الرَّحْمَةِ
وَ قُلْ رَّبِّ ارْحَمْهُمَا كَمَا رَبَّیٰنِیْ صَغِیْرًاؕ(۲۴)﴾ (پ۱۵، بنی اسرآءیل: ۲۳، ۲۴)

[1] ...فتوح الشام، ذکر فتح حمص، ۱/ ۱۰۰ ماخوذاً۔

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और तुम्हारे रब ने हुक्म फ़रमाया कि उस के सिवा किसी को न पूजो और मां बाप के साथ अच्छा सुलूक करो अगर तेरे सामने उन में एक या दोनों बुढ़ापे को पहुंच जाएं तो उन से हूं न कहना और उन्हें न झिड़कना और उन से ता'ज़ीम की बात कहना और उन के लिये आ़जिज़ी का बाज़ू बिछा नर्म दिली से और अ़र्ज़ कर कि ऐ मेरे रब तू उन दोनों पर रेह़म कर जैसा कि उन दोनों ने मुझे छुटपन (बचपन) में पाला।

सुवाल सिलए रेह़मी बारगाहे रब्बुल इ़ज़्ज़त में क्या इल्तिजा करती है ?

जवाब हु़ज़ूर ताजदारे ख़त्मे नुबुव्वत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : सिलए रेह़मी रिज़्क़ को बढ़ाती और उ़म्र में ज़ियादती करती है, सिलए रेह़मी अ़र्श से लटकी हुई अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! की बारगाह में इल्तिजा करती है : ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! तू उसे मिला जो मुझे मिलाए और तू उसे काट जो मुझे काटे। तो अल्लाह तबारक व तआ़ला फ़रमाता है : मेरी इ़ज़्ज़तो जलाल की क़सम ! मैं ज़रूर उस को मिलाऊंगा जो तुझे मिलाएगा और ज़रूर उसे क़त्अ़ करूंगा जो तुझे क़त्अ़ करेगा।(1)

सुवाल किन अफ़्आ़ल की जज़ा व सज़ा बहुत जल्दी मिल जाती है ?

जवाब अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए गुयूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : ऐ मुसलमानों के गुरौह ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से डरो और आपस में सिलए रेह़मी करो ! क्यूंकि सिलए रेह़मी से ज़ियादा जल्द किसी चीज़ का सवाब नहीं मिलता, ज़ुल्म से बचते रहो ! क्यूंकि ज़ुल्म से ज़ियादा जल्द किसी गुनाह की सज़ा नहीं मिलती।(2)

---

1 . . . قرة العيون ومفرح القلب المحزون، الباب الثامن فى عقوبة قاتل النفس وقاطع الرحم، ص ۴۰۱، معجم اوسط، ۱ / ۲۷۳، حديث: ۹۴۳ ملتقطا، مصنف ابن ابى شيبة، كتاب الادب، باب ماقالوا فى البر وصلة الرحم، ۶ / ۹۷، حديث: ۲۔

2 . . . معجم اوسط، ۴ / ۱۸۷، حديث: ۵۶۶۴۔

सुवाल किन लोगों की वज्ह से दुन्या आबाद है और माल में इज़ाफ़ा होता है ?

जवाब ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُمَا से रिवायत है कि हुज़ूर नबिय्ये ग़ैबदान, रह़मते आ़लमिय्यान صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ कुछ लोगों की वज्ह से दुन्या को आबाद रखता है, उन की बदौलत माल में इज़ाफ़ा करता है और जब से उन्हें पैदा फ़रमाया है उन की त़रफ़ ना पसन्दीदा नज़र से नहीं देखा । अ़र्ज़ की गई : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! वोह कैसे ? फ़रमाया : उन के अपने रिश्तेदारों से सिलए रेह़्मी करने की वज्ह से ।[1]

सुवाल दरजात को बुलन्द करने वाले चार आ'माल कौन से हैं ?

जवाब ह़ज़रते सय्यिदुना उ़बादा बिन सामित رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ से मरवी है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ह़बीब, ह़बीबे लबीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : क्या मैं तुम्हें ऐसे अ़मल के बारे में न बताऊं जिस के सबब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ दरजात को बुलन्द फ़रमाता है ? ह़ज़राते सह़ाबए किराम عَلَیۡہِمُ الرِّضۡوَان ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! ज़रूर बताइये । इरशाद फ़रमाया : जो तुम्हारे साथ जहालत का बरताव करे तुम उस के साथ बुर्दबारी से पेश आओ, जो तुम पर ज़ुल्म करे तुम उसे मुआ़फ़ कर दो, जो तुम्हें मह़रूम करे तुम उसे अ़त़ा करो और जो तुम से क़त़ए़ तअ़ल्लुक़ी करे तुम उस के साथ सिलए रेह़्मी करो ।[2]

सुवाल रोज़े मह़्शर ह़िसाब में आसानी दिलाने वाली तीन चीज़ें कौन सी हैं ?

---

1 . . . معجم کبیر، ۱۲/ ٦٧، حدیث: ۱۲۵۵٦۔

2 . . . مسند بزار، مسند عبادۃ بن الصامت، ۷/ ۱٦۱، حدیث: ۲۷۲۷، بتغیر۔
مجمع الزوائد، کتاب البر و الصلۃ، باب مکارم الاخلاق والعفو عمن ظلم، ۸/ ۳۴۵، حدیث: ۱۳۶۹۴۔

जवाब हुज़ूर सरवरे कौनैन, शहनशाहे दारैन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जिस में येह तीन बातें होंगी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस का हिसाब आसान तरीक़े से लेगा और उसे अपनी रहमत से जन्नत में दाखिल फ़रमाएगा : (1) जो तुम्हें महरूम करे तुम उस को अता करो (2) जो तुम पर ज़ुल्म करे तुम उस को मुआफ़ कर दो और (3) जो तुम से रिश्ता तोड़े तुम उस से रिश्ता जोड़ो।[1]

सुवाल अगर कोई रिश्तेदारों से माली तआवुन न कर सके तो उसे क्या करना चाहिये ?

जवाब हज़रते सय्यिदुना इमाम फ़क़ीह अबुल्लैस समरक़न्दी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : अगर किसी शख़्स के रिश्तेदार क़रीब हों तो उस पर लाज़िम है कि तहाइफ़ व मुलाक़ात के ज़रीए उन के साथ सिलए रेहमी करे, अगर माली तौर पर सिलए रेहमी पर क़ादिर न हो तो उन से मिला करे और ज़रूरतन उन के कामों में हाथ बटाए और अगर दूर हों तो उन से मुरासलत (या'नी ख़तो किताबत) करे और (सफ़र कर के) उन के पास जाने की ताक़त रखता हो तो (ख़त लिखने से) ख़ुद जाना अफ़्ज़ल है।[2]

सुवाल क्या हर रिश्तेदार के साथ एक ही तरह की सिलए रेहमी का हुक्म है ?

जवाब जी नहीं ! रिश्ते में चूंकि मुख़्तलिफ़ दरजात हैं (इसी तरह) सिलए रेहम (या'नी रिश्तेदारों से हुस्ने सुलूक) के दरजात में भी तफ़ावुत (या'नी फ़र्क़) होता है। वालिदैन का मर्तबा सब से बढ़ कर है, उन के बा'द ज़ू रेहम महरम का, (या'नी वोह रिश्तेदार जिन से नसबी रिश्ता होने की वज्ह से निकाह हमेशा के लिये हराम हो)

1 ...معجم اوسط، ۱/۲۶۳، حديث: ۹۰۹-

2 ...تنبیہ الغافلین، باب صلۃ الرحم، ص ۷۳-

उन के बा'द बक़िय्या रिश्ते वालों का अ़ला क़दरे मरातिब (या'नी रिश्ते में नज़्दीकी की तरतीब के मुत़ाबिक़) ।[1]

सुवाल क़त्ए रेह़मी दुआ़ओं की क़बूलिय्यत पर किस त़रह़ असर अन्दाज़ होती है ?

जवाब ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ एक बार सुब्ह़ के वक़्त मजलिस में तशरीफ़ फ़रमा थे, उन्हों ने फ़रमाया : मैं क़त्ए रेह़मी करने (रिश्ता तोड़ने) वाले को अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम देता हूं कि वोह यहां से उठ जाए ताकि हम अल्लाह तआ़ला से मग़्फ़िरत की दुआ़ करें क्यूंकि क़त्ए रेह़मी करने वाले पर आस्मान के दरवाज़े बन्द रहते हैं ।[2] या'नी अगर वोह यहां मौजूद रहेगा तो रह़मत नहीं उतरेगी और हमारी दुआ़ क़बूल नहीं होगी ।

सुवाल क़त्ए रेह़मी के ह़वाले से क़ुरआने करीम में क्या फ़रमाया गया है ?

जवाब क़त्ए रेह़मी की मज़म्मत में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

(1) ﴿فَهَلْ عَسَیْتُمْ اِنْ تَوَلَّیْتُمْ اَنْ تُفْسِدُوْا فِی الْاَرْضِ وَ تُقَطِّعُوْۤا اَرْحَامَكُمْ ﴿۲۲﴾ اُولٰٓىٕكَ الَّذِیْنَ لَعَنَهُمُ اللّٰهُ فَاَصَمَّهُمْ وَ اَعْمٰۤى اَبْصَارَهُمْ ﴿۲۳﴾﴾ (پ۲۶، محمد: ۲۲، ۲۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : तो क्या तुम्हारे येह लछ्छन (अन्दाज़) नज़र आते हैं कि अगर तुम्हें हुकूमत मिले तो ज़मीन में फ़साद फैलाओ और अपने रिश्ते काट दो येह हैं वोह लोग जिन पर अल्लाह ने ला'नत की और उन्हें ह़क़ से बहरा कर दिया और उन की आंखें फोड़ दीं ।

(2) ﴿الَّذِیْنَ یَنْقُضُوْنَ عَهْدَ اللّٰهِ مِنْۢ بَعْدِ مِیْثَاقِهٖ ۪ وَ یَقْطَعُوْنَ مَاۤ اَمَرَ اللّٰهُ بِهٖۤ اَنْ یُّوْصَلَ وَ یُفْسِدُوْنَ فِی الْاَرْضِ ؕ اُولٰٓىٕكَ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ﴿۲۷﴾﴾ (پ۱، البقرة: ۲۷)

---

1 ...ردالمحتار، کتاب الحظر والاباحة، فصل فی البیع، ۹/ ۶۷۸، ماخوذاً۔

2 ...معجم کبیر، ۹/ ۱۵۸، حدیث: ۸۷۹۳۔

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : वोह जो अल्लाह के अ़हद को तोड़ देते हैं पक्का होने के बा'द और काटते हैं उस चीज़ को जिस के जोड़ने का खुदा ने हुक्म दिया और ज़मीन में फ़साद फैलाते हैं वोही नुक़्सान में हैं।

(3) ﴿اُولٰٓئِكَ لَهُمُ اللَّعْنَةُ وَ لَهُمْ سُوْٓءُ الدَّارِ﴾ (پ۱۳، الرعد:۲۵) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** उन का हिस्सा ला'नत ही है और उन का नसीबा बुरा घर।

सुवाल किन दो गुनाहों की सज़ा दुन्या में भी मिलती है ?

जवाब हुज़ूर मक्की मदनी सुल्तान, रह़मते आ़लमिय्यान صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ज़ुल्म और क़त्ए़ रेह़्मी के इलावा कोई गुनाह ऐसा नहीं जिस के मुर्तकिब को अल्लाह عَزَّوَجَلَّ आख़िरत में सज़ा देने के साथ साथ दुन्या में भी सज़ा देने में जल्दी करता हो।(1)

सुवाल कौन से लोग जन्नत की खुश्बू तक से मह़रूम रहेंगे ?

जवाब हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : वालिदैन की नाफ़रमानी से बचते रहो जन्नत की खुश्बू 1000 साल की मसाफ़त से सूंघी जा सकती है मगर खुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! वालिदैन का नाफ़रमान, क़त्ए़ रेह़्मी करने वाला, बूढ़ा ज़ानी और तकब्बुर की वज्ह से तेहबन्द लटकाने वाला जन्नत की खुश्बू न पा सकेगा, बेशक किब्रियाई तमाम जहानों के परवर दगार अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये है।(2)

सब्रो शुक्र

सुवाल कुरआने करीम की रौशनी में सब्र की अहम्मिय्यत व फ़ज़ीलत बयान कीजिये ?

---

1 ...ترمذی، کتاب صفۃ القیامۃ، باب ۵۷، ۴/۲۲۹، حدیث: ۲۵۱۹۔

2 ...معجم اوسط، ۴/۱۸۷، حدیث: ۵۶۶۴۔

जवाब दर्जे ज़ैल आयाते मुबारका से सब्र की अहम्मिय्यत व फ़ज़ीलत ख़ूब वाज़ेह होती है :

(1) ﴿فَاصْبِرْ كَمَا صَبَرَ اُولُوا الْعَزْمِ مِنَ الرُّسُلِ﴾(پ۲۶، الاحقاف:۳۵) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** तुम सब्र करो जैसा हिम्मत वाले रसूलों ने सब्र किया।

(2) ﴿اِنَّ اللّٰهَ مَعَ الصّٰبِرِیْنَ﴾(پ۲، البقرۃ:۱۵۳) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** बेशक **अल्लाह** साबिरों के साथ है।

(3) ﴿وَلَنَجْزِیَنَّ الَّذِیْنَ صَبَرُوْۤا﴾(پ۱۴، النحل:۹۶) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और ज़रूर हम सब्र करने वालों को उन का सिला देंगे।

सुवाल हज़रते अलिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِیْم ने सब्र के मुतअल्लिक़ क्या फ़रमाया है ?

जवाब अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना अली كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِیْم ने फ़रमाया : सब्र ईमान के लिये ऐसे ही है जिस तरह जिस्म के लिये सर होता है, अगर सर काट दिया जाए तो बाक़ी जिस्म बेकार हो जाता है और जो सब्र नहीं करता उस का ईमान कामिल नहीं होता।(1)

सुवाल कुरआने करीम में सब्र की कितनी सूरतें बयान की गई हैं ?

जवाब हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन अब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا फ़रमाते हैं कि कुरआने पाक में सब्र की तीन सूरतें बयान हुई : (1) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की तरफ़ से आइद फ़राइज़ की अदाएगी पर सब्र करना और इस के तीन सौ दरजात हैं। (2) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की जानिब से हराम कर्दा चीज़ों पर सब्र करना और इस के छे सौ दरजात हैं और (3) मुसीबत पर पहले सदमे के वक़्त सब्र करना और इस के नौ सौ दरजात हैं।(2)

---

1 . . . شعب الایمان، باب فی الصبر علی المصائب، ۷/۱۲۴، حدیث: ۹۷۱۸۔

2 . . . لباب الاحیاء، الباب الثانی والثلاثون فی الصبر والشکر، ص۲۷۶۔

सुवाल सब्र की फ़ज़ीलत पर कोई फ़रमाने मुस्त़फ़ा सुनाइये ?

जवाब एक शख़्स ने बारगाहे रिसालत में अ़र्ज़ की : ईमान क्या है ? तो हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : सब्र, सख़ावत और हुस्ने अख़्लाक़ ।(1)

सुवाल सब्रे जमील किसे कहते हैं ?

जवाब जिस सब्र में कोई घबराहट न हो उसे सब्रे जमील कहते ।(2) और बा'ज़ ने फ़रमाया : सब्रे जमील येह है कि मुसीबत ज़दा शख़्स लोगों में पहचाना न जाए ।(3)

सुवाल शुक्र करने वालों से मुतअ़ल्लिक़ 2 फ़रामीने बारी तआ़ला बयान कीजिये ?

जवाब अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

(1) ﴿فَاذْكُرُوْنِیْۤ اَذْكُرْكُمْ وَ اشْكُرُوْا لِیْ وَ لَا تَكْفُرُوْنِ﴾ (پ۲، البقرہ:۱۵۲) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** तो मेरी याद करो मैं तुम्हारा चर्चा करूंगा और मेरा ह़क़ मानो और मेरी नाशुक्री न करो ।

(2) ﴿وَ سَیَجْزِی اللّٰهُ الشّٰكِرِیْنَ﴾ (پ۴، ال عمران:۱۴۴) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और अ़न क़रीब अल्लाह शुक्र वालों को सिला देगा ।

सुवाल ईमान की पुख़्तगी किस काम में है ?

जवाब ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं : ईमान की पुख़्तगी हुक्मे इलाही पर सब्र करने और तक़्दीर पर राज़ी रहने में है ।(4)

सुवाल शुक्र की ह़क़ीक़त क्या है ?

जवाब बन्दा येह जाने कि ह़क़ीक़त में अल्लाह तआ़ला के सिवा कोई

---

1 . . . شعب الایمان، باب فی حسن الخلق، ۲۴۲/۶، حدیث: ۸۰۱۴۔

2 . . . تفسیر جلالین، پ ۲۹، سورۃ المعارج، تحت الآیۃ: ۵، ص ۴۷۳۔

3 . . . لباب الاحیاء، الباب الثانی والثلاثون فی الصبر والشکر، ص ۲۷۶۔

4 . . . احیاء علوم الدین، کتاب الصبر والشکر، بیان فضیلۃ الصبر، ۷۷/۴۔

और ने'मत अ़त़ा करने वाला नहीं, जब वोह अपने जिस्म व रूह़ और ज़रूरियाते ज़िन्दगी के मुआ़मले में खुद पर **अल्लाह** करीम की ने'मतों और फ़ज़्लो करम को तफ़्सील के साथ जान लेगा तो उस के दिल में ख़ुशी पैदा होगी फिर वोह उस के तक़ाज़ों के मुत़ाबिक़ अ़मल बजा लाएगा और येह दिल, ज़बान और तमाम आ'ज़ा के ज़रीए़ शुक्र अदा करना है।(1)

सुवाल शुक्र के कितने त़रीक़े हैं?

जवाब शुक्र तीन त़रह़ से अदा होता है : (1) दिल के ज़रीए़ (2) ज़बान के ज़रीए़ और (3) आ'ज़ा के ज़रीए़।(2)

सुवाल आ'ज़ा के ज़रीए़ शुक्र की कैफ़िय्यत बयान कीजिये?

जवाब आ'ज़ा के साथ शुक्र अदा करना येह है कि इन्सान **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इन ने'मतों को उस की इत़ाअ़त में इस्ति'माल करे और गुनाहों में इस्ति'माल करने से बचे, पस आंखों का शुक्र येह है कि किसी मुसलमान का ऐ़ब देखे तो उस को छुपाए और आंखों से गुनाह न देखे और कानों का शुक्र येह है कि कोई ऐ़ब सुने तो उस पर पर्दा डाले और कानों से सिर्फ़ जाइज़ चीज़ ही सुने।(3)

सुवाल क्या करने से शुक्र और अ़मल ज़ाएअ़ हो जाते हैं?

जवाब ह़ुज़ूर रसूले अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जिस ने किसी नेक अ़मल पर अपनी ता'रीफ़ की तो उस का शुक्र ज़ाएअ़ हुवा और अ़मल बरबाद हो गया।(4)

सुवाल सब्र और शुक्र से क्या फ़ाएदा ह़ासिल होता है?

---

1 . . . لباب الاحياء، الباب الثانی والثلاثون فی الصبر والشکر، ص ۲۷٦۔

2 . . . لباب الاحياء، الباب الثانی والثلاثون فی الصبر والشکر، ص ۲۷۷ ملخصاً۔

3 . . . لباب الاحياء، الباب الثانی والثلاثون فی الصبر والشکر، ص ۲۷۷۔

4 . . . معرفة الصحابة لابي نعيم، رقم ۳۳۷۳، ابوعبدالعزيز الانصاری، ۴/ ۵۲۸، حديث: ۶۹۷۹۔

जवाब शुक्र से ने'मतें मिलती हैं और सब्र से **अल्लाह** तआ़ला (का कुर्ब मिलता है) ।[1]

आ़जिज़ी व इन्किसारी

सुवाल तवाज़ोअ़ की ता'रीफ़ बताइये ?

जवाब अपने आप को ह़क़ीर और कमतर समझने को तवाज़ोअ़ कहते है ।[2]

सुवाल आ़जिज़ी करने वाले दौलत मन्द के लिये ह़दीसे पाक में क्या फ़रमाया गया है ?

जवाब हुज़ूर नबिय्ये रह़मत صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : खुश ख़बरी है उस शख़्स के लिये जो तंगदस्ती न होते हुए तवाज़ोअ़ इख़्तियार करे, अपना माल जाइज़ कामों में ख़र्च करे, मोह़ताज व मिस्कीन पर रह़्म करे और अह्ले इ़ल्म व फ़िक़्ह से मैल जोल रखे ।[3]

सुवाल जब बन्दा तवाज़ोअ़ (या'नी आ़जिज़ी व इन्किसारी) करता है तो फ़िरिश्ते को क्या हुक्म दिया जाता है ?

जवाब ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नुबुव्वत صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : हर शख़्स के सर में एक लगाम होती है जिसे एक फ़िरिश्ता थामे होता है अगर वोह तवाज़ोअ़ से काम ले तो फ़िरिश्ते से कहा जाता है : इस का मर्तबा बुलन्द कर दो ।[4]

सुवाल **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये आ़जिज़ी करने की क्या फ़ज़ीलत है ?

जवाब जो शख़्स **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये आ़जिज़ी करता है **अल्लाह**

1 .....मिरआतुल मनाजीह़, 2 / 119

2 ...منہاج العابدین، العقبۃ الثالثۃ وھی عقبۃ العوائق، الفصل الرابع القلب، ص ۱۸۰۔

3 ...معجم کبیر، ۵/ ۷۱، حدیث: ۴۶۱۶۔

4 ...معجم کبیر، ۱۲/ ۱۶۹، حدیث: ۱۲۹۳۹۔

عَزَّوَجَلَّ उसे बुलन्दी अ़ता फ़रमाता है।(1)

सुवाल आ़जिज़ी व इन्किसारी करने वाले को कौन सा दरजा अ़ता होता है?

जवाब रसूले अकरम, शहनशाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये एक दरजा तवाज़ोअ़ इख़्तियार करता है **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे एक दरजा बुलन्दी अ़ता फ़रमाता है यहां तक कि उसे इ़ल्लिय्यीन (बुलन्द तरीन दर्जों) में पहुंचा देता है।(2)

सुवाल क़ुदरत के बा वुजूद बत़ौरे आ़जिज़ी अच्छा लिबास न पहनने पर क्या बिशारत है?

जवाब ह़दीसे पाक में है : जो बा वुजूदे क़ुदरत अच्छे कपड़े पहनना तवाज़ोअ़ (या'नी आ़जिज़ी) के सबब छोड़ दे **अल्लाह** तआ़ला उस को करामत का हुल्ला पहनाएगा।(3)

सुवाल आ़जिज़ी करने वालों और तकब्बुर करने वालों के मुतअ़ल्लिक़ कोई ह़दीस सुनाइये?

जवाब हुज़ूर ताजदारे ख़त्मे नुबुव्वत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : ऐ आ़इशा! आ़जिज़ी अपनाओ कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ आ़जिज़ी करने वालों को पसन्द और तकब्बुर करने वालों को नापसन्द करता है।(4)

सुवाल अपना सामान ख़ुद उठाने की क्या फ़ज़ीलत है?

जवाब हुज़ूर नबिय्ये मुकर्रम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जिस ने अपना सामान ख़ुद उठाया वोह तकब्बुर से बरी हो गया है।(5)

---

1 ...مسلم، کتاب البر والصلة، باب استحباب العفو والتواضع، ص ۱۰۷۱، حدیث: ۲۵۹۲۔

2 ...ابن حبان، کتاب الحظر والاباحة، باب التواضع والکبر والعجب، ۷/۴۷۵، حدیث: ۵۶۴۹۔

3 ...ابوداود، کتاب الادب، باب من کظم غیظاً، ۴/۳۲۶، حدیث: ۴۷۷۸۔

4 ...مسند الفردوس، ۵/۴۲۷، حدیث: ۸۶۳۴۔

5 ...شعب الایمان، باب فی حسن الخلق، فصل فی التواضع، ۶/۲۹۲، حدیث: ۸۲۰۱۔

सुवाल हदीस शरीफ़ में तक़्वा के लिये किस चीज़ को लाज़िमी क़रार दिया है ?

जवाब हुज़ूर नबिय्ये रहमत, शफ़ीए उम्मत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : तुम उस वक़्त तक मुत्तक़ी व परहेज़गार नहीं बन सकते जब तक आजिज़ी व इन्किसारी इख़्तियार न कर लो ।(1)

सुवाल हदीसे मुबारका में किस आलिम की सोहबत में बैठने का हुक्म दिया गया है ?

जवाब हुज़ूर ताजदारे मक्कए मुकर्रमा, सुल्ताने मदीनए मुनव्वरा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : हर आलिम के पास न बैठो, सिर्फ़ उसी आलिम के पास बैठो जो तुम्हें पांच चीज़ों से पांच ख़स्लतों की तरफ़ बुलाए : (1) शक से यक़ीन की तरफ़ (2) अदावत से ख़ैर ख़्वाही की तरफ़ (3) तकब्बुर से आजिज़ी की तरफ़ (4) रियाकारी से इख़्लास की तरफ़ और (5) दुन्या की रग़बत से बे रग़बती की तरफ़ ।(2)

सुवाल माल के सबब किसी मालदार के लिये तवाज़ोअ करने की क्या वईद है ?

जवाब रिवायत में है कि जिस ने किसी मालदार के लिये उस के माल के सबब तवाज़ोअ की उस का दो तिहाई दीन जाता रहा ।(3)

सुवाल लोगों के दरमियान आजिज़ी के अल्फ़ाज़ इस्ति'माल करना कब मन्अ है ?

जवाब अपने लिये आजिज़ी के अल्फ़ाज़ का इस्ति'माल उस सूरत में रियाकारी है जब कि रियाकारी की निय्यत हो और येह गुनाह है और इसी तरह अगर सिर्फ़ ज़बान से आजिज़ी के अल्फ़ाज़ कह रहा हो और दिल में येह कैफ़िय्यत न हो तो मुनाफ़क़त है और येह भी गुनाह है ।(4)

1 ...معجم کبیر، ۱۰/ ۹۰، حدیث: ۱۰۰۴۸-

2 ...حلیة الاولیاء، شقیق البلخی، ۸/ ۷۵، حدیث: ۱۱۴۱۷-

3 ...شعب الایمان، باب فی الصبر علی المصائب، فصل فی الذکر مافی الاوجاع...الخ، ۷/ ۲۱۳، حدیث: ۱۰۰۴۳-

4 .....नेकी की दा'वत, स. 80

तौबा व इस्तिग़फ़ार

सुवाल गुनाह सरज़द हो जाने पर तौबा का क़ानून बनाने में क्या हिक्मत है ?

जवाब इस्लाम में तौबा का क़ानून बनाना ऐन हिक्मत व इल्म पर मब्नी है। जिन दीनों में तौबा नहीं उन के मानने वाले गुनाह पर ज़ियादा दिलेर होते हैं क्यूंकि मायूसी जुर्म पर दिलेर कर देती है और मुआफ़ी की उम्मीद तौबा पर उभारती है। जिस शख़्स को फांसी की सज़ा सुना दी गई हो उसे सब से जुदा क़ैद में रखा जाता है ताकि किसी और को क़त्ल न कर दे क्यूंकि वोह अपनी ज़िन्दगी से मायूस हो चुका है और जिसे एक मुक़र्ररा मुद्दत तक सज़ा के बा'द रिहाई का हुक्म हो उसे दीगर मुजरिमों के साथ क़ैद में रखा जाता है, उस से येह ख़तरा नहीं होता क्यूंकि उसे रिहाई की उम्मीद है।(1)

सुवाल जवानी में तौबा करने की क्या फ़ज़ीलत है ?

जवाब हदीसे पाक में है : जवानी में तौबा करने वाला अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का मह़बूब है।(2) मन्क़ूल है कि एक नौजवान जब तौबा कर के अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ रुजूअ़ करता है तो उस के लिये ज़मीनो आस्मान के दरमियान 70 क़िन्दीलें रौशन की जाती हैं और मलाइका सफ़ बस्ता हो कर बुलन्द आवाज़ से तस्बीह़ व तक़्दीस करते हुए उसे मुबारक बाद देते हैं। इब्लीसे लईन सुन कर कहता है : क्या ख़बर है ? आस्मान से एक मुनादी निदा देता है : एक बन्दे ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से सुल्ह़ कर ली है। तो इब्लीसे मलऊ़न इस

1.....तफ़्सीर सिरातुल जिनान, पारह 4, अन्निसा, तह़्तुल आयत : 17, 2 / 163

2 ...موسوعۃ ابن ابی الدنیا، کتاب التوبۃ، ۳/۴۲۲، حدیث: ۱۸۴۔

तरह पिघलता है जिस तरह नमक पानी में पिघलता है।[1]

सुवाल सच्ची तौबा करने वाले के मुतअ़ल्लिक़ ह़दीस शरीफ़ में क्या फ़रमाया गया है ?

जवाब हुज़ूर नबिय्ये पाक, साह़िबे लौलाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : اَلتَّائِبُ مِنَ الذَّنْبِ كَمَنْ لَّا ذَنْبَ لَه या'नी गुनाह से तौबा करने वाला ऐसा है जैसे उस ने कोई गुनाह नहीं किया।[2]

सुवाल सच्ची तौबा करने वाले को बारगाहे इलाही से क्या इन्आ़म मिलता है ?

जवाब जब बन्दा अपनी तौबा में सच्चा होता है तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ किरामन कातिबीन (या'नी आ'माल लिखने वाले फ़िरिश्तों) को उन के लिखे हुए आ'माल भुला देता है और ज़मीन को हुक्म फ़रमाता है कि मेरे बन्दे का गुनाह छुपा दे।[3]

सुवाल किसी को गुनाह में मुब्तला देख कर क्या कहना चाहिये ?

जवाब ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मसऊ़द رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने इरशाद फ़रमाया : जब तुम अपने किसी भाई को देखो कि किसी गुनाह में मुब्तला हो गया है तो उस के ख़िलाफ़ शैत़ान के मददगार न बनो कि तुम यूं कहो : अल्लाह तआ़ला इसे रुस्वा करे, अल्लाह तआ़ला इस का बुरा करे। बल्कि यूं कहो : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इस की तौबा क़बूल फ़रमाए और इस की मग़फ़िरत फ़रमाए।[4]

सुवाल गुनाह के बा'द भी तौबा न की जाए तो इस का दिल पर क्या असर पड़ता है ?

---

1 . . . الروض الفائق، المجلس الرابع فی مناقب الصالحین، ص ۳۵۔

2 . . . ابن ماجه، کتاب الزھد، باب ذکر التوبة، ۴/۴۹۱، حدیث: ۴۲۵۰۔

3 . . . الروض الفائق، المجلس الثانی فی قوله تعالٰی: الرحمٰن علّم القراٰن، ص ۱۵۔

4 . . . مکارم الاخلاق للطبرانی، باب فضل الصبر والسماحة، ص ۳۲۴، حدیث: ۳۵۔

जवाब हुज़ूर नबिय्ये ग़ैबदान, रह़मते आ़लमिय्यान صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم इरशाद फ़रमाते हैं : मोमिन जब गुनाह करता है तो उस के दिल पर एक सियाह नुक्ता लगा दिया जाता है फिर अगर वोह तौबा करे और मग़फ़िरत त़लब करे तो उस का दिल साफ़ हो जाता है और अगर तौबा न करे तो वोह नुक्ता फैलता रहता है यहां तक कि उस के पूरे दिल को घेर लेता है।[1] या'नी वोह सियाह नुक्ता पूरे दिल को ढांप लेता है और येह वोही ज़ंग है जिस का ज़िक्र **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने यूं फ़रमाया है :

﴿كَلَّا بَلْ ٚ رَانَ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ مَّا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ﴾ (پ۳۰، المطففین:۱۴) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** कोई नहीं बल्कि उन के दिलों पर ज़ंग चढ़ा दिया है उन की कमाइयों ने।

सुवाल तौबा और इस्तिग़फ़ार में क्या फ़र्क़ है ?

जवाब तौबा और इस्तिग़फ़ार में फ़र्क़ येह है कि जो गुनाह हो चुके उन से मुआ़फ़ी मांगना इस्तिग़फ़ार है और पिछले गुनाहों पर शरमिन्दा हो कर आइन्दा गुनाह न करने का अ़ह्द करना तौबा है।[2]

सुवाल इस्तिग़फ़ार के लिये बेहतर वक़्त कौन सा है ?

जवाब बेहतर येह है कि नमाज़े फ़ज्र के वक़्त सुन्नते फ़ज्र के बा'द फ़र्ज़ से पहले 70 बार पढ़ा करे कि येह वक़्त इस्तिग़फ़ार के लिये बहुत ही मौज़ूं है, रब तआ़ला फ़रमाता है :

﴿وَبِالْاَسْحَارِ هُمْ يَسْتَغْفِرُوْنَ ﴿۱۸﴾﴾ (پ۲۷، الذّٰریٰت:۱۸)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और पिछली रात इस्तिग़फ़ार करते।[3]

---

1 ... ابن ماجہ، کتاب الزھد، باب ذکر الذنوب، ۴/۴۸۸، حدیث:۴۲۴۴۔

2 .....तफ़्सीर सिरात़ुल जिनान, पारह 11, हूद, तह़्तुल आयत : 3, 4 / 393

3 .....मिरआतुल मनाजीह़, 3 / 363

सुवाल बन्दों को भटकाने की क़सम खाने पर शैतान को बारगाहे इलाही से क्या जवाब मिला ?

जवाब हज़रते सय्यिदुना अबू सईद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि हुज़ूरे अकरम, शफ़ीए आ'ज़म صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इरशाद फ़रमाते हैं : शैतान ने कहा : ऐ मेरे रब ! तेरी इ़ज़्ज़तो जलाल की क़सम ! जब तक तेरे बन्दों की रूहें उन के जिस्मों में हैं, मैं उन्हें भटकाता रहूंगा। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इरशाद फ़रमाया : मेरी इ़ज़्ज़तो जलाल की क़सम ! जब तक वोह मुझ से इस्तिग़फ़ार करते रहेंगे मैं उन्हें मुआफ़ करता रहूंगा।(1)

सुवाल हज़राते अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के ब कसरत इस्तिग़फ़ार की हिक्मत बयान कीजिये ?

जवाब अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام मा'सूम हैं, उन से गुनाह सादिर नहीं होते। उन का इस्तिग़फ़ार करना दर अस्ल अपने रब तआ़ला की बारगाह में आ़जिज़ी व इन्किसारी का इज़्हार है और इस में उम्मत को येह ता'लीम देना मक़्सूद है कि वोह मग़फ़िरत त़लब करते रहा करें।(2)

सुवाल मआ़शी और मुआ़शरती ज़िन्दगी में इस्तिग़फ़ार के क्या फ़वाइद हैं ?

जवाब हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से मरवी है कि हुज़ूर रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जिस ने इस्तिग़फ़ार को अपने लिये लाज़िम कर लिया **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे हर ग़म और तक्लीफ़ से नजात देगा और उसे ऐसी जगह से रिज़्क़ अ़ता फ़रमाएगा जहां से उसे गुमान भी न होगा।(3)

---

1 . . . مسند امام احمد، مسند ابی سعید الخدری، ۴/۵۹، حدیث: ۱۱۲۴۴۔

2 . . . مدارک، پ ۱۹، الشعراء، تحت الآیۃ: ۸۲، ص ۸۲۳، حدیقۃ ندیۃ، الباب الثانی . . . الخ، الفصل الاول . . . الخ، ۱/۲۸۸۔

3 . . . ابن ماجہ، کتاب الادب، باب الاستغفار، ۴/۲۵۷، حدیث: ۳۸۱۹۔

सुवाल सय्यिदुल इस्तिग़फ़ार क्या है और इस की क्या फ़ज़ीलत है ?

जवाब ह़ज़रते शद्दाद बिन औस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है, रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : सब से आ'ला इस्तिग़फ़ार येह है कि तुम कहो :

اَللّٰھُمَّ اَنْتَ رَبِّیْ،لَا اِلٰـہَ اِلاَّ اَنْتَ، خَلَقْتَنِیْ وَاَنَا عَبْدُكَ، وَاَنَا عَلٰی عَھْدِكَ وَوَعْدِكَ مَا اسْتَطَعْتُ، اَعُوْذُبِكَ مِنْ شَرِّ مَا صَنَعْتُ، اَبُوْءُ لَكَ بِنِعْمَتِكَ عَلَیَّ وَ اَبُوْءُ بِذَنْبِیْ فَاغْفِرْلِیْ فَاِنَّہٗ لَا یَغْفِرُ الذُّنُوْبَ اِلَّا اَنْتَ

इरशाद फ़रमाया कि जो सच्चे दिल से दिन में येह कह ले फिर उसी दिन शाम से पहले मर जाए तो वोह जन्नती होगा और जो सच्चे दिल से रात में येह कह ले फिर सुब्ह़ से पहले फ़ौत हो जाए तो वोह जन्नती होगा।(1)

ग़ीबत

सुवाल किसी को ग़ीबत से रोकने के कुछ फ़ज़ाइल बयान कीजिये ?

जवाब दो फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : (1) जिस के सामने उस के मुसलमान भाई की ग़ीबत की जाए और वोह उस की मदद पर क़ादिर हो और मदद करे, **अल्लाह** तआ़ला दुन्या और आख़िरत में उस की मदद फ़रमाएगा और अगर बा वुजूदे क़ुदरत उस की मदद नहीं की तो **अल्लाह** तआ़ला दुन्या और आख़िरत में उस की पकड़ फ़रमाएगा।(2) (2) जो शख़्स अपने भाई की अ़दमे मौजूदगी में उस का गोश्त खाने (ग़ीबत करने) से रोके तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर ह़क़ है कि उसे जहन्नम से आज़ाद कर दे।(3)

1 ...بخاری، کتاب الدعوات، باب افضل الاستغفار، ۴/۱۸۹، حدیث:۶۳۰۶۔

2 ...کتاب الجامع فی آخر المصنف، باب الاغتیاب والشتم، ۱۰/۱۸۸، حدیث:۲۰۴۲۶۔

3 ...مسند امام احمد، حدیث اسماء ابنۃ یزید، ۱۰/۴۴۵، حدیث:۲۷۶۸۰۔

सुवाल किसी की ग़ीबत सुनना कैसा है ?

जवाब हुज़ूर सरवरे कौनैन, शहनशाहे दारैन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने गाना गाने और गाना सुनने से, ग़ीबत करने और ग़ीबत सुनने से और चुग़ली करने और चुग़ली सुनने से मन्अ़ फ़रमाया।[1] ह़ज़रते अ़ल्लामा अ़ब्दुर्रऊफ़ मुनावी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِى फ़रमाते हैं : ग़ीबत सुनने वाला भी ग़ीबत करने वालों में से एक होता है।[2]

सुवाल ग़ीबत से तौबा का त़रीक़ा बयान कीजिये ?

जवाब जिस की "ग़ीबत" की उस को पता नहीं चला तो उस से मुआ़फ़ी मांगना ज़रूरी नहीं। **अल्लाह** ग़फ़्फ़ार عَزَّوَجَلَّ के दरबार में तौबा व इस्तिग़फ़ार कीजिये और दिल में पक्का अ़ह्द कीजिये कि आइन्दा कभी किसी की ग़ीबत नहीं करूंगा। अगर उस को मा'लूम हो गया है तो उस के पास जा कर ग़ीबत के मुक़ाबिल उस की जाइज़ ता'रीफ़, और उस से मह़ब्बत का इज़्हार कीजिये, ताकि उस का दिल ख़ुश हो और आ़जिज़ी के साथ अ़र्ज़ कीजिये कि मैं ने जो आप की ग़ीबत की है उस पर नादिम हूं मुझे मुआ़फ़ फ़रमा दीजिये। अब बिल फ़र्ज़ वोह मुआ़फ़ न भी करे तब भी اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ आख़िरत में मुआख़ज़ा न होगा। हां अगर रस्मी तौ़र पर (SORRY कह दिया) बिला इख़्लास मुआ़फ़ी मांगी और उस ने मुआ़फ़ कर भी दिया तब भी आख़िरत में मुआख़ज़े (या'नी पूछ गछ) का ख़ौफ़ बाक़ी है।[3]

सुवाल ग़ीबत इन्सान की नेकियों पर क्या असरात डालती है ?

---

1 ...تاریخ بغداد، ابومحمد الحکم بن مروان الکوفی، ۸/۲۲۱، رقم:۴۳۲۷۔

2 ...فیض القدیر، ۳/۲۱۲، تحت الحدیث:۲۹۲۹۔

3 .....ग़ीबत की तबाहकारियां, स. 291

जवाब हुज़ूर नबिय्ये रह़मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : बेशक क़ियामत के रोज़ इन्सान के पास उस का खुला हुवा नामए आ'माल लाया जाएगा, वोह कहेगा : मैं ने जो फ़ुलां फ़ुलां नेकियां की थीं वोह कहां गईं ? कहा जाएगा : तू ने जो ग़ीबतें की थीं इस वज्ह से मिटा दी गई हैं।(1) मन्क़ूल है : आग भी खुश्क लकड़ियों को इतनी जल्दी नहीं जलाती जितनी जल्दी ग़ीबत बन्दे की नेकियों को जला कर राख कर देती है।(2)

सुवाल क्या ग़ीबत सिर्फ़ ज़बान से ही होती है ?

जवाब ग़ीबत सिर्फ़ ज़बान ही से नहीं और त़रीक़ों से भी होती है। मसलन : (1) इशारे से (2) लिख कर (3) मुस्कुरा कर (मसलन आप के सामने किसी की ख़ूबी बयान हुई और आप त़न्ज़िया अन्दाज़ में मुस्कुरा दिये जिस से ज़ाहिर होता हो कि "तुम भले ता'रीफ़ किये जाओ, मैं इस को ख़ूब जानता हूं।") (4) दिल के अन्दर ग़ीबत करना या'नी बद गुमानी को दिल में जमा लेना। मसलन बिग़ैर देखे बिला दलील या बिग़ैर किसी वाज़ेह़ क़रीने के ज़ेह्न बना लेना कि "फ़ुलां में वफ़ा नहीं है।" या "फ़ुलां ने ही मेरी चीज़ चुराई है।" या "फ़ुलां ने यूं ही गप लगा दिया है।" वग़ैरा (5) अल ग़रज़ हाथ, पाउं, सर, नाक, होंट, ज़बान, आंख, अबरू, पेशानी पर बल डाल कर या लिख कर, फ़ोन पर SMS कर के, इन्टरनेट पर चेटिंग के ज़रीए, बरक़ी डाक (या'नी E-MAIL) से या किसी भी अन्दाज़ से किसी के अन्दर मौजूद बुराई या ख़ामी दूसरे को बताई जाए वोह ग़ीबत में दाख़िल है।(3)

---

1 ...الترغیب والترھیب، کتاب الادب، باب الترھیب من الغیبۃ والبھت...الخ، ۳/ ۲۰۶، حدیث: ۴۳۶۴۔

2 ...احیاء علوم الدین، کتاب آفات اللسان، الآفۃ الخامسۃ عشرۃ الغیبۃ، بیان العلاج الذی یمنع...الخ، ۳/ ۱۸۳۔

3 .....ग़ीबत की तबाहकारियां, स. 153

सुवाल ग़ीबत में शिर्कत और ग़ीबत करने वाले की हौसला अफ़्ज़ाई कैसे होती है ?

जवाब ग़ीबत सुनने पर खुश होना और उस की त़रफ़ तवज्जोह से कान लगाना, दिलचस्पी लेते हुए हां, हूं, हैं, जी वग़ैरा आवाज़ें निकालना भी ग़ीबत है। ग़ीबत सुनने वाले की इस ह़रकत से ग़ीबत करने वाले को मज़ीद तक़्विय्यत मिलती है और वोह मज़ीद बढ़ चढ़ कर ग़ीबत करता है, इसी त़रह़ ग़ीबत सुन कर खुशी और तअ़ज्जुब का इज़्हार भी गुनाह है, मसलन हैरत के साथ कहना : अरे ! येह ऐसा शख़्स है ! मैं तो इस को अच्छा आदमी समझता था। दिलचस्पी के साथ ग़ीबत सुनने, तअ़ज्जुब का इज़्हार करने, हां में हां मिलाने के अन्दाज़ में सर हिलाने वग़ैरा में ग़ीबत करने वाले की पज़ीराई और हौसला अफ़्ज़ाई का सामान है बल्कि ऐसे मौक़अ़ पर बिला इजाज़ते शरई ख़ामोश रहने वाला भी ग़ीबत में शरीक ही माना जाएगा।(1)

सुवाल सय्यिदुना फ़क़ीह अबुल्लैस رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने ग़ीबत की कितनी अक़्साम फ़रमाई हैं ?

जवाब ह़ज़रते सय्यिदुना फ़क़ीह अबुल्लैस समरक़न्दी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى ने फ़रमाया कि ग़ीबत चार क़िस्म की है :
(1) कुफ़्र (2) निफ़ाक़ (3) मा'सियत (4) मुबाह़।(2)

सुवाल जिस की ग़ीबत की गई वोह ग़ीबत करने वाले के साथ कैसा बरताव करे ?

जवाब ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ अ़ब्दुल वहहाब शा'रानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِى फ़रमाते हैं : अपनी ग़ीबत करने वाले पर मुश्तइल (या'नी गुस्से)

---

(1) ...احياءعلوم الدين، كتاب آفات اللسان، الافة الخامسة عشرة الغيبة، بيان ان الغيبة...الخ، ۳/۱۸۰۔
ग़ीबत की तबाहकारियां, स. 169

(2) ...تنبيه الغافلين، باب الغيبة، ص ۸۹۔

होना मुनासिब नहीं उस से तो तुम्हें महब्बत करनी चाहिये कि उस के ग़ीबत करने की वज्ह से तुम्हें सवाब हासिल हो रहा है ! अगर्चे उस ने इस बात का क़स्द (या'नी इरादा) नहीं किया। मज़ीद फ़रमाते हैं : जो शख़्स उस आदमी पर ग़ुस्सा करे जिस की नेकियां अपने हाथ आ रही हैं वोह बे वुक़ूफ़ है, अलबत्ता किसी शरई वज्ह से ग़ज़बनाक होना सहीह है।[1] आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के इरशादे गिरामी से हमें येह भी दर्स मिल रहा है कि अगर ग़ीबत करने वाले के साथ जवाबी कारवाई की गई तो नफ़रत की दीवार मज़ीद मज़बूत हो जाएगी, फ़साद बढ़ेगा और अगर उस को महब्बत से समझाने की कोशिश की गई तो اِنْ شَآءَالله عَزَّوَجَلَّ वोह ग़ीबत ही से बाज़ आ जाएगा।[2]

सुवाल क्या ग़ीबत व फ़ुज़ूल गोई में कोई बड़ा ख़तरा भी है ?

जवाब जी हां ! एक बड़ा ख़तरा है। हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन अदहम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم इरशाद फ़रमाते हैं : मैं कोहे लुबनान में कई औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام की सोहबत में रहा उन में से हर एक ने मुझे येही वसिय्यत की, कि जब लोगों में जाओ तो उन्हें इन चार बातों की नसीहत करना : (1) जो पेट भर कर खाएगा उसे इबादत की लज़्ज़त नसीब नहीं होगी (2) जो ज़ियादा सोएगा उस की उम्र में बरकत न होगी (3) जो सिर्फ़ लोगों की ख़ुशनूदी चाहेगा वोह रिज़ाए इलाही से मायूस हो जाएगा और (4) जो ग़ीबत और फ़ुज़ूल गोई ज़ियादा करेगा वोह दीने इस्लाम पर नहीं मरेगा।[3]

---

1 . . . تنبیہ المغترین، الباب الثالث فی جملۃ اخری من الاخلاق، ومن اخلاقھم سدباب الغیبۃ . . . الخ، ص ۱۹۳۔

2 .....ग़ीबत की तबाहकारियां, स. 126

3 . . . منہاج العابدین، العائق الرابع النفس، الفصل الخامس فی البطن وحفظہ، ص ۹۸۔

सुवाल बुज़ुर्गाने दीन दूसरों के मुतअ़ल्लिक़ मन्फ़ी बातें करने वालों की इस्लाह़ कैसे करते थे ?

जवाब अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْعَزِيْز की ख़िदमते बा बरकत में एक शख़्स ह़ाज़िर हुवा और उस ने किसी के बारे में कोई मन्फ़ी (NEGATIVE) बात की । आप ने फ़रमाया : अगर तुम चाहो तो हम तुम्हारे मुआ़मले की तह़क़ीक़ करें और अगर तुम चाहो तो हम तुम्हें मुआ़फ़ कर दें ? उस ने अ़र्ज़ की : या अमीरल मोमिनीन ! मुआ़फ़ कर दीजिये ! आइन्दा मैं ऐसा (या'नी ग़ीबत और चुग़लख़ोरी) नहीं करूंगा ।(1)

सुवाल ग़ीबत करने वालों से किस तरह़ पीछा छुड़ाया जाए ?

जवाब उस को मुनासिब त़रीक़े पर रोक दीजिये, अगर वोह बाज़ न आए तो वहां से उठ जाइये, अगर उसे रोकना या अपना वहां से हटना मुमकिन न हो तो दिल में बुरा जानिये, तरकीब से बात बदल दीजिये, उस गुफ़्त्गू में दिलचस्पी मत लीजिये, मसलन इधर उधर देखने लग जाइये, मुंह पर बेज़ारी के आसार लाइये, बार बार घड़ी देख कर उक्ताहट का इज़्हार फ़रमाइये, मुमकिन हो तो इस्तिन्जा ख़ाने का कह कर ही उठ जाइये और फिर आप का कहा झूट न हो जाए इस लिये इस्तिन्जा भी कर लीजिये । **"ग़ीबतगाह" में ह़ाज़िर रहने के बजाए मजबूरन इस्तिन्जा ख़ाने में वक़्त गुज़ारना बहुत मुनासिब अ़मल है ।** اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ इस पर भी सवाब मिलेगा ।(2)

---

1 ...تنبیہ الغافلین، باب النمیمۃ، ص ۹۲۔

2 .....ग़ीबत की तबाहकारियां, स. 214

सुवाल छोटे बच्चे की ग़ीबत की कुछ मिसालें बयान कीजिये ?

जवाब (1) इतना बड़ा हो गया मगर तमीज़ नहीं आई (2) छोटा पढ़ाई में बहुत ज़हीन है मगर बड़ा 8 साल का हुवा अभी तक कुन्द ज़ेह्न है (3) बहुत चिड़चिड़ा हो गया है (4) मां को बहुत तंग करता है (5) बड़ी बच्ची ने छोटी वाली को बाल खींच कर गिरा दिया।[1]

बद शुगूनी

सुवाल शुगून किसे कहते हैं ?

जवाब शुगून का मा'ना है : फ़ाल लेना या'नी किसी चीज़, शख़्स, अ़मल, आवाज़ या वक़्त को अपने ह़क़ में अच्छा या बुरा समझना।[2]

सुवाल ज़मानए जाहिलिय्यत में बद शुगूनी लेने का क्या त़रीक़ा था ?

जवाब ज़मानए जाहिलिय्यत में मुश्रिकीन परिन्दों पर ए'तिमाद करते थे, जब उन में से कोई शख़्स किसी काम के लिये निकलता तो वोह परिन्दे की त़रफ़ देखता अगर परिन्दा दाईं त़रफ़ उड़ता तो वोह उस से नेक शुगून लेता और अपने काम पर रवाना हो जाता और अगर परिन्दा बाईं जानिब उड़ता तो वोह उस से बद शुगूनी लेता और लौट आता, बा'ज़ अवक़ात वोह किसी मुहिम पर रवाना होने से पहले खुद परिन्दे को उड़ाते थे, फिर जिस जानिब वोह उड़ता था उस पर ए'तिमाद कर के उस के मुत़ाबिक़ मुहिम पर रवाना होते या रुक जाते।[3]

सुवाल किसी शख़्स को मन्हूस क़रार देने का क्या गुनाह होता है ?

1.....ग़ीबत की तबाहकारियां, स. 54 माख़ूज़न।

2.....बद शुगूनी, स. 10

3...فتح الباری، کتاب الطب، باب الطیرۃ، ۱۱/۱۸۰، تحت الحدیث:۵۷۵۴-

जवाब किसी शख़्स को मन्हूस क़रार देने में उस की सख़्त दिल आज़ारी है और इस से तोहमत धरने का गुनाह भी होता है और येह दोनों जहन्नम में ले जाने वाले काम हैं।(1)

सुवाल जब बद फ़ाली का गुमान हो तो उस वक़्त क्या पढ़ना चाहिये ?

जवाब उस वक़्त येह दुआ पढ़े : اَللّٰهُمَّ لَا طَيْرَ اِلَّا طَيْرُكَ وَلَا خَيْرَ اِلَّا خَيْرُكَ وَلَا اِلٰهَ غَيْرُكَ

तर्जमा : ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! बुराई और भलाई तेरी ही तरफ़ से है और तेरे सिवा कोई मा'बूद नहीं।(2)

सुवाल कुरआने मजीद का कोई सफ़हा खोल कर फ़ाल निकालना कैसा है ?

जवाब बा'ज़ लोग कुरआने मजीद का कोई भी सफ़हा खोल कर सब से पहली आयत के तर्जमे से अपने काम के बारे में ख़ुद साख़्ता मफ़्हूम अख़्ज़ कर के फ़ाल निकालते हैं, इस तरह फ़ाल निकालना जाइज़ नहीं।(3)

सुवाल सितारों के अच्छे बुरे असरात पर यक़ीन रखना कैसा है ?

जवाब कवाकिब में कुछ भी अच्छाई या बुराई नहीं अगर कोई शख़्स सितारों को हक़ीक़ी तौर पर तासीर रखने वाला जाने तो येह शिर्क है और अगर उन की तासीर को हक़ीक़ी तो न समझे लेकिन उन से मदद ले तो उस का येह अ़मल हराम है और अगर कोई उन की तासीर को हक़ीक़ी न समझे और न ही उन से मदद ले बल्कि अपने मुआ़मलात में उन की रिआ़यत करे तो उस का येह अ़मल तवक्कुल के ख़िलाफ़ ज़रूर है।(4)

1.....बद शुगूनी, स. 9

2...مسند بزار، مسند بریدۃ بن الحصیب رضی اللہ عنه، ۱۰/۲۷۵، حدیث: ۴۳۷۹۔

3...حدیقة ندیة، الخلق الخامس والعشرون من الاخلاق الستین المذمومة التطیر، ۲/۲۶، बद शुगूनी, स. 39

4.....फ़तावा रज़विय्या, 21 / 223 मुलख़्ख़सन।

सुवाल इस उम्मत में कौन सी तीन चीजें लाज़िमी रहेंगी ?

जवाब हुज़ूर नबिय्ये गै़बदान صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : मेरी उम्मत में तीन चीजें लाज़िमन रहेंगी : बद फ़ाली, ह़सद और बद गुमानी।(1)

सुवाल ह़सद, बद गुमानी और बद फ़ाली का तदारुक कैसे किया जाए ?

जवाब ह़दीस शरीफ़ में है : जब तुम ह़सद करो तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से इस्तिग़फ़ार करो और जब तुम कोई बद गुमानी करो तो इस पर जमे न रहो और जब तुम बद फ़ाली निकालो तो उस काम को कर लो।(2)

सुवाल बद शुगूनी के क्या नताइज बर आमद होते हैं ?

जवाब (1) बद शुगूनी का शिकार होने वालों का **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर ए'तिमाद और तवक्कुल कमज़ोर हो जाता है। (2) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के बारे में बद गुमानी पैदा होती है। (3) तक़्दीर पर ईमान कमज़ोर होने लगता है। (4) शैत़ानी वस्वसों का दरवाज़ा खुलता है। (5) बद फ़ाली से आदमी के अन्दर तवह्हुम परस्ती, बुज़दिली, डर और ख़ौफ़, पस्त हिम्मती और तंग दिली पैदा हो जाती है।(3)

सुवाल मख़्सूस दिनों और तारीख़ों में शादी न करना कैसा है ?

जवाब मुजद्दिदे आ'ज़म आ'ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحمَۃُ الرَّحْمٰن से इसी त़रह़ का सुवाल हुवा कि लोग 3, 13, 23 और 8, 18, 28 इसी त़रह़ जुमे'रात, बुध और इतवार को शादी वग़ैरा नहीं करते और ए'तिक़ाद येह रखते हैं कि सख़्त नुक़्सान

---

1 ...معجم کبیر ۳/۲۲۸، حدیث: ۳۲۲۷۔

2 ...معجم کبیر ۳/۲۲۸، حدیث: ۳۲۲۷۔

3 .....बद शुगूनी, स. 20

पहुंचेगा इन का क्या हुक्म है ? तो आप رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने जवाब दिया : येह सब बातिल व बे अस्ल है।[1]

सुवाल माहे सफ़र को मन्हूस समझना कैसा है ?

जवाब सदरुश्शरीआ मुफ़्ती मुहम्मद अमजद अली आ'ज़मी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ القَوِی लिखते हैं : माहे सफ़र को लोग मन्हूस जानते हैं, इस में शादी बियाह नहीं करते, लड़कियों को रुख़्सत नहीं करते और भी इस क़िस्म के काम करने से परहेज़ करते हैं और सफ़र करने से गुरेज़ करते हैं, खुसूसन माहे सफ़र की इब्तिदाई तेरह तारीखें बहुत ज़ियादा नहूस (या'नी नुहूसत वाली) मानी जाती हैं और इन को तेरह तेज़ी कहते हैं येह सब जहालत की बातें हैं। हदीस में फ़रमाया कि "सफ़र कोई चीज़ नहीं"[2] या'नी लोगों का इसे मन्हूस समझना ग़लत है।[3]

सुवाल सफ़रुल मुज़फ़्फ़र पहली हिजरी में किन की शादी ख़ाना आबादी हुई ?

जवाब इस महीने में हज़रते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِیْم और ख़ातूने जन्नत हज़रते सय्यिदतुना फ़ातिमा ज़हरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا की शादी ख़ाना आबादी हुई।[4]

ह़सद

सुवाल ह़सद की मज़म्मत पर कोई ह़दीसे मुबारका बयान कीजिये ?

जवाब हुज़ूर सय्यिदे आलम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ह़सद ईमान

1.....फ़तावा रज़विय्या, 23 / 272

2 . . . بخاری، کتاب الطب، باب الجذام، ۴/۲۴، حدیث:۵۷۰۷۔

3.....बहारे शरीअत, हिस्सा, 16, 3 / 659

4 . . . الکامل فی التاریخ، ثم دخلت السنة الثانیة من الھجرة، ۲/۱۲۔

को इसी त़रह़ तबाह कर देता है जिस त़रह़ सबिर (एलवा) शहद को तबाह कर देता है।[1]

सुवाल इब्लीस अपने चेलों को इन्सानों से क्या करवाने का कहता है ?

जवाब हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहि़बे लौलाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم इरशाद फ़रमाते हैं : इब्लीस (अपने चेलों से) कहता है : इन्सानों से ज़ुल्म और ह़सद कराओ क्यूंकि येह दोनों अ़मल अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक शिर्क के मुसावी हैं।[2]

सुवाल किस शख़्स से ह़सद किया जाता है ?

जवाब ह़दीस शरीफ़ में है : हर ने'मत वाले से ह़सद किया जाता है।[3]

सुवाल ह़सद करने पर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने किन लोगों की मज़म्मत फ़रमाई ?

जवाब यहूदियों ने हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और मुसलमानों से ह़सद किया तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने उन की मज़म्मत करते हुए फ़रमाया : ﴿اَمْ يَحْسُدُوْنَ النَّاسَ عَلٰى مَاۤ اٰتٰىهُمُ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ﴾ (پ۵، النساء:۵۴)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : या लोगों से ह़सद करते हैं उस पर जो अल्लाह ने उन्हें अपने फ़ज़्ल से दिया।[4]

सुवाल अहले किताब मुसलमानों से किस त़रह़ का ह़सद करते थे ?

जवाब अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

﴿وَدَّ كَثِيْرٌ مِّنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ لَوْ يَرُدُّوْنَكُمْ مِّنْۢ بَعْدِ اِيْمَانِكُمْ كُفَّارًا ۖۚ حَسَدًا مِّنْ عِنْدِ اَنْفُسِهِمْ﴾ (پ۱، البقرة:۱۰۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बहुत किताबियों ने चाहा काश तुम्हें

---

1 ...كشف الخفاء، ۱/۳۱۷، حديث: ۱۱۲۹-

2 ...مسند الفردوس، ۱/۱۴۴، حديث: ۹۲۳-

3 ...معجم كبير، ۲۰/۹۴، حديث: ۱۸۳-

4 ...شعب الايمان، باب في الحث على ترك الغل والحسد، ۵/۲۶۳-

ईमान के बा'द कुफ़्र की त़रफ़ फेर दें अपने दिलों की जलन से।

वज़ाह़त : इस आयते मुबारका में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने ख़बर दी है कि उन का ने'मते ईमान का ज़वाल चाहना ह़सद है।

सुवाल ह़सद की बुन्याद क्या चीज़ें बनती हैं ?

जवाब येह सात चीज़ें ह़सद की बुन्याद बन सकती हैं : (1) बुग़्ज़ व अ़दावत (2) खुद साख़्ता इ़ज़्ज़त (3) तकब्बुर (4) एह़सासे कमतरी (5) मन पसन्द मक़ासिद के फ़ौत होने का ख़ौफ़ (6) हुब्बे जाह (7) क़ल्बी ख़बासत।[1]

सुवाल ह़सद के मरातिब बताइये ?

जवाब ह़सद के चार मरातिब हैं : (1) किसी की ने'मत के ज़वाल की इस त़रह़ तमन्ना करना कि खुद को उस ने'मत के हुसूल की ख़्वाहिश न हो येह ह़सद का इन्तिहाई दरजा है (2, 3) ग़ैर की ने'मत के ज़वाल के साथ साथ उसी ने'मत या उस जैसी दूसरी ने'मत के हुसूल की तमन्ना करना, अगर सामने वाले की ने'मत या उस जैसी ने'मत ह़ासिद को ह़ासिल न हो तो मह़ज़ उस से ने'मत के ज़वाल की तमन्ना इस लिये करना कि वोह उस से मुमताज़ न हो सके और (4) ग़ैर से ने'मत के ज़ाइल होने की ख़्वाहिश तो न हो मगर आदमी येह पसन्द करे कि वोह उस से मुमताज़ भी न हो।[2]

सुवाल ह़सद करने वाले की तीन निशानियां बताइये ?

जवाब (1) मह़सूद (जिस से ह़सद हो) की मौजूदगी में चापलूसी

---

1 ...احیاءعلوم الدین،کتاب ذم الغضب والحقد والحسد،بیان ذم الحسد، ۳/ ۲۳۷۔

2 ...احیاءعلوم الدین،کتاب ذم الغضب والحقد والحسد،بیان ذم الحسد، ۳/ ۲۳۷۔

करना (2) पीठ पीछे ग़ीबत करना और (3) उस की मुसीबत पर खुश होना।[1]

सुवाल हासिद को हसद कब नुक़्सान देता है?

जवाब हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : हासिद को उस का हसद उस वक़्त तक नुक़्सान नहीं देता जब तक वोह ज़बान से न बोले या हाथ से उस पर अ़मल न करे।[2]

सुवाल वोह कौन सी चीज़ है जो हसद में कमी का सबब बनती है?

जवाब हज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه से मरवी है : जो मौत को कसरत के साथ याद करे उस के हसद और खुशी में कमी आ जाएगी।[3]

सुवाल "मख़्मूमुल क़ल्ब" किसे कहते है?

जवाब बारगाहे रिसालत में अ़र्ज़ की गई : लोगों में अफ़्ज़ल कौन है? हुज़ूर नबिय्ये रह़मत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : مَخْمُومُ الْقَلْبِ صَدُوْقُ اللِّسَانِ۔ सहाबए किराम ने अ़र्ज़ की : **सदूक़ुल्लिसान** या'नी सच्ची ज़बान वाले को तो हम जानते हैं मगर येह **मख़्मूमुल क़ल्ब** कौन होता है? इरशाद फ़रमाया : वोह जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से डरने वाला, हर क़िस्म के गुनाह, सरकशी, धोका देही और हसद से बचने वाला हो।[4]

सुवाल हदीसे मुबारका में हसद से बचने का क्या इलाज बताया गया है?

---

1 ...حلية الاولياء، وهب بن منبه، ۴/۵۰، رقم: ۴۷۰۹۔

2 ...كنز العمال، كتاب الاخلاق، الحسد، ۳/۱۸۶، حديث: ۷۴۴۴۔

3 ...احياء علوم الدين، كتاب ذم الغضب والحقد والحسد، بيان ذم الحسد، ۳/۲۳۳۔

4 ...ابن ماجه، كتاب الزهد، باب الورع والتقوى، ۴/۴۷۵، حديث: ۴۲۱۶۔

जवाब हुज़ूर नबिय्ये अकरम, शफ़ीए आ'ज़म صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : तीन बीमारियां मेरी उम्मत को ज़रूर होंगी : ह़सद, बद गुमानी और बद शुगूनी । क्या मैं तुम्हें इन से छुटकारे का त़रीक़ा न बता दूं ? जब तुम में बद गुमानी पैदा हो तो उस पर यक़ीन न करो, जब तुम ह़सद में मुब्तला हो तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से इस्तिग़फ़ार करो और जब बद शुगूनी पैदा हो तो उस काम को कर गुज़रो ।(1)

अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام

सुवाल जन्नत में किस हस्ती को कुन्यत के साथ पुकारा जाएगा ?

जवाब ह़ज़रते सय्यिदुना आदम عَلَيْهِ السَّلَام को जन्नत में अबू मुह़म्मद कह कर बुलाया जाएगा ।(2)

सुवाल ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام की त़रफ़ مَعَاذَ الله "गुनाह या नाफ़रमानी" की निस्बत करने का क्या हुक्म है ?

जवाब ग़ैरे तिलावत में अपनी त़रफ़ से ह़ज़रते सय्यिदुना आदम عَلَيْهِ السَّلَام की त़रफ़ नाफ़रमानी व गुनाह की निस्बत करना ह़राम है ।(3) अइम्मए दीन ने इस की तसरीह़ फ़रमाई है बल्कि एक जमाअ़ते उ़लमाए किराम ने इसे कुफ़्र बताया ।(4)

सुवाल ह़ज़रते नूह़ عَلَيْهِ السَّلَام की कश्ती के बारे में कुछ तफ़्सील बताइये ?

जवाब इस कश्ती की बुलन्दी 30 गज़ थी और इस में तीन मन्ज़िलें थीं,

---

1 ...معجم کبیر، ۳/۲۲۸، حدیث: ۳۲۲۷۔

2 ...تاریخ ابن عساکر، رقم: ۵۷۸، آدم نبی الله، ۷/۳۸۹، حدیث: ۲۰۱۹۔

3 ...احکام القرآن لابن العربی، پ۱۶، طٰہٰ، تحت الآیۃ: ۱۲۱، ۳/۲۵۹۔

4 ...مدخل، الجزء الثانی، ۱/۲۳۷۔

निचली मन्ज़िल जंगली जानवरों, दरिन्दों और ह़शरातुल अर्ज़ के लिये थी, दरमियानी मन्ज़िल में चौपाए और पालतू जानवर थे जब कि ऊपर की मन्ज़िल इन्सानों के लिये मुख़्तस थी।(1)

सुवाल ता'मीरे ख़ानए का'बा के वक़्त ह़ज़रते इब्राहीम और इस्माईल عَلَيْهِمَا السَّلَام की ज़बानों पर कौन से अल्फ़ाज़ जारी थे ?

जवाब ﴿رَبَّنَا تَقَبَّلْ مِنَّا اِنَّكَ اَنْتَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ﴾ (پ۱، البقرة:۱۲۷) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** ऐ रब हमारे हम से क़बूल फ़रमा, बेशक तू ही है सुनता जानता।

सुवाल ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام की अज़्वाज के नाम बताइये ?

जवाब (1) ह़ज़रते सारह (2) ह़ज़रते हाजिरा क़िब्तिया मिसरिया (3) ह़ज़रते क़न्तूरा (4) ह़ज़रते हुजून बिन्ते अमीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُنَّ(2)

सुवाल जन्नती लाठी किसे कहते हैं ?

जवाब इस से मुराद ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा عَلَيْهِ السَّلَام की वोह मुक़द्दस लाठी है जिसे "अ़साए मूसा" कहते हैं।(3) इस के ज़रीए आप के बहुत से मो'जिज़ात का ज़ुहूर हुवा जिन को क़ुरआने मजीद ने बार बार बयान फ़रमाया है।

सुवाल जन्नती अ़सा ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा عَلَيْهِ السَّلَام को कैसे मिला ?

जवाब ह़ज़रते सय्यिदुना आदम عَلَيْهِ السَّلَام के बा'द येह मुक़द्दस अ़सा ह़ज़राते अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को यके बा'द दीगरे बतौरे मीरास मिलता रहा, यहां तक कि ह़ज़रते सय्यिदुना शुऐ़ब عَلَيْهِ السَّلَام को मिला, जब ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा عَلَيْهِ السَّلَام मिस्र से

1 ...تفسیر بغوی، پ۱۲، ہود، تحت الآیة:۳۸، ۲/۳۲۲۔

2 ...قصص الانبیاء لابن کثیر، الفصل الثالث عشر: ذکر اولاد ابراهیم الخلیل، ص۲۴۰۔

3 ...طبقات کبری، ذکر من ولد رسول الله من الانبیاء، ۱/۳۰۔

www.dawateislami.net

हिजरत फ़रमा कर मदयन तशरीफ़ ले गए तो वहां ह़ज़रते सय्यिदुना शुऐब عَلَيْهِ السَّلَام ने ब हुक्मे इलाही आप को येह मुक़द्दस अ़सा अ़ता फ़रमाया।(1)

सुवाल ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने कितनी रातें कोहे तूर पर ए'तिकाफ़ किया तो तौरैत शरीफ़ अ़ता की गई ?

जवाब ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने कोहे तूर पर 40 रातें ए'तिकाफ़ किया जिस के बा'द आप को तौरैत शरीफ़ अ़ता की गई।(2)

सुवाल ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام के अस्ह़ाब को "ह़वारी" क्यूं कहते हैं ?

जवाब वोह सब ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام के मुख़्लिस जां निसार थे और उन के कुलूब और निय्यतें साफ़ थीं इस बिना पर उन बारह पाकबाज़ों और नेक नफ़्सों को "ह़वारी" का मुअ़ज़्ज़ज़ लक़ब अ़ता किया गया।(3)

सुवाल ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام को आस्मान पर उठाए जाने का वाक़िआ़ कहां और कब पेश आया ?

जवाब ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام को आस्मान पर उठाए जाने का वाक़िआ़ बैतुल मुक़द्दस में शबे क़द्र की मुबारक रात में वुक़ूअ़ पज़ीर हुवा।(4)

सुवाल क्या हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के भी कुछ ह़वारी थे ?

जवाब जी हां। ह़ज़रते क़तादा رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं कि कुरैश में 12 सह़ाबए

---

(1) ...تفسیر کبیر، پ ۲۰، القصص، تحت الآیۃ: ۳۱، ۸/ ۵۹۴۔
(2) ...تفسیر ابن ابی حاتم، پ ۱، البقرۃ، تحت الآیۃ: ۵۱، ص ۱۰۷۔
(3) ...روح البیان، پ ۳، آل عمران، تحت الآیۃ: ۵۲، ۲/ ۴۰۔
(4) ...تفسیر جمل، پ ۳، آل عمران، تحت الآیۃ: ۵۷، ۱/ ۴۲۷۔

किराम हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के "हवारी" हैं।[1]

सुवाल हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के हवारियों के नाम बताइये ?

जवाब 12 हवारियों के नाम येह हैं : (1) हज़रते अबू बक्र (2) हज़रते उमर फ़ारूक़ (3) हज़रते उस्माने ग़नी (4) हज़रते अलिय्युल मुर्तज़ा (5) हज़रते हम्ज़ा (6) हज़रते जा'फ़र (7) हज़रते अबू उबैदा बिन अल जर्राह (8) हज़रते उस्मान बिन मज़ऊन (9) हज़रते अब्दुर्रहमान बिन औफ़ (10) हज़रते सा'द बिन अबी वक़्क़ास (11) हज़रते तलहा बिन उबैदुल्लाह (12) हज़रते ज़ुबैर बिन अव्वाम (رِضْوَانُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن)[2]

गुज़श्ता अक़्वाम

सुवाल उम्मते मुहम्मदिय्या से पहले कितनी उम्मतें गुज़रीं ?

जवाब इस उम्मत से क़ब्ल 69 उम्मतें गुज़री हैं। हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया :

اِنَّكُمْ تَتِمُّوْنَ سَبْعِيْنَ اُمَّةً اَنْتُمْ خَيْرُهَا وَاَكْرَمُهَا عَلَى اللّٰهِ **तर्जमा :** तुम 70 उम्मतों को मुकम्मल करने वाले हो, तुम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नज़दीक उन सब से बेहतर और सब से ज़ियादा इज़्ज़त वाले हो।[3]

सुवाल वोह कौन से चार नुफ़ूस हैं जो बाप की पुश्त से पैदा हुए न मां के पेट से ?

जवाब हज़रते सय्यिदुना आदम عَلَيْهِ السَّلَام, हज़रते सय्यिदतुना हव्वा رَحْمَةُ اللّٰهِ تعالٰى عَلَيْهَا, हज़रते सय्यिदुना इस्माईल عَلَيْهِ السَّلَام का मेंढा और हज़रते सय्यिदुना सालेह عَلَيْهِ السَّلَام की ऊंटनी।[4]

1 . . . تفسیر بغوی، پ ۳، آل عمران، تحت الآیۃ: ۵۲، ۱/ ۲۳۶، ماخوذاً۔

2 . . . تفسیر بغوی، پ ۳، آل عمران، تحت الآیۃ: ۵۲، ۱/ ۲۳۶۔

3 . . . ترمذی، کتاب التفسیر، باب ومن سورۃ آل عمران، ۵/ ۷، حدیث: ۳۰۱۲۔

4 . . . الروض الفائق، المجلس السابع والاربعون فی مناقب الصالحین رضی اللہ عنہم، ص ۲۷۱۔

सुवाल सब से पहले आग की पूजा किस ने की ?

जवाब ह़ज़रते सय्यिदुना हाबील رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के क़ातिल भाई "क़ाबील" ने शैत़ान के कहने पर सब से पहले आग की पूजा की ।(1)

सुवाल क़ाबील को अपने भाई के क़त्ल के जुर्म में क्या सज़ा दी गई ?

जवाब क़ाबील को अपने भाई के क़त्ल के जुर्म में काफ़ी सज़ाएं मिलीं । उस का एक पाउं रान और पिन्डली से चिमट गया, क़ियामत तक के लिये उस का चेहरा सूरज से जोड़ दिया गया, अब गर्मियों में उसे आग से जलाया जाता है और सर्दियों में बर्फ़ से तक्लीफ़ दी जाती है ।(2) एक और ह़दीस शरीफ़ के मुत़ाबिक़ दुन्या में कोई भी ना ह़क़ क़त्ल होता है तो उस का गुनाह क़ाबील के नामए आ'माल में भी दर्ज किया जाता है क्यूंकि उसी ने क़त्ल ईजाद किया था ।(3)

सुवाल सब से पहले किस शख़्स ने शहर और क़ल्ए़ बनाए ?

जवाब ह़ज़रते सय्यिदुना शीस बिन आदम عَلَیْہِمَا السَّلَام के पड़ पोते महायील ने सब से पहले दरख़्त काट कर शहरों की बुन्यादें डालीं और बड़े बड़े क़ल्ए़ ता'मीर किये ।(4)

सुवाल किस बे जान चीज़ ने ख़ानए का'बा का ह़ज व त़वाफ़ किया ह़ालांकि उस पर वाजिब न था ?

जवाब ह़ज़रते सय्यिदुना नूह़ नजिय्युल्लाह عَلَیْہِ السَّلَام की कश्ती ने ।(5)

---

1 . . . روح البیان، پ۶، المائدۃ، تحت الآیۃ: ۳۱، ۲/۳۸۲۔

2 . . . روح البیان، پ۶، المائدۃ، تحت الآیۃ: ۳۱، ۲/۳۸۲۔

3 . . . بخاری، کتاب احادیث الانبیاء، باب خلق آدم . . . الخ، ۲/۴۱۳، حدیث: ۳۳۳۵۔

4 . . . البدایۃ والنہایۃ، ذکر وفاۃ ادم ووصیتہ . . . الخ، ۱/۱۵۸۔

5 . . . الروض الفائق، المجلس السابع والاربعون فی مناقب الصالحین رضی اللہ عنھم، ص ۲۷۲۔

सुवाल दरवाज़ए बैतुल मुक़द्दस में दाख़िल होते वक़्त बनी इसराईल ने क्या नाफ़रमानी की और फिर उन्हें क्या सज़ा मिली ?

जवाब उन्हें हुक्म था कि वोह इस दरवाज़े में अदबो एहतिराम के साथ झुक कर और अपने लिये मुआफ़ी की दुआ मांगते हुए दाख़िल हों मगर उन्हों ने इस हुक्म की नाफ़रमानी की और अपने सुरीनों पर घिसटते हुए और बजाए दुआए मुआफ़ी के फ़ुज़ूल जुम्ले बोलते और मज़ाक़ उड़ाते हुए दाख़िल हुए, इस नाफ़रमानी की वज्ह से उन लोगों में ताऊन की बीमारी फैल गई और एक घन्टे में 70 हज़ार बनी इसराईल मर गए ।(1)

सुवाल क़ारून कौन था ?

जवाब क़ारून हज़रते सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह عَلَيْهِ السَّلَام के चचा "यसहुर" का बेटा था । इन्तिहाई ख़ूब सूरत और हसीन शक्ल का आदमी था, इसी लिये इसे मुनव्वर कहते थे । बनी इसराईल में तौरैत का सब से बेहतर क़ारी था । नादारी के ज़माने में निहायत आजिज़ी करने वाला और बा अख़्लाक़ था । दौलत हाथ आते ही इस का हाल तब्दील हुवा और येह भी सामरी की तरह मुनाफ़िक़ हो गया ।(2)

सुवाल उन बादशाहों के नाम बताइये जिन्हों ने पूरी दुन्या पर हुकूमत की ?

जवाब पूरी दुन्या की बादशाहत चार शख़्सों को मिली जिन में से दो मोमिन थे और दो काफ़िर । हज़रते सय्यिदुना सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام

---

1 ...تفسیر صاوی، پ ۱، البقرۃ، تحت الآیۃ:۵۸، ۵۹، ۱/۶۲ تا ۶۹ ملتقطا

2 ...روح البیان، پ ۲۰، القصص، تحت الآیۃ:۷۶، ۶/۴۲۹ـ

और ह़ज़रते ज़ुल क़रनैन رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ और नमरूद व बुख़्ते नस्सर, येह दोनों काफ़िर थे ।(1)

सुवाल शहर "सबा" के कुछ औसाफ़ बयान कीजिये ?

जवाब इस पाकीज़ा शहर की आबो हवा लत़ीफ़, साफ़ सुथरी सर ज़मीन, न इस में मच्छर, न मख्खी, न खटमल, न सांप, न बिच्छू, हवा की पाकीज़गी का येह आ़लम कि अगर कहीं और का कोई शख़्स इस शहर से गुज़र जाए और उस के कपड़ों में जूएं हों तो सब मर जाएं ।(2)

सुवाल "अल अ़रबुल आ़रिबह" और "अल अ़रबुल मुस्ता'रिबह" किन को कहा जाता है ?

जवाब ह़ज़रते सय्यिदुना इस्माईल عَلَیْہِ السَّلَام से पहले के जितने भी अ़रब हैं उन्हें "अल अ़रबुल आ़रिबह" और ह़ज़रते सय्यिदुना इस्माईल عَلَیْہِ السَّلَام की औलाद को "अल अ़रबुल मुस्ता'रिबह" कहा जाता है ।(3)

सुवाल अन्त़ाकिया शहर वालों की हिदायत के लिये ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा عَلَیْہِ السَّلَام ने जो तीन मुबल्लिग़ रवाना फ़रमाए उन के नाम बताइये ?

जवाब इन में से एक का नाम "सादिक़" दूसरे का नाम "मस्दूक़" और तीसरे का नाम "शमऊ़न" رَحْمَۃُ اللّٰہِ تعالٰی عَلَیْہِم था ।(4)

सीरते सय्यिदुल अम्बिया صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

सुवाल हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का नसब शरीफ़ क्या है ?

---

1 ...تفسیر صاوی، پ۳، البقرۃ، تحت الآیۃ:۲۵۸، ۱/۲۱۹۔

2 ...تفسیر مدارک، پ۲۲، سبا، تحت الآیۃ:۱۵، ص۹۶۰۔

3 ...سیرۃ نبویۃ لابن کثیر، ذکر اخبار العرب، ۱/۳۔

4 ...تفسیر صاوی، پ۲۲، یس، تحت الآیۃ:۱۳، ۵/۱۷۰۸، ۱۷۰۹ ملتقطاً۔

जवाब हुज़ूर ताजदारे रिसालत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का नसब शरीफ़ ह़ज़रते अ़दनान तक मुत्तफ़क़ अ़लैह है मगर इस से आगे ता'दाद और नामों में इख़्तिलाफ़ है, नसबे अक़्दस येह है : ह़ज़रते मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم बिन अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्दुल मुत्त़लिब बिन हाशिम बिन अ़ब्दे मनाफ़ बिन क़ुसय बिन किलाब बिन मुर्रह बिन का'ब बिन लुअय बिन ग़ालिब बिन फ़िह्र बिन मालिक बिन नज़्र बिन किनाना बिन ख़ुज़ैमा बिन मुदरिका बिन इल्यास बिन मुज़र बिन निज़ार बिन मअ़द बिन अ़दनान (رَحْمَۃُ اللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْہِم اَجْمَعِین)[1]

सुवाल हुज़ूर इमामुल अम्बिया صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का नसब मुबारक कितने वासित़ों से ह़ज़रते सय्यिदुना इस्माईल ज़बीहुल्लाह عَلَیْہِ السَّلَام तक पहुंचता है ?

जवाब बुख़ारी शरीफ़ के मुत़ाबिक़ ह़ज़रते अ़दनान तक 21 वासित़ों पर इत्तिफ़ाक़ है।[2] इस के बा'द ह़ज़रते सय्यिदुना इस्माईल عَلَیْہِ السَّلَام तक वासित़ों के मुतअ़ल्लिक़ चार क़ौल हैं : सात, नौ, पन्दरह और चालीस।[3] शारेह़े बुख़ारी मुफ़्ती शरीफ़ुल ह़क़ अम्जदी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : राजेह़ चालीस ही है।[4]

सुवाल मुबश्शिर व करीम आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मुबारक आमद से मुत्तसिल कुछ वाक़िआ़त बयान कीजिये ?

जवाब चन्द वाक़िआ़त येह हैं : (1) बुत मुंह के बल गिर पड़े।[5]

---

1 . . . بخاری، کتاب مناقب الانصار، باب مبعث النبی، ۲/ ۵۷۳۔

2 . . . بخاری، کتاب مناقب الانصار، باب مبعث النبی، ۲/ ۵۷۳۔

3 . . . عمدۃ القاری، کتاب مناقب الانصار، باب مبعث النبی، ۱۱/ ۵۹۳۔

4 .....नुज़्हतुल क़ारी, 4 / 674

5 . . . سیرۃ حلبیۃ، باب ذکر مولدہ صلی اللہ علیہ وسلم، ۱/ ۱۰۳۔

(2) फ़ारस के मजूसियों की एक हज़ार साल से भड़काई हुई आग यकायक बुझ गई। (3) किसरा के महल पर ज़लज़ला तारी हो गया। (4) दरियाए सावह खुश्क हो गया।[1] और (5) वालिदए माजिदा हज़रते आमिना رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا के जिस्मे अत़हर से निकलने वाले नूर ने शाम के महल्लात रौशन कर दिये।[2]

सुवाल दुन्या में तशरीफ़ आवरी के वक़्त हुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़बाने अक़्दस पर क्या दुआ़ थी ?

जवाब उम्मत के वाली, शाहे आ़ली صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने दुन्या में जल्वा अफ़रोज़ होते ही सजदा फ़रमाया और होंटों पर येह दुआ़ जारी थी : رَبِّ هَبْ لِیْ اُمَّتِیْ या'नी परवर दगार ! मेरी उम्मत मेरे ह़वाले फ़रमा।[3]

सुवाल अबू लहब काफ़िर के अ़ज़ाब में कमी करते हुए उसे थोड़ा सा पानी क्यूं दिया जाता है ?

जवाब क्यूंकि उस ने विलादते मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की खुशी में अपनी लौंडी सुवैबा को आज़ाद किया था (अबू लहब की खुशी भतीजा पैदा होने के लिह़ाज़ से थी)।[4]

सुवाल हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के चचा कितने थे और किस किस ने इस्लाम क़बूल किया ?

जवाब हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के 12 चचा थे जिन में से चार ने इस्लाम का ज़माना पाया और दो ने इस्लाम क़बूल किया :

---

1 . . . دلائل النبوة، باب ماجاء فی ارتجاس ایوان الکسری۔۔۔الخ، ۱/۱۲۶۔

2 . . . مسند امام احمد، مسند الشامیین، ۶/۸۷، حدیث: ۱۷۱۶۳۔

3 .....मआ़रिजुन्नुबुव्वत, रुक्ने दुवुम, स. 44, फ़तावा रज़विय्या, 30 / 717

4 . . . بخاری، کتاب النکاح، باب وامھاتکم۔۔۔الخ، ۳/۴۳۲، حدیث: ۵۱۰۱۔

(1) ह़ज़रते ह़म्ज़ा बिन अ़ब्दुल मुत्त़लिब (2) ह़ज़रते अ़ब्बास बिन अ़ब्दुल मुत्त़लिब।[1]

सुवाल शहज़ादए रसूल ह़ज़रते इब्राहीम رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की विलादते मुबारक किस सिने हिजरी में हुई और उन्हों ने कितनी उ़म्र पाई ?

जवाब हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के फ़रज़न्द ह़ज़रते इब्राहीम رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ जुल ह़िज्जा 8 हिजरी में मदीनए पाक में पैदा हुए, सोलह या अठ्ठारह महीने ज़िन्दा रहे और मंगल के दिन दस रबीउ़ल अव्वल या जुमादल अव्वल 10 हिजरी में वफ़ात पाई।[2]

सुवाल प्यारे आक़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के जिस्मे अक़्दस का रंग कैसा था ?

जवाब नूरानी आक़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के जिस्मे अक़्दस का रंग "गोरा सपेद" था, गोया कि आप का मुक़द्दस बदन चांदी से ढाल कर बनाया गया था।[3]

सुवाल हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के जिस्मे अत़हर में "मोहरे नुबुव्वत" किस जगह वाक़ेअ़ थी ?

जवाब हुज़ूर ताजदारे अम्बिया व मुर्सलीन صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के मुक़द्दस शानों के दरमियान कबूतर के अन्डे के बराबर मोहरे नुबुव्वत थी।[4]

सुवाल हुज़ूर जाने आ़लम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपने दिन रात को कितने ह़िस्सों में तक़्सीम फ़रमाया हुवा था ?

जवाब हुज़ूर ताजदारे ख़त्मे नुबुव्वत صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपने दिन रात

1.....सीरते मुस्त़फ़ा, स. 699
2.....मिरआतुल मनाजीह़, 2 / 384
3...ترمذی، الشمائل، باب ماجاء فی خلق رسول اللہ، ۵/۵۰۵، حدیث:۱۲۔
4...ترمذی، الشمائل، باب ماجاء فی خاتم النبوۃ، ۵/۵۰۶، حدیث:۱۷۔

को तीन हिस्सों में तक्सीम कर रखा था। एक हिस्सा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इबादत के लिये, दूसरा आम मख़्लूक़ के लिये और तीसरा अपनी ज़ात के लिये।(1)

सुवाल हुज़ूर नबिय्ये रहमत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने किस ख़ातून से येह जुम्ला कहा था : اَنْتِ اُمِّیْ بَعْدَ اُمِّیْ या'नी मेरी सगी मां के बा'द आप मेरी मां हो।

जवाब येह बात हज़रते उम्मे ऐमन رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا से फ़रमाई थी क्यूंकि हज़रते आमिना رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا के इन्तिक़ाल के बा'द हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की परवरिश की सआदत आप ही के हिस्से में आई थी।(2)

सुवाल क्या 1438 साल पहले भी झन्डे के साथ जुलूस निकला था ?

जवाब जी हां ! जब प्यारे आक़ा, दो आलम के दाता صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हिजरत फ़रमा कर "मौज़ए ग़मीम" के क़रीब पहुंचे तो बुरैदा अस्लमी, क़बीला बनी सहम के 70 सुवार ले कर مَعَاذَ اللّٰه गिरिफ़्तार करने आए, मगर रहमते आलम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की निगाहे फ़ैज़ आसार से ख़ुद ही महब्बते शाहे अबरार में गिरिफ़्तार हो कर पूरे क़ाफ़िले समेत मुशर्रफ़ ब इस्लाम हो गए और अपना इमामा सर से उतार कर नेज़े पर पर बांध लिया और यूं झन्डे के साथ जुलूस की सूरत में मदीनए मुनव्वरा में दाख़िल हुए।(3)

फ़ज़ाइल व ख़साइस व मो'जिज़ात

सुवाल अहमद और मुहम्मद नाम रखने की क्या फ़ज़ीलत है ?

1.....सीरते मुस्तफ़ा, स. 586

2...مواهب اللدنية، المقصد الاول، ذکر حضانته صلى الله عليه وسلم، ١/ ٩٧-

3...وفاء الوفا، الباب الثالث فی اخبار سكانها۔۔۔الخ، الفصل التاسع فی هجرة النبی۔۔۔الخ، ١/ ٢٤٣-

जवाब हदीसे पाक में है कि क़ियामत के दिन दो बन्दों को जन्नत में जाने का हुक्म होगा तो वोह अ़र्ज़ करेंगे : या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम किस सबब से जन्नत के क़ाबिल हुए, हम ने तो जन्नत वाला कोई अ़मल नहीं किया ? **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाएगा : जन्नत में दाख़िल हो जाओ क्यूंकि मैं ने अपने ज़िम्मए करम पर लिया है कि जिस का नाम मुहम्मद या अहमद होगा वोह दोज़ख़ में नहीं जाएगा।[1]

सुवाल वोह कौन सा इस्मे मुबारक है जो दुन्या की पैदाइश से हुज़ूर इमामुल अम्बिया صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ाहिरी तशरीफ़ आवरी तक किसी का न हुवा ?

जवाब हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का एक इस्म मुबारक "अहमद" है, आप से पहले जब से दुन्या पैदा हुई किसी का येह नाम न था ताकि इस बात में किसी को शको शुबा की गुन्जाइश न रहे कि कुतुबे साबिक़ा इल्हामिय्या में जिस अहमद का ज़िक्र है वोह आप ही की ज़ाते आ़ली है।[2]

सुवाल हदीसे पाक की रौशनी में बताइये कि सब से पहले कौन सी चीज़ बनाई गई ?

जवाब हज़रते सय्यिदुना जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह अन्सारी رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! मुझे बताइये कि सब से पहले **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने क्या चीज़ बनाई ? इरशाद फ़रमाया : ऐ जाबिर ! बिलाशुबा **अल्लाह** तआ़ला ने तमाम मख़्लूक़ात से पहले तेरे नबी (صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) का नूर अपने नूर से पैदा फ़रमाया।[3]

---

1 ...مسندفردوس، ۲/ ۵۰۳، حدیث: ۸۵۱۵-

2 ...شرح المواهب، الفصل الاول فی ذکر اسمائه ــــ الخ، ۴/ ۲۳۳-

3 ...مصنف عبدالرزاق، الجزء المفقود، ص ۶۳-

सुवाल क़बूले इस्लाम से पहले ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सुफ़्यान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने शाहे रूम के दरबार में हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के बारे में क्या कहा था ?

जवाब उन्हों ने कहा : هُوَفِیْنَا ذُوْنَسَبٍ या'नी वोह हमारे दरमियान आ़ली ख़ानदान वाले हैं।" ह़ालांकि उस वक़्त वोह आप عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के बद तरीन दुश्मन थे।[1]

सुवाल पाकीज़गिये मुस्त़फ़ा के मुतअ़ल्लिक़ ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने क्या फ़रमाया ?

जवाब आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : मैं ने कभी कोई अ़म्बर, मुश्क या कोई और चीज़ ऐसी नहीं सूंघी जिस की महक प्यारे आक़ा, मदीने वाले मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की महक से ज़ियादा ख़ुश्बूदार हो।[2]

सुवाल प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के जिस्मे अत़हर के कुछ औसाफ़ बयान कीजिये

जवाब (1) हुज़ूर सय्यिदुल अम्बिया वल मुर्सलीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के जिस्मे अक़्दस और लिबासे अत़हर पर मख्खी नहीं बैठती थी।[3] (2) आप जिस जानवर पर सुवार होते वोह उ़म्र भर वैसा ही रहता और आप की बरकत से कभी बूढ़ा न होता।[4] (3) आप जैसा रौशनी में देखते वैसा ही तारीकी में देखते थे।[5] (4) आप का साया नहीं था।[6] और (5) आप

---

1 . . . بخاری، کتاب الجهاد، باب دعاء النبی الی الاسلام والنبوة، ۲/۲۹۲، حدیث: ۲۹۴۱۔
2 . . . بخاری، کتاب المناقب، باب صفة النبی، ۲/۴۸۹، حدیث: ۳۵۶۱۔
3 . . . الشفا، الباب الرابع فیما اظهره الله۔۔۔الخ، فصل ومن ذالک ماظهر۔۔۔الخ، ۱/۳۶۸۔
4 . . . الخصائص الکبری، ذکر معجزاته فی ضروب الحیوانات، باب کل دابة رکبها۔۔۔الخ، ۲/۱۰۷۔
5 . . . الشفا، الباب الثانی فی تکمیل الله تعالی۔۔۔الخ، فصل واماوفور عقله۔۔۔الخ، ۱/۶۸۔
6 . . . الخصائص الکبری، ذکر المعجزات والخصائص۔۔۔الخ، باب الآیة فی انه لم یکن۔۔۔الخ، ۱/۱۱۶۔

का पसीना खुश्बूदार था।(1)

सुवाल क्या बरोज़े क़ियामत शफ़ाअ़ते मुस्तफ़ा से कुफ़्फ़ार को भी कुछ हिस्सा मिलेगा ?

जवाब क़ियामत के दिन मर्तबए शफ़ाअ़ते कुब्रा हुज़ूर (صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) के ख़साइस से है कि जब तक हुज़ूर (صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) फ़त्हे बाबे शफ़ाअ़त न फ़रमाएंगे किसी को मजाले शफ़ाअ़त न होगी और येह शफ़ाअ़ते कुब्रा मोमिन, काफ़िर, मुतीअ़ (फ़रमां बरदार), आ़सी (गुनहगार) सब के लिये है कि वोह इन्तिज़ारे हि़साब जो सख़्त जां गुज़ा होगा इस बला से छुटकारा कुफ़्फ़ार को भी हुज़ूर (صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) की बदौलत मिलेगा।(2)

सुवाल पंघोड़े में हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की उंगली के इशारे पर चांद इधर से उधर क्यूं होता था ?

जवाब हज़रते सय्यिदुना अ़ब्बास बिन अ़ब्दुल मुत्तलिब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने बारगाहे रिसालत में अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! मुझे आप के दीन में आप की नुबुव्वत की अ़लामत ने दाख़िल किया है, वोह येह कि आप झूले में चांद से खेलते थे, आप उंगली से जहां इशारा करते चांद वहीं झुक जाता। हुज़ूर मालिको मुख़्तार नबी صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : मैं चांद से बातें करता था और चांद मुझ से बातें करता था, वोह मुझे रोने से बहलाता था और जब चांद अ़र्शे इलाही के नीचे सजदा करता तो मैं उस की तस्बीह़ करने की आवाज़ सुनता था।(3)

---

1 ...مسلم، کتاب الفضائل، باب طیب عرق النبی ---الخ، ص ۹۷۸، حدیث: ۲۰۵۵۔

2 .....बहारे शरीअ़त, हिस्सा अव्वल, 1 / 70

3 ...دلائل النبوۃ، جماع ابواب صفۃ رسول اللہ، باب ماجاء فی حفظ اللہ---الخ، ۲/ ۴۱۔

सुवाल उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا को अंधेरे में गुम होने वाली सूई कैसे मिली ?

जवाब उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا सह़र के वक़्त घर में कुछ सी रही थीं कि अचानक सूई हाथ से गिर गई और साथ ही चराग़ भी बुझ गया, इतने में हुज़ूर नूरे काइनात صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم घर में दाख़िल हुए और आप के (चेहरए अन्वर के) नूर से सारा घर रौशन व मुनव्वर हो गया और गुमशुदा सूई मिल गई । उम्मुल मोमिनीन ने अ़र्ज़ की : आप का चेहरा किस क़दर नूरानी है ! इरशाद फ़रमाया : उस के लिये हलाकत है जो रोज़े क़ियामत मुझे न देख सके। अ़र्ज़ की : आप को कौन नहीं देख सकेगा ? फ़रमाया : बख़ील । अ़र्ज़ की : बख़ील कौन है ? इरशाद फ़रमाया : वोह शख़्स जो मेरा नाम सुन कर मुझ पर दुरूद न पढ़े ।(1)

اَللّٰھُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ وَبَارِكْ عَلٰی سَیِّدِنَا وَمَوْلٰینَا مُحَمَّدٍ وَّاٰلِہٖ بِقَدْرِ حُسْنِہٖ وَجَمَالِہٖ

सूज़न गुमशुदा मिलती है तबस्सुम से तेरे ..... शाम को सुब्ह़ बनाता है उजाला तेरा(2)

सुवाल हुदैबिया के रोज़ 1500 लोगों को पानी का एक छोटा डोल कैसे काफ़ी हो गया ?

जवाब वाक़िआ़ येह है कि हुदैबिया के दिन लोग प्यास में मुब्तला हुए जब कि हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सामने एक छोटा डोल मौजूद था, लोगों ने ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ की : आप के

1 . . . القول البدیع، الباب الثالث فی التحذیر من ترک ــــ الخ، ص ۳۰۲۔

2 .....ज़ौक़े ना'त, स. 16

सामने रखे इस डोल के इलावा हमारे पास वुज़ू और पीने के लिये पानी नहीं है। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपना बा बरकत हाथ डोल में रखा तो पानी आप की उंगलियों से चश्मों की त़रह़ फूटने लगा और 1500 को काफ़ी हो गया।(1)

सुवाल हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़तीक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की टांग कैसे टूटी और फिर कैसे ठीक हुई ?

जवाब हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़तीक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ जब अबू राफ़ेअ़ यहूदी को क़त्ल कर के वापस होने लगे तो ज़ीने से गिर जाने की वज्ह से उन की टांग टूट गई, उन्हें उठा कर बारगाहे रिसालत में लाया गया तो हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन की ज़बान से अबू राफ़ेअ़ के क़त्ल का सारा वाक़िआ़ सुना और फिर उन की टूटी हुई टांग पर अपना दस्ते मुबारक फेरा तो वोह फ़ौरन ही ठीक हो गई और ऐसा लगता था कि उन की टांग कभी टूटी ही न थी।(2)

सुवाल तीर लगने के सबब हज़रते सय्यिदुना क़तादा बिन नो'मान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की निकली हुई आंख कैसे सह़ीह़ हुई ?

जवाब हुज़ूर जाने आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन की निकली हुई आंख को हाथ से पकड़ कर उस की जगह पर रखा और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से दुआ़ मांगी तो वोह आंख बिल्कुल सह़ीह़ हो गई और उन की दोनों आंखों में से येह आंख ज़ियादा ख़ूब सूरत थी और नज़र भी तेज़ थी।(3)

---

1 ... بخاری، کتاب المناقب، باب علامات النبوۃ فی الاسلام، ۲/۴۹۳، حدیث: ۳۵۷۶۔

2 ... بخاری، کتاب المغازی، باب قتل ابی رافع عبد اللہ ــ الخ، ۳/۳۱، حدیث: ۴۰۳۹۔

3 ... شرح المواھب، باب غزوۃ احد، ۲/۴۳۲۔

ग़ज़वात

सुवाल : दीन की सर बुलन्दी के लिये लड़ने की इजाज़त सब से पहले किस आयत के ज़रीए दी गई ?

जवाब : सब से पहले सूरतुल हज की आयत नम्बर 39 के ज़रीए दीन की सर बुलन्दी के लिये लड़ने की इजाज़त दी गई, वोह आयत येह है :

﴿اُذِنَ لِلَّذِیْنَ یُقٰتَلُوْنَ بِاَنَّهُمْ ظُلِمُوْا ؕ وَ اِنَّ اللّٰهَ عَلٰی نَصْرِهِمْ لَقَدِیْرُ ۟ۙ﴾ (۳۹)

(**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** परवानगी अ़ता हुई (लड़ने की) उन्हें जिन से काफ़िर लड़ते हैं, इस बिना पर कि उन पर ज़ुल्म हुवा और बेशक **अल्लाह** उन की मदद करने पर ज़रूर क़ादिर है ।)[1]

सुवाल : चन्द मश्हूर ग़ज़वात के नाम बताइये ?

जवाब : ग़ज़वए बद्र, ग़ज़वए उहुद, ग़ज़वए अह़ज़ाब, ग़ज़वए ख़ैबर, ग़ज़वए फ़त्हे मक्का और ग़ज़वए हुनैन ।

सुवाल : ग़ज़वए बद्र में कितने मुसलमान शहीद हुए ?

जवाब : जंगे बद्र में कुल चौदह मुसलमान शहादत से सरफ़राज़ हुए जिन में से छे मुहाजिर और आठ अन्सार थे ।[2]

सुवाल : किस जंग में ऐन लड़ाई के वक़्त 300 मुनाफ़िक़ जंग से अलग हो गए थे ?

जवाब : जंगे उहुद में मुसलमानों को शिकस्त हो जाए इस लिये मुनाफ़िक़ों ने काफ़िरों के साथ मिल कर साज़िश की और 300 मुनाफ़िक़ ऐन लड़ाई के वक़्त अ़लाह़दा हो गए ।[3]

सुवाल : ग़ज़वए उहुद में हुज़ूर ताजदारे रिसालत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने कितने झन्डे किस किस को इनायत फ़रमाए ?

1 . . . نسائی، کتاب الجهاد، باب وجوب الجهاد، ص ۵۰۱، حدیث: ۳۰۸۲۔

2 . . . مواهب اللدنية، المقصد الاول، مغازيه وسراياه وبعوثه صلى الله عليه وسلم، ۱/ ۱۹۳۔

3 . . . مواهب اللدنية، المقصد الاول، مغازيه وسراياه وبعوثه صلى الله عليه وسلم، ۱/ ۲۰۵۔

जवाब इस जंग में तीन झन्डे अ़ता फ़रमाए। एक झन्डा ह़ज़रते सय्यिदुना उसैद बिन हुज़ैर को, दूसरा ह़ज़रते सय्यिदुना मुस्अ़ब बिन उ़मैर या ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा को और तीसरा झन्डा ह़ज़रते सय्यिदुना हुबाब बिन मुन्ज़िर या ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द बिन उ़बादा (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم) को अ़ता फ़रमाया।[1]

सुवाल जंगे ख़न्दक़ के लिये कितनी गहरी ख़न्दक़ खोदी गई और येह काम कितने अफ़राद ने किया ?

जवाब ग़ज़्वए ख़न्दक़ के लिये पांच गज़ गहरी ख़न्दक़ खोदी गई और हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ तीन हज़ार सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن ने मिल कर येह काम सर अन्जाम दिया।[2]

सुवाल जंग के लिये ख़न्दक़ खोदते वक़्त नुमूदार होने वाली सख़्त चट्टान को किस ने तोड़ा ?

जवाब नुमूदार होने वाली वोह सख़्त चट्टान किसी से भी न टूट सकी तो तीन दिन से फ़ाक़े में होने और शिकमे मुबारक पर पथ्थर बन्धा होने के बा वुजूद हुज़ूर ताजदारे काइनात صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपने दस्ते मुबारक से फावड़ा मारा तो वोह चट्टान रेत के भुर भुरे टीले की त़रह़ बिखर गई।[3] और एक रिवायत येह है कि उस चट्टान पर तीन मरतबा फावड़ा मारा, हर ज़र्ब पर उस में से रौशनी निकलती जिस में हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने शाम व ईरान और यमन के शहरों को देख लिया और उन मुल्कों के फ़त्ह़ होने की बिशारत दी।[4] और नसाई शरीफ़ की रिवायत में है कि

---

1 ...مواھب اللدنیۃ، المقصد الاول، مغازیہ وسرایاہ وبعوثہ صلی اللہ علیہ وسلم، ۱/ ۲۰۵۔
2 ...مدارج النبوت، قسم سوم باب پنجم ذکر سال پنجم۔۔۔الخ، ۲/ ۱۶۸۔
3 ...بخاری، کتاب المغازی، باب غزوۃ الخندق، ۳/ ۵۱، حدیث: ۴۱۰۱۔
4 ...مواھب اللدنیۃ، المقصد الاول، مغازیہ وسرایاہ وبعوثہ صلی اللہ علیہ وسلم، ۱/ ۲۴۱۔

आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने क़ैसरो किसरा और ह़ब्शा के शहरों की फ़ुतूह़ात का ए'लान फ़रमाया।[1]

सुवाल खै़बर के मश्हूर क़ल्ए़ कितने हैं ? और उन के नाम बताइये ?

जवाब खै़बर के मश्हूर क़ल्ए़ आठ हैं, जिन के नाम येह हैं : (1) कतीबा (2) नाइम (3) शक़ (4) क़मूस (5) नत़ारा (6) सा'ब (7) सत़ीख़ (8) सुलालिम।[2]

सुवाल जंगे खै़बर के मौक़अ़ पर कौन सी चीज़ों को ह़राम क़रार दिया गया ?

जवाब (1) तक़्सीम से क़ब्ल माले ग़नीमत की ख़रीदो फ़रोख़्त (2) पालतू गधा (3) कीले वाला (नोकीले दांतों वाला) हर दरिन्दा[3] (4) निकाहे़ मुतआ़ की ह़ुरमत भी इसी मौक़अ़ पर बयान हुई।[4]

सुवाल ग़ज़्वए फ़त्हे़ मक्का के मौक़अ़ पर इस्लामी लश्कर की ता'दाद कितनी थी ?

जवाब ग़ज़्वए फ़त्हे़ मक्का के लिये ह़ुज़ूरे अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मदीनए मुनव्वरा से बारह हज़ार का लश्करे जर्रार साथ ले कर रवाना हुए।[5]

सुवाल मक्कए मुकर्रमा में दाख़िले के वक़्त ह़ुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم कौन सी सूरए मुबारका तिलावत फ़रमा रहे थे ?

जवाब उस वक़्त ह़ुज़ूर ताजदारे ख़त्मे नुबुव्वत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم "सूरए फ़त्ह़" की तिलावत फ़रमा रहे थे।[6]

---

1 ...نسائی، کتاب الجهاد، باب غزوة الترک والحبشة، ص ۵۱۷، حدیث: ۳۱۷۳۔
2 ...مدارج النبوت، قسم سوم باب ششم، باب ذکر سال ششم...الخ، ۲/ ۲۳۴۔
3 ...سبل الهدى والرشاد، الباب الرابع والعشرون فى غزوة خيبر، ۵/ ۱۳۰۔
4 ...مدارج النبوت، قسم سوم باب ششم، باب ذکر سال ششم۔۔۔الخ، ۲/ ۲۶۰۔
5 ...مواهب اللدنية، المقصد الاول، مغازيه وسراياه وبعوثه صلى الله عليه وسلم، ۱/ ۳۱۰۔
6 ...شرح المواهب، باب غزوة الفتح الاعظم، ۳/ ۴۳۲۔

सुवाल वोह कौन सा पहलवान था जिसे हुज़ूर नबिय्ये रह़मत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने तीन बार ज़मीन पर पछाड़ा तो वोह इस्लाम ले आया ?

जवाब उस पहलवान का नाम "यज़ीद बिन रुकाना" رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه है।[1]

सय्यिदुना सिद्दीके़ अक्बर رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه

सुवाल इस्लाम के ख़त़ीबे अव्वल कौन हैं ?

जवाब ख़त़ीबे अव्वल ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه हैं कि आप ने सब से पहले मस्जिदुल ह़राम शरीफ़ में ख़ुत़्बा दिया।[2]

सुवाल क्या सय्यिदुना सिद्दीके़ अक्बर رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه का शजरए नसब हुज़ूर रह़मते आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के शजरए मुबारका से मिलता है ?

जवाब जी हां ! सातवीं पुश्त में आप رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه का शजरए नसब इमामुल अम्बिया वल मुर्सलीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के ख़ानदानी शजरे से मिल जाता है।[3]

सुवाल ह़ज़रते सय्यिदुना सिद्दीके़ अक्बर رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه के वालिदैन का नाम और कुन्यत बताइये ?

जवाब आप के वालिदे माजिद का नाम उ़स्मान और उन की कुन्यत अबू क़ुह़ाफ़ा थी जब कि वालिदए माजिदा का नाम सलमा बिन्ते सख़र और कुन्यत उम्मुल ख़ैर थी।[4]

---

1 ...شرح المواهب، الفصل الثاني فيما أكرمه الله تعالى به۔۔۔ الخ، ۶/۱۰۳۔

2 ...تاريخ ابن عساكر، رقم ۳۳۹۸، ابوبكر الصديق، ۳۰/۴۷۔

3 ...معجم كبير، ۱/۵۱، حديث: ۱۔

4 ...معجم كبير، ۱/۵۱، حديث: ۱۔

सुवाल सहाबए किराम में शैख़ैन से कौन मुराद हैं ?

जवाब शैख़ैन से मुराद अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ और अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا हैं।[1]

सुवाल सय्यिदुना सिद्दीके़ अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के माल के मुतअ़ल्लिक़ हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने क्या फ़रमाया ?

जवाब हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : مَا نَفَعَنِیْ مَالٌ قَطُّ مَا نَفَعَنِیْ مَالُ اَبِیْ بَکْر या'नी मुझे कभी किसी के माल ने वोह फ़ाएदा न दिया जो अबू बक्र के माल ने दिया।[2]

सुवाल हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को कौन सी तीन बातें पसन्द थीं ?

जवाब सय्यिदुना सिद्दीके़ अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : मुझे तीन बातें पसन्द हैं : (1) हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के चेहरए अन्वर का दीदार करते रहना (2) आप पर अपना माल ख़र्च करना और (3) आप की बारगाह में हाज़िर रहना।[3]

सुवाल सय्यिदुना सिद्दीके़ अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने कितने ग़ुलाम आज़ाद किये ?

जवाब आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने सात ग़ुलाम ख़रीद कर आज़ाद फ़रमाए।[4]

सुवाल सय्यिदुना सिद्दीके़ अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की इ़ल्मे ता'बीर में महारत का राज़ क्या था ?

जवाब महारत का राज़ येह था कि आप ने येह इ़ल्म बराहे रास्त बारगाहे

1.....बहारे शरीअ़त, 3 / 27

2 . . . ابن ماجہ، کتاب السنۃ، باب فی فضائل اصحاب رسول اللہ، ۱ / ۷۲، حدیث: ۹۴۔

3 . . . روح البیان، پ ۲۰، النمل، تحت الآیۃ: ۲۲، ۶ / ۳۶۲۔

4 . . . تاریخ ابن عساکر، رقم ۳۳۹۸، ابوبکر الصدیق، ۳۰ / ۶۷۔

रिसालत से पाया। हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया मुझे ख़्वाबों की ता'बीर बताने का हुक्म दिया गया है और येह कि मैं येह इल्म अबू बक्र को सिखाऊं।(1)

सुवाल हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ का कारोबार क्या था ?

जवाब आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ कपड़े का कारोबार किया करते थे।(2)

सुवाल सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ को "अमीरुल हज" कब बनाया गया था ?

जवाब हुज़ूर ताजदारे नुबुव्वत صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ज़ुल क़ा'दा 9 हिजरी में हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ को अमीरुल हज बना कर हज के लिये रवाना फ़रमाया।(3)

सुवाल इमामुल अम्बिया صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की अ़लालत (मरज़ शरीफ़) के दौरान किस सहाबी ने नमाज़ें पढ़ाईं ?

जवाब प्यारे आक़ा, मदीने वाले मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की अ़लालत के दौरान अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने इमामत के फ़राइज़ सर अन्जाम दिये।(4)

सुवाल सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ की कुछ ख़ुसूसिय्यात बयान फ़रमाइये ?

जवाब (1) हिजरते मदीनए त़य्यिबा के वक़्त आप ही रह़मते कौनैन, सुल्त़ाने दारैन صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के रफ़ीक़े सफ़र थे। (2) सिर्फ़ आप ही रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के यारे ग़ार हैं।

1 ...تاریخ ابن عساکر، ابوبکر الصدیق، ۲۱۸/۳۰، حدیث:۶۳۲۵، رقم ۳۳۹۸۔

2 ...لمعات التنقیح، کتاب الامارۃ والقضاء، باب رزق الولاۃ وھدایاھم، ۵۰۰/۶، تحت الحدیث:۳۷۴۷۔

3 ...بخاری، کتاب المغازی، باب حج ابی بکر۔۔۔الخ، ۱۲۸/۳، حدیث:۴۳۶۳۔

तफ़्सीर सिरात़ुल जिनान, पारह 10, सूरतुत्तौबह, तह़्तुल आयत : 1, 4 / 60

4 ...ترمذی، کتاب المناقب، باب مناقب ابی بکر الصدیق، ۳۷۹/۵، حدیث:۳۶۹۲۔

(3) हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने आप ही को नमाज़ पढ़ाने का हुक्म दिया।[1]

सय्यिदुना उमर फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

सुवाल किस सहाबी के क़बूले इस्लाम पर मुसलमानों ने बहुत बुलन्द आवाज़ में तक्बीरें कहीं ?

जवाब हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के इस्लाम क़बूल करने पर मुसलमानों ने ख़ुश हो कर ब आवाज़े बुलन्द तक्बीरें कहीं जिन से पहाड़ गूंज उठे।[2]

सुवाल हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने किन दो सहाबए किराम को अपने ज़मीनी वज़ीर क़रार दिया है ?

जवाब हज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर और हज़रते सय्यिदुना फ़ारूके आ'ज़म (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) को।[3]

सुवाल सब से पहले पोलीस का मोहकमा किस ने क़ाइम किया ?

जवाब येह मोहकमा सब से पहले सय्यिदुना फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने क़ाइम फ़रमाया।[4]

सुवाल सब से पहले हिजरी तारीख़ किस ने मुक़र्रर की और किस महीने से इस तारीख़ को जारी फ़रमाया गया ?

जवाब सब से पहले अमीरुल मोमिनीन हज़रते उमर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने हिजरी तारीख़ मुक़र्रर की और इस को मुहर्रमुल हराम से जारी किया।[5]

---

1 ...تاریخ ابن عساکر، رقم ۳۳۹۸، ابوبکر الصدیق، ۳۰/ ۲۱۸، حدیث: ۶۳۲۵۔

2 ...مسند بزار، مسند عمر، ۱/ ۴۰۲، حدیث: ۲۷۹۔

3 ...ترمذی، کتاب المناقب، باب فی مناقب ابی بکر و عمر کلیهما، ۵/ ۳۸۲، حدیث: ۳۷۰۰۔

4 ...طبقات ابن سعد، رقم ۲۲۷، عبد اللہ بن عتبة، ۵/ ۴۳، फ़ैज़ाने फ़ारूके आ'ज़म, 1 / 741

5 ...مواهب اللدنیة، المقصد الاول، هجرته صلی اللہ علیه وسلم، ۱/ ۱۵۶۔

सुवाल सब से पहले मर्दुम शुमारी किस ने कराई ?

जवाब अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने सब से पहले मर्दुम शुमारी करवा के लोगों के नामों की फ़ेहरिस्तें मुरत्तब फ़रमाई।(1)

सुवाल जिन्न को लड़ाई में हराने वाले सहा़बी का नाम बताइये ?

जवाब अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन ख़त्ता़ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ।(2)

सुवाल मस्जिदे नबवी के फ़र्श को सब से पहले किस ने पक्का करवाया ?

जवाब मस्जिदे नबवी में सब से पहले पथ्थर बिछाने वाले सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ हैं, मस्जिदे नबवी का फ़र्श कच्चा था, लोग जब सजदे से सर उठाते तो मिट्टी की वज्ह से अपने हाथों को झाड़ते, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने मस्जिद का फ़र्श पक्का करने के लिये रेत बिछाने का हुक्म दिया तो मक़ामे अ़क़ीक़ से बजरी लाई गई और मस्जिदे नबवी में बिछा कर उस का फ़र्श पक्का कर दिया गया।(3)

सुवाल सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की अंगूठी पर क्या लिखा था ?

जवाब उस पर येह लिखा था : كَفٰى بِالْمَوْتِ وَاعِظًا يَا عُمَرَ या'नी ऐ उ़मर ! नसीह़त के लिये मौत काफ़ी है।(4)

सुवाल सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की कुछ ख़ुसूसिय्यात बयान कीजिये ?

---

1 ...تاریخ طبری، السنة الثالثة والعشرون، حمله الدرة وتدوينه الدواوين، ۳/ ۳۰۰، رقم: ۲۳۲-

2 ...معجم کبیر، ۹/ ۱۶۲، حدیث: ۸۸۲۶-

3 ...مصنف ابن ابی شیبة، کتاب الاوائل، باب اول مافعل ومن فعله، ۸/ ۳۴۵، حدیث: ۱۷۶-

4 ...معرفة الصحابة، معرفة نسبة الفاروق، ۱/ ۷۷، رقم: ۲۱۱-

जवाब (1) सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के मुसलमान होने पर चालीस की ता'दाद मुकम्मल हुई तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने सूरए अन्फ़ाल की आयत नम्बर 64 नाज़िल फ़रमाई ।(1)
(2) आप के क़बूले इस्लाम पर फ़िरिश्तों ने खुशियां मनाईं ।(2)
(3) रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया कि जिब्रीले अमीन ने मुझे बताया : ह़ज़रते उ़मर की वफ़ात पर दीने इस्लाम रोएगा ।(3)

सुवाल ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने सूरए बक़रह की तफ़्सीर कितने साल में पढ़ी ?

जवाब आप ने 12 साल में सूरए बक़रह पढ़ी और तफ़्सीर मुकम्मल होने पर शुक्राने में एक ऊंट ज़ब्ह़ फ़रमाया ।(4)

सुवाल सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को किस सह़ाबी ने ग़ुस्ल दिया ?

जवाब आप के बड़े साह़िबज़ादे ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने ग़ुस्ल दिया ।(5)

सुवाल सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को क़ब्र में उतारने वाले सह़ाबए किराम के नाम बताइये ?

जवाब (1) ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (2) ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी (3) ह़ज़रते सय्यिदुना सई़द बिन जै़द (4) ह़ज़रते सय्यिदुना सुहैब बिन सिनान और (5) बा'ज़ रिवायतों में ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ का नाम भी आया है (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم) ।(6)

---

1 ...معجم کبیر، ۱۲/ ۴۷، حدیث: ۱۲۴۷۰۔
2 ...ابن ماجه، کتاب السنة، باب فضل عمر، ۱/ ۷۶، حدیث: ۱۰۳۔
3 ...معجم کبیر، ۱/ ۶۷، حدیث: ۶۱۔
4 ...شرح المؤطا للزرقانی، کتاب القران، باب ماجاء فی القرآن ۲/ ۲۹، تحت الحدیث: ۴۸۰۔
5 ...اسد الغابة، رقم ۳۸۲۴، عمر بن الخطاب، ۴/ ۱۹۰۔
6 ...طبقات کبری، رقم ۵۶، عمر بن الخطاب، ۳/ ۲۸۱، اسد الغابة، رقم ۳۸۲۴، عمر بن الخطاب، ۴/ ۱۹۰۔

सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

सुवाल मुसलमानों में सब से पहले किस ने अपने अह्ले ख़ाना के साथ हिजरत की थी ?

जवाब सब से पहले ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपनी ज़ौजा शहज़ादिये रसूल ह़ज़रते सय्यिदतुना रुक़य्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के साथ ह़बशा की त़रफ़ हिजरत की, बक़िय्या तमाम मुहाजिरीन इन के बा'द हिजरत कर के ह़बशा पहुंचे थे। और इन के लिये सरकारे दो आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने येह दुआ़ फ़रमाई कि **अल्लाह** तआ़ला इन दोनों मियां बीवी के साथ हो और ह़ज़रते लूत़ عَلَیْہِ السَّلَام के बा'द उ़स्मान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ही वोह शख़्स हैं जिन्हों ने अपने अह्ले ख़ाना के साथ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये हिजरत की है।(1)

सुवाल बैअ़ते रिज़्वान में किस सह़ाबी की त़रफ़ से हु़ज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने खुद बैअ़त फ़रमाई थी ?

जवाब वोह सह़ाबी ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हैं। बैअ़ते रिज़्वान के मौक़अ़ पर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हु़ज़ूर नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के क़ासिद बन कर मक्कए मुकर्रमा गए हुए थे तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : बेशक उ़स्मान **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) के काम में है। फिर आप ने अपना एक हाथ दूसरे हाथ पर रख कर फ़रमाया : येह उ़स्मान की त़रफ़ से है।(2)

---

1 ...معجم کبیر، ۱/ ۹۰، حدیث: ۱۴۳-

2 ...ترمذی، کتاب المناقب، باب مناقب عثمان بن عفان، ۵/ ۳۹۲، ۳۹۴، حدیث: ۳۷۲۲، ۳۷۲۶-

सुवाल कौन से सहाबी ग़ैर हाज़िरी के बा वुजूद शुरकाए बद्र में शामिल हैं ?

जवाब वोह ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हैं। जंगे बद्र के दिनों में आप की ज़ौजा शहज़ादिये रसूल ह़ज़रते सय्यिदतुना रुक़य्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ज़ियादा बीमार थीं तो हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को इन की तीमारदारी के लिये मदीनए त़य्यिबा में रहने का हुक्म दिया और जंगे बद्र में जाने से रोक दिया, जिस दिन फ़त्ह़े बद्र की ख़बर मदीनए मुनव्वरा पहुंची उसी दिन शहज़ादिये रसूल का इन्तिक़ाल हुवा। ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अगर्चे जंगे बद्र में शरीक नहीं हुए मगर हुज़ूर ताजदारे दो जहां صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन्हें जंगे बद्र के मुजाहिदीन में शुमार फ़रमाया और मुजाहिदीन के बराबर माले ग़नीमत में से ह़िस्सा भी अ़त़ा फ़रमाया।(1)

सुवाल ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हर जुमुआ़ को क्या ख़ास अ़मल करते थे ?

जवाब अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : इस्लाम लाने के बा'द मैं ने हर जुमुआ़ को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये एक ग़ुलाम आज़ाद किया, अगर उस वक़्त मुमकिन न हुवा तो बा'द में आज़ाद किया।(2)

सुवाल सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की वालिदा का नाम बताइये और उन का हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से क्या रिश्ता था ?

जवाब आप की वालिदा का नाम अरवा बिन्ते करीज़ था और येह रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की फूफी ज़ाद बहन थीं।(3)

---

1 ...ترمذی، کتاب المناقب، باب مناقب عثمان بن عفان، ۵/ ۳۹۴، حدیث: ۳۷۲۶۔

2 ...معجم کبیر، ۱/ ۸۵، حدیث: ۱۲۴۔

3 ...معجم کبیر، ۱/ ۷۴، حدیث: ۹۰۔

सुवाल सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का हुल्या मुबारक बयान कीजिये ?

जवाब आप दरमियाने क़द के ख़ूबरू शख़्स थे, रंग में सफ़ेदी के साथ साथ सुर्ख़ी शामिल थी, दाढ़ी शरीफ़ बहुत घनी थी, जिस्म की हड्डियां चौड़ी और शाने काफ़ी फैले हुए थे। पिन्डलियां भरी हुई थीं, हाथ लम्बे थे जिन पर काफ़ी बाल थे, सर के बाल घुंघरियाले थे, दांत बेहद ख़ूब सूरत थे और सोने के तार से बन्धे हुए थे, कनपट्टियों के बाल कानों तक आते थे, ज़र्द रंग का ख़िज़ाब करते थे।(1)

सुवाल हुज़ूर नबिय्ये रह़मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने एक शख़्स का जनाज़ा पढ़ाने से इन्कार क्यूं फ़रमाया ?

जवाब ह़दीसे पाक में है : बारगाहे रिसालत में एक जनाज़ा लाया गया ताकि हुज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उस की नमाज़ पढ़ें लेकिन आप ने नमाज़े जनाज़ा न पढ़ी, अ़र्ज़ की गई : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! इस से पहले हम ने आप को किसी की नमाज़े जनाज़ा छोड़ते नहीं देखा। इरशाद फ़रमाया : येह शख़्स उ़स्मान (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) से बुग़्ज़ रखता था तो **अल्लाह** तआ़ला का मबग़ूज़ हुवा।(2)

सुवाल सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का ख़ौफ़े आख़िरत कैसा था ?

जवाब अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ जब किसी क़ब्र पर तशरीफ़ लाते तो इस क़दर आंसू बहाते कि

1 ...تاریخ ابن عساکر، رقم ۴۶۱۹، عثمان بن عفان، ۳۹/۱۲، تاریخ الخلفاء، عثمان بن عفان، ص ۱۱۹۔

2 ...ترمذی، کتاب المناقب، باب مناقب عثمان بن عفان، ۵/۳۹۲، حدیث: ۳۷۲۹۔

आप की दाढ़ी मुबारक तर हो जाती। अ़र्ज़ की गई : जन्नत व दोज़ख़ का तज़्किरा करते वक़्त आप नहीं रोते मगर क़ब्र पर रोते हैं इस की क्या वज्ह है ? जवाब दिया कि हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : क़ब्र आख़िरत की सब से पहली मन्ज़िल है, अगर बन्दे ने इस से नजात पाई तो बा'द का मुआ़मला इस से आसान है और अगर इस से नजात न पाई तो बा'द का मुआ़मला ज़ियादा सख़्त है।(1)

सुवाल कौन से ख़लीफ़ए राशिद बैतुल माल से वज़ीफ़ा (तनख़्वाह) नहीं लेते थे ?

जवाब ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه । सिवाए इन के बाक़ी तीनों ख़ुलफ़ा ने बैतुल माल से ख़िलाफ़त की तनख़्वाह वुसूल की है।(2)

सुवाल ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه की ह़या का आ़लम क्या था ?

जवाब ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَيْه ने अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه की शर्मो ह़या की शिद्दत यूं बयान फ़रमाई : अगर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه किसी कमरे में होते और उस का दरवाज़ा भी बन्द होता तब भी नहाने के लिये कपड़े न उतारते और ह़या की वज्ह से कमर सीधी न करते थे।(3)

सुवाल इस्लाम में सब से पहला फ़ितना कौन सा हुवा ?

जवाब ह़ज़रते सय्यिदुना हुज़ैफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं कि इस्लाम में सब से पहला फ़ितना अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने

1 ...ابن ماجه، كتاب الزهد، باب ذكر القبر والبلى، ۴/ ۵۰۰، حديث: ۴۲۶۷-

2 .....मिरआतुल मनाजीह़, 3 / 67

3 ...حلية الاولياء، عثمان بن عفان، ۱/ ۹۴، رقم: ۱۵۹-

ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की शहादत है और सब से आख़िरी फ़ितना दज्जाल का ख़ुरूज होगा।(1)

सुवाल ब वक़्ते शहादत सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की उ़म्र क्या थी ?

जवाब ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम सुयूत़ी عَلَیْہِ رَحمۃُ اللّٰہِ القَوِی ने नक़्ल फ़रमाया : शहादत के वक़्त आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की उ़म्र 82 साल थी।(2)

सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم

सुवाल सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم का हु़ज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से क्या रिश्ता है ?

जवाब आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हु़ज़ूर ताजदारे दो आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के चचा के बेटे हैं।(3)

सुवाल ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم का हुल्या मुबारक कैसा था ?

जवाब आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का रंग गन्दुमी, आंखें बड़ी, क़द मुबारक दरमियाना, दाढ़ी चौड़ी और सफ़ेद थी।(4)

सुवाल बनी हाशिम में से पहले ख़लीफ़ा कौन थे ?

जवाब ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم बनी हाशिम में से पहले ख़लीफ़ा थे।(5)

---

1 ...تاریخ ابن عساکر، رقم ۴۶۱۹، عثمان بن عفان، ۳۹/۴۴۷۔

2 ...تاریخ الخلفاء، عثمان بن عفان، ص ۱۲۹۔

3 ...الاعلام، علی بن ابی طالب، ۴/۲۹۵۔

4 ...تاریخ ابن عساکر، رقم ۴۹۳۳، علی بن ابی طالب، ۴۲/۱۲۔

5 ...اسد الغابۃ، رقم ۳۷۸۳، علی بن ابی طالب، ۴/۱۰۰۔

सुवाल सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم से कितनी अहादीस मरवी हैं ?

जवाब ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم से पांच सौ छियासी (586) अह़ादीस मरवी हैं जिन में बीस मुत्तफ़क़ अ़लैह हैं नौ बुख़ारी की हैं और पन्दरह मुस्लिम में ।(1) और बक़िय्या दीगर कुतुबे ह़दीस में हैं ।

सुवाल मदीने वालों में से कौन फ़ैसले करने और इ़ल्मे मीरास में बड़े माहिर थे ?

जवाब अहले मदीना में से ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم को मुक़द्दमात के फ़ैसले करने और इ़ल्मे मीरास में महारत ह़ासिल थी ।(2)

सुवाल ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ली كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم को "अबू तुराब" की कुन्यत कैसे मिली ?

जवाब नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मस्जिद तशरीफ़ लाए तो वहां ह़ज़रते अ़ली كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم इस ह़ाल में लेटे हुए थे कि आप की एक जानिब से चादर हटी हुई थी और वहां मिट्टी लगी हुई थी तो रसूले करीम عَلَيْهِ اَفْضَلُ الصَّلٰوةِ وَالتَّسْلِيْم ने मिट्टी झाड़ते हुए दो मरतबा इरशाद फ़रमाया : قُمْ اَبَاتُرَابٍ या'नी उठो ! ऐ मिट्टी वाले ।(3)

सुवाल ग़ज़्वए तबूक के वक़्त किस सह़ाबी को मदीनए मुनव्वरा में रहने का हुक्म दिया गया ?

जवाब ग़ज़्वए तबूक के मौक़अ़ पर हुज़ूर नबिय्ये पाक, साह़िबे लौलाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा

1 ...اجمال ترجمہ اکمال ہامش علی مرآۃ المناجیح، علی بن ابی طالب، ۸/ ۴۷۔

2 ...تاریخ ابن عساکر، علی بن ابی طالب، ۴۲/ ۴۰۵، رقم ۴۹۳۳۔

3 ...بخاری، کتاب الصلاۃ، باب نوم الرجال فی المسجد، ۱/ ۱۶۹، حدیث: ۴۴۱۔

كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم को मदीनए मुनव्वरा में छोड़ दिया। उन्हों ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! आप मुझे बच्चों और औ़रतों में छोड़ कर जा रहे हैं ? इरशाद फ़रमाया : क्या तुम इस बात पर राज़ी नहीं कि तुम मेरे लिये ऐसे हो जैसे ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा عَلَيْهِ السَّلَام के लिये ह़ज़रते सय्यिदुना हारून عَلَيْهِ السَّلَام थे ! अलबत्ता मेरे बा'द कोई नबी नहीं होगा।(1)

सुवाल ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم का मुजाहदए नफ़्स कैसा था ?

जवाब एक बार अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم को किसी ने फ़ालूदा पेश किया तो आप ने उसे सामने रख कर इरशाद फ़रमाया : "बेशक तेरी ख़ुश्बू उ़म्दा, रंग अच्छा और ज़ाएक़ा लज़ीज़ है लेकिन मुझे येह पसन्द नहीं कि मैं अपने नफ़्स को उस चीज़ का आ़दी बनाऊं जिस का वोह आ़दी नहीं।" और आप ने उसे तनावुल नहीं फ़रमाया।(2)

सुवाल हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم की आंखों में अपना लुआ़बे दहन क्यूं लगाया था ?

जवाब जंगे ख़ैबर के मौक़अ़ पर ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم की आंखों में आशूब था (या'नी आंखें दुख रही थीं), दो आ़लम के मालिको मुख़्तार नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन की आंखों में अपना लुआ़बे दहन लगा कर दुआ़ फ़रमाई जिस से वोह फ़ौरन शिफ़ायाब हो गए गोया उन्हें कभी आशूबे चश्म हुवा ही नहीं था। फिर आप ने उन के हाथ में झन्डा अ़ता फ़रमाया और ख़ैबर का मैदान उसी दिन उन के हाथों से सर हो गया।(3)

1 ...مسلم، کتاب فضائل الصحابة، باب من فضائل علی بن ابی طالب، ص ۱۰۰۶، حدیث: ۲۴۱۸-

2 ...حلية الاولياء، علی بن ابی طالب، ۱/ ۱۲۳، رقم: ۲۴۷-

3 ...بخاری، کتاب المغازی، باب غزوة خیبر، ۳/ ۸۵، حدیث: ۴۲۱۰ بتغیر قلیل-

सुवाल हज़रते सय्यिदुना अ़ली كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِیْم को हज़रते सय्यिदुना ईसा रूहुल्लाह عَلَيْهِ السَّلَام से कौन सी मुनासबत है ?

जवाब अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِیْم फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सरवरे दो जहां, मालिके कौनो मकां صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मुझ से इरशाद फ़रमाया : तुम्हें हज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام से एक मुनासबत है, यहूदियों ने उन से इतना बुग़्ज़ किया कि उन की वालिदए माजिदा पर तोहमत लगा दी और ईसाई उन की महब्बत में ऐसे हद से गुज़रे कि उन के खुदा होने का अ़क़ीदा बना लिया।'' फिर हज़रते सय्यिदुना अ़ली كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِیْم ने फ़रमाया : होशियार हो जाओ ! मेरे ह़क़ में भी दो गुरौह हलाक होंगे : (1) हद से बढ़ी हुई महब्बत करने वाले जो मेरे बारे में हद से तजावुज़ कर जाएंगे और (2) बेजा नफ़रत करने वाले जो मेरी अ़दावत में मुझे ज़लील व बे हैसिय्यत करेंगे।[1]

सुवाल क़ातिलाना ह़म्ला हुवा तो सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه की ज़बान से क्या अल्फ़ाज़ निकले ?

जवाब जब अ़ब्दुर्रह़मान बिन मुलजिम ख़ारिजी ने आप के सर मुबारक पर तलवार मारी और आप की मुक़द्दस पेशानी और चेहरए अन्वर पर शदीद ज़ख़्म लगा तो आप की ज़बान मुबारक से येह अल्फ़ाज़ अदा हुए : فُزْتُ بِرَبِّ الْكَعْبَةِ या'नी रब्बे का'बा की क़सम ! मैं कामयाब हो गया।'' हज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन अ़ली رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا का बयान है कि आप ने अपने साहिबज़ादों को बुला कर कुछ वसिय्यतें फ़रमाईं, इस के बा'द لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰه के सिवा कोई दूसरा लफ़्ज़ आप की ज़बान मुबारक से नहीं

1 . . . مسند ابی یعلی، مسند علی بن ابی طالب، ۱/۲۴۷، حدیث: ۵۳۰-

निकला और कलिमा पढ़ते हुए आप की रूहे अक़्दस आ़लमे कुद्स को रवाना हो गई ।[1]

सुवाल अमीरुल मोमिनीन शेरे खुदा كَرَّمَ اللہُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم का मज़ार शरीफ़ कहां वाक़ेअ़ है ?

जवाब मश्हूरो मा'रूफ़ क़ौल येह है कि आप नजफ़ शरीफ़ में मदफ़ून हैं ।[2]

अ़शरए मुबश्शरा

सुवाल राहे खुदा में सब से पहला तीर किस ने चलाया ?

जवाब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की राह में सब से पहला तीर ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने कुफ़्फ़ार की त़रफ़ फैंका ।[3]

सुवाल ह़ज़रते सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने किस उ़म्र में इस्लाम क़बूल किया ?

जवाब क़बूले इस्लाम के वक़्त आप की उ़म्र 17 या 19 साल थी ।[4]

सुवाल अल फ़य्याज़, अल जूद और अल ख़ैर के अल्क़ाब किस सह़ाबी को अ़त़ा हुए ?

जवाब हु ज़ूर जाने आ़लम صَلَّى اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़बाने ह़क़ से येह अल्क़ाब ह़ज़रते सय्यिदुना त़ल्ह़ा बिन उ़बैदुल्लाह رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को अ़त़ा हुए ।[5] अ़ल्लामा अ़ब्दुर्रऊफ़ मनावी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : आप की ब कसरत सख़ावत की वज्ह से येह अल्क़ाबात अ़त़ा फ़रमाए गए ।[6]

---

1 ...احیاءعلوم الدین، کتاب ذکر الموت ومابعدہ، الباب الرابع فی وفاۃ...الخ،وفاۃعلی، ۵/۲۲۹۔

2 ...اجمال ترجمہ اکمال ہامش علی مر آۃ المناجیح، علی بن ابی طالب،۸/۴۷، शर्हे शजरए क़ादिरिय्या, स. 43

3 ...تاریخ ابن عساکر، ابو اسحاق سعدبن ابی وقاص، ۲۰/۲۹۱، رقم۲۴۲۶۔

4 ...تاریخ ابن عساکر، ابو اسحاق سعدبن ابی وقاص، ۲۰/۲۹۳، رقم۲۴۲۶۔

5 ...معجم کبیر، ۱/۱۱۲، حدیث:۱۹۷۔

6 ...فیض القدیر، ۴/۳۵۷، تحت الحدیث:۵۲۷۴۔

www.dawateislami.net

सुवाल हज़रते तल्हा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ किन आठ खुश नसीब अफ़राद में से एक हैं ?

जवाब हज़रते सय्यिदुना तल्हा बिन उबैदुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ उन आठ अफ़राद में से एक हैं जिन्हों ने सब से पहले इस्लाम क़बूल किया ।(1)

सुवाल हिमायते रसूल में सब से पहले तलवार उठाने वाले मर्दे मुजाहिद कौन थे ?

जवाब हुज़ूर नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की हिफ़ाज़त व हिमायत में सब से पहले तलवार उठाने वाले हज़रते सय्यिदुना ज़ुबैर बिन अव्वाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हैं ।(2)

सुवाल इस्लाम का सुतून किस शख़्सिय्यत को कहा गया है ?

जवाब हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने हज़रते सय्यिदुना ज़ुबैर बिन अव्वाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के बारे में फ़रमाया : वोह इस्लाम के सुतूनों में से एक सुतून हैं ।(3)

सुवाल ग़ज़वए उहुद में हज़रते अबू उबैदा बिन जर्राह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने किस अन्दाज़ में इश्क़े रसूल का अमली मुज़ाहरा किया ?

जवाब ग़ज़वए उहुद में जब हुज़ूर ताजदारे ख़त्मे नुबुव्वत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के रुख़सारे मुबारक "ख़ौद" की कड़ियां पैवस्त होने से ज़ख़्मी हुए तो हज़रते सय्यिदुना अबू उबैदा बिन जर्राह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ येह देख कर तड़प उठे और इश्क़े रसूल का अमली मुज़ाहरा करते हुए आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के पास पहुंच कर फ़ौरन ही उन

---

1 ...تاریخ ابن عساکر، رقم ۲۹۸۳، طلحۃ بن عبید اللہ، ۲۵/۵۴-

2 ...حلیۃ الاولیاء، زبیر بن العوام، ۱/۱۳۲، حدیث: ۲۸۰-

3 ...معجم کبیر، ۱/۱۲۰، حدیث: ۲۳۲-

कड़ियों को अपने दांतों से निकालने लगे, पहली कड़ी निकली तो साथ ही आप का सामने का एक दांत टूट गया और दूसरी कड़ी निकली तो दूसरा दांत भी टूट गया।(1)

सुवाल : हज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का विसाले ज़ाहिरी कब और किस सबब से हुवा ?

जवाब : आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का विसाले ज़ाहिरी 18 सिने हिजरी में उर्दन (जो पहले मुल्के शाम का शहर था) में मरज़े ताऊ़न की वज्ह से हुवा, उस वक़्त आप की उ़म्र 58 साल थी, हज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ बिन जबल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने आप की नमाज़े जनाज़ा पढ़ाई।(2)

सुवाल : कौन से सहाबी जन्नत में हज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام के रफ़ीक़ होंगे ?

जवाब : हज़रते सय्यिदुना सईद बिन ज़ैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ।(3)

सुवाल : अ़शरए मुबश्शरा में से किस शख़्सिय्यत को दिमश्क़ का हाकिम मुक़र्रर किया गया ?

जवाब : हज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने हज़रते सय्यिदुना सईद बिन ज़ैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को दिमश्क़ का हाकिम मुक़र्रर किया।(4)

सुवाल : हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की सियादत (या'नी सरदारी) के मुतअ़ल्लिक़ ह़दीस शरीफ़ में क्या फ़रमाया गया ?

जवाब : हुज़ूर ताजदारे मदीना, राहते क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : عَبْدُ الرَّحْمٰنِ بْنِ عَوْفٍ سَيِّدٌ مِنْ سَادَاتِ الْمُسْلِمِيْن

1 ...مستدرک حاکم، کتاب معرفة الصحابة، باب کان ابوعبیدة اھتم الثنایا، ۴/ ۳۰۰، حدیث: ۵۲۰۸۔
2 ...الاستیعاب، رقم ۳۱۰۸، ابوعبیدة بن الجراح، ۴/ ۲۷۳۔
3 ...ریاض النضرة، الباب الثانی، ذکر ماجاء فی شھادتہ۔۔۔ الخ، ۱/ ۳۵۔
4 ...تاریخ ابن عساکر، رقم ۲۴۷۷، سعید بن زید، ۲۱/ ۶۲۔

या'नी ह़ज़रते अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मुसलमान सरदारों में से सरदार हैं ।(1)

सुवाल हु़ज़ूर ताजदारे ख़त्मे नुबुव्वत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के बा'द आप की अज़्वाजे मुत़ह्हरात رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُنَّ की देख भाल किस सह़ाबी ने की ?

जवाब येह ख़िदमत ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अन्जाम दिया करते थे, आप सफ़र व ह़ज़र में अज़्वाजे मुत़ह्हरात की देख भाल में लगे रहते थे । हु़ज़ूरे अकरम, शफ़ीए़ आ'ज़म صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया था कि मेरे बा'द मेरी अज़्वाज की देख भाल करने वाला नेक व सच्चा इन्सान होगा ।(2)

सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان

सुवाल सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن की ता'दाद कितनी है ?

जवाब कमो बेश एक लाख चौबीस हज़ार (124000) ।(3)

सुवाल क्या बा'द में आने वाले लोग सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان से अफ़्ज़ल हो सकते हैं ?

जवाब हरगिज़ नहीं, बल्कि ह़ज़राते सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان अपने बा'द के तमाम अफ़राद से अफ़्ज़ल हैं क्यूंकि सोह़बत व ज़ियारते रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से मुशर्रफ़ हो कर मर्तबए सह़ाबिय्यत पर फ़ाइज़ होने की फ़ज़ीलत का मुक़ाबला कोई भी नेक अ़मल नहीं कर सकता ।(4)

---

1 ...الاستیعاب، رقم ۱۴۵۵، عبدالرحمن بن عوف، ۲/۳۸۸۔

2 ...الاصابۃ، رقم ۵۱۹۵، عبدالرحمن بن عوف، ۴/۲۹۲۔

3 ...مواھب اللدنیۃ، المقصد السابع، الفصل الثالث فی ذکر محبۃ اصحابہ۔۔۔الخ، ۲/۵۴۴۔

4 ...حدیقۃ ندیۃ، مقدمۃ الکتاب، ۱/۷، مُلتقطاً۔

सुवाल हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हिब्रुल उम्मह का लक़ब किसे अ़ता फ़रमाया ?

जवाब हुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا को हिब्रुल उम्मह (या'नी उम्मत के बड़े आ़लिम) का लक़ब अ़ता फ़रमाया।(1)

सुवाल साहि़बुन्ना'लि वल विसादह (या'नी ना'लैन व तकिये वाले) किस सह़ाबी को कहा जाता है ?

जवाब ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को कहा जाता है क्यूंकि आप हुज़ूर ताजदारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के ना'लैने शरीफ़ैन और मुबारक तकिया उठाया करते थे।(2)

सुवाल बरोज़े क़ियामत किस सह़ाबी को "इमामुल उ़लमा" कहा जाएगा ?

जवाब हुज़ूर जाने आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ बिन जबल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के बारे में फ़रमाया : क़ियामत में इन का लक़ब "इमामुल उ़लमा" है।(3)

सुवाल ह़ज़रते सय्यिदुना ह़म्ज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने किस वज्ह से इस्लाम क़बूल किया था ?

जवाब अबू जह्ल लईन ने हुज़ूर नबिय्ये मुकर्रम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को बहुत ज़ियादा बुरा भला कहा तो ह़ज़रते सय्यिदुना ह़म्ज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने ह़रमे का'बा में जा कर अबू जह्ल का सर फाड़ दिया और मुसलमान हो गए।(4)

सुवाल ज़ातुन्नत़ाक़ैन (या'नी दो पटकों वाली) किस ख़ातून को कहा जाता है ?

जवाब येह ह़ज़रते सय्यिदतुना अस्मा बिन्ते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا का लक़ब है।(5)

---

1 ...مستدرک حاکم، کتاب معرفۃ الصحابۃ، باب حبر ھذہ الامۃ عبد اللّٰہ بن عباس، ۴/۶۸۹، حدیث:۶۳۳۵۔
2 ...بخاری، کتاب فضائل اصحاب النبی، باب مناقب عبد اللّٰہ بن مسعود، ۲/۵۴۹، حدیث:۳۷۶۱۔
3 ...اسد الغابۃ، رقم ۴۹۵۳، معاذ بن جبل، ۵/۲۰۶۔
4 ...مستدرک حاکم، کتاب معرفۃ الصحابۃ، ذکر اسلام حمزۃ بن عبد المطلب، ۴/۱۹۵، حدیث:۴۹۳۰۔
5 ...الاستیعاب، رقم ۳۲۵۹، اسماء بنت ابی بکر، ۴/۳۴۵۔

सुवाल रह़मते कौनैन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने किस सहाबी को कश्ती फ़रमाया ?

जवाब वोह ह़ज़रते अबू अ़ब्दुर्रह़मान सफ़ीना رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه हैं। एक सफ़र में ह़ज़राते सह़ाबए किराम ने अपना सारा सामान एक चादर में बांध दिया तो हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने आप से फ़रमाया : इसे उठा लो तुम तो कश्ती हो।'' आप फ़रमाते हैं : उस रोज़ अगर मैं एक ऊंट से ले कर सात ऊंटों का बोझ भी उठा लेता तो मुझ पर भारी न होता।(1)

सुवाल ता'मीरे मस्जिदे नबवी में एक ईंट अपनी त़रफ़ से और दूसरी हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की त़रफ़ से लाने वाले सह़ाबी का नाम बताइये ?

जवाब वोह सह़ाबी ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्मार बिन यासिर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه थे।(2)

सुवाल हिजरत से पहले हुज़ूर ताजदारे नुबुव्वत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते सय्यिदुना मुस्अ़ब बिन उ़मैर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه को मदीनए मुनव्वरा क्यूं भेजा ?

जवाब हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मदीनए मुनव्वरा तशरीफ़ ले जाने से पहले ह़ज़रते मुस्अ़ब बिन उ़मैर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه को मदीनए मुनव्वरा इस लिये भेजा ताकि वोह मुसलमानों को इस्लाम की ता'लीम दें और ग़ैर मुस्लिमों में इस्लाम की तब्लीग़ करें।(3)

सुवाल रह़मते आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की त़रफ़ सब से पहले किस ने हिजरत की ?

---

1 ...مسند امام احمد، مسند الانصار، ۸/ ۲۱۵، حدیث: ۲۱۹۸۷۔

2 ...مواهب اللدنیة، المقصد الاول، هجرته صلی اللّٰه علیه وسلم، ۱/ ۱۲۰۔

3 ...اسد الغابة، رقم ۲۰۴۲، سعد بن معاذ، ۲/ ۴۴۱۔

जवाब हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की त़रफ़ सब से पहले ह़ज़रते अबू सलमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने हिजरत की।(1)

सुवाल ह़ज़रते जिब्रील عَلَيْهِ السَّلَام किस सह़ाबी की सूरत में बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िर हुवा करते थे ?

जवाब ह़ज़रते सय्यिदुना दह़्या कल्बी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की सूरत में।(2)

उम्महातुल मोमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُنَّ

सुवाल ह़ज़रते सय्यिदतुना ख़दीजा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا कितने साल हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की शरीके ह़यात रहीं ?

जवाब आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا तक़रीबन 25 साल तक शरीके ह़यात रहीं।(3)

सुवाल ह़ज़रते सय्यिदतुना ख़दीजा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की उ़म्रे वफ़ात और मक़ामे दफ़्न बताइये ?

जवाब ह़ज़रते सय्यिदतुना ख़दीजा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने 65 बरस की उ़म्र में नुबुव्वत के दसवें साल माहे रमज़ान में वफ़ात पाई और आप को मक़ामे ह़िजून (जन्नतुल मुअ़ल्ला) में दफ़्न किया गया।(4)

सुवाल उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सौदह बिन्ते ज़म्आ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की घर से निकलने में एह़तियात़ कैसी थी ?

जवाब आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا को दोबारा नफ़्ली ह़ज व उ़म्रह के लिये अ़र्ज़ की गई तो फ़रमाया : मैं फ़र्ज़ ह़ज कर चुकी हूं, मेरे रब عَزَّوَجَلَّ ने

---

1 ...مسلم، کتاب الجنائز، باب مایقال عند المصیبة، ص ۳۵۶، حدیث: ۲۱۲۶۔

2 ...اسد الغابة، رقم ۱۵۰۷، دحیة بن خلیفة الکلبی، ۲/ ۱۹۰۔

3 ...سیر اعلام النبلاء، رقم ۲۱۱، ام المومنین خدیجة، ۳/ ۲۰۴۔

4 ...سیر اعلام النبلاء، رقم ۲۱۱، ام المومنین خدیجة، ۳/ ۲۰۴۔

मुझे घर में रहने का हुक्म फ़रमाया है, खुदा की क़सम ! अब मेरे बजाए मेरा जनाज़ा ही घर से निकलेगा। रावी फ़रमाते हैं : खुदा की क़सम इस के बा'द ज़िन्दगी की आखि़री सांस तक आप घर से बाहर नहीं निकलीं।(1)

सुवाल उम्मुल मोमिनीन सय्यिदतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا का विसाल कब हुवा और आप की नमाज़े जनाज़ा किस ने पढ़ाई ?

जवाब ब इख़्तिलाफ़े अक़्वाल आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا का विसाल 17 रमज़ान सिने 58 हिजरी को हुवा और आप की नमाज़े जनाज़ा हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने पढ़ाई और हस्बे वसिय्यत रात के वक़्त जन्नतुल बक़ीअ़ में तदफ़ीन हुई, ब वक़्ते विसाल आप की उ़म्र मुबारक 67 साल थी।(2)

सुवाल अज़्वाजे मुत़ह्हरात में से किन के मां और बाप दोनों ने हिजरत फ़रमाई ?

जवाब उम्मुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا।(3)

सुवाल अज़्वाजे मुत़ह्हरात में से किस का महर सब से ज़ियादा था ?

जवाब उम्मुल मोमिनीन सय्यिदतुना उम्मे हबीबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا का महर सब से ज़ियादा था।(4)

सुवाल उम्मुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदतुना हफ़्सा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا का इन्तिक़ाल कब और कहां हुवा ?

जवाब आप का विसाल शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म 45 हिजरी को मदीनए

---

1 ...درمنثور، پ ۲۲، الاحزاب، تحت الآیۃ: ۳۳، ۶/۵۹۹۔

2 ...شرح المواھب، المقصد الثانی، الفصل الثالث، ۴/۳۹۲۔

3 ...الاصابۃ، ام رومان، ۸/۳۹۱، رقم ۱۲۰۲۷۔

4 ...سیر اعلام النبلاء، ام المومنین ام حبیبۃ، ۳/۸۴-۸۵، رقم ۱۱۹۔

मुनव्वरा में हुवा, आप की तदफ़ीन जन्नतुल बक़ीअ़ में दूसरी अज़्वाजे मुत़ह्हरात के पहलू में हुई और ब वक़्ते वफ़ात आप की उ़म्र मुबारक 60 ता 63 बरस थी।(1)

सुवाल उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना ज़ैनब बिन्ते ख़ुज़ैमा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡہَا के लक़ब "उम्मुल मसाकीन" की वज्ह बताइये ?

जवाब ग़रीबों और मिस्कीनों पर शफ़्क़त व एह़सान की बदौलत ज़मानए जाहिलिय्यत में ही आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡہَا को "उम्मुल मसाकीन" के दिल नवाज़ ख़ित़ाब से पुकारा जाने लगा था।(2)

सुवाल किस ज़ौजा की नमाज़े जनाज़ा ख़ुद प्यारे आक़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने पढ़ाई।

जवाब उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना ज़ैनब बिन्ते ख़ुज़ैमा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡہَا।(3)

सुवाल उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना उम्मे सलमा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡہَا का विसाल किस उ़म्र में हुवा और आप की नमाज़े जनाज़ा किस ने पढ़ाई ?

जवाब ब वक़्ते वफ़ात आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡہَا की उ़म्र मुबारक 84 बरस थी, आप की नमाज़े जनाज़ा ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने पढ़ाई और जन्नतुल बक़ीअ़ में मदफ़ून हुईं।(4)

सुवाल उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना ज़ैनब बिन्ते जह़श رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡہَا को ह़ुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने किस मुबारक लक़ब से नवाज़ा ?

---

1 ...شرح المواهب، اخر البعوث النبوية، الفصل الثالث فی ذکر ازواجه... الخ، حفصة ام المومنین، ۴/۳۹۵۔

2 ...سیرة حلبیة، باب ذکر ازواجه... الخ، ۳/۴۲۶۔

3 ...سیرة حلبیة، باب ذکر ازواجه... الخ، ۳/۴۲۷۔

4 ...سیرة حلبیة، باب ذکر ازواجه... الخ، ۳/۴۲۸۔

जवाब हुज़ूर रह़मते आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते उ़मर बिन ख़त़्त़ाब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से इरशाद फ़रमाया : ज़ैनब बिन्ते जह़श "अल अव्वाह" है । एक शख़्स ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! "अल अव्वाह" से क्या मुराद है ? इरशाद फ़रमाया : ख़ुशूअ़ करने वाली और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के हुज़ूर गिड़ गिड़ाने वाली ।(1)

सुवाल उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना उम्मे ह़बीबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا का नाम क्या है और आप का अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से क्या रिश्ता है ?

जवाब आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا का नाम "रमला" है और आप अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की फूफी ज़ाद बहन हैं ।(2)

अह्ले बैते अत़्हार

सुवाल नजरानी ईसाइयों के साथ मुबाहले के वक़्त हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ कौन कौन से अफ़राद थे ?

जवाब उस वक़्त हुज़ूर इमामुल अम्बिया صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे हुसैन को गोद में उठाए हुए थे, ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे ह़सन का हाथ पकड़ा हुवा था और ह़ज़रते सय्यिदतुना फ़ातिमा व ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم पीछे पीछे चल रहे थे ।(3)

सुवाल ब वक़्ते मुबाहला अह्ले बैत को देख कर ईसाइयों के बड़े पादरी ने क्या कहा था ?

---

1 ...اسد الغابة، رقم ۶۹۴۸، زینب بنت جحش، ۷/ ۱۴۰۔

2 ...سیرۃ حلبیة، باب ذکر ازواجه... الخ، ۳/ ۴۵۰۔

3 ...تفسیر خازن، پ ۳، اٰل عمران، تحت الآیة: ۶۱، ۱/ ۲۵۸۔

जवाब हुज़ूर ताजदारे नुबुव्वत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم और अहले बैते अत्हार को देख कर बड़ा पादरी ख़ौफ़ से कांप उठा और कहने लगा : ऐ गुरौहे नसारा ! मैं ऐसे चेहरे देख रहा हूं कि अगर येह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से सुवाल करें कि "पहाड़ को अपनी जगह से हटा दे।" तो वोह ज़रूर उसे हटा देगा, लिहाज़ा तुम इन के साथ हरगिज़ मुबाहला न करो वरना हलाक हो जाओगे और रूए ज़मीन पर कहीं भी कोई ईसाई बाक़ी न रहेगा।(1)

सुवाल अहले बैते अत्हार की सख़ावत का कोई वाक़िआ बयान कीजिये ?

जवाब एक बार हज़रते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तज़ा, हज़रते सय्यिदतुना फ़ातिमा और हज़रते सय्यिदतुना फ़िज़्ज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم ने तीन रोज़े रखने की नज़्र मानी। हज़रते सय्यिदुना अली کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْھَہُ الْکَرِیْم तीन साअ़ जव लाए, हज़रते ख़ातूने जन्नत رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا ने एक एक साअ़ तीनों दिन पकाया लेकिन जब इफ़्तार का वक़्त आया और रोटियां सामने रखीं तो एक दिन मिस्कीन, दूसरे दिन यतीम और तीसरे दिन क़ैदी दरवाज़े पर आ गए तो तीनों दिन सब रोटियां साइलों को दे दी गईं और उन नुफ़ूसे क़ुदसिय्या ने पानी से इफ़्तार कर के अगले दिन का रोज़ा रख लिया। इस पर पारह 29 सूरए दहर की आयत नम्बर 8 नाज़िल हुई।(2)

सुवाल **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह से उम्मुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदतुना ख़दीजतुल कुब्रा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا को किस अन्दाज़ में सलाम आया ?

जवाब हज़रते सय्यिदुना जिब्रील عَلَیْہِ السَّلَام ने बारगाहे रिसालत में हाज़िर हो कर अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! हज़रते

---

1 ... تفسیر خازن، پ۳، اٰل عمران، تحت الآیۃ: ۶۱، ۱/ ۲۵۸۔

2 ... تفسیر مدارک، پ ۲۹، الدھر، تحت الآیۃ: ۸، ص ۱۳۰۶۔

ख़दीजतुल कुब्रा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا आप के पास एक बरतन में खाना पानी ला रही हैं पस जब वोह आप के पास आएं तो उन्हें उन के रब عَزَّوَجَلَّ की तरफ़ से और मेरी जानिब से सलाम कहिये और उन्हें जन्नत में एक याक़ूती घर की खुश ख़बरी दीजिये।(1)

सुवाल उम्मुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا के सदक़ा करने के बारे में कोई रिवायत सुनाइये ?

जवाब हज़रते सय्यिदुना उरवा बिन ज़ुबैर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : मैं ने हज़रते सय्यिदतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا को 70 हज़ार दिरहम राहे ख़ुदा में सदक़ा करते देखा हालांकि उन की क़मीस के मुबारक दामन में पैवन्द लगा हुवा था।(2)

सुवाल हदीसे मुबारका में किन छे लोगों पर ला'नत आई है ?

जवाब रसूले पाक صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इब्रत निशान है : मैं छे लोगों पर ला'नत करता हूं और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ भी उन पर ला'नत फ़रमाता है और हर नबी की दुआ क़बूल होती है। वोह छे लोग येह हैं : (1) किताबुल्लाह में इज़ाफ़ा करने वाला (2) तक़्दीर को झुटलाने वाला (3) मेरी उम्मत पर ज़ुल्म के साथ तसल्लुत करने वाला कि ऐसे को इज़्ज़त दे जिस को अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने ज़लील किया और ऐसे को ज़लील करे जिस को अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इज़्ज़त अता फ़रमाई (4) अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के हरम (हरमे मक्का) को हलाल ठहराने वाला (5) मेरे अहले बैत की हुरमत जिस का अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने हुक्म दिया है उस को पामाल करने वाला और (6) मेरी सुन्नत को छोड़ने वाला।(3)

---

1 . . . مسلم، کتاب فضائل الصحابة، باب فضائل خدیجة ام المؤمنین، ص ۱۰۱۵، حدیث: ۲۴۳۲۔

2 . . . مدارج النبوة، قسم پنجم، باب دوم، ذکر ازواج مطہرات، ۲/ ۴۷۳۔

3 . . . ترمذی، کتاب القدر، باب ۱۷، ۴/ ۶۱، حدیث: ۲۱۶۱۔

सुवाल वोह कौन से सहाबी हैं जो गर्मियों में सर्दियों के और सर्दियों में गर्मियों के कपड़े पहनते थे ?

जवाब अमीरुल मोमिनीन हज़रते मौला अ़ली كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِیْم गर्मियों में गर्म कपड़े और सर्दियों में ठन्डे कपड़े पहनते थे, किसी ने वज्ह पूछी तो फ़रमाया : जब जनाबे रिसालत मआब صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मेरी आंखों में अपने मुबारक मुंह से लुआ़ब लगाया तो साथ ही येह दुआ़ भी दी : "ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! अ़ली से गर्मी और सर्दी दूर फ़रमा दे।" उस दिन से मुझे न गर्मी लगती है और न ही सर्दी।(1)

सुवाल ह़सनैने करीमैन की मह़ब्बत और उन से बुग़्ज़ के मुतअ़ल्लिक़ कोई ह़दीसे पाक सुनाइये ?

जवाब मालिके कौनैन, नानाए ह़सनैन صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जिस ने ह़सन व ह़ुसैन से मह़ब्बत की उस ने मुझ से मह़ब्बत की और जिस ने उन दोनों से बुग़्ज़ रखा उस ने मुझ से बुग़्ज़ रखा।(2)

सुवाल किस ख़ातून के पुल सिरात़ से गुज़रने पर अहले मह़शर को निगाहें झुकाने का ह़ुक्म होगा ?

जवाब शहज़ादिये कौनैन, उम्मे ह़सनैन, सय्यिदए काइनात ह़ज़रते सय्यिदतुना फ़ात़िमतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا जब पुल सिरात़ से गुज़रेंगी तो अहले मह़शर को ह़ुक्म होगा कि अपनी निगाहें झुका लें।(3)

सुवाल ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ह़सन मुज्तबा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ की विलादत कब हुई ?

---

(1) ...ابن ماجہ، کتاب السنۃ، باب فضل علی بن ابی طالب، ۱/ ۸۳، حدیث: ۱۱۷۔

(2) ...ابن ماجہ، کتاب السنۃ، باب فضل الحسن والحسین، ۱/ ۹۶، حدیث: ۱۴۳۔

(3) ...معجم کبیر، ۱/ ۱۰۸، حدیث: ۱۸۰۔

जवाब हज़रते सय्यिदुना इमाम हसन मुज्तबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की विलादते बा सआदत 15 रमज़ानुल मुबारक 3 हिजरी को हुई।(1)

सुवाल हज़रते सय्यिदुना इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की विलादत कब और कहां हुई नीज़ आप की कुन्यत और लक़ब भी बताइये ?

जवाब इमामे आ़ली मक़ाम हज़रते इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की विलादत 5 शा'बान 4 हिजरी को मदीनए मुनव्वरा में हुई, हुज़ूरे पुरनूर, शाफ़ेए यौमुन्नुशूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने आप का नाम "हुसैन" और "शब्बीर" रखा और आप की कुन्यत "अबू अ़ब्दुल्लाह" और लक़ब "सिब्त़े रसूलिल्लाह" और "रैहानतुन्नबी" है।(2)

सुवाल इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की शहादत के बदले कितने यज़ीदी किस त़रह क़त्ल हुए ?

जवाब **अल्लाह** तआ़ला ने अपने ह़बीबे मुकर्रम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर वह़्य भेजी थी कि इमामे हुसैन (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) के ख़ून के बदले एक लाख चालीस हज़ार कूफ़ी व शामी मक़्तूल होंगे।(3) **अल्लाह** तआ़ला का वा'दा इस त़रह़ पूरा हुवा कि मुख़्तार बिन उ़बैद की लड़ाई में सत्तर हज़ार कूफ़ी व शामी क़त्ल हुए और फिर अ़ब्बासी सल्त़नत के बानी अ़ब्दुल्लाह सफ़्फ़ाह़ के हुक्म से सत्तर हज़ार कूफ़ी व शामी मारे गए।(4)

इमामे आ'ज़म عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْاَکْرَم

सुवाल इमामे आ'ज़म عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْاَکْرَم की कुन्यत अबू ह़नीफ़ा क्यूं है ?

1 ...اسد الغابۃ، رقم ۱۱۶۵، الحسن بن علی، ۲/۱۶۔

2 ...اسد الغابۃ، رقم ۱۱۷۳، الحسین بن علی، ۲/۲۵، ۲۶۔
سیر اعلام النبلاء، رقم ۲۷۰، الحسین الشہید، ۴/۴۰۲، ۴۰۴ ملتقطاً۔

3 ...مستدرک حاکم، کتاب التفسیر، باب اخبار القتل عوض الحسین۔۔۔الخ، ۳/۷، حدیث: ۳۲۰۱۔

4 .....अ़जाइबुल क़ुरआन मअ़ ग़राइबुल क़ुरआन, स. 106

जवाब हनीफ़ औराक़ को कहते हैं, हुज़ूर को इब्तिदा ही से लिखने का बहुत शौक़ था।(1) और एक वज्ह येह भी बयान की गई है कि आप के पास हर वक़्त दवात (Ink) हुवा करती थी जिसे "हनीफ़ा" कहा जाता था।(2)

सुवाल हज़रते सय्यिदुना इमाम अबू हनीफ़ा رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه का हुल्या मुबारक कैसा था ?

जवाब आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه का क़द दरमियाना था, हसीन चेहरे वाले थे, अच्छा लिबास ज़ेबे तन फ़रमाते, ब कसरत ख़ुश्बू इस्ति'माल फ़रमाते थे।(3)

सुवाल हज़रते सय्यिदुना इमामे आ'ज़म عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم की सख़ावत का क्या हाल था ?

जवाब हज़रते सय्यिदुना क़ैस बिन रबीअ़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं कि हज़रते सय्यिदुना इमामे आ'ज़म अबू हनीफ़ा رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه अपनी कमाई से माले तिजारत जम्अ़ करते फिर उस से कपड़े और ज़रूरियाते ज़िन्दगी की दीगर अश्या ख़रीद कर अइम्मए मुहद्दिसीन को पेश करते और फ़रमाते : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की हम्दो सना करो कि उसी ने तुम्हें येह अ़ता फ़रमाया। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं ने अपने माल में से कुछ भी नहीं दिया।(4)

सुवाल करोड़ों हनफ़ियों के पेश्वा इमामे आ'ज़म رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के तक़्वा की कोई मिसाल बयान कीजिये ?

जवाब आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के ज़माने में एक ग़स्ब शुदा बकरी कूफ़ा की दीगर बकरियों में मिल गई तो आप ने दरयाफ़्त फ़रमाया कि

1.....मल्फ़ूज़ाते आ'ला हज़रत, स. 448

2 ... الخیرات الحسان، الفصل الرابع، ص ۳۲۔

3 ... تاریخ بغداد، ۱۳/ ۳۳۱۔

4 ... تاریخ بغداد، ۱۳/ ۳۵۸ ملخصا

उ़मूमन बकरी कितना अ़र्सा ज़िन्दा रहती है ? तो लोगों ने सात साल की मुद्दत बयान की तो आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने सात साल तक बकरी का गोश्त ही तनावुल न फ़रमाया।(1)

सुवाल हज़रते सय्यिदुना इमामे आ'ज़म عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْاَکْرَم की गिर्या व ज़ारी का क्या आ़लम था ?

जवाब रात के वक़्त आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की (ख़ौफ़े ख़ुदा के सबब) आहो बुका इतनी शदीद होती थी कि पड़ोसियों को भी आप पर तरस आता।(2)

सुवाल हज़रते सय्यिदुना इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की इबादत व रियाज़त से मुतअ़ल्लिक़ कुछ बयान कीजिये ?

जवाब हज़रते सय्यिदुना ह़फ़्स बिन अ़ब्दुर्रह़मान رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं कि इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ तीस साल तक सारी रात एक रक्अ़त में क़ुरआने करीम की तिलावत फ़रमाते रहे। हज़रते सय्यिदुना असद बिन अ़म्र رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं कि इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने चालीस साल तक इशा के वुज़ू से नमाज़े फ़ज्र पढ़ी।(3)

सुवाल इमामों के इमाम सय्यिदुना इमामे आ'ज़म عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْاَکْرَم की ज़हानत के बारे में कुछ बताइये ?

जवाब हज़रते सय्यिदुना अ़ली बिन आ़सिम رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने इरशाद फ़रमाया : अगर निस्फ़ (या'नी आधे) अहले ज़मीन की अ़क़्लों

1 ...الخیرات الحسان، الفصل الثامن عشر، ص ۲۰۔
2 ...تاریخ بغداد، ۱۳/ ۳۵۳۔
3 ...تاریخ بغداد، ۱۳/ ۳۵۳، ۳۵۲، مُلتقطاً۔

से इमाम अबू ह़नीफ़ा رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की अ़क़्ल का मुवाज़ना किया जाए तो भी आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की अ़क़्ल ज़ियादा होगी।(1)

सुवाल हज़रते सय्यिदुना इमामे आ'ज़म عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْاَکْرَم की तिजारती मुआ़मलात में एह़तियात़ का क्या आ़लम था ?

जवाब आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के शरीके तिजारत हज़रते सय्यिदुना ह़फ़्स बिन अ़ब्दुर्रह़मान عَلَیْہِ رَحمَۃُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं कि हज़रते सय्यिदुना इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ मेरे साथ तिजारत करते थे और मुझे माले तिजारत भेजते हुए फ़रमाया करते : ऐ ह़फ़्स ! फ़ुलां कपड़े में कुछ ऐ़ब है। जब तुम उसे फ़रोख़्त करो तो ऐ़ब बता देना। हज़रते सय्यिदुना ह़फ़्स رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने एक मरतबा माले तिजारत फ़रोख़्त किया और बेचते हुए ऐ़ब बताना भूल गए। जब इमामे आ'ज़म رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ को इ़ल्म हुवा तो आप ने तमाम कपड़ों की क़ीमत सदक़ा कर दी।(2)

सुवाल जब इमामे आ'ज़म عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْاَکْرَم ने गोशा नशीनी का इरादा किया तो आप को बारगाहे रिसालत से क्या पैग़ाम मिला ?

जवाब इमामुल अइम्मा हज़रते सय्यिदुना इमामे आ'ज़म عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْاَکْرَم को ख़्वाब में हुज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ियारत हुई तो इरशाद फ़रमाया : ऐ अबू ह़नीफ़ा ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने तुम्हें मेरी सुन्नत ज़िन्दा करने के लिये पैदा फ़रमाया है, तुम गोशा नशीनी का हरगिज़ क़स्द न करो।(3)

---

1 ...تبییض الصحیفۃ فی مناقب الامام ابی حنیفۃ النعمان، ص ۱۲۸۔

2 ...تاریخ بغداد، ۱۳/ ۳۵۶۔

3 ...تذکرۃ الاولیاء، ذکر امام ابو حنیفۃ رضی اللہ عنہ، ص ۱۸۶۔

सुवाल इमामे आ'ज़म عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْاَكْرَم ने रौज़ए अन्वर पर किन अल्फ़ाज़ में सलाम किया और अन्दर से क्या जवाब आया ?

जवाब हज़रते सय्यिदुना इमामे आ'ज़म عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْاَكْرَم ने रौज़ए रसूल पर हाज़िर हो कर यूं सलाम किया : اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا سَيِّدَ الْمُرْسَلِيْن (ऐ रसूलों के सरदार ! आप पर सलाम हो) तो अन्दर से जवाब आया : وَعَلَيْكَ السَّلَامُ يَا اِمَامَ الْمُسْلِمِيْن (ऐ मुसलमानों के इमाम ! तुम पर भी सलामती हो) ।(1)

सुवाल जिस जगह इमामे आ'ज़म رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه का विसाल हुवा उस जगह की ख़ास बात बताइये ?

जवाब कहा जाता है कि जिस जगह आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه की वफ़ात हुई उस मक़ाम पर आप ने सात हज़ार मरतबा क़ुरआने करीम ख़त्म फ़रमाया था ।(2)

सुवाल इमामे आ'ज़म عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْاَكْرَم ने इमाम अबू यूसुफ़ عَلَيْهِ الرَّحْمَة को जो नसीहतें फ़रमाईं उन में से कुछ बयान कीजिये ?

जवाब (1) ज़ियादा हंसने से बचना कि इस से दिल मुर्दा हो जाता है । (2) दौराने गुफ़्तगू इस बात का ख़याल रखना कि न तेरी आवाज़ ज़रूरत से ज़ियादा बुलन्द हो और न गुफ़्तगू में चीख़ो पुकार हो । (3) जब तू लोगों के दरमियान बैठे तो ज़िक्रे इलाही की कसरत कर ताकि उन की भी येह आदत बने । (4) बुरे कामों में हरगिज़ लोगों के पीछे न चलना बल्कि अच्छे कामों में उन की पैरवी करना । (5) क़ब्रिस्तान, उ़लमा व मशाइख़ और मुक़द्दस मक़ामात की ज़ियारत कसरत से करना ।

---

1 . . . تذکرۃ الاولیاء، ذکر امام ابو حنیفۃ رضی اللہ عنہ، ص ۱۸۶۔

2 . . . تاریخ بغداد، ۱۳ / ۳۵۳۔

(6) बा हिम्मत व हौसला मन्द बन कर रहना कि पस्त हिम्मत की क़द्रो मन्ज़िलत कम हो जाती है।(1)

उलमा व मुज्तहिदीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی

सुवाल इमाम मालिक رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه के ह़दीसे मुबारका की ता'ज़ीम का अन्दाज़ बताइये ?

जवाब ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मालिक बिन अनस رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه अह़ादीसे करीमा की ह़द दरजा ता'ज़ीम फ़रमाते थे। मन्क़ूल है कि जब आप ह़दीसे पाक बयान करने का इरादा फ़रमाते तो वुज़ू कर के दो नफ़्ल पढ़ते फिर दाढ़ी शरीफ़ में कंघी करते, ख़ुश्बू लगाते और इ़ज़्ज़तो वक़ार के साथ अपनी मस्नद पर तशरीफ़ फ़रमा हो कर ह़दीसे पाक बयान करते। आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه से इस की वज्ह पूछी गई तो इरशाद फ़रमाया : मुझे येह बात ज़ियादा पसन्द है कि **अल्लाह** के मह़बूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ह़दीसे पाक की ता'ज़ीम करूं।(2)

सुवाल सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह इब्ने मुबारक رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه का शानदार इस्तिक़्बाल देख कर ख़लीफ़ा हारून रशीद की वालिदा के क्या तअस्सुरात थे ?

जवाब जब ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه "मरव" के अ़लाक़े में तशरीफ़ लाए तो वहां के रहने वाले आप के इस्तिक़्बाल के लिये दौड़ते हुए आए, येह मन्ज़र देख कर ख़लीफ़ा हारून रशीद की वालिदा ने ख़ादिम से पूछा तो उस ने बताया कि ख़ुरासान के एक आ़लिम जिन का नाम इब्ने मुबारक

1.....इमामे आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه की वसिय्यतें, स. 14-15, 17, 19, 21 मुल्तक़तन।

2...حلية الاولياء، مالك بن انس، رقم: ٨٨٥٨، ٦/٣٤٧ـ

है वोह तशरीफ़ लाए हैं, लोग उन के इस्तिक़्बाल के लिये जा रहे हैं इस पर हारून रशीद की वालिदा ने कहा कि अस्ल हुक्मरान तो येह हैं जिन का इस क़दर मसर्रत और ख़ुशी से इस्तिक़्बाल किया जा रहा है।(1)

सुवाल किस शख़्सिय्यत को दूसरी सदी हिजरी का मुजद्दिद कहा गया है ?

जवाब दूसरी सदी का मुजद्दिद ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْكَافِى को कहा गया है।(2)

सुवाल इमाम शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْكَافِى कहां पैदा हुए और उन का विसाल कहां हुवा ?

जवाब ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन इदरीस शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْكَافِى फ़िलिस्त़ीन के शहर ग़ज़्ज़ह में पैदा हुए, 199 हिजरी में आप मिस्र (Egypt) चले गए और वहीं आप की वफ़ात हुई। आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه का मज़ारे पुर अन्वार मिस्र के शहर क़ाहिरा में है।(3)

सुवाल इमाम अह़मद बिन ह़म्बल عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْاَوَّل को कितनी अह़ादीस ज़बानी याद थीं ?

जवाब इमाम अह़मद बिन ह़म्बल عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْاَوَّل को दस लाख अह़ादीस ज़बानी याद थीं।(4)

सुवाल इमाम अह़मद बिन ह़म्बल رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه की नमाज़े जनाज़ा के वक़्त कितने ग़ैर मुस्लिम दामने इस्लाम से वाबस्ता हुए थे ?

जवाब इमाम अह़मद बिन ह़म्बल رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه की नमाज़े जनाज़ा के वक़्त बीस हज़ार ग़ैर मुस्लिम दामने इस्लाम से वाबस्ता हो गए थे।(5)

---

1 . . . مناقب الامام الاعظم ابی حنیفۃ، الباب الرابع، الفصل الاول، ص ۱۷۳ ملخصاً۔

2 . . . مستدرک، کتاب الفتن والملاحم، باب ذکر بعض المجددین فی ھذہ الامۃ، ۵/۷۳۰۔

3 . . . اعلام للزرکلی، الامام الشافعی، ۶/۲۶۔

4 . . . طبقات الشافعیۃ للسبکی، احمد بن محمد بن حنبل، ۲/۳۱، رقم ۷۔

5 . . . سیر اعلام النبلاء، رقم ۱۸۷۶، احمد بن حنبل، وصیۃ احمد و مرضہ، ۹/۵۳۸۔

सुवाल आ़लिमे मदीना कौन हैं और इन के मुतअ़ल्लिक़ ह़दीसे पाक में क्या बिशारत आई है ?

जवाब आ़लिमे मदीना से मुराद ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मालिक बिन अनस رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه हैं। चुनान्चे, हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : अ़न क़रीब लोग त़लबे इ़ल्म के लिये लम्बे लम्बे सफ़र करेंगे लेकिन वोह मदीनए मुनव्वरा के आ़लिम के मुक़ाबले में ज़ियादा इ़ल्म वाला कहीं और न पाएंगे।(1)

सुवाल इमामे आ'ज़म के दो अ़ज़ीम और मश्हूर शागिर्दों के नाम बताइये ?

जवाब मुह़र्रिरे मज़्हबे ह़नफ़ी ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन ह़सन शैबानी और क़ाज़ियुल क़ुज़्ज़ाह ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबू यूसुफ़ या'क़ूब बिन इब्राहीम (رَحِمَهُمَا اللّٰهُ تَعَالٰی)

सुवाल इमाम शाफ़ेई ने इमाम मुह़म्मद बिन ह़सन (رَحِمَهُمَا اللّٰهُ تَعَالٰی) की ता'रीफ़ किन अल्फ़ाज़ में की ?

जवाब ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِى फ़रमाते हैं : मैं 20 साल ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन ह़सन शैबानी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِى की ख़िदमत में रहा और मैं ने उन से जो सीखा अगर उसे लिखा जाए तो उन कुतुब को उठाने के लिये एक ऊंट चाहिये होगा। बिलाशुबा अगर इमाम मुह़म्मद न होते तो मुझे फ़क़ाहत नसीब न होती।(2)

सुवाल तब्ए़ ताबेई़न में से किन बुज़ुर्ग ने 70 हज़ार फ़त्वे दिये ?

जवाब तब्ए़ ताबेई बुज़ुर्ग ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अ़ब्दुर्रह़मान औज़ाई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَلِى ने 70 हज़ार फ़त्वे दिये।(3)

सुवाल मजलिसे ग़ज़ाली में कितने उ़लमा व फ़ुज़ला ह़ाज़िर होते थे ?

---

1 ...ترمذی، کتاب العلم، باب ماجاء فی عالم المدینة، ۴/ ۳۱۱، حدیث: ۲۶۸۹۔

2 ...مناقب الامام الاعظم ابی حنیفة للکردری، الباب الثالث فی ذکر الامام محمد بن الحسن، ۲/ ۱۵۳ ماخوذاً۔

3 ...اعلام للزرکلی، الاوزاعی، ۳/ ۳۲۰۔

जवाब हुज्जतुल इस्लाम हज़रते सय्यिदुना इमाम मुहम्मद बिन मुहम्मद ग़ज़ाली عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡوَالِی की मजलिसे इल्म में तक़रीबन 400 उ़लमा व फ़ुज़ला हाज़िर होते थे।(1)

सुवाल तुर्बतुल मुहम्मदीन किस जगह का नाम था ?

जवाब अ़लाक़ा मावराउन्नहर और समरक़न्द में एक ऐसा क़ब्रिस्तान था जिस में फ़िक़्हे ह़नफ़ी के माहिर उ़लमा जिन में से हर एक का नाम मुहम्मद था चार सौ की ता'दाद में दफ़्न हुए (इसी लिये) इस क़ब्रिस्तान का नाम ही "तुर्बतुल मुहम्मदीन" था।(2)

ग़ौसे आ'ज़म عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡاَكۡرَم

सुवाल ग़ौसे पाक رَحۡمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيۡه के वालिदैन के नाम और उन की कुन्यत बताएं ?

जवाब हुज़ूरे ग़ौसे पाक رَحۡمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيۡه के वालिद का नाम "सय्यिद मूसा", कुन्यत "अबू सालेह़" और लक़ब "जंगी दोस्त" था जब कि वालिदा का नाम फ़ातिमा और उन की कुन्यत "उम्मुल ख़ैर" थी। आप رَحۡمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيۡه का नसब दस वासितों से इमामे ह़सन बिन अ़ली رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنۡهُمَا से मिलता है।(3)

सुवाल शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحۡمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيۡه के नानाजान कौन थे ?

जवाब आप رَحۡمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيۡه के नानाजान का नाम ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह सौमई رَحۡمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيۡه था, आप मुस्तजाबुद्दा'वात बुज़ुर्ग थे, ज़ईफ़ी और बुढ़ापे के बा वुजूद कसरत से नवाफ़िल पढ़ते और हमेशा ज़िक्रुल्लाह करते रहते थे।(4)

---

1 ...شذرات الذهب، سنة خمس وخمس مائة، ۴/۱۴۶۔

2 .....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 19, 3 / 1047

3 ...بهجة الاسرار، ذكر نسبه وصفته، ص ۱۷۱، ماخوذاً۔

4 ...بهجة الاسرار، ذكر نسبه وصفته، ص ۱۷۱-۱۷۲۔

सुवाल विलादत के बा'द ग़ौसे पाक رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه की कौन सी करामत ज़ाहिर हुई ?

जवाब आप की वालिदा फ़रमाती हैं कि जब मेरा बेटा अ़ब्दुल क़ादिर पैदा हुवा तो वोह रमज़ान शरीफ़ में दिन के वक़्त दूध न पीता था। लोगों को ग़ुबार की वज्ह से रमज़ान का चांद नज़र न आया तो मेरे पास पूछने आए मैं ने कहा कि (मेरे बच्चे ने) आज दूध नहीं पिया फिर मा'लूम हुवा कि येह दिन रमज़ान का था। उस वक़्त शहर में येह बात मश्हूर हो गई कि शरीफ़ों (सादाते किराम) के घर एक ऐसा बच्चा पैदा हुवा है जो रमज़ान में दिन के वक़्त दूध नहीं पीता।(1)

सुवाल वलियों के सरदार, ग़ौसे पाक رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه का हुल्या मुबारक कैसा था ?

जवाब क़ुत़्बे रब्बानी, ग़ौसे समदानी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ज़ईफ़ुल बदन, मियाना क़द, फ़राख़ सीना, चौड़ी दाढ़ी और दराज़ गर्दन, रंग गन्दुमी, मिले हुए अब्रू, सियाह आंखें, बुलन्द आवाज़ और वाफ़िरे इ़ल्मो फ़ज़्ल थे।(2)

सुवाल ग़ौसे आ'ज़म رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه कितने उ़लूम में तक़रीर फ़रमाया करते थे ?

जवाब हुज़ूरे ग़ौसे आ'ज़म رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه तेरह उ़लूम में तक़रीर फ़रमाया करते थे।(3)

सुवाल कितने अफ़राद ग़ौसे पाक رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه के बयान में शिर्कत की सआ़दत पाते ?

जवाब तक़रीबन सत्तर हज़ार (70000) आदमी जम्अ़ होते नीज़ जिन्नात भी आप का बयान सुनने के लिये ह़ाज़िर होते थे।(4)

---

1 ...بهجة الاسرار، ذكر نسبه وصفته، ص ١٧٢-

2 ...بهجة الاسرار، ذكر نسبه وصفته، ص ١٧٤-

3 ...بهجة الاسرار، ذكر علمه وتسمية بعض شيوخه، ص ٢٢٥-

4 ...بهجة الاسرار، ذكر وعظه، ص ١٧٧، ١٨٠ ملتقطاً-

सुवाल किस चीज़ की बरकत से अहले बग़दाद ताऊ़न की बीमारी से शिफ़ायाब हुए ?

जवाब बग़दादे मुअ़ल्ला में जब ताऊ़न की बीमारी फैल गई तो सरकारे बग़दाद رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने अपने मद्रसे के गिर्द उगी हुई घास खाने और मद्रसे के कूंएं से पानी पीने का फ़रमाया जिस की बरकत से लोगों को शिफ़ा मिलने लगी।(1)

सुवाल हुज़ूरे ग़ौसे आ'ज़म رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के अख़्लाक़े करीमा के बारे में कुछ बताइये ?

जवाब बुलन्द मर्तबा और आ'ला इल्मी मक़ाम के बा वुजूद आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ छोटों पर शफ़्क़त और बड़ों की ता'ज़ीम करते थे, सलाम में पहल करते, ज़ईफ़ों के साथ बैठते, फ़ुक़रा से आ़जिज़ी के साथ पेश आते, उमरा और रूअसा की ता'ज़ीम के लिये आप कभी खड़े नहीं हुए और न कभी वुज़रा व सलातीन के दरवाज़े पर गए।(2)

सुवाल हुज़ूरे ग़ौसे पाक رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की इबादत गुज़ारी और शब बेदारी के बारे में बताइये ?

जवाब मुहम्मद बिन अबू फ़त्ह़ हरवी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं मैं ने शैख़ मुहि़युद्दीन अ़ब्दुल क़ादिर رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की चालीस साल तक ख़िदमत की, इस मुद्दत में आप इशा के वुज़ू से सुब्ह़ की नमाज़ पढ़ते और आप का मा'मूल था कि जब बे वुज़ू होते थे तो उसी वक़्त वुज़ू फ़रमा कर दो रक्अ़त नमाज़ नफ़्ल पढ़ लेते थे। मैं आप की ख़िदमत में चन्द रातें सोया। आप का ह़ाल येह था कि अव्वल रात कुछ नफ़्ल पढ़ते फिर ज़िक्रो मुनाजात करते, फिर खड़े हो कर क़ुरआन शरीफ़ पढ़ते यहां तक कि रात का दूसरा हिस्सा

1.....मुन्ने की लाश, स. 7, तफ़रीहुल ख़ातिर (मुतरजिम), स 105

2...بهجة الاسرار، ذکر شيئ من شرائف اخلاقه، ص ۱۹۷۔

गुज़र जाता, आप तवील सजदे करते फिर मुराक़बे व मुशाहदे में तुलूए फ़ज्र तक बैठे रहते, फिर निहायत इज्ज़ो नियाज़ और खुशूअ के साथ दुआ मांगते, उस वक़्त आप को ऐसा नूर ढांप लेता कि नज़रों से ग़ाइब हो जाते यहां तक कि नमाज़े फ़ज्र के लिये ख़ल्वत कदे से बाहर निकलते।(1)

सुवाल शैख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه का ख़ौफ़े ख़ुदा कैसा था ?

जवाब हज़रते सय्यिदुना शैख़ शरफ़ुद्दीन सा'दी शीराज़ी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं कि हज़रते सय्यिदुना शैख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّورانی को हरमे का'बा में देखा गया कि कंकरियों पर सर रखे बारगाहे रब्बुल इज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ में अर्ज़ गुज़ार हैं : "ऐ ख़ुदावन्दे करीम عَزَّوَجَلَّ मुझे बख़्श दे और अगर मैं सज़ा का हक़दार हूं तो बरोज़े क़ियामत मुझे अन्धा उठाना ताकि नेकूकार लोगों के सामने शरमिन्दा न होऊं।"(2)

सुवाल सरकारे बग़दाद رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه के दस्ते अक़्दस पर कितने लोगों ने तौबा की ?

जवाब आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ख़ुद फ़रमाते हैं : मेरे हाथ पर पांच सौ से ज़ियादा ग़ैर मुस्लिम मुसलमान हुए और एक लाख से ज़ियादा बे अमल लोगों ने तौबा की।(3)

सुवाल हुज़ूरे ग़ौसे आ'ज़म عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَکْرَم ने किस उम्र में विसाल फ़रमाया और आप की नमाज़े जनाज़ा किस ने पढ़ाई ?

जवाब हुज़ूरे ग़ौसे आ'ज़म عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَکْرَم का विसाल 91 बरस की उम्र में हुवा और आप की नमाज़े जनाज़ा हज़रते सय्यिद सैफ़ुद्दीन अब्दुल वह्हाब عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللهِ الرَّزَّاق ने पढ़ाई।(4)

---

1 ...بهجة الاسرار، ص ٢٥٠ ملخصاً

2 ...گلستانِ سعدی، ص ٥٤۔

3 ...بهجة الاسرار، ص ١٨٤۔

4 .....शर्हे शजरए क़ादिरिय्या रज़विय्या अत्तारिय्या, स. 86

औलिया व सालिहीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی

सुवाल हज़रते सय्यिदुना हसन बसरी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللّٰهِ القَوِى की कुन्यत क्या है ?

जवाब हज़रते सय्यिदुना हसन बसरी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللّٰهِ القَوِى की कुन्यत "अबू सईद" है।(1)

सुवाल हज़रते जुनैद बग़दादी رَحمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه की शब बेदारी का अह़वाल बयान कीजिये ?

जवाब तीस साल तक आप का मा'मूल था कि इशा की नमाज़ के बा'द खड़े हो कर सुब्ह़ तक **अल्लाह अल्लाह** कहा करते और उसी वुज़ू से सुब्ह़ की नमाज़ अदा करते।(2)

सुवाल फ़रमाने ग़ौसे पाक "मेरा येह क़दम हर वली की गर्दन पर है।" सुन कर बहुत दूर ग़ार में किस बुज़ुर्ग ने अपना सर झुका दिया और क्या अ़र्ज़ की ?

जवाब वोह बुज़ुर्ग सिलसिलए चिश्तिया के अ़ज़ीम पेशवा हज़रते ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ رَحمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه हैं कि जब हुज़ूरे ग़ौसे पाक शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِى ने फ़रमाया कि "मेरा येह क़दम तमाम औलिया की गर्दन पर है।" तो आप ने बहुत दूर ग़ार में आप का येह फ़रमान सुन कर अ़र्ज़ की : बल्कि आप का क़दम मुबारक मेरी आंखों और सर पर है।(3)

सुवाल हज़रते अबू त़ालिब मक्की عَلَيْهِ رَحمَةُ اللّٰهِ القَوِى का तक़्वा कैसा था ?

जवाब आ़रिफ़ बिल्लाह, इमामे अजल हज़रते सय्यिदुना अबू त़ालिब मक्की عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَلِى शुकूक व शुब्हात वाली चीज़ों से परहेज़

1 ...حلية الاولياء، الحسن البصري، ٢/ ١٥٣-

2 .....शर्हे शजरए क़ादिरिय्या, स. 73

3 .....ग़ौसे पाक के ह़ालात, स. 67

फ़रमाते और घास खाने पर इक्तिफ़ा करने की वज्ह से उन के जिस्म मुबारक की रंगत सब्ज़ हो गई थी।(1)

सुवाल हज़रते मुहिय्युद्दीन मुहम्मद बिन सालेह رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه का मज़ार शरीफ़ कहां है ?

जवाब हज़रते सय्यिदुना मुहिय्युद्दीन मुहम्मद बिन सालेह عَلَيْهِ الرَّحْمَة का मज़ार शरीफ़ अपने परदादा हुज़ूर ग़ौसे पाक رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के मद्रसे के इहाते में है।(2)

सुवाल इमाम बूसैरी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه को फ़ालिज से किस त़रह शिफ़ा मिली ?

जवाब इमाम बूसैरी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه पर फ़ालिज का शदीद ह़म्ला हुवा जिस की वज्ह से उन का निस्फ़ जिस्म बेह़िसो ह़रकत हो गया। इसी ह़ालत में आप ने रसूले कौनैन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की शान में क़सीदा बुरदा लिखा। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं कि जब क़सीदा ख़त्म हुवा तो मेरे ख़्वाब में रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तशरीफ़ लाए, अपना दस्ते मुबारक मेरे जिस्म पर फेरा और अपनी मुबारक चादर मेरे जिस्म पर डाल दी जिस की बरकत से मैं फ़ौरन सिह्ह़तयाब हो गया। जब मैं नींद से बेदार हुवा तो अपने आप को खड़े होने और ह़रकत करने के क़ाबिल पाया।(3)

सुवाल किस बुज़ुर्ग ने दर्दे सर होने पर शुक्राने में 400 रक्आत नफ़्ल अदा किये ?

जवाब हज़रते सय्यिदुना फ़त्ह़ बिन सईद मूसली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی को दर्दे सर हुवा तो आप ने शुक्राने में 400 रक्अ़त नफ़्ल अदा किये।(4)

1.....फ़ैज़ाने सुन्नत, स. 671
2.....शर्हे शजरए क़ादिरिय्या रज़विय्या अ़त्तारिय्या, स. 92
3.....गुलदस्तए दुरूदो सलाम, स. 299 मुलख़्ख़सन।
4...حلية الاولياء، فتح بن سعيد، ٨/٣٢٤، رقم: ١٢٣٦٢۔

सुवाल मुसन्निफ़े दलाइलुल ख़ैरात की विलादत कब हुई और आप का मज़ार कहां वाक़ेअ़ है ?

जवाब मुसन्निफ़े दलाइलुल ख़ैरात ह़ज़रते अबू अ़ब्दुल्लाह मुह़म्मद बिन सुलैमान जज़ूली رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की विलादत 807 हिजरी में हुई और आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का मज़ार शरीफ़ मराकिश में मरजए़ ख़लाइक़ है।(1)

सुवाल इमाम रब्बानी ह़ज़रते सय्यिदुना मुजद्दिदे अल्फ़े सानी عَلَیْہِ رَحْمَةُ اللّٰہِ الْوَالِی का विसाल कब हुवा ?

जवाब ह़ज़रते मुजद्दिदे अल्फ़े सानी अबुल बरकात शैख़ अह़मद फ़ारूक़ी नक़्शबन्दी सरहिन्दी عَلَیْہِ رَحْمَةُ اللّٰہِ الْقَوِی का विसाल 28 सफ़रुल मुज़फ़्फ़र 1034 हिजरी / 1624 ईसवी में हुवा।(2)

सुवाल ह़ज़रते सय्यिदुना आले मुह़म्मद मारेहरवी عَلَیْہِ رَحْمَةُ اللّٰہِ الْقَوِی कितने साल तक ए'तिकाफ़ गुज़ीं रहे और किस चीज़ से इफ़्त़ार किया करते थे ?

जवाब आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ मुकम्मल 3 साल तक ए'तिकाफ़ गुज़ीं रहे और जव की रोटी से इफ़्त़ार किया करते थे।(3)

सुवाल ह़ज़रते सय्यिदुना शाह आले अह़मद अच्छे मियां رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की विलादत कब हुई ?

जवाब ह़ज़रते शाह आले अह़मद अच्छे मियां رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की विलादत 28 रमज़ानुल मुबारक 1160 हिजरी में हुई।(4)

सुवाल ह़ज़रते आले रसूल मारेहरवी عَلَیْہِ رَحْمَةُ اللّٰہِ الْقَوِی ने क्या वसिय्यत फ़रमाई थी ?

जवाब वक़्ते रिह़लत लोगों ने आप से वसिय्यत करने पर बहुत इसरार

---

1 ...اعلام للزرکلی، محمد بن سلیمان الجزولی، ۶/۱۵۱۔

2 .....तज़्किरए मुजद्दिदे अल्फ़े सानी, स. 39

3 .....शर्हे शजरए क़ादिरिय्या रज़विय्या अ़त्तारिय्या, स. 111 माख़ूज़न।

4 .....अह़वाल व आसार शाह आले अह़मद अच्छे मियां मारेहरवी, स. 26

किया तो फ़रमाया : मजबूर करते हो तो लिख लो हमारा वसिय्यत नामा : اَطِيْعُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوا الرَّسُوْلَ या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की इताअ़त करो । बस येही काफ़ी है और इसी में दीनो दुन्या की फ़लाह़ है।[1]

आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه

सुवाल आ'ला ह़ज़रत, इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن के कोई दो असातिज़ा के नाम बताइये ?

जवाब (1) वालिदे माजिद इमामुल मुतकल्लिमीन ह़ज़रते मौलाना मुफ़्ती नक़ी अ़ली ख़ान (2) ह़ज़रते सय्यिद शाह अबुल हुसैन अह़मद नूरी (رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمَا)[2]

सुवाल आ'ला ह़ज़रत से जनाब मिर्ज़ा ग़ुलाम क़ादिर बेग رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمَا का क्या तअ़ल्लुक़ था ?

जवाब इमामे अह्ले सुन्नत رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने उर्दू फ़ारसी की इब्तिदाई कुतुब मिर्ज़ा ग़ुलाम क़ादिर बेग साह़िब से पढ़ीं, बा'द में इन्हीं मिर्ज़ा साह़िब ने आप से हिदाया का सबक़ लिया गोया आप उन के शागिर्द भी थे और उस्ताज़ भी।[3] एक ज़माने में जनाब मिर्ज़ा साह़िब का क़ियाम कलकत्ता में था, वहां से अक्सर सुवालाते जवाब त़लब भेजा करते। फ़ज़ावा रज़विय्या में अक्सर इस्तिफ़्ता इन के हैं। बड़े साह़िबे तक़्वा और आ'ला ह़ज़रत के फ़िदाई और जां निसार थे।[4]

सुवाल आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه को "इल्मे तौक़ीत' पर किस दरजे का कमाल ह़ासिल था ?

1.....शर्हे शजरए क़ादिरिय्या रज़विय्या अ़त्तारिय्या, स. 117
2.....तजल्लियाते इमाम अह़मद रज़ा, स. 26
3.....फ़ैज़ाने आ'ला ह़ज़रत, स. 89
4.....ह़याते आ'ला ह़ज़रत, 1 / 96 माख़ूज़न ।

जवाब : आप को इल्मे तौक़ीत पर इस क़दर कमाल हासिल था कि दिन को सूरज और रात को सितारे देख कर घड़ी मिला लेते थे।(1)

सुवाल : कौन से रियाज़ी दान (Mathematician) को दरपेश रियाज़ी (Mathematics) का एक मुश्किल मस्अला आ'ला हज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने फ़ौरन हल फ़रमा दिया ?

जवाब : अ़लीगढ़ यूनीवर्सिटी के वाइस चान्सेलर डॉक्टर ज़ियाउद्दीन। येह इल्मे रियाज़ी का एक मुश्किल मस्अला हल करवाने जर्मनी जाना चाहते थे मगर जब आ'ला हज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْہ की बारगाह में आए तो आप ने फ़ौरन तसल्ली बख़्श जवाब अ़ता फ़रमा दिया।(2)

सुवाल : अगर कुछ लेने के लिये कोई उल्टा हाथ बढ़ा देता तो आ'ला हज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْہ क्या करते थे ?

जवाब : अगर किसी साहिब को कोई शै देना होती और उस ने उल्टा हाथ लेने को बढ़ाया (तो आ'ला हज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْہ) फ़ौरन अपना दस्ते मुबारक रोक लेते और फ़रमाते सीधे हाथ में लीजिये, उल्टे हाथ में शैत़ान लेता है।(3)

सुवाल : आ'ला हज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने रौज़ए अन्वर पर हाज़िरी का क्या त़रीक़ा इरशाद फ़रमाया ?

जवाब : आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : ख़बरदार जाली शरीफ़ को बोसा देने या हाथ लगाने से बचो कि ख़िलाफ़े अदब है बल्कि चार हाथ फ़ासिले से ज़ियादा क़रीब न जाओ, येह उन की रहमत क्या कम है कि तुम को अपने हुज़ूर बुलाया, अपने मुवाजए अक़्दस में

1.....हयाते आ'ला हज़रत, 1 / 248 माख़ूज़न।
2.....हयाते आ'ला हज़रत, 1 / 241
3.....फ़ैज़ाने आ'ला हज़रत, स. 109

जगह बख़्शी, उन की निगाहे करीम अगर्चे हर जगह तुम्हारी त़रफ़ थी, अब ख़ुसूसिय्यत और इस दरजे कुर्ब के साथ है।(1)

सुवाल आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه मज़ारात के त़वाफ़ और उन्हें चूमने के मुतअ़ल्लिक़ क्या फ़रमाते हैं ?

जवाब आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : मज़ार का त़वाफ़ कि मह़्ज़ ब निय्यते ता'ज़ीम किया जाए नाजाइज़ है कि ता'ज़ीम बित्त़वाफ़ मख़्सूस ख़ानए का'बा (या'नी ता'ज़ीम के साथ त़वाफ़ ख़ानए का'बा के साथ ख़ास) है। मज़ार को बोसा देना न चाहिये और बेहतर बचना और इसी में अदब ज़ियादा है।(2)

सुवाल आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने किस मेट्रोलोजिस्ट का रद फ़रमाया ?

जवाब मश्हूर अमरीकी मेट्रोलोजिस्ट (Meterologist) एल्बर्ट पोर्टा (Albert Porta) ने येह पेशीनगोई की, कि 17 दिसम्बर 1919 ईसवी को सय्यारों के इजतिमाअ़ और कशिश के सबब सूरज में सूराख़ हो जाएगा और एक ख़ौफ़नाक सैलाब ममालिके मुत्तहिदा (अमेरीका) को सफ़ह़ए हस्ती से मिटा देगा। इस ख़बर के शाएअ़ होते ही लोगों में बे चैनी फैल गई। जब आ'ला ह़ज़रत से इस बारे में सुवाल किया गया तो आप ने (3)"معین مبین بہر دور شمس و سکون زمین" के नाम से एक तह़रीर लिखी जिस में मुतअ़द्दद दलाइल और जदीद साइन्स के उसूलों से ही एल्बर्ट की पेशीनगोई की धज्जियां उड़ा दीं। फिर जब 17 दिसम्बर का दिन ख़ैरो आ़फ़िय्यत के साथ गुज़र गया तो एल्बर्ट की पेशीनगोई

1.....फ़तावा रज़विय्या, 10 / 765

2.....फ़तावा रज़विय्या, 9 / 528

3.....अह्ले इल्म बिलख़ुसूस साइन्स से दिलचस्पी रखने वाले येह रिसाला फ़तावा रज़विय्या, जिल्द 27 के सफ़ह़ा 229 से मुत़ालअ़ा कर सकते हैं।

का बुत़लान और आ'ला ह़ज़रत की साइन्सी उ़लूम में महारत व ख़ूबी वाज़ेह़ हो गई।[1]

सुवाल आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने तयम्मुम के मस्अले में कितनी अश्या बयान फ़रमाईं ?

जवाब आप ने तयम्मुम पर लिखते हुए तीन सौ ग्यारह (311) अश्या बयान फ़रमाईं जिन में से एक सौ इक्यासी (181) अश्या ऐसी हैं जिन से तयम्मुम करना जाइज़ है और इन एक सौ इक्यासी अश्या में से चोहत्तर (74) वोह हैं जिन्हें फ़ुक़हाए मुतक़द्दिमीन ने बयान फ़रमाया था जब कि एक सौ सात (107) अश्या का इज़ाफ़ा खुद आ'ला ह़ज़रत ने इमामे आ'ज़म رَحْمَةُاللهِ تعالی عَلَيهِما के मज़हब के उसूल को मद्दे नज़र रखते हुए किया। यूंही एक सौ तीस (130) अश्या से अ़दमे जवाज़े तयम्मुम को बयान फ़रमाया जिन में से अठ्ठावन (58) अश्या फ़ुक़हाए मुतक़द्दिमीन ने बयान फ़रमाई हैं और बहत्तर (72) अश्या का अ़दमे जवाज़ आप ने अपने इजतिहाद से इमामे आ'ज़म رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه के मज़हब पर बयान फ़रमाया।[2]

सुवाल आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه के वक़्ते नज़्अ़ का कुछ ह़ाल बयान कीजिये ?

जवाब आप ने अपने दोनों शहज़ादों को यासीन शरीफ़ और सूरए रअ़्द की तिलावत का हुक्म फ़रमाया, दोनों सूरतों की तिलावत इतनी तवज्जोह से समाअ़त फ़रमाई कि एक आयत साफ़ सुनने में न आई तो उसे दोबारा पढ़वाया, एक मक़ाम पर ज़ेर की जगह ज़बर अदा हो गया तो खुद दुरुस्त करवाया, ह़ाज़िरीन के सलाम के

---

1 .....सवानेहे़ इमाम अह़मद रज़ा, स. 106, 109 माख़ूज़न।

2 .....फ़ैज़ाने आ'ला ह़ज़रत, कमालाते इल्मी, स. 498 व फ़तावा रज़विय्या, 3/658

जवाब इरशाद फ़रमाए, सफ़र की मस्नून दुआएं जो आ़म तौ़र पर भी पूरी पढ़ा करते थे उस वक़्त मा'मूल से ज़ियादा पढ़ीं, बारगाहे इलाही में यूं दुआ़ की : ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! सफ़र की दराज़ी को मेरे लिये मुख़्तसर फ़रमा दे और ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! इस सफ़र में हमें कामयाबी अ़ता़ फ़रमा। जब सीने पर दम आया उस वक़्त कलिमए त़य्यिबा पढ़ा, जब बोलने की ता़क़त न रही उस वक़्त भी लब्हाए मुबारका जुम्बिश में थे कान लगा कर सुना तो अल्लाह, अल्लाह कह रहे थे, चेहरए मुबारका पर एक नूर की किरन चमकी उस के ग़ाइब होते ही रूह़ जिस्मे अक़्दस से परवाज़ कर गई जब कि मस्जिद से मुअज़्ज़िन ''حَیَّ عَلَی الصَّلٰوۃ، حَیَّ عَلَی الْفَلَاح'' की सदा दे रहा था।(1)

सुवाल आ'ला ह़ज़रत رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के कोई तीन ख़ुलफ़ा के नाम बताइये ?

जवाब (1) सदरुश्शरीआ़ मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी (2) सदरुल अफ़ाज़िल मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी और (3) प्रोफ़ेसर सय्यिद सलमान अशरफ़ बिहारी (उस्ताज़ अ़लीगढ़) (رَحِمَہُمُ اللّٰہُ تَعَالٰی)

सुवाल आ'ला ह़ज़रत رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने वालिदे माजिद के विसाल के बा'द तमाम जाईदाद का इख़्तियार किसे दे रखा था ?

जवाब जब आ'ला ह़ज़रत رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के वालिदे माजिद जनाब मौलाना नक़ी अ़ली ख़ान साह़िब का इन्तिक़ाल हुवा अपने ह़िस्सए जाईदाद के ख़ुद मालिक थे मगर सब इख़्तियार वालिदए माजिदा के सिपुर्द था। वोह पूरी मालिका व मुतसर्रिफ़ा थीं जिस त़रह़ चाहतीं सर्फ़ करतीं। जब मौलाना को किताबों की ख़रीदारी के लिये किसी ग़ैर मा'मूली (ज़ियादा) रक़म की ज़रूरत पड़ती तो वालिदए

1.....फ़ैज़ाने आ'ला ह़ज़रत, स. 645-646 माख़ूज़न।

माजिदा की ख़िदमत में दरख़्वास्त करते और अपनी ज़रूरत ज़ाहिर करते जब वोह इजाज़त देतीं और दरख़्वास्त मन्ज़ूर करतीं तो किताबें मंगवाते थे।[1]

उ़लमाए अहले सुन्नत رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہِم

सुवाल आ'ला ह़ज़रत رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ ने क़सीदा "चराग़े इन्स" किन की मद्ह़ में लिखा ?

जवाब ताजुल फ़ुहूल, मुह़िब्बुर्रसूल ह़ज़रते मौलाना शाह अ़ब्दुल क़ादिर बदायूनी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ की मद्ह़ व सिफ़त में जिस का तारीख़ी नाम "चराग़े इन्स" (1315 हिजरी) रखा इस का मत़्लअ़ येह है : "ऐ इमामुल हुदा मुह़िब्बे रसूल : दीन के मुक़्तदा मुह़िब्बे रसूल।"[2]

सुवाल ह़ज़रते मौलाना वसी अह़मद मुह़द्दिसे सूरती رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ किस ह़ालत में मौत आने की तमन्ना किया करते थे ?

जवाब ह़ज़रते मुह़द्दिसे सूरती رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ को फ़न्ने ह़दीस से ख़ुसूसी लगाव था ह़त्ता कि आप की ख़्वाहिश थी कि मुझे मौत भी ह़दीसे पाक में मश्ग़ूलिय्यत की ह़ालत में आए। आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ की ख़्वाहिश पूरी हुई और मौत के वक़्त ह़दीस शरीफ़ की मश्हूर किताब "**मिश्कातुल मसाबीह़**" आप के सीने पर थी। आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ ख़ित़्त़ए बर्रे सग़ीर के अकाबिर उ़लमा के उस्ताज़ और आ'ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ के हम अ़स्र थे।[3]

1.....ह़याते आ'ला ह़ज़रत, 1 / 107
2.....ह़याते आ'ला ह़ज़रत, 3 / 56
3 . . . التعلیق المجلی لمافی منیۃ المصلی، تعریف بالمحشی العلام، ص ۸ ماخوذا۔

सुवाल मुफ़्तिये आ'ज़मे हिन्द رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه का परेशान हालों की दस्त्गीरी और ख़ौफ़े ख़ुदा का कोई वाक़िआ़ बताइये ?

जवाब मुफ़्तिये आ'ज़मे हिन्द मौलाना मुस्त़फ़ा रज़ा ख़ान नूरी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه एक मरतबा रेल्वे स्टेशन जाने के लिये रिक्षा में तशरीफ़ फ़रमा हुए, इतने में एक शख़्स ने ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ की : हुज़ूर ! फ़ुलां परेशानी से दो चार हूं, ता'वीज़ मर्ह़मत फ़रमा दीजिये, किसी ने उस शख़्स से कहा : "गाड़ी का टाइम हो चुका है और तुम अभी ता'वीज़ के लिये बोल रहे हो ! गाड़ी छूट जाएगी !" इस पर हुज़ूर मुफ़्तिये आ'ज़मे हिन्द قُدِّسَ سِرُّهٗ ने बे क़रार हो कर फ़रमाया : "छूट जाने दो, दूसरी ट्रेन से चला जाऊंगा। कल क़ियामत के दिन अगर ख़ुदावन्दे करीम جَلَّ جَلَالُہٗ ने पूछ लिया कि तू ने मेरे फ़ुलां बन्दे की परेशानी में क्यूं मदद नहीं की ? तो मैं क्या जवाब दूंगा !" येह फ़रमा कर रिक्षा से सारा सामान उतरवा लिया।[1]

सुवाल सदरुश्शरीआ़ मुफ़्ती अमजद अ़ली आ'ज़मी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के दो अ़ज़ीम फ़िक़्ही ज़ख़ीरों के नाम बताइये।

जवाब (1) **बहारे शरीअ़त :** उर्दू ज़बान में 3 जिल्दों पर मुश्तमिल येह किताब फ़िक़्ही मसाइल के एन्साईक्लोपीडिया की ह़ैसिय्यत रखती है जिस में पैदाइश से मौत तक पेश आने वाले शरई मसाइल बयान किये गए हैं। बहारे शरीअ़त को अ़वामो ख़वास में बेह़द मक़्बूलिय्यत ह़ासिल है। (2) **फ़तावा अमजदिया :** 4 जिल्दों पर मुश्तमिल येह किताब सदरुश्शरीआ़ मुफ़्ती अमजद अ़ली आ'ज़मी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के फ़तावा जात का मजमूआ़ है।[2]

1....फ़ैज़ाने सुन्नत, स. 111-112, मुलख़्ख़सन।
2....सीरते सदरुश्शरीआ़, स. 109-121 मुलख़्ख़सन।

सुवाल मुफ़्ती अमजद अ़ली आ'ज़मी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه के कुछ असातिज़ा के नाम बताइये ?

जवाब (1) आ'ला ह़ज़रत मौलाना शाह अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه
(2) ह़ज़रते मौलाना शाह वसी अह़मद मुह़द्दिसे सूरती رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه
(3) ह़ज़रते अ़ल्लामा हिदायतुल्लाह ख़ान रामपूरी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه[1]

सुवाल "**सदरुल अफ़ाज़िल**" किन का लक़ब है नीज़ इन की मश्हूरे ज़माना तफ़्सीर का नाम बताइये ?

जवाब येह लक़ब मश्हूर मुफ़स्सिर ह़ज़रते मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه को मुजद्दिदे वक़्त, इमामे अह्ले सुन्नत, ह़ज़रते मौलाना शाह अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने अ़ता फ़रमाया था।[2] **सदरुल अफ़ाज़िल** की मश्हूरे ज़माना तफ़्सीर का नाम "**ख़ज़ाइनुल इरफ़ान**" है।

सुवाल ख़लीफ़ए आ'ला ह़ज़रत, सय्यिद नईमुद्दीन मुरादाबादी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने क़ियामे मुल्क में क्या किरदार अदा किया ?

जवाब (1) आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने 1924 ईसवी में मुरादाबाद (हिन्द) से माहनामा "**अस्सवादुल आ'ज़म**" जारी किया जिस में दो क़ौमी नज़रिये की ह़िमायत और क़ियामे मुल्क के लिये भरपूर मुहिम चलाई। (2) 1946 ईसवी में बनारस (हिन्द) में "ऑल इन्डिया सुन्नी कॉन्फ़रन्स" मुन्अ़क़िद हुई तो आप उस के नाज़िमे आ'ला थे, कॉन्फ़रन्स में तक़रीबन सात हज़ार उ़लमा व मशाइख़ और दो लाख से ज़ाइद ह़ाज़िरीन जम्अ़ हुए और मुत्तफ़िक़ा त़ौर पर मुत़ालबए मुल्क की क़रारदार मन्ज़ूर की गई। (3) मुख़्तलिफ़ सूबों के दौरे किये और वहां तक़रीर के ज़रीए़ नज़रियए मुल्क की

1.....सीरते सदरुश्शरीअ़ा, स. 165
2.....तज़्किरए उ़लमाए अह्ले सुन्नत, स. 253

अहम्मिय्यत को वाज़ेह किया। (4) क़ियामे मुल्क के बा'द शदीद अ़लालत के बा वुजूद आप ने इस्लामी दस्तूर तय्यार करना शुरूअ़ किया अभी चन्द दफ़्आ़त ही तय्यार की थीं कि आप ख़ालिक़े ह़क़ीक़ी से जा मिले।

सुवाल सदरुल अफ़ाज़िल رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के कसीरुत्तसानीफ़ शागिर्द और उन की चन्द किताबों के नाम बताइये।

जवाब सदरुल अफ़ाज़िल رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के कसीरुत्तसानीफ़ शागिर्द का नाम ह़कीमुल उम्मत, मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ है। आप की चन्द किताबों के नाम येह हैं: (1) तफ़्सीरे नईमी (ग्यारह जिल्दें) (2) नूरुल इरफ़ान फ़ी ह़ाशियतुल क़ुरआन (3) मिरआतुल मनाजीह़ (मिश्कातुल मसाबीह़ की उर्दू शर्ह़) (4) शाने ह़बीबुर्रह़मान मिन आयातिल क़ुरआन (5) इस्लामी ज़िन्दगी (6) इल्मुल क़ुरआन (क़ुरआनी इस्तिलाह़ात का मुह़क़्क़िक़ाना बयान), (7) फ़तावा नईमिय्या।[1]

सुवाल मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी को "**ह़कीमुल उम्मत**" का लक़ब कैसे मिला ?

जवाब 1957 ईसवी में आप رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने इमामे अह्ले सुन्नत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के शोहरए आफ़ाक़ तर्जमए क़ुरआन बनाम "**कन्ज़ुल ईमान**" पर ह़ाशिया या'नी मुख़्तसर तफ़्सीरी निकात तह़रीर फ़रमाए तो ह़ज़रते पीर सय्यिद मा'सूम शाह नौशाही क़ादिरी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللہِ الْقَوِی की तह़रीक पर जय्यिद उ़लमाए किराम ने मुत्तफ़िक़ा तौर पर "**ह़कीमुल उम्मत**" का लक़ब तजवीज़ फ़रमाया और हिन्दुस्तान के उ़लमाए अह्ले सुन्नत ने इसे तस्लीम किया।[2]

1.....फ़ैज़ाने मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी, स. 50 मुल्तक़तन।
2.....फ़ैज़ाने मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी, स. 57

सुवाल मुल्के अमीरे अह्ले सुन्नत के मुहद्दिसे आ'ज़म رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के शौके मुतालआ के बारे में बताइये ?

जवाब मुल्के अमीरे अह्ले सुन्नत के "मुहद्दिसे आ'ज़म" हज़रते मौलाना अबुल फ़ज़्ल सरदार अहमद क़ादिरी चिश्ती साबिरी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ को मुतालए का इतना शौक़ था कि मस्जिद में नमाज़े बा जमाअ़त में कुछ ताख़ीर होती तो किसी किताब का मुतालआ करना शुरूअ़ कर देते थे।(1)

सुवाल मौलाना सरदार अहमद क़ादिरी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की आ़जिज़ी की कोई मिसाल बताइये ?

जवाब एक मरतबा दो दीहाती आप के पास मस्अला पूछने के लिये हाज़िर हुए, आप उस वक़्त चारपाई पर जल्वा गर थे, उन्हों ने आप के इ़ल्मी मक़ाम का लिहाज़ करते हुए नीचे ज़मीन पर बैठना चाहा तो आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने (आ़जिज़ी करते हुए) उन दीहातियों को इसरार कर के न सिर्फ़ चारपाई पर बिठाया बल्कि अपनी चारपाई के सिरहाने की त़रफ़ बिठाया। हुक्म की ता'मील के लिये उन्हें भी आप के बराबर बैठना पड़ा और आप ने उन के मस्अले का जवाब मर्हमत फ़रमाया।(2)

सुवाल मुल्के अमीरे अह्ले सुन्नत के उन मश्हूर आ़लिमे दीन का नाम बताइये जिन्हों ने बहुत सारी तसानीफ़ यादगार छोड़ी हैं ?

जवाब मुल्के अमीरे अह्ले सुन्नत के मायानाज़ आ़लिमे दीन हज़रते मौलाना फ़ैज़ अहमद ओवैसी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ कसीरुत्तसानीफ़ बुज़ुर्ग थे, आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने अपने विसाल तक छोटी बड़ी साढ़े तीन हज़ार (3500) से ज़ाइद किताबें लिखीं। आप का विसाल 15 रमज़ानुल मुबारक 1431 हिजरी / 25 अगस्त 2010 ईसवी में हुवा।

1.....हयाते मुहद्दिसे आ'ज़म, स. 34
2.....हयाते मुहद्दिसे आ'ज़म, स. 193

अमीरे अहले सुन्नत دامت برکاتہم العالیہ

सुवाल अमीरे अहले सुन्नत دامت برکاتہم العالیہ के दादा जान के बारे में कुछ बताइये ?

जवाब आप के दादा जान हज़रत अ़ब्दुर्रहीम علیہ رحمۃ اللہ الکریم की नेक नामी और पारसाई पूरे "कुत्याना" (जूनागढ़ हिन्द का एक गाऊं) में मश्हूर थी।[1]

सुवाल अमीरे अहले सुन्नत دامت برکاتہم العالیہ के वालिद साहिब हाजी अ़ब्दुर्रहमान क़ादिरी علیہ رحمۃ اللہ القوی जब क़सीदए ग़ौसिय्या पढ़ते थे तो इस की क्या बरकत ज़ाहिर होती थी ?

जवाब अमीरे अहले सुन्नत مدظلہ العالی के ख़ालूजान बताते हैं : "मैं ने खुद अपनी आंखों से देखा है कि जब कभी चारपाई पर बैठ कर आप के वालिद साहिब رحمۃ اللہ تعالی علیہ "**क़सीदए ग़ौसिय्या**" पढ़ते तो उन की चारपाई ज़मीन से बुलन्द हो जाती थी।"[2]

सुवाल अमीरे अहले सुन्नत دامت برکاتہم العالیہ के वालिदे मोहतरम का विसाल कैसे हुवा ?

जवाब सिने 1370 हिजरी के हज के अय्याम में मिना में सख़्त लू चली जिस की वज्ह से कई हुज्जाज फ़ौत हो गए, उन में हाजी अ़ब्दुर्रहमान علیہ رحمۃ اللہ المنان भी शामिल थे जो मुख़्तसर अ़लालत के बा'द इस दुन्या से रुख़्सत हो गए।[3]

सुवाल बड़े भाई "अ़ब्दुल ग़नी साहिब" की वफ़ात के कितने अ़र्से के बा'द अमीरे अहले सुन्नत دامت برکاتہم العالیہ की वालिदए माजिदा भी इन्तिक़ाल फ़रमा गईं ?

1.....तआ़रुफ़े अमीरे अहले सुन्नत, स. 10

2.....तआ़रुफ़े अमीरे अहले सुन्नत, स. 11

3.....तआ़रुफ़े अमीरे अहले सुन्नत, स. 12

जवाब भाई की वफ़ात के थोड़े अ़र्से बा'द 17 सफ़रुल मुज़फ़्फ़र सिने 1398 हिजरी में "मादरे मुशिफ़का" (رَحمۃُاللہِ تعالٰی علَیھا) भी इन्तिक़ाल फ़रमा गईं।[1]

सुवाल जिस मक़ाम पर अमीरे अहले सुन्नत دامت برکاتھم العالیہ की वालिदा की रूह़ क़ब्ज़ हुई उस जगह क्या ख़ास बात रूनुमा हुई ?

जवाब जिस हिस्सए ज़मीन पर रूह़ क़ब्ज़ हुई उस में कई रोज़ तक ख़ुश्बू आती रही और ख़ुसूसन रात के उस हिस्से में जिस में इन्तिक़ाल हुवा था, त़रह़ त़रह़ की ख़ुश्बूओं की लपटें आती रहीं।[2]

सुवाल अमीरे अहले सुन्नत دامت برکاتھم العالیہ ने पहला रिसाला कौन सा लिखा ?

जवाब आप ने अपना पहला रिसाला आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत رَحْمَۃُاللہِ تَعالٰی عَلَیْہ से मुतअ़ल्लिक़ लिखा जिस का नाम "**तज़्किरए इमाम अह़मद रज़ा**" है।[3]

सुवाल अमीरे अहले सुन्नत دامت برکاتھم العالیہ ने पहला सफ़रे ह़ज किस सिने हिजरी में फ़रमाया ?

जवाब आप ने पहला सफ़रे ह़ज सिने 1400 हिजरी में फ़रमाया।[4]

सुवाल अमीरे अहले सुन्नत دامت برکاتھم العالیہ के घर में कितने पलंग और कितने गदेले हैं ?

जवाब एक भी नहीं क्यूंकि आप دامت برکاتھم العالیہ इत्तिबाए़ सुन्नत की निय्यत से कभी फ़र्श पर लैटते हैं तो कभी चटाई पर आराम फ़रमाते हैं।[5]

सुवाल दीनी किताब पर करेक्शन पेन (Correction pen या'नी वाइटो) रखा देख कर अमीरे अहले सुन्नत مُدَّظِلُّہُ الْعَالِی ने क्या फ़रमाया ?

1.....तआ़रुफ़े अमीरे अहले सुन्नत, स. 15
2.....तआ़रुफ़े अमीरे अहले सुन्नत, स. 16
3.....तज़्किरए इमाम अह़मद रज़ा।
4.....तआ़रुफ़े अमीरे अहले सुन्नत, स. 31
5.....तआ़रुफ़े अमीरे अहले सुन्नत, स. 38

जवाब आप ने बढ़ कर वाइटो को किताब से हटाते हुए यूं इरशाद फ़रमाया : दीनी किताब पर किसी शै का रखना अदब के ख़िलाफ़ है, इस का ख़याल रखना सआदत मन्दी है, वरना जो इस त़रफ़ तवज्जोह नहीं देता है उस की बे एह़तियात़ियां बढ़ जाती हैं।(1)

सुवाल आ'ला ह़ज़रत رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के "अक़ूल" (या'नी फ़रमान) के बारे में अमीरे अह्ले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ क्या फ़रमाते हैं ?

जवाब आप फ़रमाते हैं : आ'ला ह़ज़रत رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के अक़ूल (फ़रमान) पर हमारी उ़क़ूल (अ़क़्लें) क़ुरबान। आ'ला ह़ज़रत का "अक़ूल" हमें क़बूल।(2)

सुवाल ह़ज़रते मौलाना अ़ब्दुस्सलाम क़ादिरी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने किस तारीख़ को, और किस मक़ाम पर अमीरे अह्ले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ को अपनी ख़िलाफ़त और क़ुत़्बे मदीना की वकालत दी थी ?

जवाब ग्यारह रबीउ़स्सानी सिने 1399 हिजरी, 10 मार्च सिने 1979 ईसवी को "कोलम्बो (सी लंका)" में।(3)

सुवाल अमीरे अह्ले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ के ज़ेरे मुत़ालआ़ ज़ियादा तर कौन सी कुतुब रहती हैं ?

जवाब बहारे शरीअ़त, फ़तावा रज़विय्या और इह़याउल उ़लूम।(4)

ज़िक्रो अज़्कार

सुवाल अस्माए ह़ुस्ना कितने हैं ?

1.....तज़्किरए अमीरे अह्ले सुन्नत, क़िस्त़, 4 स. 34
2.....तआ़रुफ़े अमीरे अह्ले सुन्नत, स. 63
3.....फ़ैज़ाने मौलाना मुह़म्मद अ़ब्दुस्सलाम क़ादिरी, स. 65
4.....तआ़रुफ़े अमीरे अह्ले सुन्नत, स. 18

जवाब मश्हूर अस्माए हुस्ना 99 हैं ।(1)

सुवाल क्या जानवर और दरख़्तों के पत्ते भी तस्बीह़ करते हैं ?

जवाब जी हां ! अहले कश्फ़ फ़रमाते हैं : "तमाम जानवर तस्बीह़ करते हैं, जब तस्बीह़ छोड़ देते हैं उसी वक़्त उन को मौत आ जाती है । हर पत्ता तस्बीह़ करता है, जिस वक़्त तस्बीह़ से ग़फ़्लत करता है, उसी वक़्त दरख़्त से जुदा हो कर गिर पड़ता है ।"(2)

सुवाल ह़ज़रते जुनैद बग़दादी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الهَادِى से जब पूछा गया कि "इस क़दर कमाल के बा वुजूद आप ने हाथ में तस्बीह़ पकड़ रखी है ?" तो आप ने क्या जवाब दिया ?

जवाब आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने फ़रमाया : जिस रास्ते (या'नी तस्बीह़) के ज़रीए मैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तक पहुंचा हूं मैं उसे नहीं छोड़ सकता ।(3)

सुवाल अंगुश्ते शहादत को अ़रबी में اَلْمُسَبِّحَةُ (या'नी तस्बीह़ वाली उंगली) क्यूं कहते हैं ?

जवाब जब ह़ज़रते सय्यिदुना आदम عَلَيْهِ السَّلَام की ख़्वाहिश पर नूरे मुह़म्मदी صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को उन की अगुंश्ते शहादत में मुन्तक़िल किया गया तो फ़िरिश्तों के तस्बीह़ करने पर वोह मुक़द्दस नूर भी तस्बीह़ करता था, इसी लिये शहादत की उंगली को اَلْمُسَبِّحَةُ कहते हैं ।(4)

---

1 ...بخاری، کتاب الشروط، باب مایجوز من الاشتراط۔۔۔الخ، ۲/۲۲۹، حدیث:۲۷۳۶۔

2 .....मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत, स. 531

3 ...مراۃ الجنان، السنۃ ثمان وتسعین ومائتین، ۲/۱۷۳۔

4 ...الروض الفائق، المجلس الثالث والاربعون فی مولد رسول اللہ، ص ۲۴۱۔

सुवाल जन्नत में घर दिलाने वाली चार चीज़ें कौन सी हैं ?

जवाब ह़दीसे पाक में है : चार चीज़ें जिस शख़्स में होंगी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस के लिये जन्नत में एक घर बनाएगा : (1) वोह जिस का मुह़ाफ़िज़ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰه हो (2) वोह कि जब कुछ ह़ासिल हो तो اَلْحَمْدُ لِلّٰه कहे (3) जब कोई गुनाह हो जाए तो اَسْتَغْفِرُ اللّٰه कहे और (4) जब उसे कोई मुसीबत पहुंचे तो اِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّآ اِلَيْهِ رٰجِعُوْنَ पढ़े।[1]

सुवाल हु़ज़ूर नबिय्ये मुकर्रम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अक्सर कौन सी दुआ़ मांगा करते थे ?

जवाब प्यारे आक़ा, मदीने वाले मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अक्सर येह दुआ़ मांगा करते थे : يَا مُقَلِّبَ الْقُلُوْبِ ثَبِّتْ قَلْبِيْ عَلٰى دِيْنِكَ (या'नी ऐ दिलों को फेरने वाले ! मेरे दिल को अपने दीन पर साबित रख।)[2]

सुवाल नज़रे बद से ह़िफ़ाज़त के लिये और नज़र लगने पर क्या पढ़ना चाहिये ?

जवाब (1) एक साह़िब को नज़र लग गई तो हु़ज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन के लिये येह दुआ़ फ़रमाई : اَللّٰهُمَّ اَذْهِبْ عَنْهُ حَرَّهَا وَبَرْدَهَا وَوَصَبَهَا **तर्जमा** : ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! इस (नज़रे बद) की गर्मी, सर्दी और मुसीबत इस से दूर कर दे।[3]

(2) तफ़्सीरे कबीर जिल्द 10, सफ़ह़ा 618 पर ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى से मन्क़ूल है : जिस को नज़र लगे उस पर येह आयत पढ़ कर दम कर दी जाए :

﴿وَاِنْ يَّكَادُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَيُزْلِقُوْنَكَ بِاَبْصَارِهِمْ لَمَّا سَمِعُوا الذِّكْرَ وَيَقُوْلُوْنَ اِنَّهٗ لَمَجْنُوْنٌ ﴾ (پ۲۹، القلم:۵۱)

---

1 . . . مسند الفردوس، ۱/۲۱۸، حدیث:۱۵۲۶۔

2 . . . ترمذی، کتاب الدعوات، باب ۸۹، ۵/۳۰۹، حدیث:۳۵۳۳۔

3 . . . مسند امام احمد، مسند المکیین ۵/۳۲۷، حدیث: حدیث:۱۵۷۰۰۔

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : (और ज़रूर काफ़िर तो ऐसे मा'लूम होते हैं कि गोया अपनी बद नज़र लगा कर तुम्हें गिरा देंगे जब कुरआन सुनते हैं और कहते हैं येह ज़रूर अक़्ल से दूर हैं) हकीमुल उम्मत मुफ़्ती अहमद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْمَنَّان फ़रमाते हैं : येह आयत नज़रे बद से बचने के लिये इक्सीर है।(1)

सुवाल ज़बान की लुक्नत दूर करने की दुआ सुनाइये ?

जवाब जन्नती ज़ेवर, सफ़हा 606 पर ज़बान की लुक्नत दूर करने के लिये येह दुआ मज़कूर है :

﴿رَبِّ اشْرَحْ لِي صَدْرِي ﴿٢٥﴾ وَيَسِّرْ لِي أَمْرِي ﴿٢٦﴾ وَاحْلُلْ عُقْدَةً مِّن لِّسَانِي ﴿٢٧﴾ يَفْقَهُوا قَوْلِي ﴿٢٨﴾﴾ (پ١٦، طٰہٰ:٢٥تا٢٨)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ मेरे रब ! मेरे लिये मेरा सीना खोल दे और मेरे लिये मेरा काम आसान कर और मेरी ज़बान की गिरह खोल दे कि वोह मेरी बात समझें।)

सुवाल अदाए क़र्ज़ की दुआ कौन सी है ?

जवाब अगर पहाड़ के बराबर भी क़र्ज़ हो (إِنْ شَآءَ الله عَزَّوَجَلَّ) येह दुआ पढ़ने से उतर जाएगा : اَللّٰهُمَّ اكْفِنِىْ بِحَلَالِكَ عَنْ حَرَامِكَ وَاَغْنِنِىْ بِفَضْلِكَ عَمَّنْ سِوَاكَ۔(2)

सुवाल मुसीबत ज़दा को देख कर पढ़ी जाने वाली दुआ कब आहिस्ता और कब बुलन्द आवाज़ से पढ़नी चाहिये ?

जवाब दुन्यावी मुसीबत वाले को देख कर आहिस्ता पढ़े, फ़ासिक़ व बदकार को देख कर आवाज़ से पढ़े ताकि उसे इब्रत हो।(3) मुसीबत ज़दा को देख कर पढ़ी जाने वाली दुआ येह है :

1.....नूरुल इरफ़ान, स. 971

2...ترمذی، کتاب الدعوات، باب ١١٠، ٣٢٩/٥، حدیث: ٣٥٧٤۔

3.....मिरआतुल मनाजीह, 2 / 389

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ عَافَانِیْ مِمَّا ابْتَلَاكَ بِهٖ، وَفَضَّلَنِیْ عَلٰی كَثِیْرٍ مِّمَّنْ خَلَقَ تَفْضِیْلًا۔ (1)

सुवाल हदीसे पाक में लाहौल शरीफ़ को कहां का ख़ज़ाना फ़रमाया गया है ?

जवाब हदीसे पाक में है : "لَاحَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ" जन्नत के ख़ज़ानों में से एक ख़ज़ाना है।(2)

सुवाल ऊंट अपने बिलबिलाने में क्या कहता है ?

जवाब वोह अपने बिलबिलाने में येह कहता है : حَسْبِیَ اللّٰهُ وَكَفٰی بِاللّٰهِ وَكِیْلًا या'नी मुझे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ काफ़ी और वोही मेरा कारसाज़ है।(3)

दुरूदे पाक

सुवाल **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के दुरूद भेजने से क्या मुराद है ?

जवाब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के दुरूद भेजने से मुराद रह़मत नाज़िल फ़रमाना है।(4)

सुवाल फ़िरिश्तों और हमारे दुरूद भेजने से क्या मुराद है ?

जवाब फ़िरिश्तों और हमारे दुरूद भेजने का मत़लब दुआए रह़मत करना है।(5)

सुवाल मजलिस में ज़िक्रे रसूल صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हो तो दुरूद का क्या हुक्म है ?

जवाब हर जल्सए ज़िक्र में दुरूद पढ़ना वाजिब है ख़्वाह खुद नामे अक़्दस ले या किसी से सुने और अगर एक मजलिस में सौ बार

1 ... ترمذی، کتاب الدعوات باب مایقول اذارای مبتلی، ۵/۲۷۲، حدیث: ۳۴۴۲۔
2 ... بخاری، کتاب الدعوات، باب الدعاء اذا علا عقبة، ۴/۲۱۲، حدیث: ۶۳۸۴۔
3 ... الروض الفائق، المجلس السابع والاربعون فی مناقب الصالحین، ص ۲۷۲۔
4 ... شرح السنة، کتاب الصلاة، باب الصلاة علی النبی، ۲/۲۸۰۔
5 ... شرح السنة، کتاب الصلاة، باب الصلاة علی النبی، ۲/۲۸۰۔

ज़िक्र आए तो हर बार दुरूद शरीफ़ पढ़ना चाहिये, अगर नामे अक़्दस लिया या सुना और उस वक़्त दुरूद शरीफ़ न पढ़ा तो इस के बदले का किसी दूसरे वक़्त में पढ़ ले।(1)

सुवाल दुआ़ कब ज़मीनो आस्मान के दरमियान मुअ़ल्लक़ रहती है ?

जवाब जब तक ताजदारे दो जहान, रह़मते आ़लमिय्यान صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर दुरूद न पढ़ा जाए दुआ़ ज़मीनो आस्मान के दरमियान मुअ़ल्लक़ (लटकी) रहती है।(2)

सुवाल दिन और रात में तीन तीन मरतबा दुरूदे पाक पढ़ने की क्या फ़ज़ीलत है ?

जवाब ह़दीसे पाक है : जिस ने मेरी त़रफ़ शौक़ व मह़ब्बत की वज्ह से दिन और रात में तीन तीन मरतबा दुरूदे पाक पढ़ा **अल्लाह** तआ़ला पर ह़क़ है कि वोह उस के उस दिन और उस रात के गुनाह बख़्श दे।"(3)

सुवाल इमाम ज़ैनुल आ़बिदीन رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने किस चीज़ को अह्ले सुन्नत की अ़लामत क़रार दिया ?

जवाब इमाम ज़ैनुल आ़बिदीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबुल ह़सन अ़ली बिन ह़ुसैन رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا ने इरशाद फ़रमाया : रसूले पाक, साहि़बे लौलाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर कसरत से दुरूद पढ़ना अह्ले सुन्नत की अ़लामत है।(4)

सुवाल रोज़े जुमुआ़ 80 बार दुरूद शरीफ़ पढ़ने की क्या फ़ज़ीलत है ?

जवाब जो शख़्स हु़ज़ूरे अकरम, शफ़ीए़ आ'ज़म صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर

---

1 ...درمختار وردالمحتار، کتاب الصلاۃ، مطلب فی وجوب الصلاۃ علیه۔۔۔الخ، ۲/ ۲۷۸۔

2 ...ترمذی، کتاب الوتر، باب ماجاء فی فضل الصلاۃ علی النبی، ۲/ ۲۸، حدیث: ۴۸۶۔

3 ...معجم کبیر، ۱۸/ ۳۶۲، حدیث: ۹۲۸۔

4 ...القول البدیع، الباب الاول، قول علی زین العابدین علامۃ۔۔۔الخ، ص ۱۳۱، رقم: ۵۔

जुमुआ के दिन 80 बार दुरूद शरीफ़ पढ़ता है उस के 80 बरस के गुनाह मुआफ़ हो जाते हैं ।(1)

सुवाल किस दुरूद शरीफ़ के पढ़ने से मौत और क़ब्र में दाख़िल होते वक़्त दीदारे मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बिशारत है ?

जवाब اَللّٰھُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ وَبَارِكْ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدِ ٍالنَّبِيِّ الْاُمِّيِّ الْحَبِيْبِ الْعَالِي الْقَدْرِ الْعَظِيْمِ الْجَاهِ وَعَلٰى اٰلِهٖ وَصَحْبِهٖ وَسَلِّمْ۔(2)

सुवाल रोज़ाना कितनी मरतबा दुरूदे पाक पढ़ने से मोहताजी दूर होती है ?

जवाब रहमते आलमिय्यान, मक्की मदनी सुल्तान صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जो मुझ पर रोज़ाना 500 बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लिया करेगा वोह कभी मोहताज न होगा ।(3)

सुवाल "दुरूदे शफ़ाअत" कौन सा है ?

जवाब प्यारे आक़ा, मदीने वाले मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया कि जिस ने येह कहा :

"اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّاَنْزِلْهُ الْمَقْعَدَ الْمُقَرَّبَ عِنْدَكَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ" उस के लिये मेरी शफ़ाअत वाजिब हो गई ।(4)

सुवाल क्या मुंह की बदबू दूर करने का भी कोई वज़ीफ़ा है ?

जवाब जी हां ! येह दुरूदे पाक "اَللّٰھُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ عَلَى النَّبِيِّ الطَّاهِرِ" मौक़अ ब मौक़अ एक ही सांस में 11 मरतबा पढ़ लीजिये, اِنْ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ मुंह

---

1 ...جامع صغیر، ص ۳۲۰، حدیث: ۵۱۹۱۔

2 ...افضل الصلوات علی سید السادات، الصلاۃ السادسۃ والخمسون، ص ۱۵۱ بتغییر قلیل۔

3 ...مستطرف، الباب الرابع والثمانون فیما جاء فی فضل۔۔۔الخ، ۲/۵۰۸۔

4 ...معجم کبیر، ۵/۲۵، حدیث: ۴۴۸۰۔

की बदबू ज़ाइल (या'नी दूर) हो जाएगी।[1]

सुवाल जब कान बजने लगें (या'नी उन में सन्सनाहट या झन्झनाहट हो) तो क्या करना चाहिये ?

जवाब हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जब तुम में से किसी का कान बजने लगे तो वोह मुझ पर दुरूद शरीफ़ पढ़े और येह कहे : ذَكَرَ اللّٰهُ بِخَيْرٍ مَّنْ ذَكَرَنِى या'नी **अल्लाह** तआ़ला उन्हें भलाई के साथ याद करे जिन्हों ने मुझे (भलाई के साथ) याद फ़रमाया[2]।[3]

मुक़द्दस मक़ामात

सुवाल ख़ानए का'बा कितनी बार ता'मीर किया गया ?

जवाब शारेहे बुख़ारी अ़ल्लामा अह़मद बिन मुह़म्मद क़स्त़लानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِى फ़रमाते हैं : ख़ानए का'बा की ता'मीर दस मरतबा की गई।[4]

सुवाल वोह कौन सा पथ्थर है जिस का ज़िक्र क़ुरआने मजीद में दो जगह फ़रमाया गया है ?

जवाब ता'मीरे ख़ानए का'बा के वक़्त जब दीवारें सर से ऊंची हो गईं तो ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम عَلَیْهِ السَّلَام ने एक पथ्थर पर खड़े हो कर दीवारों को मुकम्मल फ़रमाया, आप का मो'जिज़ा था कि पथ्थर

1.....फ़ैज़ाने सुन्नत, स. 297

2.....**वज़ाहत व शर्ह़ :** कान बजने की वज्ह येह है कि इस वक़्त हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अपने उम्मती को आ़लमे अरवाह़ में मलाए आ'ला में भलाई के साथ याद फ़रमाते हैं, इसी लिये इस वक़्त दुरूद पढ़ने का इरशाद फ़रमाया।

(حاشية على القول البديع، الباب الخامس فى الصلاة ـــ الخ، الصلاة عليه عند طين الاذن، ص ٤٢٢)

3...معجم اوسط، ٦/٤٠٥، حديث: ٩٢٢٢۔

4...ارشاد السارى، كتاب الحج، باب فضل مكة وبنيانها، ١٠٣/٤، تحت الحديث: ١٥٨٢۔

मोम की तरह नर्म हो गया और क़दमों के निशान इस पर नक़्श हो गए और यूं इस पथ्थर की फ़ज़ीलत व अ़ज़मत को चार चांद लग गए कि **अल्लाह** तआ़ला ने कुरआने करीम में दो जगह इस की अ़ज़मत का खुत्बा इरशाद फ़रमाया, इसे मक़ामे इब्राहीम कहते हैं।[1]

सुवाल किस ख़ातून ने रह़मते आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मकाने आ़लीशान के पास मस्जिद बनवाई थी ?

जवाब ख़लीफ़ा हारून रशीद की वालिदा ने।[2]

सुवाल सय्यिदतुना ख़दीजतुल कुब्रा رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهَا का मकाने रह़मत निशान कहां वाक़ेअ़ है ?

जवाब सद करोड़ अफ़्सोस ! अब इस के निशान तक मिटा दिये गए हैं और लोगों के चलने के लिये यहां हमवार फ़र्श बना दिया गया है। मरवह की पहाड़ी के क़रीब वाक़ेअ़ "बाबुल मरवह" से निकल कर बाईं तरफ़ (Left Side)।[3]

सुवाल ग़ारे ह़िरा अफ़्ज़ल है या ग़ारे सौर ?

जवाब "ग़ारे ह़िरा" ग़ारे सौर से अफ़्ज़ल है क्यूंकि ग़ारे सौर ने तीन दिन तक सरकारे दो आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के क़दम चूमे जब कि ग़ारे ह़िरा सुल्ताने दो जहां صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सोह़बते बा बरकत से ज़ियादा अ़र्सा मुशर्रफ़ हुवा।[4]

सुवाल क़ाबील ने सय्यिदुना हाबील رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه को कहां शहीद किया था ?

जवाब जबले सौर पर शहीद किया।[5]

1.....ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, पारह 1, अल बक़रह, तह़तुल आयत : 125 स. 42, पारह 4, आले इमरान, तह़तुल आयत : 97, स. 126

2...السيرة النبوية لابن كثير، باب مولد رسول الله صلى الله عليه وسلم، ١/٢٠٠-

3.....आ़शिक़ाने रसूल की 130 ह़िकायात, स. 240

4.....आ़शिक़ाने रसूल की 130 ह़िकायात, स. 242

5...تفسير قرطبى، پ٦، المائدة، تحت الآية: ٣٠، ٣/٤٦-

सुवाल महज़् ज़ियारते रौज़ए अक़्दस की निय्यत से सफ़रे मदीना करने की क्या फ़ज़ीलत है ?

जवाब हुज़ूरे अकरम, शफ़ीए आ'ज़म صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जो शख़्स बिलक़स्द मेरी ज़ियारत को आया वोह क़ियामत के दिन मेरी मुहाफ़ज़त में रहेगा।[1]

सुवाल दुन्या का सब से अफ़्ज़ल क़ब्रिस्तान कौन सा है ?

जवाब मदीनए मुनव्वरा का क़ब्रिस्तान "जन्नतुल बक़ीअ़" येह मक्कए मुकर्रमा के क़ब्रिस्तान "जन्नतुल मा'ला" से भी अफ़्ज़ल है क्यूं कि यहां सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان के मज़ारात ज़ियादा हैं या इस लिये अफ़्ज़ल है कि येह हुज़ूर इमामुल अम्बिया صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के रौज़ए अन्वर से क़रीब है।[2]

सुवाल जन्नतुल बक़ीअ़ में कितने सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان आराम फ़रमा हैं ?

जवाब तक़रीबन दस हज़ार सहाबए किराम (رِضْوَانُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن)[3]

सुवाल मक्कए मुकर्रमा के "महल्ला मस्फ़ला" को तारीख़ी हैसिय्यत क्यूं हासिल है ?

जवाब क्यूंकि हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम ख़लीलुल्लाह عَلَيْهِ السَّلَام, हज़राते सिद्दीक़ व फ़ारूक़ व हम्ज़ा (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُم) इसी महल्लए मुबारका में रहा करते थे।[4]

सुवाल "ग़ारे मुर्सलात" की क्या ख़ुसूसिय्यत है ?

जवाब येह वोह ग़ार है जिस में प्यारे आक़ा, मदीने वाले मुस्तफ़ा

---

1 ...شعب الایمان، باب فی المناسک، فضل الحج والعمرۃ، ۳/۴۸۸، حدیث: ۴۱۵۲۔

2 ...مرقاۃ المفاتیح، کتاب المناسک، باب حرم المدینۃ حرسہا اللہ تعالی، ۵/۶۳۰، تحت الحدیث: ۲۷۵۰۔

3 ...شرح المواہب، المقصد العاشر، الفصل الثانی فی زیارۃ قبرہ۔۔۔الخ، ۱۲/۲۶۲ ماخوذا۔

4 .....आ़शिक़ाने रसूल की 130 हिकायात, स. 243

صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का सरे मुबारक ग़ार के ऊपर के पथ्थर से मस (Touch) हुवा तो वोह पथ्थर नर्म हो गया और वहां सरे पाक का निशान बन गया।[1]

सुवाल "उस्तुवानए आ़इशा" के पास नमाज़ पढ़ने के मुतअ़ल्लिक़ ह़दीस में क्या फ़रमाया गया ?

जवाब हुज़ूर ताजदारे ख़त्मे नुबुव्वत صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : एक जगह (या'नी उस्तुवानए आ़इशा) बहुत ज़ियादा बरकत वाली है, अगर लोगों को इ़ल्म हो जाए तो उन्हें वहां नमाज़ पढ़ने के लिये हुजूम की वज्ह से कुरआ़ डालना पड़े।[2]

मुतबर्रक रातें और अय्याम

सुवाल सब से अफ्ज़ल रात कौन सी है ?

जवाब सब से अफ्ज़ल रात हुज़ूर सरवरे दो जहां صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की विलादते बा सआ़दत की रात है। हज़रते सय्यिदुना शैख़ अ़ब्दुल ह़क़ मुहद्दिसे देहलवी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : "बेशक सरवरे आ़लम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की शबे विलादत शबे क़द्र से भी अफ्ज़ल है क्यूंकि शबे विलादत सरकारे मदीना صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के इस दुन्या में जल्वा गर होने की रात है जब कि लैलतुल क़द्र सरकार صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को अ़ताकर्दा शब है और जो रात ज़ुहूरे ज़ाते सरवरे काइनात صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की वज्ह से मुशर्रफ़ हो वोह उस रात से ज़ियादा शरफ़ व इ़ज़्ज़त वाली है जो मलाइका के नुज़ूल की बिना पर मुशर्रफ़ है।[3]

1.....आ़शिक़ाने रसूल की 130 हिकायात, स. 237

2...وفاء الوفا، الفصل السابع فی اساطین المسجد۔۔۔الخ، اسطوان القرعة، ۱/۴۴۰۔

3...ماثبت بالسنة، الباب الاول فی مولدہ صلی اللہ علیہ وسلم، ص ۱۰۰۔

सुवाल कौन सी मह्फ़िल की बरकत साल भर तक घर में रहती है ?

जवाब तफ़्सीरे रूहुल बयान में है कि मह्फ़िले मीलाद शरीफ़ की बरकत साल भर तक घर में रहती है।(1)

सुवाल हुज़ूर ताजदारे अम्बिया صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की विलादत की रात खुशी मनाने वालों को क्या जज़ा दी जाएगी ?

जवाब हज़रते सय्यिदुना शैख़ अ़ब्दुल ह़क़ मुह़द्दिसे देहलवी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के ह़बीब, ह़बीबे लबीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की विलादत की रात खुशी मनाने वालों की जज़ा येह है कि अल्लाह तआ़ला उन्हें अपने फ़ज़्लो करम से जन्नातुन्नईम में दाख़िल फ़रमाएगा।(2)

सुवाल रमज़ान के रोज़े फ़र्ज़ होने से पहले इस्लाम में किस दिन का रोज़ा फ़र्ज़ था।

जवाब इस्लाम में पहले आ़शूरा या'नी 10 मुह़र्रमुल ह़राम का रोज़ा फ़र्ज़ था फिर रमज़ान शरीफ़ के रोज़ों से इस रोज़े की फ़रज़िय्यत मन्सूख़ हो गई।(3)

सुवाल रमज़ानुल मुबारक के बा'द किस महीने का रोज़ा सब से अफ़्ज़ल है ?

जवाब हुज़ूर सरवरे अम्बिया, मह्बूबे किब्रिया صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : रमज़ान के बा'द मुह़र्रम का रोज़ा अफ़्ज़ल है और फ़र्ज़ नमाज़ के बा'द सलातुल्लैल या'नी रात के नवाफ़िल अफ़्ज़ल हैं।(4)

---

1 ...روح البیان، پ ۲۶، الفتح، تحت الآیۃ: ۲۹، ۹/ ۵۷۔

2 ...ماثبت بالسنۃ، الباب الاول فی مولدہ صلی اللّٰہ علیہ وسلم، ص ۱۰۲۔

3 .....मिरआतुल मनाजीह़, 3 / 180

4 ...مسلم، کتاب الصیام، باب فضل صوم المحرم، ص ۴۵۶، حدیث: ۲۷۵۵۔

सुवाल शबे मे'राज में नेक अ़मल करने वालों को कितना सवाब मिलता है ?

जवाब रजब की सत्ताईसवीं रात को नेक अ़मल करने वाले को सौ बरस की नेकियों का सवाब मिलता है ।(1)

सुवाल हुज़ूर ताजदारे रिसालत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को किस दिन मबऊ़स फ़रमाया गया ?

जवाब हुज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : रजब में एक दिन और रात है जो उस दिन रोज़ा रखे और रात को क़ियाम (या'नी इ़बादत) करे तो गोया उस ने सौ साल के रोज़े रखे और येह रजब की सत्ताईस तारीख़ है । इसी दिन (ह़ज़रत) मुह़म्मद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मबऊ़स फ़रमाया ।(2)

सुवाल शबे बराअत में इ़बादत करने की क्या फ़ज़ीलत है ?

जवाब जो इस रात में इ़बादत करते हैं उन को अ़ज़ाबे इलाही से छुटकारा या'नी रिहाई मिलती है, अ़रबी में बराअत के मा'ना रिहाई और छुटकारा हैं ।(3)

सुवाल कौन सी पांच रातों में शब बेदारी करने पर जन्नत वाजिब कर दी जाती है ।

जवाब (1) ज़ुल हि़ज्जा शरीफ़ की आठवीं (2) नवीं और (3) दसवीं रात (4) ई़दुल फ़ित्र की रात (5) शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म की पन्दरहवीं रात (या'नी शबे बराअत) ।(4)

---

1 ...شعب الایمان، باب فی الصیام، تخصیص شهر رجب بالذکر، ۳/ ۳۷۴، حدیث: ۳۸۱۲۔

2 ...شعب الایمان، باب فی الصیام، تخصیص شهر رجب بالذکر، ۳/ ۳۷۴، حدیث: ۳۸۱۱۔

3 .....इस्लामी ज़िन्दगी, स. 75

4 ...مسند الفردوس، ۳/ ۲۲۰، حدیث: ۵۹۳۷۔

الترغیب والترهیب، کتاب العیدین والاضحیه، الترغیب فی احیاء لیلتی العیدین، ۳/ ۹۸، حدیث: ۲۔

सुवाल "लैलतुल जाइज़ा" किस रात को कहा जाता है ?

जवाब ईदुल फ़ित्र की रात को "लैलतुल जाइज़ा या'नी इन्आ़म वाली रात" कहा जाता है।(1)

सुवाल शबे क़द्र को "बरकत वाली रात" क्यूं कहा जाता है ?

जवाब इस लिये कि इस में क़ुरआने पाक नाज़िल हुवा और हमेशा इस शब में ख़ैरो बरकत नाज़िल होती है और दुआएं (ख़ुसूसिय्यत के साथ) क़बूल की जाती हैं।(2)

सुवाल फ़िरिश्ते शबे क़द्र में किन मुसलमानों को सलाम करते हैं ?

जवाब हर उस मर्द व औ़रत को सलाम करते हैं जो इस रात इ़बादत में मश्ग़ूल हो।(3)

दीने इस्लाम

सुवाल दीने ह़क़ की पहचान बयान कीजिये ?

जवाब सच्चे दीन की पहचान येह है कि वोह सलफ़ सालिह़ीन का दीन हो, येह ह़ज़रात हिदायत की दलील हैं, **अल्लाह** तआ़ला ने ह़क़्क़ानिय्यते इस्लाम की दलील येह दी कि वोह मिल्लते इब्राहीमी है।(4)

सुवाल दीने इस्लाम पर साबित क़दमी के चन्द अस्बाब बताइये ?

जवाब (1) इ़ल्मे दीन ह़ासिल करना (2) कसरत से मस्जिद में ह़ाज़िर होना (3) ज़बान की ह़िफ़ाज़त करना (4) कुफ़्र और गुनाहों से बचना (5) काफ़िरों, बद मज़हबों और फ़ासिक़ो फ़ाजिर लोगों से तअ़ल्लुक़ात न रखना (6) नफ़्सानी ख़्वाहिशात की पैरवी से बचना

---

1 ...شعب الایمان، باب فی الصیام، فصل فی لیلۃ القدر ۳/۳۳۶، حدیث: ۳۶۹۵۔

2 .....तफ़्सीर सिरातुल जिनान, पारह 25, अद्दुख़ान, तह़्तुल आयत : 3, 9 / 178

3 ...تفسیر خازن، پ ۳۰، القدر تحت الآیۃ: ۴، ۴/۳۹۷۔

4 .....तफ़्सीर सिरातुल जिनान, पारह 1, अल बक़रह, तह़्तुल आयत : 130, 1 / 211

(7) मसाइबो आलाम और अल्लाह तआला की तरफ़ से आने वाली आज़्माइशों पर सब्र करना (8) अल्लाह तआला की रहमत से मायूस न होना (9) लम्बी उम्मीदें न रखना और (10) दुन्या में ज़ोहदो क़नाअत इख़्तियार करना वग़ैरा।[1]

सुवाल दीने इस्लाम के आदिलाना निज़ाम की कोई मिसाल बयान फ़रमाइये ?

जवाब एक मरतबा अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم की ज़िरह (जंग में पहनी जाने वाली लोहे की जालीदार क़मीस) गुम हो गई, बा'द में वोह एक यहूदी के पास मिली। आप ने फ़रमाया कि येह ज़िरह मेरी है, यहूदी ने इन्कार किया, मुआमला हज़रते क़ाज़ी शुरैह رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه की अदालत में पहुंचा। उन्हों ने फ़रीक़ैन का मुअक़्क़िफ़ सुनने के बा'द अमीरुल मोमिनीन से दलील तलब फ़रमाई। आप ने फ़रमाया : मेरा ग़ुलाम क़म्बर और बेटा हसन दोनों इस बात के गवाह हैं। क़ाज़ी साहिब ने कहा : बेटे की गवाही बाप के हक़ में दुरुस्त नहीं। येह सुन कर यहूदी कहने लगा : ऐ अमीरुल मोमिनीन ! आप ही मुझे अदालत लाए और क़ाज़ी साहिब ने आप ही के ख़िलाफ़ फ़ैसला कर दिया। मैं गवाही देता हूं कि येही मज़हब हक़ है और येह ज़िरह आप ही की है और वोह कलिमा पढ़ कर मुसलमान हो गया। हज़रते अलिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم ने ख़ुश हो कर वोह ज़िरह और एक घोड़ा उसे तोह़फ़े में दे दिया।[2]

सुवाल दीने इस्लाम ने बेटियों और बहनों के क्या हुक़ूक़ बयान किये हैं ?

---

1 .....तफ़्सीर सिरातुल जिनान, पारह 12, हूद, तह़्तुल आयत : 112, 4 / 505

2 . . . الکامل فی التاریخ، سنۃ اربعین، ذکر بعض سیرتہ، ۳/۲۶۵ ماخوذا۔

حلیۃ الاولیاء، شریح بن الحارث الکندی، ۴/۱۵۱، رقم: ۵۰۸۵ ماخوذا۔

जवाब हुज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जिस शख़्स की बेटी हो तो वोह उसे ज़िन्दा दरगोर न करे, उसे ज़लील न समझे और अपने बेटे को उस पर तरजीह़ न दे तो **अल्लाह** तआ़ला उसे जन्नत में दाख़िल करेगा।[1] और एक ह़दीसे पाक में है : जिस की तीन बेटियां या तीन बहनें हों या दो बेटियां या दो बहनें हों और वोह उन के साथ अच्छा सुलूक करे और उन के मुआ़मले में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से डरे तो उस के लिये जन्नत है।[2]

सुवाल इस्लाम में सफ़ाई सुथराई को क्या अहम्मिय्यत ह़ासिल है ?

जवाब दीने इस्लाम ने जहां इन्सान को कुफ़्रो शिर्क की नजासतों से पाक कर के इ़ज़्ज़त व रिफ़्अ़त अ़ता की वहीं ज़ाहिरी त़हारत, सफ़ाई सुथराई और पाकीज़गी की आ'ला ता'लीमात के ज़रीए़ इन्सानिय्यत का वक़ार बुलन्द किया, बदन की पाकीज़गी हो या लिबास की सुथराई, ज़ाहिरी हैअत की उ़म्दगी हो या त़ौर त़रीक़े की अच्छाई, मकान और साज़ो सामान की बेहतरी हो या सुवारी की धुलाई अल ग़रज़ हर हर चीज़ को साफ़ सुथरा और जाज़िबे नज़र रखने की दीने इस्लाम में ता'लीम और तरग़ीब दी गई है।[3] हुज़ूर ताजदारे दो जहान, रह़मते आ़लमिय्यान صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जो लिबास तुम पहनते हो उसे साफ़ सुथरा रखो और अपनी सुवारियों की देख भाल किया करो और तुम्हारी ज़ाहिरी हैअत ऐसी साफ़ सुथरी हो कि जब लोगों में जाओ तो वोह तुम्हारी इ़ज़्ज़त करें।[4]

---

1 ...ابوداود، کتاب الادب، باب فی فضل من عال یتیما، ۴/۴۳۵، حدیث:۵۱۴۶۔

2 ...ترمذی، کتاب البر والصلة، باب ماجاء فی النفقة علی البنات والاخوات، ۳/۳۶۷، حدیث:۱۹۲۳۔

3 .....तफ़्सीर सिरातुल जिनान, पारह 11, अत्तौबह, तह़्तुल आयत : 108 , 4 / 240

4 ...مستدرک حاکم، کتاب اللباس، باب حدیث مناظرة ابن عباس مع الحروریة، ۵/۲۵۸، حدیث ۷۴۴۹۔

सुवाल तअ़स्सुब के मुतअ़ल्लिक़ दीने इस्लाम का क्या नज़रिया है ?

जवाब इस्लाम में इस बात की कोई गुन्जाइश नहीं कि आदमी अपनी क़ौम या ख़ानदान की हर मुआमले में ताईद करे अगर्चे वोह बातिल पर हों बल्कि ह़क़ की इत्तिबाअ़ करना ज़रूरी है। इस में रंगो नस्ल, क़ौम व अ़लाक़ा, मुल्क व सूबा, ज़बान व सक़ाफ़त के हर क़िस्म के तअ़स्सुब का रद है। कसीर अह़ादीस में भी तअ़स्सुब का शदीद रद किया गया है, चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है, रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : ''जो बिला वज्ह जंग करे या तअ़स्सुब की जानिब बुलाए या तअ़स्सुब की वज्ह से गुस्सा करे तो वोह जाहिलिय्यत की मौत मरेगा।[(1)]

सुवाल दीने इस्लाम में हुक़ूक़ुल इ़बाद को क्या अहम्मिय्यत ह़ासिल है ?

जवाब दीने इस्लाम में हुक़ूक़ुल इ़बाद की बहुत ज़ियादा अहम्मिय्यत है, बल्कि अह़ादीस में यहां तक है कि हुक़ूक़ुल्लाह पूरे करने के बा वुजूद बहुत से लोग हुक़ूक़ुल इ़बाद में कमी की वज्ह से जहन्नम के मुस्तह़िक़ होंगे।[(2)]

सुवाल वालिदैन के साथ सुलूक के मुतअ़ल्लिक़ इस्लाम ने हमें क्या दर्स दिया ?

जवाब दीने इस्लाम में वालिदैन की ख़िदमत करने और उन के साथ हुस्ने सुलूक करने को एक ख़ास अहम्मिय्यत दी गई है और इस से मुतअ़ल्लिक़ मुसलमानों को ख़ुसूसी अह़कामात दिये गए हैं ह़त्ता कि काफ़िर वालिदैन के साथ भी हुस्ने सुलूक करने, उन की

---

1 . . . ابن ماجه، کتاب الفتن، باب العصبية، ۴/ ۳۲۶، حديث: ۳۹۴۸ـ
तफ़्सीर सिरातुल जिनान, पारह 5, अन्निसा, तह़तुल आयत : 105, 2 / 295 मुल्तक़त़न।

2.....तफ़्सीर सिरातुल जिनान, पारह 1, अल बक़रह, तह़तुल आयत : 83, 1 / 153

ख़िदमत करने, उन की त़रफ़ से पहुंचने वाली सख़्तियों और नाज़ेबा बातों पर बरदाश्त का मुज़ाहरा करने और उन पर एह़सान करने की ता'लीम दी गई है, येह दीने इस्लाम ही का अ़ज़ीम कारनामा है जिस ने वालिदैन के मां बाप होने के ह़क़ को पूरा करने का हुक्म दिया और उन्हें अज़िय्यत व तक्लीफ़ पहुंचाने से मन्अ़ किया।(1)

सुवाल पाकीज़ा मुआ़शरे के क़ियाम के लिये दीने इस्लाम का क्या किरदार रहा है ?

जवाब दीने इस्लाम को येह ए'ज़ाज़ ह़ासिल है कि उस ने पाकीज़ा मुआ़शरे के क़ियाम के लिये नीज़ जो चीज़ें इस राह में बड़ी रुकावट हैं, उन्हें ख़त्म करने के लिये इन्तिहाई अह़सन और मुअस्सिर इक़्दामात किये हैं। फ़ह़्ह़ाशी, उ़रयानी और बे ह़याई पाकीज़ा मुआ़शरे के लिये ज़ह्रे क़ातिल की ह़ैसिय्यत रखते हैं, दीने इस्लाम ने जहां इन चीज़ों को ख़त्म करने पर ज़ोर दिया वहीं उन ज़राएअ़ और अस्बाब को ख़त्म करने की त़रफ़ भी तवज्जोह की जिन से फ़ह़्ह़ाशी, उ़रयानी और बे ह़याई फैल सकती है, जैसे औ़रतों का नर्मो नाज़ुक लह्जे में बात करना, इस लिये इस्लाम ने इस ज़रीए़ को ही बन्द करने का फ़रमान दिया ताकि मुआ़शरा पाकीज़ा रहे और इस की बुन्यादें मज़बूत़ हों।(2)

सुवाल इस्लाम ने औ़रतों की इ़स्मत के तह़फ़्फ़ुज़ के लिये अह़कामात दिये हैं ?

जवाब दीने इस्लाम में चूंकि औ़रत की इ़स्मत की अहम्मिय्यत और क़द्र इन्तिहाई ज़ियादा है इस लिये इस की ह़िफ़ाज़त का भी भरपूर एहतिमाम किया गया है मसलन औ़रतों नीज़ मर्दों को हुक्म दिया

1 .....तफ़्सीर सिरातुल जिनान, पारह 21, लुक़्मान, तह़्तुल आयत : 15, 7 / 492

2 .....तफ़्सीर सिरातुल जिनान, पारह 22, अल अह़ज़ाब, तह़्तुल आयत : 32, 8 / 17

गया कि वोह अपनी निगाहें कुछ नीची रखें, औ़रतों से फ़रमाया कि अपनी चादरों का एक हिस्सा अपने मुंह पर डाले रखें, अपने दूपट्टे अपने गिरेबानों पर डाले रखें नीज़ दौरे जाहिलिय्यत में जैसी बे पर्दगी हुवा करती थी वैसी बे पर्दगी न करें, ज़मीन पर अपने पाउं इस लिये ज़ोर से न मारें कि उन की उस ज़ीनत का पता चल जाए जो उन्हों ने छुपाई हुई है, ग़ैर मर्दों को अपनी ज़ीनत न दिखाएं, अपने घरों में ठहरी रहें, ग़ैर मर्द से कोई बात करने की ज़रूरत पड़ जाए तो नर्मो नाज़ुक लहजे और अन्दाज़ में बात न करें वग़ैरा । (फिर येह ए'लान फ़रमाया गया कि) अन्जान, पाकदामन, ईमान वाली औ़रतों पर बदकारी का बोहतान लगाने वालों पर दुन्या और आख़िरत में ला'नत है और उन के लिये क़ियामत के दिन बड़ा अ़ज़ाब है ।(1)

सुवाल दीने इस्लाम में इन्सान की इ़ज़्ज़त व हु़र्मत को क्या अहम्मिय्यत ह़ासिल है ?

जवाब दीने इस्लाम की नज़र में एक इन्सान की इ़ज़्ज़त व हु़र्मत की क़द्र बहुत ज़ियादा है और अगर वोह इन्सान मुसलमान भी हो तो उस की इ़ज़्ज़त व हु़र्मत की क़द्र इस्लाम की नज़र में मज़ीद बढ़ जाती है, इसी लिये दीने इस्लाम ने उन तमाम अफ़्आ़ल से बचने का हुक्म दिया है जिन से किसी इन्सान की इ़ज़्ज़त व हु़र्मत पामाल होती हो, उन अफ़्आ़ल में से एक फ़े'ल किसी के ऐ़ब तलाश करना और उसे दूसरों के सामने बयान कर देना है जिस का इन्सानों की इ़ज़्ज़त व हु़र्मत ख़त्म करने में बहुत बड़ा किरदार है, इस वज्ह से जहां उस शख़्स को ज़िल्लत व रुस्वाई का सामना करना पड़ता है जिस का ऐ़ब लोगों के सामने ज़ाहिर हो जाए वहीं

1.....तफ़्सीर सिरातुल जिनान, पारह 22, अल अह़ज़ाब, तह़्तुल आयत : 33, 8 / 24

वोह शख़्स भी लोगों की नफ़रत और मलामत का सामना करता है जो ऐब तलाश करने और उन्हें ज़ाहिर करने में लगा रहता है, यूं ऐब तलाश करने वाले और जिस का ऐब बयान किया जाए, दोनों की इ़ज़्ज़त व हुर्मत चली जाती है, इस लिये दीने इस्लाम ने ऐबों की तलाश में रहने और उन्हें लोगों के सामने शरई इजाज़त के बिग़ैर बयान करने से मन्अ़ किया और इस से बाज़ न आने वालों को सख़्त वई़दें सुनाईं ताकि उन वई़दों से डर कर लोग इस बुरे फ़े'ल से बाज़ आ जाएं और सब की इ़ज़्ज़त व हुर्मत की हि़फ़ाज़त हो।(1)

सुवाल जानवरों के हुक़ूक़ के मुतअ़ल्लिक़ दीने इस्लाम ने हमें क्या ता'लीम दी है ?

जवाब कसीर अह़ादीस में जानवरों के साथ नर्मी से पेश आने, उन के लिये आसानी करने और उन के दाना पानी का ख़याल रखने का हुक्म दिया है, चुनान्चे, ह़ज़रते सह्ल बिन ह़न्ज़लिय्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बयान करते हैं कि हुज़ूर ताजदारे ख़त्मे नुबुव्वत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم एक ऐसे ऊंट के पास से गुज़रे जिस की पीठ पेट से मिल गई थी तो इरशाद फ़रमाया : इन बे ज़बान जानवरों के बारे में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से डरो, इन पर अच्छी त़रह़ सुवार हुवा करो और इन्हें अच्छी त़रह़ खिलाया करो।(2) और ह़ज़रते मुसय्यिब बिन दारिम رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं कि मैं ने अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन ख़त्ताब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को देखा कि उन्हों ने एक शुतरबान को मारा और उस से फ़रमाया : तुम ने अपने ऊंट पर उस की त़ाक़त से ज़ियादा सामान क्यूं लादा है ?(3)

1.....तफ़्सीर सिरातुल जिनान, पारह 26, अल हुजुरात, तह़्तुल आयत : 12, 9 / 438

2 . . . ابوداود، کتاب الجهاد، باب مایؤمر بہ من القیام علی الدواب والبهائم، ۳/۳۲، حدیث: ۲۵۴۸-

3 . . . طبقات ابن سعد، رقم ۳۰۰۵، المسیب بن دارم، ۷/۹۱-

औलाद और उन के हुकूक़

सुवाल वालिद की जानिब से बच्चे के लिये पहला तोह्फ़ा क्या है ?

जवाब सरकारे मदीनए मुनव्वरा, सरदारे मक्कए मुकर्रमा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "आदमी सब से पहला तोह्फ़ा अपने बच्चे को नाम का देता है लिहाज़ा उसे चाहिये कि उस का नाम अच्छा रखे।"(1)

सुवाल बच्चे की पैदाइश के कितने दिन बा'द नाम रखना चाहिये ?

जवाब सातवें दिन बच्चे का नाम रखा जाए।(2) लेकिन अगर इस से पहले रखा तो भी जाइज़ है।

सुवाल बच्चों के नाम किन के नामों पर रखने का फ़रमाया गया है ?

जवाब हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : हज़राते अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام के नामों पर नाम रखो।(3)

सुवाल रोज़े महशर कौन सा बच्चा अपने वालिदैन की शफ़ाअत नहीं कर पाएगा ?

जवाब जिस बच्चे ने अक़ीक़े का वक़्त पाया या'नी सात दिन का हो गया और बिला उज़्र बा वस्फ़े इस्तिताअत (या'नी बाप ने इस्तिताअत होने के बा वुजूद भी) उस का अक़ीक़ा न किया उस के लिये येह आया है कि वोह अपने मां बाप की शफ़ाअत न करने पाएगा।(4)

सुवाल अक़ीक़ा क्या है और इस का क्या हुक्म है ?

---

1 ...جمع الجوامع، ۳/۲۸۵، حدیث:۸۸۷۵۔

2 ...ترمذی، کتاب الاضاحی، باب من العقیقۃ، ۳/۱۷۷، حدیث:۱۵۲۷۔

3 ...ابوداود، کتاب الادب، باب فی تغییر الاسماء، ۴/۳۷۴، حدیث:۴۹۵۰۔

4 .....फ़तावा रज़विय्या, 20 / 596

जवाब बच्चा पैदा होने के शुक्रिया में जो जानवर ज़ब्ह़ किया जाता है उस को अ़क़ीक़ा कहते हैं और येह मुस्तह़ब है।(1)

सुवाल बच्चे का अ़क़ीक़ा कौन से दिन किया जाए?

जवाब अ़क़ीक़ा सातवें दिन अफ़्ज़ल है। न हो सके तो चौदहवें, वरना इक्कीसवें, वरना ज़िन्दगी भर में जब कभी हो।(2)

सुवाल क्या क़ुरबानी की गाए में अ़क़ीक़े का हिस्सा रखा जा सकता है?

जवाब जी हां क़ुरबानी की गाए में भी अ़क़ीक़े का हिस्सा रखा जा सकता है।(3)

सुवाल बच्चों के साथ वालिदैन का कैसा बरताव होना चाहिये?

जवाब आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْہ औलाद के ह़ुक़ूक़ बयान करते हुए फ़रमाते हैं: (1) ख़ुदा की उन अमानतों के साथ मेहर व लुत़्फ़ (शफ़्क़त व मह़ब्बत) का बरताव रखे, उन्हें प्यार करे, बदन से लिपटाए, कन्धे पर चढ़ाए। (2) उन के हंसने, खेलने, बहलने की बातें करे, उन की दिलजूई, दिलदारी, रिआ़यत व मुह़ाफ़ज़त हर वक़्त ह़त्ता कि नमाज़ व ख़ुत़्बे में भी मल्ह़ूज़ रखे। (3) नया मेवा, नया फल पहले उन्हीं को दे कि वोह भी ताज़े फल हैं नए को नया मुनासिब है। (4) कभी कभी ह़स्बे मक़्दूर (ह़स्बे इस्तित़ाअ़त) उन्हें शीरीनी वग़ैरा खाने, पहनने, खेलने की अच्छी चीज़ कि शरअ़न जाइज़ है, देता रहे। (5) सफ़र से आए तो उन के लिये कुछ तोह़्फ़ा ज़रूर लाए (6) औलाद के साथ तन्हाख़ोरी न बरते (औलाद को छोड़ कर अकेले न खाए)

1.....बहारे शरीअ़त, हि़स्सा, 15, 3 / 355

2.....फ़तावा रज़विय्या, 20 / 586

3.....अ़क़ीक़े के बारे में सुवाल जवाब, स. 11

बल्कि जिस अच्छी चीज़ को उन का जी चाहे उन्हें दे कर उन के तुफ़ैल में आप भी खाए, ज़ियादा न हो तो उन्हीं को खिलाए।(1)

सुवाल हदीसे पाक में औलाद के दरमियान अ़द्ल के मुतअ़ल्लिक़ क्या इरशाद हुवा है ?

जवाब रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : अ़तिये में अपनी औलाद के दरमियान अ़द्ल करो, जिस त़रह़ तुम ख़ुद येह चाहते हो कि वोह सब तुम्हारे साथ एह़सान व मेहरबानी में अ़द्ल करें। नीज़ इरशाद फ़रमाया : **अल्लाह** तआ़ला इस को पसन्द करता है कि तुम अपनी औलाद के दरमियान अ़द्ल करो यहां तक कि बोसा लेने में।(2)

सुवाल अपनी औलाद को बोसा न देने वाले आ'राबी से क्या फ़रमाया गया ?

जवाब एक आ'राबी ने बारगाहे रिसालत में अ़र्ज़ की : आप बच्चों को बोसा देते हैं हम उन्हें बोसा नहीं देते। ह़ुज़ूर रह़मते दो जहान, मालिके कौनो मकान صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : **अल्लाह** तआ़ला ने तेरे दिल से रह़मत निकाल ली है तो मैं क्या करूं !(3)

सुवाल ख़ास बेटी के हुक़ूक़ में से कुछ हुक़ूक़ बयान कीजिये ?

जवाब मुजद्दिदे आ'ज़म इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحمَۃُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : (1) इस के पैदा होने पर नाख़ुशी न करे बल्कि ने'मते इलाहिय्या जाने। (2) इसे सीना पिरोना कातना (सिलाई, कढ़ाई)

1.....औलाद के हुक़ूक़, स. 19 ता 20 माख़ूज़न।

2...دارقطنی، کتاب البیوع، ۳/ ۵۱، حدیث: ۲۹۴۴، کنزالعمال، کتاب النکاح، الفصل الرابع فی حقوق وآداب متفرقة، ۱۶/۱۸۵، حدیث: ۴۵۳۴۲، نوادرالاصول، الاصل الثانی والستون والمائتان، ۲/ ۱۰۹۱، حدیث: ۱۴۰۷۔

3...بخاری، کتاب الادب، باب رحمة الولد وتقبیله ومعانقته، ۴/ ۱۰۰، حدیث: ۵۹۹۸۔

खाना पकाना सिखाए। (3) "सूरए नूर" की ता'लीम दे। (4) बेटियों से ज़ियादा दिलजूई व ख़ातिरदारी रखे कि इन का दिल बहुत थोड़ा (छोटा) होता है। (5) देने में इन्हें और बेटों को कांटे की तोल बराबर रखे (या'नी दोनों को देते वक़्त मुकम्मल अ़द्लो इन्साफ़ करे)। (6) जो चीज़ दे पहले इन्हें दे कर बेटों को दे।[1]

सुवाल बेटियों पर शफ़्क़ते नबवी कैसी थी ?

जवाब ह़ज़रते सय्यिदतुना फ़ातिमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا जब रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमते अक़्दस में ह़ाज़िर होतीं तो आप खड़े हो जाते, उन की त़रफ़ मुतवज्जेह हो जाते, फिर उन का हाथ अपने हाथ में ले लेते, उसे बोसा देते फिर उन को अपने बैठने की जगह पर बिठाते। इसी त़रह़ जब आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ह़ज़रते सय्यिदतुना फ़ातिमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के हां तशरीफ़ ले जाते तो वोह आप को देख कर खड़ी हो जातीं, आप का हाथ अपने हाथ में ले लेतीं फिर उस को चूमतीं और आप को अपनी जगह पर बिठातीं।[2]

सुवाल बेटियों के साथ ह़ुस्ने सुलूक करने पर क्या ख़ुश ख़बरी दी गई है ?

जवाब ह़ुज़ूर ताजदारे ख़त्मे नुबुव्वत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जिसे ख़ुदा तआ़ला ने लड़कियां दी हों, अगर वोह उन के साथ एह़सान करे तो वोह जहन्नम की आग से उस के लिये रोक हो जाएंगी।[3]

1.....औलाद के हुक़ूक़, स. 27 माख़ूज़न।

2...ابوداود،کتاب الادب، باب ماجاء فی القیام، ۴/۴۵۴، حدیث:۵۲۱۷۔

3...مسلم، کتاب البر والصلة، باب فضل الاحسان الی البنات، ص ۱۰۸۴، حدیث:۲۶۹۳۔

पड़ोसियों और आ़म मुसलमानों के हुक़ूक़

सुवाल ह़दीसे पाक में पड़ोसी किसे फ़रमाया गया है ?

जवाब हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : मस्जिद के दरवाज़े पर जा कर येह ए'लान किया जाए कि "सुन लो 40 घर पड़ोस में दाख़िल हैं ।[1] (ह़दीस शरीफ़ के रावी) ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ज़ोहरी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَلِی फ़रमाते हैं : 40 घर दाएं, 40 बाएं, 40 आगे और 40 घर पीछे, इस त़रह़ आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने चारों जानिब इशारा फ़रमाया ।[2]

सुवाल सरवरे कौनैन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने पड़ोसी के हुक़ूक़ के बारे में क्या इरशाद फ़रमाया ?

जवाब मुअ़ल्लिमे काइनात, शाहे मौजूदात صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : क्या तुम्हें मा'लूम है कि पड़ोसी का क्या ह़क़ है ? येह कि जब वोह तुम से मदद मांगे मदद करो और जब क़र्ज़ मांगे क़र्ज़ दो और जब मोह़ताज हो तो उसे दो और जब बीमार हो इ़यादत करो और जब उसे भलाई पहुंचे तो मुबारक बाद दो और जब मुसीबत पहुंचे तो ता'ज़ियत करो और मर जाए तो जनाज़े के साथ जाओ और उस की इजाज़त के बिग़ैर अपनी इमारत बुलन्द न करो कि उस की हवा रोक दो और अपनी हांडी की ख़ुश्बू से उस को ईज़ा न दो मगर उस में से कुछ उसे भी दो और फल ख़रीदो तो उस के पास भी हदिया करो और अगर हदिया न करना हो तो छुपा कर मकान में लाओ और तुम्हारे बच्चे फल ले कर

---

1 . . . معجم کبیر، ۱۹/ ۷۳، حدیث: ۱۴۳-

2 . . . احیاء علوم الدین، کتاب آداب الالفۃ۔۔۔الخ، الباب الثالث فی حق المسلم۔۔۔الخ، ۲/ ۲۶۶-

बाहर न निकलें कि पड़ोसी के बच्चों को रन्ज होगा। तुम्हें मा'लूम है कि पड़ोसी का क्या हक़ है? क़सम है उस की जिस के हाथ में मेरी जान है! मुकम्मल तौर पर पड़ोसी का हक़ अदा करने वाले थोड़े हैं, वोही हैं जिन पर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की मेहरबानी है।(1)

सुवाल पड़ोसियों को तक्लीफ़ देने पर ह़दीसे पाक में क्या वई़द आई है?

जवाब हुज़ूर सरवरे कौनैन, शहनशाहे दारैन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : खुदा की क़सम! वोह मोमिन नहीं! खुदा की क़सम वोह मोमिन नहीं! खुदा की क़सम वोह मोमिन नहीं! अ़र्ज़ की गई : या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم! कौन? इरशाद फ़रमाया : वोह शख़्स जिस की ईज़ा रसानी से उस का पड़ोसी मह़फ़ूज़ न हो।(2)

सुवाल आदमी के नेक या बुरा होने का पता किन लोगों से चलता है?

जवाब उस आदमी के पड़ोसियों से। एक शख़्स ने बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم! मुझे कोई ऐसा अ़मल बताइये जिसे कर के मैं जन्नत में दाख़िल हो जाऊं। हुज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : नेक बन जाओ। अ़र्ज़ की : मुझे अपने नेक होने का कैसे पता चलेगा? इरशाद फ़रमाया : अपने पड़ोसियों से पूछो अगर वोह तुम्हें नेक कहें तो तुम नेक हो और अगर वोह बुरा कहें तो तुम बुरे हो।(3)

सुवाल नेक लोगों के पड़ोस में रहने के क्या फ़ाएदे हैं?

जवाब हुज़ूरे अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद

(1) ...شعب الایمان، باب فی اکرام الجار، ۷/ ۸۳، حدیث: ۹۵۶۰۔

(2) ...بخاری، کتاب الادب، باب اثم من لا یامن جارہ بوائقہ، ۴/ ۱۰۴، حدیث: ۶۰۱۶۔

(3) ...شعب الایمان، باب فی اکرام الجار، ۷/ ۸۵، حدیث: ۹۵۶۷۔

फ़रमाया : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ नेक मुसलमान की वज्ह से उस के पड़ोस के 100 घरों से बला और मुसीबत दूर फ़रमा देता है।(1)

सुवाल पड़ोसियों की कितनी अक़्साम हैं और किस के कितने हुक़ूक़ हैं ?

जवाब पड़ोसी तीन त़रह के हैं : (1) मुसलमान रिश्तेदार, उस के तीन हुक़ूक़ हैं : पड़ोस का ह़क़, इस्लाम का ह़क़ और रिश्तेदारी का ह़क़ (2) मुसलमान पड़ोसी, उस के पहले दो हुक़ूक़ हैं और (3) काफ़िर पड़ोसी, उस का सिर्फ़ पहला ह़क़ है।(2)

सुवाल ह़दीसे पाक में किन लोगों को एक इमारत की त़रह़ कहा गया है ?

जवाब हुज़ूर मुअ़ल्लिमे काइनात, शाहे मौजूदात صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : اَلْمُؤْمِنُ لِلْمُؤْمِنِ كَالْبُنْيَانِ يَشُدُّ بَعْضُهٗ بَعْضًا या'नी मोमिन मोमिन के लिये इमारत की मिस्ल है, जिस का बा'ज़ हिस्सा बा'ज़ को मज़्बूत़ रखता है।(3)

सुवाल मुसलमानों को तक्लीफ़ पहुंचाने वालों को जहन्नम में किस त़रह़ का अ़ज़ाब दिया जाएगा ?

जवाब ह़ज़रते सय्यिदुना मुजाहिद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَاحِد फ़रमाते हैं : जहन्नमियों पर एक क़िस्म की ख़ारिश मुसल्लत़ कर दी जाएगी, जिस की वज्ह से वोह अपने बदनों को खुजाएंगे यहां तक कि उन में से किसी की हड्डी ज़ाहिर हो जाएगी तो निदा की जाएगी : ऐ फ़ुलां ! क्या तुझे इस की वज्ह से तक्लीफ़ हो रही है ? वोह कहेगा : हां ! तो मुनादी कहेगा : येह उस का बदला है जो तुम मुसलमानों

---

1 ...معجم اوسط، ۳/ ۱۲۹، حدیث: ۴۰۸۰۔

2 ...شعب الایمان، باب فی اکرام الجار، ۷/ ۸۳، حدیث: ۹۵۶۰۔

3 ...بخاری، کتاب المظالم والغصب، باب نصر المظلوم، ۲/ ۱۲۷، حدیث: ۲۴۴۶۔

को तक्लीफ़ देते थे।[1]

सुवाल रिआया और मुसलमानों के हुक़ूक़ ग़स्ब करने वाले के लिये क्या वईद है ?

जवाब हुज़ूर ताजदारे ख़त्मे नुबुव्वत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : मुसलमानों को जिस वाली की रिआया बनाया जाए, फिर वोह वाली ऐसी हालत में मरे कि उस ने मुसलमानों के हुक़ूक़ ग़स्ब किये हों तो अल्लाह तआला उस पर जन्नत हराम फ़रमा देता है।[2] और एक रिवायत में है : जिस शख़्स को अल्लाह عَزَّوَجَلَّ किसी रिआया का हुक्मरान बनाए और वोह ख़ैर ख़्वाही के साथ उन की निगहबानी का फ़रीज़ा अदा न करे तो वोह जन्नत की ख़ुश्बू तक न पा सकेगा।[3]

सुवाल इस्लाम ज़मानए कुफ़्र के तमाम गुनाह मिटा देता है मगर वोह कौन सी चीज़ है जो नहीं मिटती ?

जवाब नौ मुस्लिम ने कुफ़्र के ज़माने में बन्दों के जो हुक़ूक़ तल्फ़ किये होंगे वोह उसे बहर हाल अदा करने होंगे जैसा कि ज़मानए कुफ़्र के क़र्ज़ वग़ैरा ईमान लाने से मुआफ़ नहीं होंगे।[4]

सुवाल मुसलमान की पर्दापोशी करने का क्या सवाब है ?

जवाब हदीस शरीफ़ में है : जो किसी मुसलमान की पर्दापोशी करे अल्लाह तबारक व तआला दुन्या व आख़िरत में उस की पर्दापोशी फ़रमाएगा।[5] और एक रिवायत में यूं है कि जो किसी का ख़ुफ़्या

---

1 ...احیاء علوم الدین، کتاب آداب الالفۃ ۔۔۔ الخ، الباب الثالث فی حق المسلم ۔۔۔ الخ، ۲/۲۴۲-

2 ...بخاری، کتاب الاحکام، باب من استرعی رعیۃ فلم ینصح، ۴/۴۵۶، حدیث: ۷۱۵۱-

3 ...بخاری، کتاب الاحکام، باب من استرعی رعیۃ فلم ینصح، ۴/۴۵۶، حدیث: ۷۱۵۰-

4 .....तफ़्सीर सिरातुल जिनान, पारह 26, मुहम्मद, तहतुल आयत : 2, 9 / 293 माख़ूज़न।

5 ...ابن ماجه، کتاب الحدود، باب الستر علی المؤمن ودفع الحدود بالشبهات، ۳/۲۱۸، حدیث: ۲۵۴۴-

www.dawateislami.net

ऐब देखे फिर उसे छुपा ले तो वोह उस शख़्स की त़रह़ है जो ज़िन्दा दरगोर की गई बच्ची को ज़िन्दा करे।[1]

सुवाल किस वक़्त पर्दापोशी न करना लाज़िम है ?

जवाब किसी शख़्स का ऐसा फ़े'ल या क़ौल जिस का ज़ाहिर करना उसे नापसन्द हो अगर वोह ख़िलाफ़े शरीअ़त है और उस का तअ़ल्लुक़ बन्दों के हुक़ूक़ से हो नीज़ उस में किसी शख़्स का नुक़्सान हो। मसलन एक शख़्स ने दूसरे शख़्स की ग़ैर मौजूदगी में उसे ज़दो कोब या क़ैद करने या उस का माल लेने का इरादा ज़ाहिर किया या फिर उस पर कोई हुक्मे शरई मुरत्तब होता हो मसलन एक शख़्स की मौजूदगी में दूसरे शख़्स ने किसी को क़त्ल किया जिस पर क़िसास का हुक्म मुरत्तब होता है या फिर उस की मौजूदगी में किसी का माल ज़ाएअ़ किया जिस पर तावान का हुक्म लगता है तो उस शख़्स पर (ह़त्तल मक़्दूर) लाज़िम है कि ह़ाकिम को उस बात की इत्तिलाअ़ दे और ज़रूरत पड़ने पर उस मुआ़मले की गवाही दे।[2]

इ़ल्म व उ़लमा

सुवाल त़लबे इ़ल्म के दौरान मौत आ जाने की क्या फ़ज़ीलत है ?

जवाब ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से मरवी है कि हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जिसे इ़ल्म ह़ासिल करते हुए मौत आ गई वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से इस ह़ाल में मुलाक़ात करेगा कि उस के

1 . . . مسند امام احمد، حدیث عقبۃ بن عامر الجھنی، ۶/۱۴۷، حدیث ۱۷۴۵۲۔

2 . . . حدیقۃ ندیۃ، المبحث الاول من المباحث الستۃ۔۔۔الخ، النوع الثامن عشر۔۔۔الخ، ۲/۲۶۳۔

और ह़ज़राते अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام के दरमियान सिर्फ़ दर्जए नुबुव्वत का फ़र्क़ होगा[1] ।[2]

सुवाल क्या साइन्सी और जोग्राफ़ियाई उ़लूम का हुसूल भी सवाब का बाइ़स बन सकता है ?

जवाब जी हां ! इ़ल्मे जोग्राफ़िया और साइन्स ह़ासिल करना भी सवाब है जब कि अच्छी निय्यत हो जैसे इस्लाम और मुसलमानों की ख़िदमत या अल्लाह तआ़ला की अ़ज़मत का इ़ल्म ह़ासिल करने के लिये, लेकिन येह शर्त़ है कि इस्लामी अ़क़ाइद के ख़िलाफ़ न हो ।[3]

सुवाल ह़दीसे मुबारका में इ़ल्म उठ जाने की कैफ़िय्यत क्या बयान फ़रमाई गई है ?

जवाब हु़ज़ूर नबिय्ये ग़ैब दान, रह़मते आ़लमिय्यान صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इ़ल्म को इस त़रह़ नहीं क़ब्ज़ करेगा कि लोगों के सीनों से जुदा कर ले, बल्कि इ़ल्म का क़ब्ज़ करना उ़लमा के क़ब्ज़ करने से होगा, जब आ़लिम बाक़ी न रहेंगे जाहिलों को लोग सरदार बना लेंगे, वोह बिग़ैर इ़ल्म फ़तवा देंगे, खुद भी गुमराह होंगे और दूसरों को भी गुमराह करेंगे ।[4]

सुवाल ह़दीसे मुबारका में किस चीज़ को इ़ल्म की आफ़त क़रार दिया गया है ?

जवाब हु़ज़ूर मुअ़ल्लिमे काइनात, शाहे मौजूदात صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : इ़ल्म की आफ़त निस्यान (या'नी भूल जाना)

1.....या'नी मर्तबए नुबुव्वत और इस से जो कमालात मुतअ़ल्लिक़ हैं इन के इ़लावा हर मर्तबा और कमाल उसे ह़ासिल होगा । (खुत़्बाते मुह़र्रम, स. 24, माख़ूज़न)

2...معجم اوسط، ٦/٤٧٥، حديث: ٩٤٥٤-

3.....तफ़्सीर सिरातुल जिनान, पारह 4, आले इमरान, तह़्तुल आयत : 190, 2 / 120

4...بخاری، کتاب العلم، باب کیف یقبض العلم، ١/٥٤، حديث: ١٠٠-

है और ना अह्ल से इल्म की बात कहना इल्म को ज़ाएअ़ करना है।(1)

सुवाल किस त़रह़ के शख़्स की सोह़बत इख़्तियार करनी चाहिये ?

जवाब ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान बिन उ़यैना رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा रूहुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام का इरशाद है : ऐसे लोगों की सोह़बत इख़्तियार करो जिन की सूरत देख कर तुम्हें ख़ुदा याद आए, जिन की गुफ़्त्गू तुम्हारे इल्म में इज़ाफ़ा करे और जिन का अ़मल तुम्हें आख़िरत का शौक़ दिलाए।(2)

सुवाल सय्यिदुना ह़कीम लुक़्मान رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने अपने बेटे को उ़लमा के मुतअ़ल्लिक़ क्या नसीह़त फ़रमाई ?

जवाब मन्क़ूल है कि ह़ज़रते सय्यिदुना लुक़्मान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن ने अपने बेटे को जो वसिय्यतें फ़रमाईं उन में एक येह भी थी कि बेटा ! उ़लमा की सोह़बत में बैठा करो, अपने ज़ानू उन के ज़ानू से मिला दो क्यूंकि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ नूरे ह़िक्मत से दिलों को ऐसे ज़िन्दा करता है जैसे ज़मीन को मुसलसल बारिश से।(3)

सुवाल रासिख़ फ़िल इल्म (इल्म में पुख़्तगी रखने वाले) से कौन लोग मुराद हैं ?

जवाब रासिख़ फ़िल इल्म वोह आ़लिम है जिस का इल्म उस के दिल में उतर गया हो जैसे मज़बूत़ दरख़्त वोह है जिस की जड़ें ज़मीन में जगह पकड़ चुकी हों, इस से मुराद ख़ुश अ़क़ीदा और बा अ़मल उ़लमा हैं।(4)

---

1 . . . دارمی، المقدمة، باب مذاکرة العلم، ۱/۱۵۸، حدیث: ۶۲۴۔

2 . . . جامع بیان العلم وفضله، جامع فی آداب العالم والمتعلم، ص ۱۷۲، رقم: ۵۶۷۔

3 . . . موطا الامام مالک، کتاب العلم، باب ماجاء فی طلب العلم، ۲/۴۷۸، حدیث: ۱۹۴۰۔

4 .....तफ़्सीर सिरातुल जिनान, पारह 6, अन्निसा, तह़्तुल आयत : 162, 2 / 357

सुवाल आ़लिमे दीन का दो रक्अ़त पढ़ना क्या फ़ज़ीलत रखता है ?

जवाब ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन अ़ली رَحمۃُاللہِ تعالٰی عَلَیْھِما से मरवी है कि आ़लिम की दो रक्अ़त ग़ैरे आ़लिम की 70 रक्अ़तों से अफ़्ज़ल हैं।(1)

सुवाल आ़लिमे बा अ़मल का सवाब और बे अ़मल आ़लिम का अ़ज़ाब दूसरों से ज़ियादा क्यूं है ?

जवाब आ़लिमे बा अ़मल का सवाब दूसरों से ज़ियादा है क्यूंकि बा अ़मल आ़लिम ख़ुद भी नेक है और वोह दूसरों को भी नेक बना देता है। बे दीन या बे अ़मल आ़लिम का अ़ज़ाब भी दूसरों से ज़ियादा है क्यूंकि वोह गुमराह भी है और गुमराह कुन भी और उस की बद अ़मली दूसरों को भी बद अ़मल बना देगी।(2)

सुवाल ना अह्लों को इ़ल्म सिखाना कैसा है और ना अह्ल किसे कहते हैं ?

जवाब ना अह्लों को पढ़ाना इ़ल्म को ज़ाएअ़ करना है और अह्ल को न पढ़ाना ज़ुल्म व जोर है।(3) ना अह्ल से मुराद वोह लोग हैं जिन की निस्बत मा'लूम है कि इ़ल्म के हुक़ूक़ को मह़फ़ूज़ न रख सकेंगे, पढ़ कर छोड़ देंगे, जाहिलों के से अफ़्आ़ल करेंगे या लोगों को गुमराह करेंगे या उ़लमा को बदनाम करेंगे।(4)

सुवाल त़लबे दुन्या के लिये इ़ल्म ह़ासिल करने की क्या वई़द है ?

जवाब ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि ह़ुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जिस ने रिज़ाए इलाही का ज़रीआ़ बनने वाला इ़ल्म दुन्या ह़ासिल करने के लिये

1 ...جامع صغیر، ص ۲۷۳، حدیث: ۴۴۷۲۔
2 .....तफ़्सीर सिरातुल जिनान, पारह 6, अन्निसा, तह़्तुल आयत : 162, 2 / 357 माख़ूज़न।
3 ...فتاوی ھندیۃ، کتاب الکراھیۃ، الباب الثلاثون فی المتفرقات، ۵/ ۳۷۹۔
4 .....बहारे शरीअ़त, हि़स्सा, 16, 3 / 628

सीखा वोह क़ियामत के दिन जन्नत की ख़ुश्बू तक न पाएगा।[1]

सुवाल उ़लमाए किराम से मुक़ाबले या जाहिलों से झगड़े के लिये इ़ल्म सीखना कैसा ?

जवाब ह़ज़रते सय्यिदुना का'ब बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि हुज़ूर ताजदारे दो जहान صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जो इस लिये इ़ल्म त़लब करे ताकि उ़लमा का मुक़ाबला करे या जाहिलों से झगड़े या लोगों की तवज्जोह अपनी त़रफ़ करे तो उसे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ दोज़ख़ में दाख़िल करेगा।[2]

बैअ़त व त़रीक़त

सुवाल तसव्वुरे शैख़ से मुतअ़ल्लिक़ कोई ह़दीस बताइये ?

जवाब तिरमिज़ी शरीफ़ में ह़ज़रते ह़सन बिन अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا की रिवायत मौजूद है कि इन्हों ने अपने मामूं हिन्द बिन अबू हाला رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का हुल्या मुबारका पूछा ताकि वोह अपने ज़ेहन में मह़फ़ूज़ कर सकें।[3]

सुवाल पीर उमूरे आख़िरत के लिये बनाया जाता है या दुन्यावी मुश्किलात ह़ल करवाने के लिये ?

जवाब पीर हरगिज़ दुन्यावी मुश्किलात ह़ल करवाने के लिये नहीं बनाया जाता बल्कि ह़क़ीक़त में पीर उमूरे आख़िरत के लिये बनाया जाता है। येह अलग बात है कि ज़िम्नन इन से दुन्यवी बरकतें, मसलन बीमार को शिफ़ा या मुश्किलों का ह़ल होना भी ज़ाहिर होता रहता है।[4]

---

1 ...ابوداود، کتاب العلم، باب فی طلب العلم لغیر اللہ، ۳/ ۴۵۱، حدیث: ۳۶۶۴۔

2 ...ترمذی، کتاب العلم، باب ماجاء فی من یطلب بعلمہ الدنیا، ۴/ ۲۹۷، حدیث: ۲۶۶۳۔

3 ...ترمذی، الشمائل، باب ماجاء فی خلق رسول اللہ، ۵/ ۵۰۳، حدیث: ۸۔

4 .....आदाबे मुर्शिदे कामिल, स. 177 माख़ूज़न।

सुवाल राहे त़रीक़त में बारगाहे इलाही से धुतकारे जाने की क्या अ़लामत है ?

जवाब ह़ज़रते शैख़ अ़ब्दुर्रह़मान जैली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَلِى फ़रमाते हैं कि जो मुरीद अपने नफ़्स को अपने मुर्शिद और अपने पीर भाइयों की मह़ब्बत से रूगर्दानी करने वाला पाए तो उसे जानना चाहिये कि अब उस को **अल्लाह** तआ़ला के दरवाज़े से धुतकारा जा रहा है।(1)

सुवाल तारिके सुन्नत पीर के मुतअ़ल्लिक़ शैख़ अह़मद ज़र्रूक़ رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने क्या फ़रमाया ?

जवाब आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : जो पीर **सुन्नत** को न अपना सका उस का इत्तिबाअ़ दुरुस्त नहीं, ख़्वाह वोह (ब ज़ाहिर) हज़ार करामतें दिखाए (वोह सब इस्तिदराज या'नी धोका है)।(2)

सुवाल आ़रिफ़ बिल्लाह सय्यिद अ़ब्दुल वाह़िद बिलगिरामी قُدِّسَ سِرُّهُ السَّامِى सब्अ़ सनाबिल में बुज़ुर्गों के ज़िक्र के ह़वाले से क्या फ़रमाते हैं ?

जवाब आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : मशाइख़े किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰى का ज़िक्र सच्चे मुरीदों के ईमान को ताज़ा करता है और उन के वाक़िआ़त मुरीदीन के ईमान पर तजल्लियां डालते हैं।(3)

सुवाल पीरो मुर्शिद से मह़ब्बत करने का क्या फ़ाएदा है ?

जवाब ह़ज़रते अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ दब्बाग़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الرَّزَّاق फ़रमाते हैं : मुरीद पीर की मह़ब्बत से कामिल नहीं होता क्यूंकि मुर्शिद तो सब मुरीदों पर यक्सां शफ़्क़त फ़रमाते हैं, येह मुरीद की मुर्शिद से मह़ब्बत होती है जो उसे कामिल के दरजे पर पहुंचा देती है।(4)

---

1 ...الأنوار القدسية في معرفة قواعد الصوفية، ص ٢٦، الجزء الثاني۔

2 ...حقائق عن التصوف، الباب الخامس، التحذير من الفصل...الخ، ص ٢٣٢۔

3 .....आदाबे मुर्शिदे कामिल, स. 140

4 ...الابريز، الباب الخامس في ذكر التشايخ والارادة، محبة المريد هي الجاذبة، ٢/٧٧۔

सुवाल मुरीद के राज़ों से पीर की वाक़िफ़िय्यत के मुतअ़ल्लिक़ ह़ज़रते सय्यिद अ़ली बिन वफ़ा رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने क्या फ़रमाया ?

जवाब आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : जिस मुरीद ने येह गुमान किया कि उस का शैख़ उस के राज़ों से वाक़िफ़ नहीं है तो वोह मुरीद अपने शैख़ से बहुत दूर है अगर्चे दिन रात मुर्शिद के साथ बैठा हो।(1)

सुवाल ब वक़्ते नज़्अ़ इमाम फ़ख़रुद्दीन राज़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِي के साथ क्या वाक़िआ़ पेश आया ?

जवाब उस वक़्त शैत़ान ने आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه से ख़ुदा तआ़ला के एक होने पर दलील त़लब की, आप ने 360 दलीलें क़ाइम कीं मगर शैत़ान ने एक एक कर के सब तोड़ दीं, आप के पीर ह़ज़रते नजमुद्दीन कुब्रा رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه कहीं दूर दराज़ मक़ाम पर वुज़ू फ़रमा रहे थे वहीं से उन्हों ने आवाज़ दी : कह क्यूं नहीं देता कि "मैं ने ख़ुदा को बे दलील एक माना।"(2)

सुवाल किताब "**आदाबे सालिकीन**" में फ़ना के कितने और कौन से दरजे बयान किये गए हैं ?

जवाब आ'ला ह़ज़रत के दादा मुर्शिद ह़ज़रते सय्यिद शाह आले अह़मद अच्छे मियां رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه "आदाबे सालिकीन" में फ़रमाते हैं : फ़ना के तीन दरजे हैं : (1) फ़नाफ़िश्शैख़ (2) फ़नाफ़िर्रसूल (3) फ़नाफ़िल्लाह।(3)

सुवाल शजरए क़ादिरिय्या अ़त्तारिय्या में कितने "औरादो वज़ाइफ़" और कितने मशाइख़े किराम का तज़्किरा है ?

जवाब कमो बेश 51 औरादो वज़ाइफ़ हैं और 41 मशाइख़े किराम का तज़्किरा है।

---

1 . . . الانوارالقدسیۃفی معرفۃقواعدالصوفیۃ،الباب الاول، آداب المرید،ص ۳۳،الجزء الثانی۔

2.....मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत, स. 493 मुलख़्ख़सन।

3.....अह़वाल व आसार शाह आले अह़मद अच्छे मियां मारेहरवी, स. 304

सुवाल शजरए आलिया के कुल अश्आर कितने हैं और येह अश्आर किस ने लिखे हैं ?

जवाब शजरए आलिया क़ादिरिय्या अत्तारिय्या कुल "तेईस (23) अश्आर" पर मुश्तमिल है, इस के इब्तिदाई "अठ्ठारह अश्आर" और "मक्तुअ़ (या'नी आख़िरी शे'र)" इमामे अह्ले सुन्नत आ'ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن का कलाम है।(1)

सुवाल शजरह शरीफ़ के इस शे'र "**इश्क़े अह़मद में अ़ता कर चश्मे तर सोज़े जिगर, या ख़ुदा ! इल्यास को अह़मद रज़ा के वासिते**" का मत़लब बताइये ?

जवाब इस शे'र में शैख़े त़रीक़त, अमीरे अह्ले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه अ़र्ज़ करते हैं : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुझे आ'ला ह़ज़रत, इमामे अह्ले सुन्नत رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه का वासित़ा मुझे इश्क़े रसूल में चश्मे तर या'नी रोने वाली आंखें और सोज़े जिगर या'नी उन की याद में तड़पने वाला दिल अ़ता फ़रमा। (आमीन)

दा'वते इस्लामी का तआ़रुफ़

सुवाल दा'वते इस्लामी के ज़ेरे एहतिमाम "**पहला इजतिमाई ए'तिकाफ़**" कहां हुवा था ?

जवाब दा'वते इस्लामी के अव्वलीन मदनी मर्कज़ "गुलज़ारे ह़बीब मस्जिद" (गुलिस्ताने ओकाड़वी, बाबुल मदीना) में हुवा जिस में कमो बेश 60 इस्लामी भाइयों ने अमीरे अह्ले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के साथ ए'तिकाफ़ करने की सआ़दत ह़ासिल की थी।(2)

सुवाल हर हफ़्ते बा'द नमाज़े इ़शा दा'वते इस्लामी का कौन सा ख़ास इवेन्ट होता है ?

1.....ह़याते आ'ला ह़ज़रत, स. 3 / 54

2.....दा'वते इस्लामी का तआ़रुफ़, स. 19

जवाब अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की सोहबत दर हकीकत बहुत बड़ी ने'मत है। हर हफ्ते बिल खुसूस और मुख्तलिफ़ मवाकेअ पर बिल उमूम बा'द नमाजे इशा शैखे तरीकत, अमीरे अहले सुन्नत बानिये दा'वते इस्लामी अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अत्तार कादिरी रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه **"मदनी मुज़ाकरा"** फ़रमाते हैं जिस में मुसलमानों के अकाइदो आ'माल की इस्लाह के साथ साथ अख्लाकियात व इस्लामी मा'लूमात, मआशी व मुआशरती व तन्ज़ीमी मुआमलात और बहुत से मौज़ूआत से मुतअल्लिक किये गए सुवालात के हिक्मत व नसीहत से भरपूर जवाबात मर्हमत फ़रमाते हैं।[1]

सुवाल दारुल इफ्ता अहले सुन्नत के बारे में कुछ बताइये ?

जवाब اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मुसलमानों के शरई मसाइल के हल के लिये मुतअद्दद **"दारुल इफ्ता अहले सुन्नत"** काइम किये गए हैं जहां दा'वते इस्लामी के मुबल्लिगीन मुफ्तियाने किराम बिल मुशाफ़ा, तहरीरी और मक्तूबात व फ़ोन व ई मेल के ज़रीए शरई मसाइल का हल पेश कर रहे हैं। अक्सर फ़तावा कम्प्यूटर पर कम्पोज़ कर के दिये जाते हैं। नीज़ घर घर शरई मसाइल की आगाही के लिये बज़रीअए मदनी चैनल, **"दारुल इफ्ता अहले सुन्नत"** का सिलसिला भी है और अब दारुल इफ्ता अहले सुन्नत की मोबाइल फ़ोन एप भी मन्ज़रे आम पर आ चुकी है।[2]

सुवाल जामिअतुल मदीना की सब से पहली शाख (Branch) कब और कहां खोली गई ?

जवाब पहली शाख 1995 ईसवी में बाबुल मदीना के अलाके मद्रसतुल

1 .....दा'वते इस्लामी का तआरुफ़, स. 27 माखूज़न।

2 .....दा'वते इस्लामी की झल्कियां, स. 10 माखूज़न।

मदीना गोधरा कॉलोनी (बाबुल मदीना) की दूसरी मन्ज़िल में खोली गई।[1]

सुवाल दा'वते इस्लामी का कौन सा शो'बा दर्से निज़ामी में पढ़ाई जाने वाली कुतुब पर काम कर रहा है?

जवाब वोह शो'बा दा'वते इस्लामी की मजलिस अल मदीनतुल इल्मिय्या का "शो'बए दर्सी कुतुब" है जो दर्से निज़ामी में राइज कमो बेश 80 कुतुब को अ़स्री तक़ाज़ों से हम आहंग करने के लिये इन पर शुरूह़ात, ह़वाशी और तस्हील का काम कर रहा है। इस शो'बे में कई वोह उ़लमाए किराम भी हैं जो जामिअ़तुल मदीना में तदरीस के साथ साथ अपनी तह़रीरी ख़िदमात भी सर अन्जाम दे रहे हैं, तादमे तह़रीर "दर्से निज़ामी" (आ़लिम कोर्स) में पढ़ाई जाने वाली 55 से ज़ाइद कुतुब इस शो'बे की त़रफ़ से मन्ज़रे आ़म पर आ चुकी हैं और तक़रीबन 18 कुतुब पर काम जारी है, इस शो'बे के अहदाफ़ में दर्से निज़ामी में शामिल जुम्ला कुतुब के अ़रबी ह़वाशी व शुरूह़ात शामिल हैं।

सुवाल जामिअ़तुल मदीना से सनदे फ़राग़त पाने वालों के नाम के साथ क्या लिखा जाता है?

जवाब दा'वते इस्लामी के जामिअ़तुल मदीना से सनदे फ़राग़त ह़ासिल करने वाले उ़लमाए किराम के नाम के साथ **मदनी** लिखा और बोला जाता है।[2]

सुवाल मद्रसतुल मदीना बालिग़ान के बारे में कुछ बताइये?

जवाब दा'वते इस्लामी के तह़त दुन्या भर में मुख़्तलिफ़ मक़ामात और मसाजिद में उ़मूमन बा'द नमाज़े इ़शा हज़ारहा **मद्रसतुल मदीना बालिग़ान** की तरकीब होती है, जिन में इस्लामी भाई सह़ीह़

1.....दा'वते इस्लामी का तआ़रुफ़, स. 31
2.....दा'वते इस्लामी का तआ़रुफ़, स. 32

मख़ारिज से, हुरूफ़ की दुरुस्त अदाएगी के साथ क़ुरआने करीम सीखते, दुआएं याद करते, नमाज़ें दुरुस्त करते और सुन्नतों की ता'लीम मुफ़्त हासिल करते हैं।[1]

सुवाल मदनी मुन्नों और मुन्नियों को दीनी ता'लीम के साथ साथ दुन्यावी ता'लीम से रू शनास करवाने के लिये दा'वते इस्लामी ने क्या अज़ीम काविश की है?

जवाब मदनी मुन्नों और मदनी मुन्नियों को इस्लामी ता'लीम के साथ साथ दुरुस्त दुन्यावी ता'लीम देने की ग़रज़ से दा'वते इस्लामी ने 25 सफ़रुल मुज़फ़्फ़र 1432 हिजरी मुताबिक़ 31 जनवरी 2011 ईसवी में बनाम "**दारुल मदीना** (स्कूल सिस्टम)" मुतआरिफ़ करवाया है, जिस की कई शहरों के मुख़्तलिफ़ अलाक़ों में शाख़ें क़ाइम हैं और मज़ीद कोशिशें जारी हैं।[2]

सुवाल मदनी चैनल का आग़ाज़ किस सिन में हुवा?

जवाब रमज़ानुल मुबारक 1429 हिजरी मुताबिक़ 2008 ईसवी में।[3]

सुवाल दा'वते इस्लामी की मजलिस मक्तूबातो ता'वीज़ाते अ़त्तारिय्या के तह़त क्या ख़िदमत सर अन्जाम दी जाती है?

जवाब मजलिस मक्तूबातो ता'वीज़ाते अ़त्तारिय्या दुख्यारे मुसलमानों की ख़ैर ख़्वाही के जज़्बे के तह़त शैख़े त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी دامت برکاتہم العالیہ की इजाज़त दिये गए ता'वीज़ात व मक्तूबात और औरादे अ़त्तारिय्या फ़ी सबीलिल्लाह देती है नीज़ इस्तिख़ारे भी करती है। मुल्के अमीरे अहले सुन्नत में रोज़ाना लगने वाले ता'वीज़ाते अ़त्तारिय्या के बस्ते (इस्लामी भाइयों के) तक़रीबन

1.....दा'वते इस्लामी की झल्कियां, स. 9
2.....दा'वते इस्लामी की झल्कियां, स. 14 माख़ूज़न।
3.....दा'वते इस्लामी का तआ़रुफ़, स. 43

600, बैरूने मुल्क तक़रीबन 150 से ज़ाइद हैं, माहाना मरीज़ों की औसतन ता'दाद : एक लाख पच्चीस हज़ार, माहाना मक्तूबाते अ़त्तारिय्या (दस्ती या'नी By Hand, ब ज़रीअ़ए डाक व ब ज़रीअ़ए नेट) साठ हज़ार से ज़ाइद और माहाना ता'वीज़ात व औरादे अ़त्तारिय्या तक़रीबन 4 लाख से ज़ाइद हैं। اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ عَلٰی اِحْسَانِہٖ[1]

सुवाल मक्तबतुल मदीना कितनी ज़बानों में कुतुबो रसाइल शाएअ़ कर रहा है ?

जवाब اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ दा'वते इस्लामी की मजलिसे तराजिम कई कुतुबो रसाइल का दुन्या की मुख़्तलिफ़ ज़बानों में तर्जमा करती है और इन्हें मक्तबतुल मदीना शाएअ़ करता है, ता दमे तह़रीर 36 ज़बानों में तर्जमा करने का सिलसिला है जिन में अ़रबी, अंग्रेज़ी, फ़ारसी, चाइनीज़, स्पेनिश, रशियन, सिन्धी, पश्तो, तामिल, फ़्रेन्च, स्वाहीली, डेनिश, जर्मन, हिन्दी, बंगला, और गुजराती ज़बानें शामिल हैं।[2]

सुवाल दा'वते इस्लामी के बारह मदनी काम कौन से हैं ?

जवाब बारह मदनी काम येह हैं :

[**रोज़ाना के पांच मदनी काम**] (1) सदाए मदीना (2) बा'दे फ़ज्र मदनी ह़ल्क़ा (3) मस्जिद दर्स (4) चौक दर्स (5) मद्रसतुल मदीना बालिग़ान।

[**हफ़्तावार पांच मदनी काम**] (6) मदनी दौरा (7) हफ़्तावार इजतिमाअ़ में अव्वल ता आख़िर शिर्कत (8) जुमुआ़ ए'तिकाफ़ (9) मदनी मुज़ाकरा (10) हफ़्तावार मदनी ह़ल्क़ा।

[**माहाना दो मदनी काम**] (11) मदनी इन्आ़मात (12) मदनी क़ाफ़िला।[3]

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

1.....दा'वते इस्लामी की झल्कियां, स. 8 माख़ूज़न।
2.....दा'वते इस्लामी की झल्कियां, स. 12 माख़ूज़न।
3.....बारह मदनी काम (बैरूने मुल्क), स. 16

مآخذ ومراجع

کتاب	مطبوعہ
قرآن پاک	****
ترجمہ کنز الایمان	مکتبۃ المدینہ، کراچی ۱۴۳۲ھ
کتب التفسیر وعلوم القرآن	
تفسیر یحیی بن سلام	دار الکتب العلمیہ، ۱۴۲۵ھ
تفسیر عبد الرزاق	دار الکتب العلمیہ، ۱۴۱۹ھ
تفسیر الطبری	دار الکتب العلمیہ، ۱۴۲۰ھ
تفسیر ابن ابی حاتم	مکتبہ نزار مصطفی الباز، ۱۴۱۷ھ
التفسیر الوسیط	دار الکتب العلمیہ، ۱۴۱۵ھ
تفسیر البغوی	دار الکتب العلمیہ، ۱۴۱۴ھ
احکام القرآن لابن عربی	دار الکتب العلمیہ، بیروت
التفسیر الکبیر	دار احیاء التراث العربی، ۱۴۲۰ھ
تفسیر القرطبی	دار الفکر، بیروت ۱۴۲۰ھ
تفسیر بیضاوی	دار الفکر، بیروت ۱۴۲۰ھ
تفسیر المدارک	دار المعرفہ، بیروت ۱۴۲۱ھ
الکنز فی قراءات العشر	دار الکتب العلمیہ، ۱۴۱۹ھ
تفسیر الخازن	مطبعہ میمنیہ، مصر ۱۳۱۷ھ
تفیسر ابن کثیر	دار الکتب العلمیہ، ۱۴۱۹ھ
تفسیر جلالین	باب المدینہ کراچی
الدر المنثور	دار الفکر، بیروت ۱۴۰۳ھ
الاتقان	دار الفکر، بیروت ۱۴۲۳ھ
روح المعانی	دار احیاء التراث العربی، ۱۴۲۰ھ

کتاب	مطبوعہ
روح البیان	دار احیاء التراث العربی، ۱۴۰۵ھ
تفسیر جمل	باب المدینہ کراچی
تفسیر صاوی	دار الفکر، بیروت ۱۴۲۱ھ
خزائن العرفان	مکتبۃ المدینہ، کراچی ۱۴۳۲ھ
تفسیر نعیمی	مکتبہ اسلامیہ، لاہور
نور العرفان	پیر بھائی کمپنی، لاہور
عجائب القرآن	مکتبۃ المدینہ، کراچی ۱۴۲۷ھ
مسائل القرآن	رومی پبلیکیشنز، لاہور
صراط الجنان	مکتبۃ المدینہ، کراچی ۱۴۳۳ھ
کتب الحدیث	
کتاب الجامع فی آخر المصنف	دار الکتب العلمیہ، ۱۴۲۱ھ
موطا امام مالک	دار المعرفہ، بیروت ۱۴۲۰ھ
مسند الطیالسی	دار المعرفہ، بیروت
الجزء المفقود من المصنف	مرکز الاولیاء، لاہور
مصنف ابن ابی شیبۃ	دار الفکر، بیروت ۱۴۱۴ھ
مسند اسحاق بن راہویہ	مکتبۃ الایمان، مدینۃ منورۃ ۱۴۱۲ھ
المسند	دار الفکر، بیروت ۱۴۱۴ھ
سنن الدارمی	دار الکتاب العربی، ۱۴۰۷ھ
صحیح البخاری	دار الکتب العلمیہ، ۱۴۱۹ھ
صحیح مسلم	دار الکتاب العربی، بیروت ۲۰۱۶ء
سنن ابن ماجہ	دار المعرفہ، بیروت ۱۴۲۰ھ

سنن ابی داود	دار احیاء التراث العربی، ۱۴۲۱ھ
سنن الترمذی	دار الفکر، بیروت ۱۴۱۴ھ
مسند الحارث	مرکز خدمۃ السنۃ، ۱۴۱۳ھ
سنن دار قطنی	مدینۃ الاولیاء، ملتان
نوادر الاصول	مکتبہ امام بخاری، قاہرہ ۱۴۲۹ھ
مسند البزار	مکتبۃ العلوم والحکم، مدینۃ منورۃ ۱۴۲۴ھ
سنن النسائی	دار الکتب العلمیہ، ۱۴۲۶ھ
مسند ابی یعلی	دار الکتب العلمیہ، ۱۴۱۸ھ
المعجم الکبیر	دار احیاء التراث العربی، ۱۴۲۲ھ
المعجم الاوسط	دار الکتب العلمیہ، ۱۴۲۰ھ
المعجم الصغیر	دار الکتب العلمیہ، ۱۴۰۳ھ
مکارم الاخلاق للطبرانی	دار الکتب العلمیہ، ۱۴۲۱ھ
المستدرک علی الصحیحین	دار المعرفہ، بیروت ۱۴۱۸ھ
حلیۃ الاولیاء	دار الکتب العلمیہ، ۱۴۱۹ھ
شعب الایمان	دار الکتب العلمیہ، ۱۴۲۱ھ
سنن کبری	دار الکتب العلمیہ، ۱۴۲۴ھ
سنن صغری	دار المعرفہ، بیروت ۱۴۲۰ھ
جامع بیان العلم وفضلہ	دار الکتب العلمیہ، ۱۴۲۸ھ
شرح السنۃ	دار الکتب العلمیہ، ۱۴۲۴ھ
مسند الفردوس	دار الکتب العلمیہ، ۱۴۰۶ھ
تاریخ دمشق لابن عساکر	دار الفکر، بیروت ۱۴۱۵ھ
الترغیب والترہیب	دار الکتب العلمیہ، ۱۴۱۸ھ
الاحسان بترتیب صحیح ابن حبان	دار الکتب العلمیہ، ۱۴۱۷ھ

مشکاۃ المصابیح	دار الکتب العلمیہ، ۱۴۲۴ھ
مجمع الزوائد	دار الفکر، بیروت ۱۴۲۰ھ
جامع الاحادیث	دار الفکر، بیروت ۱۴۱۴ھ
جمع الجوامع	دار الکتب العلمیہ، ۱۴۲۱ھ
الجامع الصغیر	دار الکتب العلمیہ، ۱۴۲۵ھ
کنز العمال	دار الکتب العلمیہ، ۱۴۱۹ھ
کشف الخفاء	دار الکتب العلمیہ، ۱۴۲۲ھ
کتب شروح الحدیث	
شرح النووی علی المسلم	دار الکتب العلمیہ، ۱۴۰۱ھ
فتح الباری	دار الکتب العلمیہ، ۱۴۲۵ھ
عمدۃ القاری	دار الفکر، بیروت ۱۴۱۸ھ
ارشاد الساری	دار الفکر، بیروت ۱۴۲۱ھ
مرقاۃ المفاتیح	دار الفکر، بیروت ۱۴۱۸ھ
فیض القدیر	دار الکتب العلمیہ، ۱۴۲۲ھ
اشعۃ اللمعات	کوئٹہ
لمعات التنقیح	دار النوادر، بیروت ۱۴۳۵ھ
شرح الموطا للزرقانی	دار احیاء التراث العربی، بیروت ۱۴۱۷ھ
مرآۃ المناجیح	ضیاء القرآن پبلیکیشنز، لاہور
نزہۃ القاری	فرید بک سٹال، لاہور ۱۴۲۱ھ
کتب العقائد	
تمہید ابی الشکور السالمی	نوریہ رضویہ پبلشنگ کمپنی، لاہور ۱۴۳۴ھ
کتاب العظمۃ	دار الکتب العلمیہ، ۱۴۱۴ھ
اثبات عذاب القبر للبیہقی	دار الفرقان، عمان ۱۴۰۳ھ

البعث والنشور	مرکز الخدمات والابحاث الثقافیہ، بیروت ۱۴۰۶ھ
شرح العقائد النسفیۃ	مکتبۃ المدینہ، کراچی ۱۴۳۰ھ
شرح العقیدۃ الطحاویۃ	المکتب الاسلامی، بیروت ۱۴۰۸ھ
المسامرۃ	مطبعۃ السعادۃ، مصر
الیواقیت والجواھر	دار الکتب العلمیہ، ۱۴۱۹ھ
تکمیل الایمان	باب المدینہ، کراچی ۱۴۲۱ھ
المعتقد المنتقد	برکاتی پبلشرز، کراچی ۱۴۲۰ھ
کفریہ کلمات کے بارے میں سوال جواب	مکتبۃ المدینہ، کراچی ۱۴۳۰ھ
بنیادی عقائد اور معمولات اہلسنت	مکتبۃ المدینہ، کراچی ۱۴۳۷ھ
کتب الرجال والطبقات	
الطبقات الکبری لابن سعد	دار الکتب العلمیہ، ۱۴۱۸ھ
معرفۃ الصحابہ لابی نعیم	دار الکتب العلمیہ، ۱۴۲۲ھ
الاستیعاب فی معرفۃ الاصحاب	دار الکتب العلمیہ، ۱۴۲۲ھ
سیر اعلام النبلاء	دار الفکر، بیروت ۱۴۱۷ھ
الطبقات الشافعیۃ	دار احیاء الکتب العربیۃ، ۱۳۸۳ھ
الاصابۃ فی تمییز الصحابۃ	دار الکتب العلمیہ، ۱۴۱۵ھ
اسد الغابۃ	دار احیاء التراث العربی، ۱۴۱۷ھ
الطبقات الکبری	دار الفکر، بیروت ۱۴۱۵ھ
اجمال ترجمہ اکمال	ضیاء القرآن پبلیکیشنز، لاہور
کتب التاریخ	
فتوح الشام	دار الکتب العلمیہ، ۱۴۲۶ھ
تاریخ طبری	دار ابن کثیر، بیروت ۱۴۲۸ھ
تاریخ جرجان	عالم الکتب، بیروت ۱۴۰۷ھ
تاریخ بغداد	دار الکتب العلمیہ، ۱۴۱۷ھ
الکامل فی التاریخ	دار الکتب العلمیہ، ۱۴۱۸ھ
تاریخ الخلفاء	باب المدینہ، کراچی
شذرات الذھب	دار الکتب العلمیہ، ۱۴۱۹ھ
کتب الفقہ والفتاوی	
مختصر القدوری	مکتبہ ضیائیہ، راولپنڈی
المبسوط	دار الکتب العلمیہ، ۱۴۲۱ھ
خلاصۃ الفتاوی	کوئٹہ
بدائع الصنائع	دار احیاء التراث العربی، ۱۴۲۱ھ
الفتاوی الخانیۃ	پشاور
الھدایۃ	دار احیاء التراث العربی، بیروت
منیۃ المصلی	ضیاء القرآن، لاہور
المدخل	دار الکتب العلمیہ، ۱۴۱۵ھ
تبیین الحقائق	دار الکتب العلمیہ، ۱۴۲۰ھ
الفتاوی التاتارخانیہ	باب المدینہ کراچی
الجوھرۃ النیرۃ	باب المدینہ کراچی
مجمع البحرین	دار الکتب العلمیہ، ۱۴۱۹ھ
غنیۃ المتملی	سہیل اکیڈمی، لاہور
الاشباہ والنظائر	دار الکتب العلمیہ، ۱۴۱۹ھ
البحر الرائق	کوئٹہ
تنویر الابصار	دار المعرفہ، بیروت ۱۴۲۰ھ

المسلك المتقسط	باب المدینہ کراچی ۱۴۲۵ھ	فتاوی اہلسنّت (احکام زکوٰۃ)	مکتبۃ المدینہ، کراچی ۱۴۳۳ھ
نور الایضاح	مکتبۃ المدینہ، کراچی ۱۴۳۲ھ	فتاوی اہلسنّت	مکتبۃ المدینہ، کراچی
مراقی الفلاح	باب المدینہ کراچی	عقیقے کے بارے میں سوال جواب	مکتبۃ المدینہ، باب المدینہ کراچی
مجمع الانہر	دار الکتب العلمیہ، ۱۴۱۹ھ	**كتب السيرة**	
الدر المختار	دار المعرفہ، بیروت ۱۴۲۰ھ	اخلاق النبی وآدابہ	دار الکتاب العربی، بیروت ۱۴۲۸ھ
غمز عیون البصائر	باب المدینہ کراچی ۱۴۱۸ھ	دلائل النبوۃ لابی نعیم	المکتبۃ العصریۃ، بیروت ۱۴۳۰ھ
الفتاوی الہندیۃ	دار الفکر، بیروت ۱۴۰۳ھ	الشفا بتعریف حقوق المصطفی	مرکز اہلسنت برکات رضا، ہند
حاشیۃ الطحطاوی علی مراقی الفلاح	باب المدینہ کراچی	دلائل النبوۃ	دار الکتب العلمیہ، ۱۴۲۳ھ
رد المحتار	دار المعرفہ، بیروت ۱۴۲۰ھ	تذکرۃ الاولیاء	انتشارات گنجینہ، ۱۳۷۹ھ
منحۃ الخالق	کوئٹہ	الریاض النضرۃ فی مناقب العشرۃ	دار الکتب العلمیہ، ۱۴۲۳ھ
عمدۃ الرعایۃ	باب المدینہ، کراچی	بہجۃ الاسرار	دار الکتب العلمیہ، ۱۴۲۳ھ
الفتاوی الرضویۃ	رضا فاؤنڈیشن، لاہور	السیرۃ النبویۃ لابن کثیر	دار الفکر، بیروت ۱۳۹۸ھ
التعلیق المجلی لما فی منیۃ المصلی	ضیاء القرآن، لاہور	قصص الانبیاء لابن کثیر	دار الطباعۃ والنشر الاسلامیہ، قاہرہ ۱۴۱۷ھ
بہارِ شریعت	مکتبۃ المدینہ، کراچی ۱۴۳۵ھ	البدایۃ والنہایۃ	دار الفکر، بیروت ۱۴۱۸ھ
وقار الفتاویٰ	بزم وقار الدین، کراچی ۲۰۰۱ء	مناقب امام اعظم للکردری	کوئٹہ ۱۴۰۷ھ
فتاویٰ فقیہ ملت	شبیر برادرز، لاہور ۲۰۰۵ء	الخصائص الکبری	دار الکتب العلمیہ، بیروت
کپڑے پاک کرنے کا طریقہ	مکتبۃ المدینہ، کراچی	تبییض الصحیفۃ	پشاور
نماز کے احکام	مکتبۃ المدینہ، کراچی ۲۰۰۴ء	وفاء الوفاء	دار احیاء التراث العربی، بیروت
اسلامی بہنوں کی نماز	مکتبۃ المدینہ، کراچی ۲۰۰۸ء	المواہب اللدنیۃ	دار الکتب العلمیہ، ۱۴۱۷ھ
فیضان رمضان	مکتبۃ المدینہ، کراچی ۱۴۲۷ھ	سبل الہدی والرشاد	دار الکتب العلمیہ، ۱۴۲۸ھ
رفیق الحرمین	مکتبۃ المدینہ، کراچی ۱۴۳۳ھ	الخیرات الحسان	دار الکتب العلمیہ، ۱۴۰۳ھ
رفیق المعتمرین	مکتبۃ المدینہ، کراچی ۱۴۳۳ھ	السیرۃ الحلبیۃ	دار الکتب العلمیہ، ۱۴۲۲ھ
کرسی پر نماز پڑھنے کے احکام	مکتبۃ المدینہ، کراچی ۱۴۳۶ھ	مدارج النبوت	مرکز اہلسنّت برکات رضا، ہند

معارج النبوۃ	نوریہ رضویہ پبلشنگ کمپنی، لاہور ۱۴۱۹ھ
شرح المواھب	دار الکتب العلمیہ، ۱۴۱۷ھ
جامع کرامات الاولیاء	مرکز اہلسنت برکات رضا، ۱۴۲۲ھ
حیاتِ اعلیٰ حضرت	مکتبہ نبویہ، لاہور ۲۰۰۳ء
سیرتِ مصطفٰی	مکتبۃ المدینہ، کراچی ۱۴۲۹ھ
احوال وآثار شاہ آلِ احمد اچھے میاں مارہروی	دار الاسلام، لاہور ۱۴۳۶ھ
تفریح الخاطر فی مناقب الشیخ عبد القادر (مترجم)	قادری رضوی کتب خانہ، لاہور ۲۰۰۳ء
تجلیاتِ امام احمد رضا	برکاتی پبلشرز، کراچی
تذکرہ علمائے اہلِ سنت	سنی دار الاشاعت علویہ رضویہ، فیصل آباد ۱۹۹۲ء
غوثِ پاک کے حالات	مکتبۃ المدینہ، باب المدینہ کراچی
منے کی لاش	مکتبۃ المدینہ، کراچی ۱۴۳۶ھ
تذکرہ مجدد الف ثانی	مکتبۃ المدینہ، کراچی ۱۴۳۸ھ
تذکرہ امام احمد رضا	مکتبۃ المدینہ، کراچی ۱۳۹۳ھ
فیضانِ اعلیٰ حضرت	شبیر برادرز، لاہور ۱۴۳۴ھ
سیرت صدر الشریعہ	مکتبہ اعلیٰ حضرت، لاہور ۱۴۲۳ھ
حیات محدث اعظم	رضا فاؤنڈیشن، لاہور ۱۴۲۵ھ
فیضانِ مفتی احمد یار خان نعیمی	مکتبۃ المدینہ، کراچی ۱۴۳۷ھ
فیضانِ مولانا محمد عبد السلام قادری	مکتبۃ المدینہ، کراچی ۱۴۳۷ھ
تعارف امیرِ اہلسنّت	مکتبۃ المدینہ، کراچی ۱۴۲۸ھ
تذکرہ امیرِ اہلسنّت	مکتبۃ المدینہ، کراچی ۱۴۲۹ھ

کتب التصوف	
کتاب الزهد لابن مبارك	دار الکتب العلمیہ، بیروت
الزهد لاحمد بن حنبل	دار الغد الجدید، مصر ۱۴۲۶ھ
موسوعة ابن ابی الدنیا	مکتبۃ العصریہ، بیروت ۱۴۰۸ھ
تنبيه الغافلين	دار الکتاب العربی، ۱۴۲۰ھ
کشف المحجوب	نوائے وقت پرنٹرز، لاہور
احیاء علوم الدین	دار صادر، بیروت ۲۰۰۰ء
کیمیائے سعادت	انتشارات گنجینہ، تہران
لباب الاحیاء	دار البیروتی، دمشق ۱۴۲۴ھ
منهاج العابدين	دار الکتب العلمیہ، بیروت
التذكرة	دار السلام، قاہرہ ۱۴۲۹ھ
الروض الفائق	دار احیاء التراث العربی، ۱۴۱۶ھ
شرح الصدور	مرکز اہلسنت برکات رضا، ہند
تنبيه المغترين	دار المعرفہ، بیروت ۱۴۲۵ھ
الانوار القدسية في معرفة القواعد الصوفية	المکتبۃ العلمیہ، بیروت
الزواجر	دار المعرفہ، بیروت ۱۴۱۹ھ
الحديقة الندية	دار الطباعۃ العامرہ، مصر
اتحاف السادة المتقين	دار الکتب العلمیہ، بیروت
الكتب المتفرقة	
الفتن لنعيم بن حماد	مکتبۃ التوحید، قاہرہ ۱۴۱۲ھ
قرة العيون ومفرح القلب المحزون	دار احیاء التراث العربی، بیروت ۱۴۱۶ھ

عیون الحکایات	دار الکتب العلمیہ، ۱۴۲۴ھ
النہایۃ فی غریب الحدیث والاثر	دار الکتب العلمیہ، ۲۰۱۱ء
گلستان سعدی	نشر محمد، تہران
السیف المسلول	دار الفتح، عمان ۱۴۲۱ھ
مرآۃ الجنان	دار الکتب العلمیہ، ۱۴۱۷ھ
الحصن الحصین	مکتبۃ العصریۃ، بیروت ۱۴۲۵ھ
المستطرف	دار الفکر، بیروت ۱۴۱۹ھ
دلائل الخیرات	دار الفقیہ، دبئی ۱۴۲۳ھ
القول البدیع	مؤسسۃ الریان، ۱۴۲۲ھ
لقط المرجان فی احکام الجان	دار الکتب العلمیہ، ۱۴۰۶ھ
مجمع بحار الانوار	مکتبۃ دار الایمان، المدینۃ المنورۃ ۱۴۱۵ھ
ماثبت من السنۃ	ادارۂ نعیمیہ رضویہ، لاہور
المقدمۃ فی الحدیث	مکتبۃ المدینہ، کراچی ۱۴۳۳ھ
مطالع المسرات	دار الکتب العلمیہ، ۱۴۲۶ھ
ہدیۃ العارفین	دار الکتب العلمیہ، ۱۴۱۳ھ
فضائل دعا	مکتبۃ المدینہ، کراچی ۱۴۳۰ھ
ذوق نعت	مرکز اہلسنت برکات رضا، ۱۴۲۵ھ
اولاد کے حقوق	مکتبۃ المدینہ، کراچی ۱۴۲۹ھ
افضل الصلوات علی سید السادات	دار النشر، ۲۰۰۰ء
ملفوظات اعلیٰ حضرت	مکتبۃ المدینہ، کراچی ۱۴۳۰ھ
الاعلام للزرکلی	دار العلم للملایین، بیروت ۱۹۹۵ء
ہشت بہشت	شبیر برادرز، لاہور ۲۰۰۰ء

اسلامی زندگی	مکتبۃ المدینہ، کراچی ۱۴۳۵ھ
ہمارا اسلام	فرید بک سٹال، لاہور ۱۴۲۴ھ
خطباتِ محرم	شبیر برادرز، لاہور ۱۹۸۹ء
امام اعظم کی وصیتیں	مکتبۃ المدینہ، کراچی ۱۴۳۰ھ
فیضانِ سنّت	مکتبۃ المدینہ، کراچی ۲۰۰۶ء
غیبت کی تباہ کاریاں	مکتبۃ المدینہ، کراچی ۱۴۳۰ھ
سنّتیں اور آداب	مکتبۃ المدینہ، کراچی ۱۴۳۷ھ
خوفِ خدا	مکتبۃ المدینہ، کراچی ۱۴۲۶ھ
بدشگونی	مکتبۃ المدینہ، کراچی ۱۴۳۵ھ
سود اور اس کا علاج	مکتبۃ المدینہ، کراچی ۱۴۳۱ھ
گلدستۂ درود وسلام	مکتبۃ المدینہ، کراچی ۱۴۳۵ھ
عاشقانِ رسول کی 130 حکایات	مکتبۃ المدینہ، کراچی ۱۴۳۳ھ
آدابِ مرشد کامل	مکتبۃ المدینہ، کراچی ۱۴۲۶ھ
شرح شجرہ قادریہ	مکتبۃ المدینہ، کراچی ۱۴۲۹ھ
گھریلو علاج	مکتبۃ المدینہ، کراچی ۱۴۳۷ھ
ابلق گھوڑے سوار	مکتبۃ المدینہ، کراچی ۱۴۳۲ھ
دعوتِ اسلامی کا تعارف	مکتبۃ المدینہ، کراچی ۱۴۲۹ھ
دعوتِ اسلامی کی جھلکیاں	مکتبۃ المدینہ، باب المدینہ کراچی
رہنمائے جدول	مکتبۃ المدینہ، کراچی ۱۴۲۸ھ
تیسیر مصطلح الحدیث	مکتبۃ المدینہ، کراچی ۱۴۳۶ھ
احکامِ تعویذات	والضحیٰ پبلیکیشنز، لاہور ۱۴۳۴ھ
تحریکِ پاکستان اور علماءِ کرام	زاویہ، لاہور ۱۹۹۹ء
****	****

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

नेक नमाज़ी बनने के लिये

हर जुमे'रात बा'द नमाज़े मग़रिब आप के यहां होने वाले दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में रिज़ाए इलाही के लिये अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ सारी रात शिर्कत फ़रमाइये ❁ सुन्नतों की तरबियत के लिये मदनी क़ाफ़िले में आ़शिक़ाने रसूल के साथ हर माह तीन दिन सफ़र और ❁ रोज़ाना "फ़िक्रे मदीना" के ज़रीए़ मदनी इन्आ़मात का रिसाला पुर कर के हर मदनी माह की पहली तारीख़ अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये।

मेरा मदनी मक़्सद : "मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है।" اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ अपनी इस्लाह़ के लिये "मदनी इन्आ़मात" पर अ़मल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश के लिये "मदनी क़ाफ़िलों" में सफ़र करना है। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ

MAKTABA TUL MADINA
MC 1286

DAWAT-E-ISLAMI

मक्तबतुल मदीना (हिन्द) की मुख़्तलिफ़ शाखें

❁ देहली :- मक्तबतुल मदीना, उर्दू मार्केट, मटिया मह़ल, जामेअ़ मस्जिद, देहली -6, फ़ोन : 011-23284560
❁ अह़मदाबाद :- फ़ैज़ाने मदीना, त्रीकोनिया बग़ीचे के सामने, मिरज़ापुर, अह़मदाबाद-1, गुजरात, फ़ोन : 9327168200
❁ मुम्बई :- फ़ैज़ाने मदीना, ग्राउन्ड फ़्लोर, 50 टन टन पुरा स्ट्रीट, खड़क, मुम्बई, महाराष्ट्र, फ़ोन : 09022177997
❁ हैदराबाद :- मक्तबतुल मदीना, मुग़ल पुरा, पानी की टांकी, हैदराबाद, तेलंगाना, फ़ोन : (040) 2 45 72 786
E- mail : hindibook@dawateislamihind.net, Web : www.dawateislami.net